वर्तमान सीज़न में एक पॉइन्ट शब्द को तीन रूपों से स्मृति वा स्वरूप में लाना–यही सेफ्टी का साधन है

10-1-94

माया की छाया से सेफ़ रखने के लिए ज्ञान की लाइट-माइट के स्वरूप में स्थित कराने वाले सर्व स्नेही बापदादा बोले–

विश्व कल्याणकारी बापदादा अपने सर्व मास्टर विश्व कल्याणकारी बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चे का इस ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य अति श्रेष्ठ है। हर एक नम्बरवन पुरुषार्थ करने का लक्ष्य रखते हुए आगे उड़ते जा रहे हैं। लक्ष्य सभी का नम्बरवन का है लेकिन लक्षण नम्बरवार हैं। तो लक्ष्य और लक्षण दोनों में अन्तर क्यों है? ज्ञान दाता बाप भी एक है, योग की विधि भी एक है, दिव्य गुण धारण करने का सहज प्रत्यक्ष प्रमाण साकार ब्रह्मा बाप भी एक है, सेवा के साधन और सेवा की विधि सिखाने वाला भी एक है। मुख्य बात है–पढ़ाई और पालना–दोनों ही देने वाला एक और एक नम्बर है, फिर भी प्रत्यक्ष जीवन में लक्षण नम्बरवार क्यों? ये तो सभी स्वयं को अच्छी तरह से जानते ही हो कि लक्षण धारण करने में मैं किस नम्बर में हूँ? नम्बरवार होने का विशेष आधार है एक ही शब्द पॉइन्ट। पॉइन्ट स्वरूप को अनुभव करना। दूसरा, कोई भी संकल्प, बोल वा कर्म व्यर्थ है उसको पॉइन्ट लगाना अर्थात् बिन्दी लगाना। तीसरा, ज्ञान की वा धारणा की अनेक पॉइन्ट्स को मनन कर स्व प्रति वा सेवा प्रति समय पर कार्य में लगाना। तो शब्द एक ही पॉइन्ट है लेकिन तीनों स्वरूप की पॉइन्ट को समय पर स्मृति में, स्वरूप में लाना–इसमें अन्तर पड़ जाता है। स्मृति सबको रहती है लेकिन स्मृति को स्वरूप में लाना, इसमें नम्बरवार हो जाते हैं। कई बार बापदादा सभी बच्चों को देखते हैं कि स्मृति में बहुत होशियार होते हैं। ऐसा होना चाहिये–वह सोचते भी रहते हैं; यह राइट है, यह रॉंग है–यह ज्ञान भी इमर्ज होता है। ज्ञान अर्थात् नॉलेज और नॉलेज इज़ लाइट, नॉलेज इज़ माइट कहा जाता है तो जहाँ लाइट भी है, माइट भी है वहाँ ये होना चाहिये, नहीं होता। क्या सोचते हैं कि बापदादा यह कहते तो हैं, बनना तो है,

ज्ञान तो यह है, लेकिन उस समय मेरे में क्या है, वह चाहिये-चाहिये में ही रह जाता है। इसका अर्थ है कि ज्ञान को लाइट और माइट के रूप से समय प्रमाण कार्य में नहीं लगा सकते। इसको कहा जाता है–स्मृति में है लेकिन स्वरूप में लाने की शक्ति कम है। जब लाइट अर्थात् रोशनी है कि ये राँग है, ये राइट है; ये अन्धकार है, ये प्रकाश है; ये व्यर्थ है, ये समर्थ है, तो अन्धकार समझते भी अन्धकार में रहना, इसको ज्ञानी वा समझदार कहेंगे? ज्ञानी नहीं तो क्या हुए? भक्त वा अधूरे ज्ञानी? राँग समझते भी राँग कर्मों के वा संकल्पों के वा स्वभाव-संस्कार के वशीभूत हो जाएं तो इसको क्या कहा जायेगा? उसका क्या टाइटल होना चाहिये? बापदादा समय की गति को देख सभी बच्चों को बार-बार अटेन्शन दिलाते हैं।

'अटेन्शन' शब्द को भी डबल अन्डर लाइन करा रहे हैं कि ये प्रकृति की तमोगुणी शक्ति और माया की सूक्ष्म रॉयल समझदारी की शक्ति अपना कार्य तीव्र गति से कर रही है और करती रहेगी। प्रकृति के विकराल रूप को जानना सहज है लेकिन भिन्न-भिन्न विकराल हलचल में अचल रहना इसमें और अटेन्शन चाहिये। माया के अति सूक्ष्म स्वरूप को जानने में भी धोखा खा लेते हैं। माया ऐसा रॉयल रूप रखती है जो राँग को राइट अनुभव कराती है। है बिल्कुल राँग लेकिन बुद्धि को ऐसा परिवर्तित कर देती है जो रीयल समझ को, महसूसता की शक्ति को गायब कर देती है। जैसे कोई जादू मन्त्र करते हैं ना तो परवश हो जाते हैं, ऐसी महसूसता शक्ति गायब करने की रॉयल माया रीयल को समझने नहीं देती है। होगा बिल्कुल राँग लेकिन माया की छाया के वशीभूत होने के कारण राँग को राइट समझते और सिद्ध करने में माया के सुप्रीम कोर्ट का वकील बन जाते हैं। तो वकील क्या करते हैं? झूठ को सच सिद्ध करने में होशियार होते हैं। सच को सच सिद्ध करने में भी होते हैं लेकिन झूठ को सच सिद्ध करने में होशियार होते हैं, दोनों में होशियार होते हैं। इसीलिये बापदादा 'अटेन्शन' को डबल अन्डर लाइन करा रहे हैं। महसूसता शक्ति को परिवर्तित करने की सूक्ष्म स्वरूप की माया की छाया से सदा अपने को सेफ़ रखो। क्योंकि विशेष माया का स्वरूप विशेष इस स्वरूप में अपना कार्य कर रहा है। समझा? अभी क्या करेंगे? केयरफुल रहना। अगर कोई भी विशेष आत्मायें इशारा देती हैं तो अच्छी तरह

से माया की इस छाया से निकल बाप की छत्रछाया में अपने को, विशेष मन-बुद्धि को इस छत्रछाया के सहारे में लाओ। क्योंकि मन में निगेटिव भाव और भावना पैदा करने का विशेष माया का प्रभाव चल रहा है और बुद्धि में यथार्थ महसूसता को समाप्त करने का विशेष माया का कार्य चल रहा है। जैसे कोई सीज़न होती है ना तो सीज़न से बचने के लिये उसी प्रमाण विशेष अटेन्शन रखा जाता है। जैसे बारिश आयेगी तो छाते, रैन कोट आदि का अटेन्शन रखेंगे, सर्दी आयेगी तो गरम कपड़े रखेंगे, अटेन्शन देंगे ना। तो मन और बुद्धि के ऊपर प्रभाव नहीं पड़े–इसके लिये पहले ही सेफ्टी के साधन विशेष अपनाओ। वो विशेष साधन है बहुत सहज, पहले भी सुनाया है–एक ही 'पॉइन्ट' शब्द। सहज है ना। लम्बा-चौड़ा तो नहीं सुनाया ना। कहते रहते हैं–हाँ, मैं आत्मा बिन्दू हूँ, ज्योति रूप हूँ, लेकिन उसमें टिकते नहीं हैं। लगाना चाहते हैं पॉइन्ट लेकिन लग जाता है क्वेश्चन मार्क और आश्चर्य की निशानी। पॉइन्ट लगाना सहज या आश्चर्य की निशानी वा क्वेश्चन मार्क की निशानी? क्या सहज है? बिन्दी लगाना सहज है ना। फिर क्वेश्चन और आश्चर्य में क्यों चले जाते हैं? इस विधि को अपनाओ। सीज़न है–झूठ, सच सिद्ध होने का और झूठ, सत्य से भी स्पष्ट और आकर्षण वाला होगा। जैसे आजकल का फैशन है ना–झूठी चीज़ कितनी आकर्षण वाली होती है, उसके आगे सच्चे की वैल्यु कम हो जाती है। रीयल सिल्वर देखो और व्हाइट सिल्वर देखो–क्या सुन्दर लगता है? रीयल सिल्वर काला हो जायेगा और व्हाइट सिल्वर सदा चमकता रहेगा। तो आकर्षण व्हाइट करेगा या रीयल करेगा? तो सीज़न को पहचानो, माया के स्वरूप को पहचानो, प्रकृति के तमोगुण के भिन्न-भिन्न रंगत को पहचानो। एक है जानना, दूसरा है पहचानना। जानते ज़यादा हो, पहचानने में कभी ग़लती कर देते हो, कभी राइट कर देते हो। अभी क्या करेंगे? सेफ़ रहेंगे ना। फिर ये नहीं कहना कि हमने तो समझा नहीं, ऐसा भी होता है क्या? यह क्या-क्या नहीं चलेगा। अभी तो फिर भी बाप थोड़ा-थोड़ा रहम करता, थोड़ा-थोड़ा कदम उठाता है। लेकिन फिर 'क्या' और 'क्यों' कोई नहीं सुनेगा। ऐसा नहीं, वैसा–ये वकालत नहीं चलेगी। जज बनो, माया का वकील नहीं बनो। मज़ा बहुत आता है जब वकालत करते हैं। अनुभवी तो सब हो ना, अनुभव होता है ना। सुन-सुनकर साक्षी हो हर्षित होते रहते

हैं। अच्छी तरह से समझा? पाण्डवों ने, शक्तियों ने समझा, टीचर्स ने समझा? सभी हाँ-हाँ तो कर रहे हैं। फ़ोटो निकल रहा है हाँ का।

तीसरी सीज़न है विशेष कमज़ोरी के स्वभाव-संस्कार, सम्बन्ध-सम्पर्क में आना। इसका विस्तार भी बहुत बड़ा है। वो आज नहीं सुनायेंगे। कई बच्चे कहते हैं क्या करें, पहले तो था ही नहीं, अभी पता नहीं क्या हो गया है। ये संस्कार मेरे में था ही नहीं, अभी आ गया है। इसका कारण और इसकी विधि का विस्तार फिर कभी सुनायेंगे। अच्छा!

चारों ओर के बापदादा के महावाक्य सुनने और धारण करने वाले चात्रक बच्चों को, सर्व सब्जेक्ट को स्मृति के साथ स्वरूप में लाने वाले समीप आत्माओं को, सदा ज्ञान के हर बात को लाइट और माइट के स्वरूप से कार्य में लगाने वाली श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा लक्ष्य और लक्षण समान करने वाले बाप के ज्ञानी तू आत्मा बच्चों को, सदा बाप की छत्रछाया में रहने वाले, माया की छाया से सेफ़ रहने वाले, जानना और पहचानना, दोनों की विशेषता को जीवन में लाने वाले ऐसे विशेष आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

दादियों से मुलाकात

शक्ति सेना तीव्र गति से चल रही है ना। सेना को बापदादा के साथ-साथ आप निमित्त आत्मायें भी चलाने के निमित्त हो। बाप तो सदा साथ है और सदा ही रहेंगे। फिर भी बापदादा की श्रेष्ठ भुजायें तो हैं ना। बाप शक्ति देते हैं, बाप माइट रूप में है लेकिन निमित्त समझाने के लिये माइक तो आप निमित्त हो। कितनी मज़े की बातें सुनते हो। खेल लगता है ना। खेल है ना। खेल-खेल में विजयी बन सभी को मायाजीत विजयी बनाना ही है, ये तो गैरन्टी है ही। लेकिन बीच-बीच में ये खेल देखने पड़ते हैं। तो थकते तो नहीं हो ना? हंसते, खेलते, पार करते और कराते चलते। कोई भी ऐसी बात सुनते तो दिल से क्या निकलता? वाह ड्रामा वाह! हाय ड्रामा हाय नहीं निकलता। वाह ड्रामा! वाह-वाह करते हुए सभी को वाह-वाह बनना ही है। ये सब पार करना ही है। अच्छा!

अव्यक्त बापदादा की पर्सनल मुलाकात

ग्रुप नं. १

विजय हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है, इस निश्चय और नशे से निर्विघ्न स्थिति का अनुभव करो

जैसे ऊंचे से ऊंचा बाप है ऐसे हम आत्मायें भी ऊंचे से ऊंची श्रेष्ठ आत्मायें हैं-यह अनुभव करते हुए चलते हो? क्योंकि दुनिया वालों के लिये तो सबसे श्रेष्ठ, ऊंचे से ऊंचे हैं बाप के बाद देवतायें। लेकिन देवताओं से ऊंचे आप ब्राह्मण आत्मायें हो, फ़रिश्ते हो–ये दुनिया वाले नहीं जानते। देवता पद को इस ब्राह्मण जीवन से ऊंचा नहीं कहेंगे। ऊंचा अभी का ब्राह्मण जीवन है। देवताओं से भी ऊंचे क्यों हो, उसको तो अच्छी तरह से जानते हो ना। देवता रूप में बाप का ज्ञान इमर्ज नहीं होगा। परमात्म मिलन का अनुभव इस ब्राह्मण जीवन में करते हो, देवताई जीवन में नहीं। ब्राह्मण ही देवता बनते हैं लेकिन इस समय देवताई जीवन से भी ऊंच हो, तो इतना नशा सदा रहे, कभी-कभी नहीं। क्योंकि बाप अविनाशी है और अविनाशी बाप जो ज्ञान देते हैं वह भी अविनाशी है, जो स्मृति दिलाते हैं वह भी अविनाशी है, कभी-कभी नहीं। तो यह चेक करो कि सदा यह नशा रहता है वा कभी-कभी रहता है? मज़ा तो तब आयेगा जब सदा रहेगा। कभी रहा, कभी नहीं रहा तो कभी मज़े में होंगे, कभी मूँझे हुए रहेंगे। तो अभी-अभी मज़ा, अभी-अभी मूँझ नहीं, सदा रहे। जैसे यह श्वास सदा ही चलता है ना। यदि एक सेकण्ड भी श्वास रुक जाये या कभी-कभी चले तो उसे जीवन कहेंगे? तो इस ब्राह्मण जीवन में निरन्तर मजे में हो? अगर मज़ा नहीं होगा तो मूँझेंगे ज़रूर। तो मातायें सदा मज़े में रहती हो? शक्तियां हो ना, साधारण तो नहीं हो या घर में जाती हो तो साधारण मातायें बन जाती हो? नहीं, सदा यह याद रहे कि हम शक्तियां हैं। हद के नहीं हैं, बेहद के विश्व कल्याणकारी हैं। शक्तियां अर्थात् असुरों के ऊपर विजय प्राप्त करने वाली। शक्तियों को कहते ही हैं–असुर संहारनी अर्थात् आसुरी संस्कार को संहार करने वाली। तो सभी शक्तियां ऐसी बहादुर हो? और पाण्डव अर्थात् विजयी। पाण्डव कभी यह नहीं कह सकते कि चाहते नहीं हैं लेकिन हार हो जाती है। क्योंकि आधा कल्प हार खाई, अभी विजय प्राप्त करने का समय है तो विजय के समय पर भी यदि हार खायेंगे तो विजयी

कब बनेंगे? इसलिये इस समय सदा विजयी। विजय जन्म-सिद्ध अधिकार है। अधिकार को कोई छोड़ते नहीं, लड़ाई-झगड़ा करके भी लेते हैं और यहाँ तो सहज मिलता है। विजय अपना जन्म-सिद्ध अधिकार है। अधिकार का नशा वा खुशी रहती है ना? हद के अधिकार का भी कितना नशा रहता है! प्राइम मिनिस्टर को भूल जायेगा क्या कि मैं प्राइम मिनिस्टर हूँ? सोयेगा, खायेगा तो भूलेगा क्या कि मैं प्राइम मिनिस्टर हूँ? तो हद का अधिकार और बेहद का अधिकार कितना भी कोई भुलाये भूल नहीं सकता। माया का काम है भुलाना और आपका काम है विजयी बनना क्योंकि समझ है ना कि विजय और हार क्या है? हार के भी अनुभवी हैं और विजय के भी अनुभवी हैं। तो हार खाने से क्या हुआ और विजय प्राप्त करने से क्या हुआ–दोनों के अन्तर को जानते हो इसलिये सदा विजयी हैं और सदा रहेंगे। क्योंकि अविनाशी बाप और अविनाशी प्राप्ति के अधिकारी हम आत्मायें हैं–यह सदा इमर्ज रूप में रहे। ऐसे नहीं हैं तो! बने तो हैं! जानते तो हैं! ऐसे नहीं। प्रैक्टिकल में हैं। जो जानते हैं वही निश्चय कर चलते हैं। तो हर कर्म में विजय का निश्चय और नशा हो। नशे का आधार है ही निश्चय। निश्चय कम तो नशा कम। इसीलिये कहते हैं निश्चयबुद्धि विजयी। तो फ़ाउन्डेशन क्या हुआ? निश्चय। निश्चय में कभी-कभी वाले नहीं बनना। नहीं तो अन्त में रिज़ल्ट के समय भी प्राप्ति कभी-कभी की होगी फिर पश्चाताप् करना पड़ेगा। अभी प्राप्ति है, फिर पश्चाताप होगा। तो प्राप्ति के समय प्राप्ति करो, पश्चाताप के समय प्राप्ति नहीं कर सकेंगे। कर लेंगे, हो जायेगा! नहीं, करना ही है–यह निश्चय हो। कर लेंगे.... दिलासे पर नहीं चलो। कर तो रहे हैं ना.. और क्या होगा... हो ही जायेंगे.... नहीं, अभी होना है। गें-गें नहीं, हैं। जब दूसरों को चैलेन्ज करते हो कि श्वास पर कोई भरोसा नहीं, औरों को ज्ञान देते हो ना तो पहले स्वयं को ज्ञान दो। कभी करने वाले हैं या अब करने वाले हैं? तो सदा विजय के अधिकारी आत्मायें हो। विजय जन्म-सिद्ध अधिकार है–इस स्मृति से उड़ते चलो। कुछ भी हो जाये, ये स्मृति में लाओ कि मैं सदा विजयी हूँ। क्या भी हो जाये, निश्चय अटल है, कोई टाल नहीं सकता।

अच्छा – अब सभी ऐसी कमाल करके दिखाओ जो हर स्थान विजयी अर्थात् निर्विघ्न हो। कोई भी विघ्न न आये। विघ्न आयेंगे लेकिन हार नहीं होनी

चाहिये। तो जहाँ विजय है, विघ्न हट जायेगा तो निर्विघ्न बन जायेंगे। सदा निर्विघ्न–ये कमाल करके दिखाओ। कोई भी गीता पाठशाला हो, उप-सेवाकेन्द्र हो, केन्द्र हो लेकिन स्वयं निर्विघ्न बनो और औरों को भी निर्विघ्न बनाओ। ऐसी कमाल दिखाओ। करना ही है। करेंगे, देखेंगे! नहीं। गे गे कहेंगे माना निश्चय में परसेन्टेज है। सब ये खुशखबरी सुने कि सभी छोटे-बड़े सेन्टर्स निर्विघ्न हैं। किसी प्रकार का विघ्न आ ही नहीं सकता। दूसरे के विघ्न को भी मिटायेंगे, विजयी बनेंगे। ऐसा समाचार आये। कहाँ से भी, कोई विघ्न का समाचार न आये। ऐसे नहीं कहना कि हम तो ठीक हैं, ये करते हैं, हम क्या करें। तीन मास विजयी रह करके दिखाओ। तीन मास में ही पता पड़ जायेगा। सभी हाँ करते हो तो ये कमाल करके दिखाओ।

ग्रुप नं. २

फ़रिश्ता बनना है तो मेरे पन के बोझ को समाप्त करो, सबके प्यारे बनो

सदा अपने को डबल लाइट अर्थात् फ़रिश्ता आत्मा अनुभव करते हो? डबल लाइट का अर्थ ही है कि आत्मा लाइट और फ़रिश्ता स्वरूप भी लाइट। कर्म करते भी फ़रिश्ता स्वरूप में कर्म करने वाले। सभी फ़रिश्ता हो या गृहस्थी हो? बाल बच्चों का बोझ नहीं है? सब बोझ बाप के हवाले कर दिया? या अभी तक कोई मेरा है? पोत्रा मेरा है, यह मकान मेरा है, बाकी मैं बाप का हूँ–ऐसे तो नहीं? सच्चे-सच्चे बिन कौड़ी बादशाह हैं। एक कौड़ी भी नहीं, लेकिन बादशाह हैं। बिन कौड़ी बादशाह कितना अच्छा है। सम्भालना भी नहीं पड़े और हो भी बादशाह। ऐसे समझते हो? जब देह ही मेरा नहीं, तो देह के साथी, देह के पदार्थ और देह के सम्बन्ध तन-मन-धन सब तेरा कि मन तेरा और धन मेरा–ऐसे तो नहीं? योग तो लगाते हैं लेकिन पैसा तो रखना पड़ेगा। मेरापन नहीं हो। मेरापन बोझ है और बोझ नीचे ले आता है, फ़रिश्ता बनने नहीं देगा। कोई भी मेरापन, मेरा स्वभाव, मेरा संस्कार, मेरी नेचर, कुछ भी मेरा है तो बोझ है और बोझ वाला उड़ नहीं सकता, फ़रिश्ता नहीं बन सकता। तो फ़रिश्ते हो या कोई न कोई बोझ अभी रहा हुआ है? आइवेल के लिये थोड़ा-थोड़ा छिपाकर रखा है?

मेरा-मेरा कहते मैले हो गये थे, अभी तेरा-तेरा कहते स्वच्छ बन गये। तो फ़रिश्ता अर्थात् मेरापन अंशमात्र भी नहीं। संकल्प में भी मेरे-पन का भान आये तो समझो मैला हुआ। किसी भी चीज़ के ऊपर मैल चढ़ जाये तो मैल का बोझ हो जायेगा ना। तो ये मेरापन अर्थात् मैलापन। फ़रिश्ते हैं, पुरानी दुनिया से कोई रिश्ता नहीं। सेवा अर्थ हैं, रिश्ता नहीं है। सेवा भाव से सम्बन्ध में आते हो। गृहस्थी बनकर सेवा नहीं करते हो, सेवाधारी बनकर सेवा करते हो। ऐसे सेवाधारी हो? सेवास्थान समझते हो या घर समझते हो? तो जैसे सेवा स्थान की विधि होती है उसी विधि प्रमाण चलते हो कि गृहस्थी प्रमाण चलते हो? सेवास्थान समझने की विधि है न्यारे और बाप के प्यारे। ज़रा भी मेरेपन का प्रभाव नहीं पड़े। आग है लेकिन सेक नहीं आये। क्योंकि साधन हैं ना। जैसे आग बुझाने वाले आग में जाते हैं लेकिन खुद सेक में नहीं आते, सेफ़ रहते हैं क्योंकि साधन हैं, अगर आग बुझाने वाले ही जल जायें तो लोग हंसेंगे ना। तो चाहे वायुमण्डल में परिस्थितियों की आग हो लेकिन प्रभाव नहीं डाले, सेक नहीं आये। ऐसे नहीं कि परिस्थिति नहीं है तो बहुत अच्छे और परिस्थिति आ गई तो सेक लग गया।

तो ऐसे फ़रिश्ते हो ना। फ़रिश्ता कितना प्यारा लगता है! अगर स्वप्न में भी किसके पास फ़रिश्ता आता है तो कितना खुश होते हैं। फ़रिश्ता जीवन अर्थात् सदा प्यारा जीवन। बाप प्यारे से प्यारा है ना तो बच्चे भी सदा सर्व के प्यारे से प्यारे हैं। सिर्फ बाल बच्चे, पोत्रे धोत्रों के प्यारे नहीं, हद के प्यारे नहीं, बेहद के प्यारे। क्योंकि सर्व आत्मायें आपका परिवार हैं, सिर्फ १०-१२ का परिवार नहीं है। कितना बड़ा परिवार है? बेहद। सर्व के प्यारे। चाहे कैसी भी आत्मा हो, लेकिन आप सर्व के प्यारे हो। जो प्यार करे उसके प्यारे हो, ये नहीं। सर्व के प्यारे। लड़ाई करने वाले, कुछ बोलने वाले प्यारे नहीं। ऐसे नहीं, सर्व के प्यारे। आप लोगों ने द्वापर से बाप को कितनी गाली दी, फिर बाप ने प्यार किया या घृणा की? प्यार किया ना। तो फ़ालो फ़ादर। कैसी भी आत्मायें हो लेकिन अपनी दृष्टि, अपनी भावना प्यार की हो–इसको कहा जाता है सर्व के प्यारे। १२ के प्यारे हैं, एक के प्यारे नहीं। नहीं, सर्व के प्यारे। ऐसे है या किसी आत्मा के प्रति थोड़ा-थोड़ा आ जाता है? कोई थोड़ा इन्सल्ट करते हैं, कोई घृणा करते हैं तो प्यार आता है या घृणा आती है? नहीं, परवश आत्मायें हैं। सर्व के प्यारे–इसको कहा जाता है

फ़रिश्ता। कोई-कोई के प्यारे हैं तो फ़रिश्ते नहीं।

अभी सोचकर बताओ कि कौन हो? मातायें क्या कहेंगी? सासू बहुत खराब है, नन्द बहुत खराब है। नहीं, सब प्यारे हैं। किसी से और कोई भावना नहीं। चाहे वो क्या भी कहे, क्या भी करे लेकिन आपकी भावना शुद्ध हो। इसका भी कल्याण हो। सर्व प्रति कल्याण की भावना हो – इसको कहते हैं फ़रिश्ता। मंज़िल तो ऊंची है ना या सहज है? तो ऐसी ऊंची अवस्था भी है? क्योंकि अगर फ़रिश्ता नहीं तो देवता भी कैसे बनेंगे? देवताई दुनिया में जायेंगे लेकिन पद प्राप्त नहीं कर सकते। नाम तो देवता होगा लेकिन पद क्या होगा? एक ही कॉलेज से कोई बड़ा बन जाये, इंजीनियर बन जाये, डॉक्टर बन जाये और कोई बूट पॉलिश वाला बन जाये तो अच्छा लगेगा? सतयुग में तो आयेंगे लेकिन पद क्या प्राप्त करना है वह भी सोचना। ऊंचा पद पाना है या जो मिले वो ठीक है? ऊंच पद पाने का साधन है–फ़रिश्ता बनना। तो फ़रिश्ते की परिभाषा समझी ना। सभी बाप के बन गये। तो बाप का बनना अर्थात् बाप समान बनना। जैसे ब्रह्मा बाप फ़रिश्ता बना ना तो फ़ालो फ़ादर।

ग्रुप नं. ३

मैं परम पूज्य आत्मा हूँ–इस स्मृति से पवित्रता का फ़ाउन्डेशन मज़बूत करो

अपने को कल्प-कल्प की पूज्य आत्मायें अनुभव करते हो? स्मृति है कि हम ही पूज्य थे, हम ही हैं और हम ही बनेंगे? पूज्य बनने का विशेष साधन क्या है? कौन पूज्य बनते हैं? जो श्रेष्ठ कर्म करते हैं और श्रेष्ठ कर्मों का भी फ़ाउन्डेशन है पवित्रता। पवित्रता पूज्य बनाती है। अभी भी देखो जो नाम से भी पवित्र बनते हैं तो पूज्य बन जाते हैं। लेकिन पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं। ब्रह्मचर्य व्रत को धारण किया इसमें ही सिर्फ श्रेष्ठ नहीं बनना है। यह भी श्रेष्ठ है लेकिन साथ में और भी पवित्रता चाहिये। अगर मन्सा संकल्प में भी कोई निगेटिव संकल्प है तो उसे भी पवित्र नहीं कहेंगे, इसलिए किसी के प्रति भी निगेटिव संकल्प नहीं हो। अगर बोल में भी कोई ऐसे शब्द निकल जाते हैं जो यथार्थ नहीं है तो उसको भी पवित्रता नहीं कहेंगे। यदि संकल्प और बोल ठीक हों लेकिन

सम्बन्ध-सम्पर्क में फ़र्क हो, किससे बहुत अच्छा सम्बन्ध हो और किससे अच्छा नहीं हो तो उसे भी पवित्रता नहीं कहेंगे। तो ऐसे मन्सा-वाचा-कर्मणा अर्थात् सम्बन्ध-सम्पर्क में पवित्र हो? ऐसे पूज्य बने हो? अगर मानो कोई भी बात में कमी है तो उसको खण्डित कहा जाता है। खण्डित मूर्ति की पूजा नहीं होती है। इसलिए ज़रा भी मन्सा, वाचा, कर्मणा में खण्डित नहीं हो अर्थात् अपवित्रता न हो, तब कहा जायेगा पूज्य आत्मा। तो ऐसे पूज्य बने हो? जड़ मूर्ति भी खण्डित हो जाती है तो पूजा नहीं होती। उसको पत्थर मानेंगे, मूर्ति नहीं मानेंगे। म्युज़ियम में रखेंगे, मन्दिर में नहीं रखेंगे। तो ऐसे पवित्रता का फ़ाउन्डेशन चेक करो–कोई भी संकल्प आये, तो स्मृति में लाओ कि मैं परम पूज्य आत्मा हूँ। यह याद रहता है या जिस समय कोई बात आती है उस समय भूल जाता है, पीछे याद आता है? फिर पश्चाताप होता है–ऐसे नहीं करते तो बहुत अच्छा होता। तो सदा पवित्र आत्मा हूँ, पावन आत्मा हूँ। पवित्रता अर्थात् स्वच्छता। स्वच्छता कितनी प्यारी लगती है। अगर मन्दिर भी हो, मूर्ति भी हो लेकिन स्वच्छता नहीं तो अच्छा लगेगा? तो मैं पूज्य आत्मा इस शरीर रूपी मन्दिर में विराजमान हूँ–ये स्मृति सदा जीवन में लाओ। सिर्फ सोचो नहीं लेकिन जीवन में लाओ। सोचते तो बहुत हैं ना–ये भी हूँ, ये भी हूँ.... लेकिन प्रैक्टिकल अनुभव में आये। तो क्या याद रखेंगे? सम्पूर्ण पूज्य आत्मा हँ। परसेन्टेज में नहीं–८०% पूज्य, २०% खण्डित। नहीं। तो १००% पूज्य अर्थात् १००% पवित्र। सभी को स्वच्छता अच्छी लगती है या कचरा अच्छा लगता है? तो अपने से पूछो कि मन स्वच्छ बना है, बुद्धि स्वच्छ बनी है? या थोड़ी-थोड़ी स्वच्छ बनी है, थोड़ी-थोड़ी अस्वच्छ है? अगर यहाँ कचरा पड़ा हो तो आप उस पर बैठेंगे? उस पर बैठना अच्छा नहीं लगेगा ना। तो ऐसे सोचो कि ज़रा भी अपवित्रता अर्थात् कचरा है तो बाप को अच्छा नहीं लगेगा। कचरा है तो बाप के प्यारे तो नहीं हुए ना। ब्राह्मण बने ही हो बाप का प्यारा बनने के लिए। पूज्य आत्मायें सर्व की प्यारी हैं। जड़ मूर्ति है लेकिन कितनी प्यारी लगती है। अपने चैतन्य परिवार से इतना प्यार नहीं होगा जितना मूर्ति से प्यार होगा। आपस में झगड़ेंगे लेकिन मूर्ति को प्यार करेंगे। क्यों प्यार करते हैं? पवित्रता है ना। पवित्रता अर्थात् ज़रा भी अपवित्रता नहीं हो। सभी को सुनाते हो ना कि अगर एक बूंद भी विष की एक मण दूध में पड़ जाये तो सारा विष हो

जायेगा। ऐसे अगर ज़रा भी अशुद्धि है तो कौन-सी आत्मा कहलायेंगे? शुद्ध या अशुद्ध? कहेंगे आधे, हाफ़ कास्ट हैं। तो सदा हर कर्म करते, संकल्प करते, बोल बोलते ये चेक करो कि बाप को प्यारे कौन हैं? पवित्र आत्मा या मिक्स आत्मा? पवित्र आत्मा प्यारी है क्योंकि बाप सदा परम पवित्र है तो उसको प्यारी भी पवित्रता लगती है। तो इस वर्ष में क्या करेंगे? ज़रा भी खण्डित नहीं। सदा परमपूज्य। कमाल करके दिखायेंगे ना कि सोचेंगे, देखेंगे? नहीं। करेंगे। हाथ उठाने का फोटो निकल रहा है। अच्छा है बाप तो सदा ही बच्चों में निश्चय रखते हैं। बहुत अच्छा और बढ़ते चलो, उड़ते चलो। जो ओटे वो अव्वल नम्बर अर्जुन। बाप तो सबको अव्वल नम्बर ही देखता हैं। सेकण्ड थर्ड तो नहीं आना है ना कि चलो, पर उपकार करते हैं, उसको पहला नम्बर देते हैं। ऐसा तो नहीं सोचते? पुरुषार्थ में रेस भले करो, और बातों में रेस नहीं करो। तो सिर्फ पूज्य नहीं परम पूज्य आत्मायें हैं – यह सदा स्मृति में रहे। देखना यहाँ पूज्य कहकर जाओ और वहाँ खण्डित हो जाओ। फिर कहो कि ठोकर लगी तो खण्डित हो गये। कितना भी कोई ठोकर लगाये लेकिन खण्डित नहीं हो। चाहे कितना भी बड़ा मोटा हेमर लगाये लेकिन खण्डित नहीं होना। तो पक्का याद रखेंगे ना। देखेंगे रिज़ल्ट। अच्छा!

ग्रुप नं. ४

स्वयं सन्तुष्ट रहना और दूसरों को सन्तुष्ट करना-यही कर्मयोगी की मुख्य निशानी है

सभी अपने को सहजयोगी अनुभव करते हो? सहज की निशानी क्या है? उसमें मेहनत नहीं होगी। वह सदा होगी, निरन्तर होगी। मुश्किल काम होता है तो सदा नहीं कर सकते। जो सहज होगा वह स्वत: और निरन्तर चलता रहेगा। तो सहज योगी अर्थात् निरन्तर योगी। कभी साधारण, कभी योगी, ऐसे नहीं? योगी जीवन है तो जीवन सदा होता है। इसलिए योग लगाने वाले नहीं, लेकिन योगी जीवन वाले। ब्राह्मण जीवन है तो योग कभी नीचे-ऊपर हो ही नहीं सकता। क्योंकि सिर्फ योगी नहीं हो लेकिन कर्मयोगी हो। तो कर्म के बिना एक सेकण्ड भी रह नहीं सकते। अगर सोये भी हो तो सोने का कर्म तो कर रहे हो

ना। तो जैसे कर्म के बिना रह नहीं सकते ऐसे योगी जीवन वाले योग के बिना रह नहीं सकते। ऐसे अनुभव करते हो या योग टूटता है, फिर लगाना पड़ता है? फिर कभी लगता है, कभी टाइम लगता है–ऐसे तो नहीं है ना। योग का सहज अर्थ ही है याद। तो याद किसकी आती है? जो प्यारा लगता है। सारे दिन में देखो कि याद अगर आती है तो प्यारी चीज़ होती है। तो सबसे प्यारे से प्यारा कौन है? (बाबा) तो सहज और स्वत: याद आयेगा ना। अगर कहाँ भी, चाहे देह में, देह के सम्बन्ध में, पदार्थ में प्यार होगा तो बाप के बदले में वो याद आयेगा। कभी-कभी देह से प्यार हो जाता तो बॉडी कान्शियस हो जाते हो। तो चेक करना है कि सिवाय बाप के और कोई आकर्षित करने वाली वस्तु या व्यक्ति तो नहीं है?

कर्मयोगी आत्मा का हर कर्म योगयुक्त, युक्तियुक्त होगा। अगर कोई भी कर्म युक्तियुक्त नहीं होता तो समझो कि योगयुक्त नहीं है। अगर साधारण कर्म होता, व्यर्थ कर्म हो जाता तो भी निरन्तर योगी नहीं कहेंगे। कर्मयोगी अर्थात् हर सेकण्ड, हर संकल्प, हर बोल सदा श्रेष्ठ है। तो सहज योगी अर्थात् कर्मयोगी और कर्मयोगी अर्थात् सहजयोगी। तो चेक करो कि सारे दिन में कोई साधारण कर्म तो नहीं होता? श्रेष्ठ हुआ? श्रेष्ठ कर्म की निशानी होगी–स्वयं सन्तुष्ट और दूसरे भी सन्तुष्ट। ऐसे नहीं–मैं तो सन्तुष्ट हूँ, दूसरे हों या नहीं हो। योगी जीवन वाले का प्रभाव स्वत: दूसरों के ऊपर पड़ेगा। अगर कोई स्वयं से असन्तुष्ट है वा और उससे असन्तुष्ट रहते हैं तो समझना चाहिये कि योगयुक्त बनने में कोई कमी है। तो सभी सन्तुष्ट रहते हो कि अपने को खुश करते हो कि मैं बिल्कुल ठीक हूँ? सभी सन्तुष्ट हैं या कोई सन्तुष्ट, कोई असन्तुष्ट? अपने से सन्तुष्ट रहते हो कि कभी कोई कमज़ोरी आती है तो असन्तुष्ट होते हो? कभी होता है या सम्पूर्ण हो गये? सन्तुष्टता योगी जीवन का विशेष लक्ष्य है। तो आपके साथियों से पूछें कि सन्तुष्ट हैं या नहीं हैं? वो हाँ कहेंगे या थोड़ी शक्ल ऐसी करेंगे? क्योंकि योगी जीवन के तीन सर्टीफिकेट हैं–एक–स्व से सन्तुष्ट और दूसरा–बाप सन्तुष्ट और तीसरा–लौकिक-अलौकिक परिवार सन्तुष्ट। तो तीनों सर्टीफिकेट हैं कि लेना है? जैसे साइन्स के साधनों का वायुमण्डल में प्रभाव पड़ता है ना, एयरकण्डीशन चलता है तो वायुमण्डल में ठण्डाई का प्रभाव पड़ता है, ऐसे ही योगी जीवन का प्रभाव होता है। ऐसा प्रभाव है? योग माना साइलेन्स की शक्ति। इसको कहा जाता

है योगी जीवन अर्थात् साइलेन्स की शक्ति वाला जीवन। तो ऐसे है कि हाँ-हाँ करते रहते हो? हर रोज़ की चेकिंग हो। चेक करेंगे तो चेंज होंगे। अच्छा!

ग्रुप नं. ५

प्रत्यक्षफल की प्राप्ति होना – यही संगमयुग की सबसे बड़ी विशेषता है

अपने को संगमयुगी ब्राह्मण आत्मायें समझते हो? संगमयुग की महिमा को अच्छी तरह से जानते हो ना? संगमयुग की सबसे बड़ी विशेषता क्या है? बाप और बच्चों का, आत्मा और परमात्मा का मेला संगम पर लगता है। इस समय संगमयुग पर है बाप और बच्चों का मेला और लोगों ने यहाँ नदियों के मेले को संगम बना दिया है। तो यह किससे कॉपी की है? इस समय को कॉपी की है ना। और संगमयुग की क्या विशेषता है जो और किसी युग की नहीं है? सबसे अच्छी विशेषता है कि संगमयुग पर ही प्रत्यक्षफल मिलता है। तो ये विशेषता है ना। सतयुग में संगम के कर्म का फल मिलेगा। लेकिन यहाँ बाप का बना और वर्सा मिला। सेवा की और सेवा करने के साथ-साथ खुशी मिली। जो भी याद में रहकर सेवा करते हो वा कोई भी कर्म करते हो तो कर्म का प्रत्यक्षफल अनुभव करते जाओ। अगर कर्म किया, सेवा की और प्रत्यक्षफल के रूप में कोई अनुभव नहीं होता तो चेक करो–क्यों फल नहीं मिला? अगर कर्म में स्वार्थ होगा, सेवा में स्वार्थ होगा तो फल नहीं मिलेगा। लेकिन योगयुक्त कर्म वा योगयुक्त यथार्थ सेवा का फल खुशी, अतीन्द्रिय सुख या डबल लाइट की अनुभूति, कोई न कोई बाप के गुणों की अनुभूति ज़रूर होती है। तो प्रत्यक्षफल खाने वाले हो ना, खाते हो? तो जो प्रत्यक्षफल खाने वाला है उसको क्या अनुभूति होगी? सदा मन और बुद्धि तन्दरुस्त होगी। अगर कमज़ोर रहती है तो समझो ताज़ा प्रत्यक्षफल नहीं खाते हो। लोग शरीर के लिये फ्रेश फ्रुट क्यों खाते हैं? हेल्थ के लिये खाते हैं ना। तो ये आत्मा के लिए प्रत्यक्षफल सदा हेल्दी बनाता है। इसलिये ही आपका स्लोगन है–एवर हेल्दी, एवर वेल्दी और एवर हैप्पी। एवर वेल्दी भी हो ना? कितने खज़ाने मिले हैं? ज्ञान का खज़ाना, शक्तियों का खज़ाना, गुणों का खज़ाना, समय का खज़ाना–सब खज़ाने हैं ना या कोई है, कोई नहीं है? इतना

ज़यादा है जो दूसरों को भी देते रहते हैं। महादानी हो ना। रोज़ देते हो या कभी-कभी देते हो? अखण्ड महादानी। चाहे मन्सा से दो, चाहे वाणी से दो, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क से दो लेकिन देना ज़रूर है। ये तो सहज है या चान्स मिलेगा तो देंगे? क्या सोचते हो? अखण्ड है ना? फ़ालो फ़ादर करने वाले हो ना? जिससे प्यार होता है उसको फ़ालो करना सहज होता है। तो बाप से कितना प्यार है? (अनलिमिटेड) तो खज़ाने भी अनलिमिटेड, सेवा भी अनलिमिटेड। बेहद है ना। हद तो नहीं है ना। सदा बेहद की खुशी, बेहद का नशा, बेहद की प्राप्ति।

डबल विदेशी इस वर्ष में क्या नवीनता करेंगे? (पुरुषार्थ में फ़र्स्ट नम्बर लेंगे) फ़र्स्ट नम्बर में तो आयेंगे लेकिन और क्या करेंगे? अपने-अपने स्थान पर जहाँ से भी आये हो, अपने सेवा स्थान वा अपने देश में सारे वायुमण्डल को ऐसा शक्तिशाली बनाओ जो सबके सब अचल रहें, कोई हलचल में नहीं आये। ये कर सकते हो? इस वर्ष एक भी ब्राह्मण हलचल में नहीं आये। ऐसा वातावरण बनाओ। इस वर्ष में यही देखेंगे। स्वयं निर्विघ्न तो बनना ही है लेकिन औरों को भी बनाना है। हिम्मत है ना?

एक, पॉइन्ट स्वरूप को अनुभव करना। दूसरा, कोई भी संकल्प, बोल वा कर्म व्यर्थ है उसको पॉइन्ट लगाना अर्थात् बिन्दी लगाना। तीसरा, ज्ञान की वा धारणा की अनेक पॉइन्ट्स को मनन कर स्व प्रति वा सेवा प्रति समय पर कार्य में लगाना।

ब्राह्मण जन्म का आदि वरदान – स्नेह की शक्ति

18-1-94

स्नेह की शक्ति के वरदान द्वारा असम्भव को सम्भव बनाने वाले स्नेह के सागर बापदादा बोले–

आज चारों ओर के सर्व बच्चों की स्नेह भरी स्मृति-ाँ समर्थ बापदादा के पास स्नेह के सागर समान पहुँच गई। हर एक बच्चे के दिल में दिलाराम समा-ाा हुआ है और दिलाराम के दिल में सर्व स्नेही बच्चे समा-ो हुए हैं। स्नेह बहुत बड़ी शक्ति है।

* स्नेह की शक्ति मेहनत को सहज कर देती है। जहाँ मोहब्बत है वहाँ मेहनत नहीं होती। मेहनत मनोरंजन बन जाती है। खेल लगता है।
* स्नेह की शक्ति देह और देह की दुनि-ाा सेकण्ड में भूला देती है। स्नेह में जो भुलाना चाहें वह भुला सकते हैं, जो -ाद करना चाहें उसमें समा जाते हैं।
* स्नेह की शक्ति सहज समर्पण करा देती है।
* स्नेह की शक्ति बाप समान बना देती है।
* स्नेह सदा हर सम-ा परमात्म साथ का अनुभव कराता है।
* स्नेह सदा अपने ऊपर बाप की दुआओं का हाथ छत्रछा-ाा समान अनुभव कराता है।
* स्नेह असम्भव को सम्भव इतना सहज कर देता जैसे का-र्ा हुआ ही पड़ा है।
* स्नेह निष्पल (हर सम-ा)निश्चिन्त अनुभव कराता है।
* स्नेह हर कर्म में निश्चित विज-ाी स्थिति का अनुभव कराता है। ऐसे स्नेह की शक्ति अनुभव करते हो ना?

बापदादा जानते हैं कि अनेक जन्म अनेक प्रकार की मेहनत कर थकी हुई आत्मा-ों हैं। भिन्न-भिन्न बन्धनों में बन्धी हुई आत्मा-ों होने के कारण मेहनत करती रही हैं। इसलि-ो बापदादा मेहनत से मुक्त होने के लि-ो सहज विधि 'स्नेह की शक्ति' सभी बच्चों को वरदान में देते हैं। अपने ब्राह्मण जीवन के आदि सम-ा को -ाद करो। तो जन्मते ही सभी को स्नेह की शक्ति ने ही न-ाा जीवन दि-ाा। स्नेह की अनुभूति के लि-ो मेहनत की? मेहनत करनी पड़ी? सहज अनुभव कि-ाा ना।

तो -ाह आदि जन्म की अनुभूति ही वरदान है। प्-ार-प्-ार में ही खो ग-े। सदा इस स्नेह के वरदान को स्मृति में रखो। मेहनत के सम-ा इस वरदान द्वारा मेहनत को परिवर्तन कर सकते हो। बापदादा को बच्चों का मेहनत अनुभव करना अच्छा नहीं लगता। स्नेह की शक्ति की विस्मृति मेहनत अनुभव कराती है।

* कितनी भी बड़ी कैसी भी परिस्थिति हो प्-ार से, स्नेह से परिस्थिति रूपी पहाड़ भी परिवर्तन हो पानी समान हल्का बन सकता है। पत्थर को पानी बना सकते हो। कैसा भी मा-ा का विकराल रूप वा रॉ-ाल रूप सामना करे तो सेकण्ड में स्नेह के सागर में समा जाओ तो सामना करने की मा-ा की शक्ति समाप्त हो जा-ेगी। आपके समाने की शक्ति छू-मन्त्र नहीं लेकिन शिव-मन्त्र बन जा-ेगी। सबके पास शिव-मन्त्र की शक्ति है ना कि खो जाती है? शिव स्नेह में समा जाओ, सिर्फ डुबकी मारकर नहीं निकल आओ। थोड़ा सम-ा स्मृति में रहते हो–मीठा बाबा, प्-ारा बाबा, तो डुबकी लगाकर फिर निकल आते हो तो मा-ा की नज़र पड़ जाती है। समा जाओ, तो मा-ा की नज़र से दूर हो जा-ेंगे। और कुछ भी नहीं आए तो स्नेह की शक्ति जन्म का वरदान है। उस वरदान में खो जाओ। खो जाना नहीं आता है? स्नेह तो सहज है ना! सबको अनुभव है ना! कोई है जिसको ब्राह्मण जीवन में रूहानी स्नेह का अनुभव नहीं हो, है कोई?

* स्नेह ही सहज -ोग है, स्नेह में समाना ही सम्पूर्ण ज्ञान है।
* आज के दिन का महत्व भी स्नेह है।

अमृतवेले से विशेष किस लहर में लहरा रहे हो? बापदादा के स्नेह में ही लहरा रहे हो। सर्व आत्माओं के अन्दर एक बाप के सिवा-ा और कुछ -ाद रहा? सहज -ाद रही ना कि मेहनत करनी पड़ी? तो सहज कैसे बनी? स्नेह के कारण। तो व-ा सिर्फ आज का दिन स्नेह का है? संगम-ुग है ही परमात्म-स्नेह का -ुग। तो -ुग के महत्व को जान स्नेह की अनुभूति-ों को अनुभव करो। स्नेह का सागर स्नेह के हीरे-मोति-ों की थालि-ाँ भरकर दे रहे हैं। तो अपने को सदा भरपूर करो। थोड़े से अनुभव में खुश नहीं हो जाओ। सम्पन्न बनो। भविष्-ा में तो स्थूल हीरे-मोति-ों से सजेंगे। -ो परमात्म-प्-ार के हीरे-मोती अनमोल हैं, तो इससे सदा सजे सजा-ो रहो।

चारों ओर के बच्चों की -ाद, स्नेह के गीत बापदादा सदा भी सुनते रहते

हैं लेकिन आज विशेष स्नेह स्वरूप बच्चों को स्नेह के रिटर्न में सदा स्नेही भव, सदा स्नेह के वरदान द्वारा सहज उड़ती कला का विशेष फिर से वरदान दे रहे हैं। सदा जैसे छोटे बच्चे होते हैं, कोई भी मुश्किल बात आ-ोगी वा कोई भी परिस्थिति आ-ोगी तो मात-पिता की गोदी में समा जा-ोंगे, ऐसे सेकण्ड में स्नेह की गोदी में समा जाओ तो मेहनत से बच जा-ेंगे। सेकण्ड में उड़ती कला द्वारा बापदादा के पास पहुँच जाओ तो कैसे भी स्वरूप में आई हुई मा-ा दूर से भी आपको छू नहीं सकेगी। क-ोंकि परमात्म-छत्रछा-ा के अन्दर तो क-ा लेकिन दूर से भी मा-ा की छा-ा आ नहीं सकती। तो बच्चा बनना अर्थात् मा-ा से बचना। बच्चा बनना तो अच्छा है ना। बच्चा बनने का अर्थ ही है स्नेह में समा जाना। अच्छा!

चारों ओर के दिलाराम के दिल में समा-ो हुए बच्चों को, सदा मेहनत को मोहब्बत में परिवर्तन करने वाली शक्तिशाली आत्माओं को, सदा परमात्म-स्नेह के संगम-ुग को महान् अनुभव करने वाली श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा स्नेह की शक्ति से बाप के साथ और दुआओं के हाथ को अनुभव कर औरों को भी कराने वाली विशेष आत्माओं को, सदा स्नेह के सागर में समा-ो हुए समान बच्चों को स्नेह के सागर बापदादा का -ाद-प्-ार और नमस्ते।

दादि-ों से मुलाकात

आज के दिन क-ा-क-ा -ाद आ-ा? विशेष विल पॉवर के हाथ -ाद आ-ो? विल पॉवर सब का-र्ा सहज करा देती है। ब्रह्मा बाप ज्-ादा -ाद आ-ा -ा बाप-दादा दोनों -ाद रहे? फिर भी ब्रह्मा बाप की -ाद के चरित्र सभी को विशेष -ाद आते रहे। ब्रह्मा बाप ब्रह्मा बना ही तब जब बाप-दादा कम्बाइन्ड हुए। परमात्म-प्रवेशता के साथ ही ब्रह्मा का कर्तव्-ा शुरु हुआ। इस अव्-ाक्त स्वरूप के अव्-ाक्त रूप के चरित्र भी न्-ारे और प्-ारे हैं। २५ वर्ष की सेवा की हिस्ट्री आदि से -ाद करो–कितनी तीव्र गति की हिस्ट्री है। अव्-ाक्त होना अर्थात् तीव्र गति से सर्व का-र्ा होना। सम-ा का परिवर्तन भी फ़ास्ट और सेवा की वृद्धि की गति भी फ़ास्ट। फ़ास्ट हुई है ना? इसलि-ो अव्-ाक्त होने से सम-ा को भी तीव्र गति मिली है तो सेवा को भी तीव्र गति मिली है। अव्-ाक्त पार्ट में आने वाली आत्माओं को भी

पुरुषार्थ में तीव्र गति का भाग-ा सहज मिला हुआ है। अव्-ाक्त पार्ट में आई हुई आत्माओं को लास्ट सो फ़ास्ट, फ़ास्ट सो फ़र्स्ट का वरदान प्राप्त है। (सभा से)

वरदान को का-र्ा में लगाओ, सिर्फ स्मृति तक नहीं। सम-ा प्रमाण वरदान को स्वरूप में लाओ। वरदान को स्वरूप में लाने से स्वत: ही फ़ास्ट गति का अनुभव करेंगे। अव्-ाक्त पालना सहज ही शक्तिशाली बनाने वाली है। इसलि-ो जितना आगे बढ़ना चाहो, बढ़ सकते हो। बापदादा और निमित्त आत्माओं की आप सबके ऊपर विशेष सदा आगे उड़ने की दुआएं हैं। ऐसे है ना? दादि-ों की भी दुआएं हैं। सिर्फ फा-ादा ले लो। मिलता बहुत है, -ाूज़ कम करते हो। सिर्फ बुद्धि के किनारे रखते नहीं रहो, खाओ, खर्च करो। आता है -ाूज़ करना, खर्च करना आता है कि सम्भाल कर रखते हो? बहुत अच्छा, बहुत अच्छा--ो सम्भाल कर रखना है। अच्छाई को स्व-ं प्रति और दूसरों के प्रति का-र्ा में लगाओ। -ाहाँ खर्चना अर्थात् बढ़ाना है। जैसे आजकल का फ़ैशन है ना–जो अमूल-ा चीज़ होती है वह कहाँ रखते हैं? (लॉकर में) -ाूज़ नहीं करते, लॉकर में रखते हुए खुश होते हैं। तो कई बार ऐसे करते हैं–पॉइन्ट बड़ी अच्छी है, विधि बड़ी अच्छी है, सिर्फ बुद्धि के लॉकर में देखकर खुश हो जाते हैं। तो आप सभी लॉकर में रखते हो -ाा -ाूज़ करते हो? अच्छा!

पाण्डव सेना का क-ाा हाल है? (अच्छा है) सिर्फ अच्छा-अच्छा कहने वाले तो नहीं ना। ऐसी सेना तै-ाार हो जो सेकण्ड में जो ऑर्डर मिले कर ले। ऐसे तै-ाार हैं? शक्ति सेना तै-ाार है? शक्ति-ों की सेवा अपनी है, पाण्डवों की सेवा अपनी है। पाण्डवों के सह-ोग के बिना भी शक्ति-ां नहीं चल सकती, शक्ति-ों के सह-ोग के बिना भी पाण्डव नहीं चल सकते।

(दादी जी ने मैक्सिको की कानफ्रेन्स का समाचार बापदादा को सुना-ाा)

अच्छा है साइन्स वाले तो काम में लगे ही हैं। प्र-ोग करने में साइन्स वाले होशि-ार होते हैं ना। तो एक भी अच्छी तरह से -ोगी और प्र-ोगी बन ग-ाा तो बड़े से बड़े माइक का काम करेगा।

(लास एंजिलिस में भूकम्प आ-ाा है) -ो सम-ा के तीव्र गति की निशानि-ां सम-ा प्रति सम-ा प्रकृति दिखा रही है। अच्छा!

अव्-ावक्त बापदादा की पर्सनल मुलाकात

ग्रुप नं. १

फल की इच्छा छोड़ रहमदिल बन शुभ भावना का बीज डालते चलो

बापदादा द्वारा सर्व बच्चों को इस संगम-ुग पर विशेष कौन-सा खज़ाना मिला हुआ है? खज़ाने तो बहुत हैं लेकिन विशेष खज़ाना खुशी का खज़ाना है। तो खुशी का खज़ाना कितना श्रेष्ठ मिला है। तो -ाह सदा साथ रहता है -ाा कभी किनारे भी हो जाता है? जब अनगिनत मिलता है तो हर सम-ा खज़ाने को का-र्ा में लगाना चाहिए ना। लोग किनारे इसीलिए रखते हैं कि आइवेल में काम में आ-ोगा। लेकिन आपके पास तो अथाह है। इस जन्म की तो बात छोड़ो लेकिन अनेक जन्म -ाह खुशी का खज़ाना साथ रहेगा। अनगिनत है तो -ूज़ करो ना। बापदादा ने पहले भी सुना-ाा है कि प्राण चले जा-ें लेकिन खुशी नहीं जा-ो। इसलि-ो खुशी को कभी भी किनारे नहीं रखो और ही महादानी बनो। क-ोंकि वर्तमान सम-ा और कुछ भी मिल सकता है लेकिन सच्ची खुशी नहीं मिल सकती। अल्पकाल की खुशी प्राप्त करने के लि-ो लोग कितना सम-ा वा धन खर्च करते हैं फिर भी सच्ची खुशी नहीं मिलती। तो ऐसे आवश-ाकता के सम-ा आप आत्माओं को महादानी बनना है। कैसी भी अशान्त आत्मा, दु:खी आत्मा हो अगर उसको खुशी की अनुभूति करा दो तो कितनी दिल से दुआ-ें देगी। आप दाता के बच्चे हो तो फ्राकदिली से बांटो। बांटना तो आता है ना? तो क-ों नहीं बांटते हो? सम-ा को देख रहे हो? दिल से रहम आना चाहि-ो। जो अशान्ति-दु:ख में भटक रहे हैं वो आपका परिवार है ना। परिवार को सह-ोग दि-ाा जाता है ना। तो वर्तमान सम-ा महादानी बनने के लि-ो विशेष रहमदिल के गुण को इमर्ज करो। आपके जड़ चित्र वरदान दे रहे हैं। तो आप भी चैतन-ा में रहम दिल बन बांटते जाओ। क-ोंकि परवश आत्मा-ें हैं। कभी भी -ो नहीं सोचो कि -ो तो सुनने वाले नहीं हैं, -ो तो चलने वाले नहीं हैं। नहीं, आप रहमदिल बनो, देते जाओ। गा-ाा हुआ है कि भावना का फल मिलता है। तो चाहे आत्माओं में ज्ञान के प्रति, -ोग के प्रति शुभ भावना नहीं भी हो लेकिन आपकी शुभ भावना उनको फल दे देती है। ऐसे नहीं सोचो कि इतना कुछ सेवा की लेकिन फल तो मिला ही नहीं। लेकिन फल एक जैसे नहीं होते। कोई सीज़न का फल होता है, कोई सदा का फल होता है। तो सीज़न का फल सीज़न पर ही फल देगा ना। तो आपने शुभ

भावना का बीज डाला, अगर सीज़न का फल होगा तो सीज़न में निकलेगा ही। वैसे भी देखो जो खेती का काम करते हैं, तो जो सीज़न पर चीज़ निकलने वाली होती है तो -े नहीं सोचते हैं कि ६ मास के बाद -े निकलेगा इसलि-े बीज डालो ही नहीं। तो आप भी बीज डालते चलो। सम-ा पर सर्व आत्माओं को जगना ही है। आपकी रहम भावना, शुभ भावना फल अवश-ा देगी। अगर कोई आपोजिशन भी करता है तो भी आपको अपने रहम की भावना छोड़नी नहीं है और ही सोचो कि -े आपोजिशन -ा इन्सल्ट, गालि-ां--े खाद का काम करेंगी। तो खाद पड़ने से अच्छा फल निकलेगा। जितनी गालि-ां देंगे, उतना आपके गुण गा-ेंगे। इसलि-े हर आत्मा को दाता बन देते जाओ। अच्छा माने तो दें, नहीं। -े तो लेवता हो ग-े? लेने की इच्छा नहीं रखो कि वो अच्छा बोले, अच्छा माने तो दें। नहीं। इसको कहा जाता है दाता के बच्चे मास्टर दाता। चाहे वृत्ति द्वारा, चाहे वा-ाब्रेशन्स द्वारा, चाहे वाणी द्वारा देते जाओ। इतने भरपूर हो ना? सब खज़ाने हैं?

डबल विदेशि-ों को देख बापदादा डबल खुश होते हैं क-ों? डबल पुरुषार्थ करते हैं। एक तो अपना रीति-रस्म परिवर्तन करने का भी पुरुषार्थ करते हैं। बापदादा देखते हैं कि उमंग-उत्साह मैजारिटी में अच्छा है। अगर कभी उमंग-उत्साह बीच-बीच में नीचे-ऊपर होता है तो आज विधि सुनाई कि समा जाओ, स्नेह की गोदी में छिप जाओ, फिर मा-ा आ-ोगी ही नहीं। -े तो सहज है ना। बीज रूप होने में मेहनत है, इसमें मेहनत नहीं है। और कुछ भी नहीं आ-े लेकिन स्नेह में समाना तो आता है कि -े मुश्किल है? (नहीं) तो -े करो। अभी मुश्किल शब्द नहीं बोलना। नीचे आते हो तो छोटी-सी चीज़ बड़ी लगती है, ऊपर चले जाओ तो बड़ी चीज़ भी छोटी लगेगी। फ़रिश्ते हो -ा साधारण मानव हो? (फ़रिश्ता) फ़रिश्ता कहाँ रहता है? ऊपर रहता है -ा नीचे? (ऊपर) तो नीचे क-ों ठहरते हो, अच्छा लगता है? कभी-कभी दिल होती है नीचे आने की? नहीं, फिर क-ों आते हो? बाप का साथ छोड़ते हो तब नीचे आते हो।

तो डबल विदेशि-ों को डबल पुरुषार्थ का प्रत-ाक्ष फल डबल चांस है। इसका फ़ा-ादा लो। इस वर्ष में क-ा करेंगे? डबल सर्विस। महादानी-वरदानी बनेंगे -ा खुद बाप के आगे कहेंगे शक्ति दे दो औरों को भी शक्ति-ां दो। अच्छा है, हिम्मत रखने में नम्बर ले लि-ा। अभी फ़ास्ट पुरुषार्थ कर आगे उड़ते चलो।

ग्रुप नं. २

एक बल एक भरोसे द्वारा सदा एकरस स्थिति का अनुभव करो

सभी एक बल एक भरोसे का अनुभव करते हो? एक बल, एक भरोसे वाले की निशानी क्-ाा होगी? एक बल, एक भरोसे में रहने वाली आत्मा सदा एक रस स्थिति में स्थित होगी। एकरस स्थिति अर्थात् सदा अचल, हलचल नहीं। तो ऐसे रहते हो कि कभी हलचल, कभी अचल? हलचल के सम-ा एक बल, एक भरोसा कहेंगे -ाा अनेक बल, अनेक भरोसा कहेंगे? जब एक बाप द्वारा सर्वशक्ति-ाँ प्राप्त हो जाती हैं तो एक बल, एक भरोसा चाहि-े ना। एक को भूलते हो तभी हलचल होती है। तो अचल रहने वाले हो ना?

-हाँ आपका -ाादगार कौन-सा है? अचल घर है -ाा हलचल घर है? -ाा अचल घर कभी हलचल घर हो जाता है! -ाादगार आपका ही है ना। फिर हलचल में क्-ाों आते हो? प्रैक्टिकल का ही -ाादगार बना है ना। तो सदा -े -ााद करो कि एक बल एक भरोसे में रहने वाले हैं। क्-ाोंकि भक्ति में अनेक के ऊपर भरोसा रखकरके अनुभव कर लि-ाा ना तो क्-ाा मिला? सब कुछ गंवा लि-ाा ना। सत-ुग का इतना सारा धन कहाँ गंवा-ाा? भक्ति में गँवा-ाा ना। अच्छी तरह से अनुभव कर लि-ाा ना। तो जब भी कोई ऐसे हलचल की परिस्थिति आती है तो अपने -ाादगार अचल घर को -ााद करो। जब -ाादगार ही अचल घर है तो मैं कैसे हलचल में आ सकती हूँ! -े तो सहज -ााद आ-ेगा ना।

एकरस स्थिति का अर्थ ही है कि एक द्वारा सर्व सम्बन्ध, सर्व प्राप्ति-ाों के रस का अनुभव करना। तो अनुभव होता है कि बीच-बीच में और कोई सम्बन्ध भी खींचता है? जब सर्व सम्बन्ध एक द्वारा अनुभव होता है तो दूसरे सम्बन्ध में आकर्षण होने की तो बात ही नहीं है। सर्व सम्बन्ध का अनुभव है कि कोई-कोई सम्बन्ध का अनुभव है? सर्व सम्बन्ध से बाप को अपना बना-ाा है कि कोई सम्बन्ध किनारे रख दि-ाा है? सर्व हैं कि एक-दो में अटेन्शन जाता है? कोई का भाई में, कोई का बच्चे में, कोई का पोत्रे में! नहीं? निभाना अलग चीज़ है, आकर्षित होना अलग चीज़ है। तो नष्टोमोहा हो? पाण्डवों को पैसे कमाने में मोह नहीं है? ट्रस्टी होकर कमाना अलग चीज़ है। लगाव से कमाना, मोह से कमाना अलग चीज़ है।

कभी धन में मोह जाता है? थोड़ा-थोड़ा जाता है? क-ा होगा, कैसे होगा, जमा कर लें, कुछ कर लें, पता नहीं कितने वर्ष के बाद विनाश होता है, दस वर्ष लगते हैं -ा ५० वर्ष लगते हैं.. -ो नहीं आता? नष्टोमोहा बनकर, ट्रस्टी बनकरके चलना और मोह से चलना कितना अन्तर है! नष्टोमोहा की निशानी क-ा होगी? कभी कमाने में, धन सम्भालने में दु:ख की लहर नहीं आ-ोगी। कभी कम, कभी ज़-ादा में दु:ख की लहर आती है? पोत्रा-धोत्रा थोड़ा बीमार हो ग-ा तो दु:ख की लहर आती है? नष्टोमोहा हैं? कुछ भी हो जा-ो बेफ़िक्र हो? नष्टोमोहा अर्थात् दु:ख और अशान्ति का नाम-निशान नहीं। ऐसे हो -ा बनना है? तो एक बल, एक भरोसा अर्थात् ज़रा भी दु:ख के लहर की हलचल नहीं हो। सदा -ो स्मृति स्वरूप हो कि सदा एक बल, एक भरोसे वाले हैं और आगे भी सदा रहेंगे। खुशी रहे कि मैं ही था, मैं ही हूँ और मैं ही बनूँगा। अच्छा!

ग्रुप नं. ३

स्थिति का आधार स्मृति है, स्मृति का परिवर्तन कर कर्म में श्रेष्ठता लाओ

सभी अपने को संगम-ुगी पुरुषोत्तम आत्मा-ें अनुभव करते हो? पुरुषोत्तम अर्थात् पुरुषों में उत्तम पुरुष। तो अभी साधारण नहीं हो पुरुषोत्तम हो। क-ोंकि ब्राह्मण अर्थात् श्रेष्ठ। ब्राह्मणों को सदा ऊंचा दिखाते हैं। मुख वंशावली दिखाते हैं ना। तो ब्राह्मण बन ग-ो अर्थात् श्रेष्ठ बन ग-ो। साधारण पुरुष आप पुरुषोत्तम आत्माओं की पूजा करते हैं क-ोंकि ब्राह्मण अर्थात् पवित्र बन ग-ो ना। तो पवित्रता की ही पूजा होती है। साधारण आत्मा भी पवित्रता को धारण करती है तो महान् आत्मा कहलाती है। तो आप सब पवित्र आत्मा-ें हो ना कि मिक्स आत्मा हो? थोड़ी-थोड़ी अपवित्रता, थोड़ी-थोड़ी पवित्रता! नहीं। पवित्र आत्मा बन ग-ो। तो पवित्रता ही श्रेष्ठता है। पवित्रता ही पूज-ा है। तो -ो नशा रहता है कि हम पुजारी से पूज-ा बन ग-ो? ब्राह्मणों की पवित्रता का गा-ान है। कोई भी शुभ का-र्ा होगा तो ब्राह्मणों से करा-ोंगे। अशुभ का-र्ा ब्राह्मणों से नहीं करा-ोंगे। अशुभ का-र्ा ब्राह्मण करें तो कहेंगे -ो नाम का ब्राह्मण है, काम का नहीं। तो आप नामधारी हो -ा कामधारी? नामधारी ब्राह्मण तो बहुत हैं। लेकिन आप जैसा नाम वैसा काम

करने वाले हो। साधारण आत्मा नहीं हो, विशेष आत्मा हो। -ो खुशी है ना। कल साधारण थे और आज विशेष बन ग-ो। तो विशेष आत्मा समझने से जैसी स्मृति होगी वैसी स्थिति होगी और जैसी स्थिति वैसे कर्म होंगे। चेक करो जब स्थिति कमज़ोर होती है तो कर्म कैसे होते हैं। कर्म में भी कमज़ोरी आ जा-ोगी और स्थिति शक्तिशाली तो कर्म भी शक्तिशाली होंगे। तो स्थिति का आधार है स्मृति। स्मृति खुशी की है तो स्थिति भी खुश। कर्म भी खुशी-खुशी से करेंगे। फ़ाउन्डेशन है स्मृति। तो बाप ने स्मृति बदल ली। साधारण से विशेष आत्मा बने तो स्मृति चेंज हो गई। चाहे कर्म साधारण हों लेकिन साधारण कर्म में भी विशेषता हो। मानो खाना बना रहे हो तो -ो तो साधारण कर्म है ना, सब करते हैं लेकिन आपका खाना बनाना और दूसरों के खाना बनाने में फ़र्क होगा ना। आपके -ाद का भोजन और साधारण भोजन में अन्तर है। वो प्रसाद है, वो खाना है। तो विशेषता आ गई ना। -ाद में जो खाना खाते हो -ा बनाते हो तो उसको ब्रह्मा भोजन कहते हैं। तो सदा -ाद रखना कि पुरुषोत्तम विशेष आत्मा-ें बन ग-ो तो साधारण कर्म कर नहीं सकते।

ग्रुप नं. ४

सदा विघ्न विनाशक बनने के लिए अपने मस्तक पर परमात्म हाथ का अनुभव करो

म्बे में सबसे ज-ादा पूजा किसकी होती है? गणेश की। गणेश को विघ्न विनाशक कहते हैं। आप सब विघ्न विनाशक हो? कोई विघ्न के वश तो नहीं होते हो? विघ्न विनाशक कौन बनता है? जिसमें सर्वशक्ति-ाँ हैं वही विघ्न विनाशक है। तो सर्वशक्ति-ां आपका जन्म-सिद्ध अधिकार हैं। सदा -ो नशा रखो कि मैं मास्टर सर्वशक्तिमान् हूँ और सर्वशक्ति-ों को सम-ा प्रमाण कार्-ा में लगाओ। ऐसे नहीं कि सम-ा पर कार्-ा में नहीं लगाओ, सम-ा बीत जाने के बाद सोचो कि ऐसे करना चाहि-ो था। तो सभी विघ्न विनाशक हो? फ़लक से कहो कि हम मास्टर विघ्न विनाशक हैं। कितने भी रूप से मा-ा आ-ो लेकिन आप नॉलेजफुल बनो। मा-ा की भी नॉलेज है ना। अच्छी तरह से समझ ग-ो हो -ा

कभी घबरा जाते हो, न-ा रूप समझते हो। मा-ा से घबराते हो? कभी हार, कभी वार–ऐसे तो नहीं? मा-ा का जन्म कैसे होता है, पता है? जानते भी हो कि मा-ा का जन्म ऐसे होता है फिर भी जन्म दे देते हो! मा-ा से प्-ार है क-ा? तो नॉलेजफुल आत्मा कभी भी मा-ा से हार नहीं खा सकती। मा-ाजीत का टाइटल है, मा-ा से हार खाने वाले नहीं। बापदादा का सदा हाथ और साथ है तो सदा मा-ाजीत हैं। तो सदा साथ है -ा कभी अकेले भी हो जाते हो? कम्बाइन्ड रहते हो ना। अपने मस्तक पर सदा ही बाप की दुआओं का हाथ अनुभव करो। तो जिसके ऊपर परमात्म हाथ है वो विघ्न विनाशक होगा ना। जिसके ऊपर दुआओं का हाथ है वो सदा निश्चित और निश्चिन्त रहता है। सभी के मस्तक पर विज-ा का तिलक लगा हुआ है। -ाह अविनाशी तिलक है। तो विज-ा के तिलकधारी अर्थात् विघ्न विनाशक। सदा अमृतवेले विज-ा के तिलक को स्मृति में लाओ। भक्त भी रोज़ तै-ार होकर तिलक ज़रूर लगा-ेंगे। आपका तो अविनाशी तिलक है ही।

सभी सदा खुश रहते हो -ा खुशी कभी कम होती है, कभी बढ़ती है? ब्राह्मण जीवन की खुराक खुशी है। तो सदा खुराक खाते हो -ा कभी-कभी खाते हो? खुश नसीब हैं और खुशी की खुराक खाने वाले हैं और खुशी बांटने वाले हैं – -ो -ाद रहता है? दिल से निकलता है कि मेरे जैसा खुशनसीब और कोई हो नहीं सकता? सारे विश्व में और कोई है? लण्डन की महारानी वा अमेरिका का प्रेज़ीडेन्ट है? कोई नहीं? अगर लण्डन की रानी आपको ताज तख्त दे तो लेंगे? नहीं लेंगे? अभी भी ले लो, भविष्-ा में भी ले लेना। तख्त पर बैठेंगे तो ऑर्डर तो करेंगे ना। (बाबा का तख्त मिला है उस तख्त की ज़रूरत नहीं है) वो तख्त आजकल तख्त नहीं है, तख्ता है। इतना फ़िक्र होता है। और आप बेफ़िक्र बादशाह हो। ऐसी बेफ़िक्र जीवन, सारे कल्प में इस सम-ा जो अनुभव करते हो वो और कोई -ाुग में नहीं है। सत-ाुग में बेफ़िक्र होंगे लेकिन अभी आपको ज्ञान है कि फ़िक्र क-ा है, बेफ़िक्र क-ा है? वहाँ ज्ञान नहीं होगा।

बाम्बे वाले डबल बेफ़िक्र हो! क-ोंकि बाम्बे वालों को पता है कि बाम्बे अगर गई तो हम तो ठीक ही रहेंगे। देखो ना हलचल होती है लेकिन ब्राह्मण तो सेफ़ होते हैं। -ोग-ाुक्त आत्मा स्वत: ही सेफ़ हो जाती है। तो बाम्बे वाले डरते

तो नहीं हैं ना कि सागर आ जा-ोगा! पहले से ही नष्टोमोहा हो ग-ो। अच्छा, बाम्बे वालों ने क-ाा न-ाा प्लैन बना-ाा है? (कार -ात्रा का न-ाा बना-ाा है।) इससे माइक निकलेंगे ना? बाम्बे विश्व में बिज़नेस में नम्बरवन है। तो ज्ञान की बिज़नेस में कितना नम्बर है? वन नम्बर है ना। नम्बर टू तो चन्द्रवंश हो जा-ोगा। नम्बरवन सू-र्विंश। तो सू-र्विंशी हैं -ाा चन्द्रवंशी? सबमें नम्बर है तो इसमें पीछे कैसे हो सकता है। बाम्बे वालों ने साकार पालना भी ली है। -ो भी बाम्बे का भाग-ा है। अभी भी निमित्त बनी हुई बाप समान आत्माओं की पालना मिल रही है ना। तो इसमें भी नम्बरवन हो। देखना, फिर कभी टू, कभी वन नहीं बनना। सदा नम्बरवन रहना। बाम्बे वालों में हिम्मत अच्छी है। सेवा के क्षेत्र में, हर का-र्ा में हिम्मत रखते हैं। और जो हिम्मत रखते हैं उसको बाप की गुप्त मदद स्वत: ही मिलती है। और मदद की निशानी है कि हर का-र्ा सहज होता है। तो सहज लगता है -ाा कभी मुश्किल भी लगता है? मुश्किल को सहज बनाने वाले औरों की मुश्किल को मिटाने वाले हो। तो मुश्किल को सहज करने वाले ही विघ्न विनाशक हैं। अच्छा!

ग्रुप नं. ५

-ाद की शक्ति द्वारा सेकण्ड में मन-बुद्धि को एकाग्र करना और सेवा द्वारा ख़ज़ानों को बढ़ाना--ाह बैलेन्स ही ब्लैसिंग प्राप्त करने का साधन है

दा -ाद और सेवा दोनों का बैलेन्स रखने वाले हो? क-ोंकि -ाद से जो शक्ति-ों की वा गुणों की प्राप्ति होती है वो सेवा द्वारा औरों को देना है। तो दोनों ही अच्छी तरह से चेक करते हो? कि कभी सेवा ज-ाादा होती तो -ोग कम, कभी -ोग ज़-ाादा तो सेवा कम–ऐसे तो नहीं होता? सेवा करने से, जो खज़ाने मिले हुए हैं वह बढ़ते हैं, तो बढ़ाने की विधि आती है ना? तो सेवा में होशि-ार हो -ाा -ाद में होशि-ार हो? -ाद की शक्ति का अर्थ है कि जहाँ बुद्धि को लगाना चाहो, वहाँ लग जा-ो। ऐसी शक्ति है? जब चाहो, जहाँ चाहो, अपनी बुद्धि को लगा सकते हो -ाा टाइम लगेगा? कितने टाइम में लगा सकते हो? कोई भी वा-ुमण्डल है लेकिन कैसे भी वा-ुमण्डल के बीच अपने मन को, बुद्धि को कितने सम-ा में एकाग्र कर सकते हो? (सेकण्ड में) कहते हो -ाा करते

हो? कहना तो सहज है लेकिन एकाग्रता की शक्ति है वा नहीं है–वह सम-ा पर मालूम पड़ता है। परिस्थिति हलचल की हो, वा-ुमण्डल तमोगुणी हो, मा-ा अपने हिम्मत से अपना बनाने का प्र-ात्न कर रही हो फिर सेकण्ड में एकाग्र हो सकते हो -ा टाइम लगेगा? -ो अभ-ास सदा करते रहो तो सम-ा पर शक्ति का-र्ा में ला सकते हो। इसको कहा जाता है जब चाहे, जहाँ चाहे वहाँ स्थित हो सकते हैं। कितना भी व्-ार्थ संकल्पों का तूफ़ान हो लेकिन सेकण्ड में तूफ़ान आगे बढ़ने का तोहफ़ा बन जा-ो। ऐसी कन्ट्रोलिंग पॉवर हो तो ऐसी शक्तिशाली आत्मा कभी -ो संकल्प भी नहीं ला-ेगी कि चाहते तो नहीं, लेकिन हो जाता है। जो सोचा वो हुआ। ऐसे नहीं, सोचते हैं नहीं होना चाहि-ो और हो जा-ो। क-ोंकि अगर सम-ा पर कोई भी शक्ति काम में नहीं आई तो प्राप्ति के बजा-ा पश्चाताप करना पड़ता है। तो प्राप्ति स्वरूप बनो। बापदादा ने सभी आत्माओं को सर्वशक्ति-ाँ वर्से में दे दी। तो वर्से वाली चीज़ सदा -ाद रहती है। फ़लक से कहेंगे ना कि -ो शक्ति-ाँ हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार हैं।

सदा 'एक बाप दूसरा न कोई' इसी अनुभव में रहते हो ना? बस एक है, कि दूसरा-तीसरा भी हो जाता है? एक बाप ही संसार बन ग-ा। कोई आकर्षण नहीं, कोई कर्मबन्धन नहीं। अपने कोई कमज़ोर संस्कार का भी बन्धन नहीं? कोई कमज़ोर संस्कार हैं? कोई पुराना संस्कार अभी तक है? कभी थोड़ा रोब आता है? कभी छोटों के ऊपर रोब आता है? (क्रोध आता है) क्रोध तो रोब से भी बड़ा है। क्रोध आता है तो इसका अर्थ है कर्म का बन्धन है। पाण्डवों में क्रोध आता है और माताओं में मोह आता है। अभिमान भी आता है–मैं पुरुष हूँ, कभी बच्चों पर, कभी माताओं पर अभिमान आता है मैं बड़ा हूँ। अधिकार रखते हो कि -ो क-ों कि-ा! मेरी है, -ो समझते हो? सेवा के साथी हैं, न कि मेरे का अधिकार है। मेरा समझने से ही क्रोध, अभिमान -ा मोह आता है। अगर मेरा नहीं तो क्रोध भी नहीं आ-ेगा। माता-ें, बच्चों के ऊपर क्रोध करती हो? जब बहुत चंचलता करते हैं तो क्रोध नहीं करती?

जब बाप संसार है, मेरा बाबा है तो और सब मेरा-मेरा एक मेरे बाप में समा जाता है। तो अभी दिल में क-ा आता है? मेरा -ा तेरा? जैसे भक्ति में कहते हैं तेरा लेकिन मानते हैं मेरा तो ऐसे तो नहीं करते ना। मेरापन ही बोझ है, तो बोझ

को छोड़ना अच्छी बात है ना। तो सदा -ाह -ाद रखो कि हम -ाद और सेवा का बैलेन्स रखने वाले बाप के ब्लैसिंग के अधिकारी आत्मा-ें हैं।

ग्रुप नं. ६

सन्तुष्ट रहने का दृढ़ संकल्प लो तो सफ़लता सदा साथ रहेगी

कभी आवाज़ से परे रहना सहज अनुभव करते हो वा आवाज़ में आना सहज अनुभव करते हो? सहज क-ाा है? आवाज़ में आना -ाा आवाज़ से परे होना? आवाज़ से परे होना अर्थात् अशरीरी स्थिति का अनुभव होना। तो शरीर के भान में आना जितना सहज है, उतना ही अशरीरी होना भी सहज है कि मेहनत करनी पड़ती है? सेकण्ड में आवाज़ में तो आ जाते हो लेकिन सेकण्ड में कितना भी आवाज़ में हो, चाहे स्व-ं हो -ाा वा-ुमण्डल आवाज़ का हो लेकिन सेकण्ड में फुल स्टॉप लगा सकते हो कि कॉमा लगेगी, फुल स्टॉप नहीं? इसको कहा जाता है फ़रिश्ता वा अव्-ाक्त स्थिति की अनुभूति में रहना, व्-ाक्त भाव से सेकण्ड में परे हो जाना। इसके लि-े -े नि-ाम रखा हुआ है कि सारे दिन में ट्रैफ़िक ब्रेक का अभ्-ाास करो। -े क-ों करते हो? कि ऐसा अभ्-ाास पक्का हो जा-े जो चारों ओर कितना भी आवाज़ का वातावरण हो लेकिन एकदम ब्रेक लग जा-े। आत्मा का आदि वा अनादि लक्षण तो शान्त है, तो सेकण्ड में ऑर्डर हो कि अपने अनादि स्वरूप में स्थित हो जाओ तो हो सकते हो कि टाइम लगेगा? सुना-ाा था ना कि लगाना चाहें बिन्दी और लग जा-े क्वेश्चन मार्क तो क-ाा होगा? इसको किस अवस्था का अभ्-ाास कहेंगे? सभी फ़रिश्ते स्थिति का अभ्-ाास करते हो? अभी और अभ्-ाास करना है कि जितना सम-ा चाहे उतना सम-ा उस विधि से स्थित हो जा-ें। अभी देखो कोई भी प्रकृति की आपदा -ाा परिस्थिति की आपदा आती है तो अचानक आती है ना, और दिन प्रतिदिन अचानक -ाह प्रकृति अपनी हलचल बढ़ाती जाती है। -ाह कम नहीं होनी है, बढ़नी ही है। अचानक आपदा आ जाती है। तो ऐसे सम-ा पर समाने वा समेटने की शक्ति की आवश्-ाकता है। और कहाँ भी बुद्धि नहीं जा-े, बस बाप और मैं, बुद्धि को जहाँ लगाना चाहें वहाँ लग जा-े। क-ों-क-ाा में नहीं जा-े, -े क-ाा हुआ, -े कैसे होगा,

होना तो नहीं चाहि-ो, हो कैसे ग-ाा–इसको ब्रेक कहेंगे? तो उड़ती कला के लि-ो ब्रेक बहुत पॉवर फुल चाहि-ो। जब पहाड़ी पर ऊंचे चढ़ते हैं तो बार-बार क-ाा कहते हैं कि ब्रेक चेक करो, ब्रेक चेक करो। तो ऊंची अवस्था में जा रहे हो ना तो बार-बार -ो ब्रेक चेक करो। कोई भी संकल्प वा संस्कार निगेटिव से पॉजिटिव में परिवर्तन कर सकते हैं और कितने सम-ा में कर सकते हैं? सम-ा है एक सेकण्ड का और आप पांच सेकण्ड में करो तो क-ाा होगा? तो अटेन्शन इस परिवर्तन शक्ति का चाहि-ो। पहले स्व-ां को परिवर्तन करो तब विश्व को परिवर्तन कर सकते हो। तो स्व-परिवर्तक बने हो? पहले है स्व-परिवर्तक उसके बाद है विश्व परिवर्तक। क-ोंकि अनुभव होगा कि व्-ार्थ संकल्प की गति बहुत फ़ास्ट होती है। एक सेकण्ड में कितने व्-ार्थ संकल्प चलते हैं, अनुभव है ना। फ़ास्ट चलते हैं ना। तो ऐसे फ़ास्ट गति के सम-ा पॉवरफुल ब्रेक लगाकर परिवर्तन करने का अभ्-ास चाहि-ो। तो आज के दिन फ़रिश्तेपन का अभ्-ास कि-ा? सहज अनुभव हुआ कि मेहनत लगी? अभी सर्व आत्मा-ें आप शान्ति-सुख देने वाली फ़रिश्ते आत्माओं को -ाद करती हैं कि कोई फ़रिश्ते आ-ें और वरदान देकर जा-ें। तो वो फ़रिश्ते कौन हैं? आप हो? नशा रहता है ना कि हम ही कल्प-कल्प की श्रेष्ठ आत्मा-ें हैं। कितने बार -ाह पार्ट बजा-ाा है? -ाद है कि भूल ग-ो? फ़रिश्ता स्वरूप कितना प्-ारा है। क-ोंकि फ़रिश्ता दाता होता है, लेवता नहीं होता है। तो देने वाले दाता हो ना कि लेकर देने वाले हो? बाप से लेना अलग बात है। और आत्मा-ें कुछ दें तो आप दो ऐसे तो नहीं? फ़रिश्ता अर्थात् सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना। तो सन्तुष्ट रहते हो कि कोई-कोई बात में असन्तुष्ट भी हो जाते हो? कुछ भी नीचे-ऊपर हो जा-ो, असन्तुष्ट होंगे? कोई इन्सल्ट कर दे तो भी सन्तुष्ट रहेंगे? कोई नीचे-ऊपर करने की कोशिश करे तो सन्तुष्ट रहेंगे? पक्का? कोई कमी हो जा-ो तो भी सन्तुष्ट रहेंगे? देखो, सोच-समझकर जवाब दो। कोई टीचर ने आपको कम पूछा, कम बोला तो सन्तुष्ट होंगे -ाा असन्तुष्ट होंगे? रिकॉर्ड मंगा-ें? कुछ भी हो जा-ो, दाता के बच्चे दाता हैं तो किसी भी बात में असन्तुष्ट नहीं हो सकते। सन्तुष्टता ब्राह्मणों का विशेष लक्षण है। स्व-ां से भी सन्तुष्ट और औरों से भी सन्तुष्ट। जो पार्ट मिला है उसमें सन्तुष्ट रहना ही आगे बढ़ना है। ऐसे सन्तुष्ट हो? माता-ें सन्तुष्ट देवी हो ना? सन्तोषी मां का पूजन होता है, वो कौन

हैं? आप ही हो ना। तो कुछ भी हो जा-ो अपनी विशेषता को सदा साथ रखो। अगर दृढ़ संकल्प है तो जहाँ दृढ़ता है वहाँ सफ़लता है ही। दृढ़ संकल्प रखो कि सन्तुष्टता को कभी छोड़ना नहीं है तो सफ़लता आपके सदा ही साथ रहेगी। संकल्प में भी दृढ़ता, बोल में भी दृढ़ता और कर्म में भी दृढ़ता। ऐसे नहीं कि संकल्प तो दृढ़ कि-ाा था लेकिन कर्म में थोड़ा नीचे-ऊपर हो ग-ाा। नहीं। इस वर्ष सदा सन्तुष्ट रहना अर्थात् सफ़ल रहना, सफ़लता को नहीं छोड़ना है। कितना भी कड़ा पेपर आ जा-ो लेकिन सन्तुष्ट रहना है और सन्तुष्ट करना है। क-ोंकि आपका टाइटल है विश्व कल-ाणकारी।

जैसे आज के दिन को स्मृति दिवस सो समर्थ दिवस कहते हैं तो सारा वर्ष ही समर्थ दिवस मनाना। व्यर्थ समाप्त। दृढ़ संकल्प अर्थात् बहुत तीव्र पुरुषार्थ के संकल्प वाले। तो पुरुषार्थी नहीं बनना, तीव्र पुरुषार्थी। अच्छा!

कितनी भी बड़ी कैसी भी
परिस्थिति हो प-ाार से, स्नेह से परिस्थिति
रूपी पहाड़ भी परिवर्तन हो पानी समान हल्का बन
सकता है। पत्थर को पानी बना सकते हो। कैसा भी मा-ाा
का विकराल रूप वा रॉ-ाल रूप सामना करे तो सेकण्ड
में स्नेह के सागर में समा जाओ तो सामना करने की
मा-ाा की शक्ति समाप्त हो जा-ोगी। आपके
समाने की शक्ति छू-मन्त्र नहीं लेकिन
शिव-मन्त्र बन जा-ोगी।

ब्राह्मणों की नेचर विशेषता की नेचर है – इसे नेचरल स्मृति-स्वरूप बनाओ

25-1-94

भाग्-ा की श्रेष्ठ रेखा खींचने का क़लम देने वाले भाग्-ा विधाता बाप, भाग्-ावान विशेष आत्माओं प्रति बोले –

आज बापदादा अपने सर्व विश्व की विशेष आत्माओं को देख रहे हैं। ड्रामानुसार आप आत्माओं का कितना विशेष पार्ट नूँधा हुआ है। आज बापदादा हर एक बच्चे की विशेषताओं को देख हर्षित हो रहे हैं। हर एक बच्चे को देख 'वाह बच्चे' -ाह स्नेह का गीत दिल में बज रहा था। साथ-साथ -ाह भी देख रहे थे कि बच्चों के दिल से -ो 'वाह-वाह' का गीत सदा निकलता है? हर कर्म में, हर क़दम में, हर संकल्प में -ो श्रेष्ठ अनुभव होता है वा कभी-कभी होता है? साधारण जीवन से विशेष जीवन सदा स्वत: रहती है वा स्मृति लाने से अनुभव होता है? जब जीवन है तो जीवन का अर्थ ही है सदा और स्वत: रहे। स्मृति में ला-ाा तो अनुभव कि-ाा और स्मृति में नहीं ला-ाा तो विशेषता के बजा-ा साधारण जीवन अनुभव हो––ाह आप विशेष आत्माओं की विशेषता नहीं है। ब्राह्मण जन्म ही विशेष जन्म है। जिसका जन्म ही विशेष है उसका जीवन क-ाा होगा? विशेष होगा -ाा साधारण? ब्राह्मण जन्म भी श्रेष्ठ, ब्राह्मण धर्म भी श्रेष्ठ और ब्राह्मण कर्म भी श्रेष्ठ। क-ोंकि ब्राह्मण जन्म दाता, ब्राह्मण धर्म स्थापक, सर्वश्रेष्ठ परम आत्मा और आदि आत्मा ब्रह्मा बाप है। तो जैसे रचता सर्वश्रेष्ठ तो रचना भी सर्वश्रेष्ठ अर्थात् विशेष है। ब्राह्मणों का कर्म विशेष क-ों है? क-ोंकि कर्म में फ़ालो करने के लिए आप सबके सामने आदि आत्मा ब्रह्मा बाप सेम्पल है। कर्म में फ़ालो साकार ब्रह्मा बाप को करते हो। इसलि-ो भाग्-ा विधाता अर्थात् कर्म द्वारा भाग्-ा की रेखा श्रेष्ठ बनाने वाला ब्रह्मा गा-ाा हुआ है। भाग्-ा की रेखा का कलम कर्म है। तो श्रेष्ठ कर्म का सहज सिम्बल ब्रह्मा बाप है। इसलि-ो आप सभी विशेष पुरुषार्थ का शब्द -ाही वर्णन करते हो कि बाप समान बनना है।

इस अव्-ाक्त वर्ष में सभी का लक्ष्-ा क-ाा रहा? निराकारी स्थिति में निराकार बाप समान अशरीरी स्थिति का अनुभव कि-ाा? साकार कर्म में ब्रह्मा बाप समान

बनने का नम्बरवार अनुभव कि-ा? तो विशेष जीवन का आधार विशेष जन्म, धर्म और श्रेष्ठ कर्म है। जैसे लौकिक जीवन में भी अगर किसी आत्मा का जन्म विशेष राज परिवार में हो, राजकुमार हो वा राजकुमारी हो तो -ाह विशेषता जन्म की होने के कारण हर सम-ा सदा और स्वत: रहती है वा बार-बार स्मृति में लाते हैं कि मैं राजकुमारी हूँ? सहज -ाद होती है ना। पुरुषार्थ करते हैं क-ा? चाहे कर्म अपनी रुचि के कारण कितना भी साधारण हो लेकिन अपने जन्म की विशेषता भूल जाते हैं क-ा? नेचरल और नेचर बन जाती है। तो आप ब्राह्मण आत्माओं की नेचर क-ा है? विशेष है -ा साधारण है? अभी भी कोई-कोई बच्चे जब कोई साधारण कर्म कर लेते हैं तो बापदादा के आगे अपने को निर्दोष सिद्ध करने के लि-ो क-ा कहते हैं? मैं चाहता नहीं था वा चाहती नहीं थी कि -ो कर्म करूँ लेकिन मेरी नेचर है इसलि-ो हो ग-ा। वैसे -ो कहना वा सोचना -ाथार्थ है? मैं कौन? ब्राह्मण जीवन वाले हैं ना। तो ब्राह्मण जीवन वाली आत्मा -ो सोच सकती है कि -ो मेरी नेचर है? -ाह कहना राइट है? तो उस सम-ा क-ों बोलते हैं? उस सम-ा ब्राह्मण नहीं बोलता, मा-ा बोलती है। तो जैसे -ो साधारण नेचर वा मा-ावी नेचर नेचरल काम कर लेती है ना, इसलि-ो कहते हैं चाहते नहीं थे लेकिन हो ग-ा। तो ब्राह्मण नेचर अर्थात् विशेषता की नेचर भी नेचरल होनी चाहि-ो। नेचरल चीज़ सदा रह सकती है। तो विशेष जीवन की स्मृति नेचर के रूप में नेचरल होनी चाहि-ो वा कभी भूलना, कभी -ाद होना? तो सदा स्मृति स्वरूप में रहो। स्मृति लाने वाले नहीं, स्मृति स्वरूप। इसलि-ो बापदादा देख रहे थे–अ०-ाक्त वर्ष सम-ा प्रमाण समाप्त हुआ, लेकिन बापदादा समान स्व-ां को सम्पन्न बना-ा? इस अ०-ाक्त वर्ष का विशेष लक्ष्-ा रखा कि अ०-ाक्त अर्थात् फ़रिश्ता स्वरूप बनना और बनाना है। सभी ने -ाही लक्ष्-ा रखा था ना, फिर रिज़ल्ट क-ा निकली? अपने आपको चेक कि-ा? 'फ़रिश्ता भव' का वरदान भी वरदाता से मिला तो वरदान और लक्ष्-ा–दोनों की स्मृति से कहाँ तक सफ़लता अनुभव की है, -ो सूक्ष्म चेकिंग स्व-ां की की वा -ो सोचा कि अ०-ाक्त वर्ष पूरा हुआ, -ाथाशक्ति जितना भी अनुभव कि-ा उतना ही ड्रामानुसार ठीक रहा? वर्ष परिवर्तन के साथ-साथ स्व परिवर्तन की गति क-ा रही–इस विधि से चेक कि-ा? जैसे वर्ष समाप्त हुआ वैसे स्व-ां लक्ष्-ा और लक्षण में सम्पन्न बने वा -ो सोचते हो कि इस वर्ष में और बन जा-ोंगे? सम-ा

और स्व-ं की गति समान रही? वैसे तो सम-ा से भी स्व-ं की गति तीव्र होनी है क्योंकि समाप्ति के सम-ा को लाने वाली आप विशेष आत्मा-ें निमित्त हो। तीव्र गति से वर्ष तो सम्पन्न हो ग-ाा। मालूम हुआ वर्ष कैसे पूरा हो ग-ाा? तो चेक करो–मुझ विशेष आत्मा की परिवर्तन की गति तीव्र रही वा कभी तीव्र, कभी मध्-ाम रही?

फ़रिश्ता अर्थात् जिसका पुराने संस्कार और संसार से रिश्ता नहीं। तो चेक करो–पुराने संसार की कोई भी आकर्षण, चाहे सम्बन्ध रूप में, चाहे अपने देह की तरफ़ आकर्षण वा किसी देहधारी व्यक्ति के तरफ़ आकर्षण, कोई वस्तु की तरफ़ आकर्षण कितने परसेन्ट में रही? ऐसे ही पुराने संस्कार की आकर्षण, चाहे संकल्प रूप में, वृत्ति के रूप में, वाणी के रूप में, सम्बन्ध-सम्पर्क अर्थात् कर्म के रूप में कितनी परसेन्ट रही? फ़रिश्ता अर्थात् डबल लाइट। तो निजी लाइट स्वरूप स्मृति स्वरूप में कहाँ तक रहा? साथ-साथ लाइट अर्थात् हल्कापन, स्व के परिवर्तन के पुरुषार्थ में कहाँ तक लाइट अर्थात् हल्के रहे? मन अर्थात् संकल्प शक्ति में व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन करने में अर्थात् व्यर्थ के बोझ को हल्का करने में कहाँ तक सफ़ल रहे? इसी प्रकार व्यर्थ सम-ा, व्यर्थ संग, व्यर्थ वातावरण–इस सबमें कहाँ तक परिवर्तन करने में हल्के रहे? ब्राह्मण परिवार के सम्बन्ध में, सेवा के सम्बन्ध में कहाँ तक हल्के रहे? इसको कहा जाता है फ़रिश्तापन के तीव्र गति की स्थिति। इस विधि से चेक करो और भविष्-ा के लि-ो चेन्ज अर्थात् परिवर्तन करो। अपने ब्राह्मण जन्म की विशेषता को नेचरल नेचर बनाना–इसको ही सहज पुरुषार्थ कहा जाता है। सिर्फ एक विशेष आत्मा हूँ–इस स्मृति स्वरूप में स्थित हो जाओ तो बाप समान बनना अति सहज अनुभव करेंगे। क्योंकि स्मृति स्वरूप सो समर्थी स्वरूप बन जाते हैं। वर्ष तो पूरा हुआ। बापदादा रिज़ल्ट तो देखेंगे ना। तो रिज़ल्ट में -ाथाशक्ति मैजारिटी हैं और सदा शक्तिशाली, -ाथाशक्ति के मैजारिटी में मैनारिटी हैं।

स्मृति दिवस भी बहुत स्नेह से मना-ाा। अब विशेष जैसे स्नेह से मना-ाा, वैसे स्नेह का सबूत बाप समान स्मृति स्वरूप बनना ही है। सुना रिज़ल्ट? आगे क-ाा करना है? -ाथाशक्ति -ाा सदा शक्ति स्वरूप? तो देखेंगे इस वर्ष में मैजारिटी सदा शक्तिशाली का सबूत कहाँ तक देते हैं? टीचर्स क-ाा समझती हो?

किस लाइन में आ-लेंगे? सदा शक्तिशाली! सबका टी.वी.में फोटो निकल रहा है। क-ा भी हो जा-ो, कैसी भी परिस्थिति बन जा-ो लेकिन सदा शक्तिशाली। नाम नोट होते हैं ना कौन-कौन किस ग्रुप में आ-ो? अभी टीचर्स का सम्मेलन होने वाला है ना। तब तक की रिज़ल्ट सभी टीचर्स की क-ा होगी? जिसको करना होता है वो कब को नहीं सोचता है। दृढ़ संकल्प का अर्थ है अब। साधारण संकल्प का अर्थ है कब हो जा-ोगा! तो 'कब' वाले हो -ा 'अब' वाले हो? शक्ति सेना बहुत बड़ी सेना है। 'कब' वाली हो -ा 'अब' वाली हो? पाण्डव क-ा समझते हो? देखो नाम सबके नोट हैं। अभी नाम नहीं सुनाते हैं आखिर वो सम-ा भी आ जा-ोगा जो नाम सुना-लेंगे। समझा!

सबसे ज-ादा संख-ा किस ज़ोन की आई है? देखेंगे पंजाब-इन्दौर क-ा कमाल दिखाते हैं? टीचर्स भी ज-ादा आती हैं, संख-ा ज-ादा तो टीचर्स भी ज़-ादा होती। पंजाब वाले नम्बरवन लेंगे -ा सेकण्ड? इन्दौर भी नम्बरवन लेंगे? और कर्नाटक क-ा करेंगे? कौन-सा नाटक दिखा-लेंगे? कर - नाटक, तो हीरो नाटक दिखाना, ऐसा-वैसा नहीं दिखाना। और महाराष्ट्र तो महान् ही बनेंगे ना? और -ू.पी. को क-ा कहते हैं? -ू.पी.में नदि-ां हैं अर्थात् -ू.पी.पतित को पावन करने वाली है। पावन बनने-बनाने में नम्बरवन। तो -ू.पी. वाले भी नम्बरवन बनेंगे। इस सम-ा तो कोई भी नम्बर टू नहीं कहेंगे। राजस्थान तो है ही लक्की, जो राजस्थान में ही चरित्र भूमि है। हेड क्वार्टर राजस्थान में है ना। तो जहाँ हेड क्वार्टर है वो क-ा बनेगा? हेड बनेगा ना! सभी खुशी से कह रहे हैं नम्बरवन लेकिन वहाँ जाकर ऐसे नहीं कहना कि क-ा करें.. कर नहीं सकते... चाहते तो नहीं, लेकिन हो जाता है... ऐसी भाषा सोचना भी नहीं। अच्छा, डबल विदेशी भी सेवा में रेस अच्छी कर रहे हैं और रेस में नम्बरवन आना है ना। देश वालों को हिम्मत दिलाने में विदेश अच्छा निमित्त बना है। इस हिम्मत दिलाने के कारण एक्स्ट्रा मदद भी मिलती है। समझा! इसी को स्मृति में रख सहज बढ़ते चलो और बढ़ाते चलो। अच्छा!

चारों ओर की सर्व विशेष आत्माओं को, सदा साकार ब्रह्मा बाप के श्रेष्ठ कर्मों को फ़ालो करने वाले कर्म-ोगी आत्माओं को, सदा विशेषता को नेचरल और नेचर बनाने वाली कोटों में कोई आत्माओं को, सदा दृढ़ संकल्प द्वारा विशेष

जन्म, धर्म और कर्म के स्मृति स्वरूप आत्माओं को बापदादा का विशेषता सम्पन्न -ाद-प्-ार और नमस्ते।

दादि-ों से मुलाकात

आप ब्राह्मण जितने सम्पन्न बनते जा-ेंगे उतना भविष्-ा में प्रकृति भी प्रगति को प्राप्त करेगी क्-ोंकि प्रकृति सम-ा प्रति सम-ा अपना सिग्नल दिखा रही है। तो जितनी प्रकृति की हलचल उतनी अचल स्थिति प्रकृति को परिवर्तन करेगी। कितनी आत्मा-ें सम-ा प्रति सम-ा दु:ख की लहर में आती हैं। तो ऐसे दु:खी आत्माओं का सहारा तो बाप और आप ही हो। तो रहम पड़ता है ना। जब समाचार सुनते हो तो क्-ा दिल में आता है? नथिंग न्यू–अपनी अचल स्थिति के लि-ो तो ठीक है लेकिन प्रकृति की हलचल से जब आत्मा-ें चिल्लाती हैं तो किसको चिल्लाती हैं? तो जब मर्सी, रहम मांगते हैं तो आप लोगों को उनके रहम की पुकार पहुँचती तो है ना! -ो छोटी-छोटी आपदा-ें और तड़पती हैं। ब्राह्मण सम्पन्न हो जाओ तो दु:ख की दुनि-ा सम्पन्न हो जा-ो। तो रहम पड़ता है -ा नहीं? रहम पड़ता है तो फिर क्-ा करते हो? फिर भी ईश्वरी-ा परिवार के हैं ना। तो परिवार का कोई भी दु:ख, सुख में परिवर्तन करने का संकल्प तो आता है ना। कोई परिवार में बीमार भी हो तो क्-ा संकल्प होता है? जल्दी ठीक हो जा-ो। तो चिल्लाते-चिल्लाते मरना और एकधक से परिवर्तन होना, फ़र्क तो है ना। महाविनाश और रिहर्सल का विनाश, फ़र्क है। महाविनाश अर्थात् महान् परिवर्तन। उसके निमित्त आप हो। सम्पन्न बनेंगे तो समाप्ति होगी। तो जो परेशान हैं वो तो समझते हैं कि प्रत्-ाक्षता का पर्दा खुल जा-ो, लेकिन स्टेज पर आने वाले हीरो एक्टर सम्पन्न तै-ार होने चाहि-ो ना, तब तो पर्दा खुलेगा कि आधे में खुल जा-ेगा? परिवर्तन की शुभ भावना को तीव्र करना अर्थात् अपने को तीव्र गति से सम्पन्न बनाना। आप भी कभी कैसे, कभी कैसे होते हो तो प्रकृति भी कभी बहुत तीव्र गति से का-र्ा करती, कभी ठण्डी हो जाती। तो अभी क्-ा करना है? रहम की भावना इमर्ज करो, चाहे स्व प्रति, चाहे सर्व आत्माओं के प्रति। जहाँ रहम होगा, वहाँ तेरा-मेरा की हलचल नहीं होगी। पूज्-ा स्वरूप, मर्सीफुल का धारण करो। ठीक है ना। अभी -ो लहर फैलाओ। हर संकल्प में मर्सीफुल। संकल्प में होंगे तो वाणी और कर्म स्वत: ही हो जा-ेंगे। सब चिल्लाते भी क्-ा हैं? मर्सी-मर्सी। अच्छा!

अव्-ाक्त बापदादा की पर्सनल मुलाकात

ग्रुप नं. १

मा-ाा की छा-ाा से बचने का साधन है-बापदादा की छत्रछा-ाा

सदा अपने को बापदादा की छत्रछा-ाा के नीचे रहने वाली सदा सेफ़ आत्मा-ें अनुभव करते हो? सदा छत्रछा-ाा है -ाा कभी बाहर निकल जाते हो? -ाा है बाप की छत्रछा-ाा -ाा है मा-ाा की छा-ाा। तो मा-ाा की छा-ाा से बचने का साधन है छत्रछा-ाा। तो छत्रछा-ाा में रहने वाले कितने खुश रहेंगे। क्-ोंकि बेफ़िक्र बादशाह हो ग-े ना। फ़िक्र है तो खुशी गुम होती है। कभी भी देखो खुशी गुम होती है तो कारण क्-ाा होता है? कोई न कोई चिन्ता, फ़िक्र, बोझ खुशी को गुम कर देता है। और खुशी गुम हुई, कमज़ोर हुए तो मा-ाा की छा-ाा का प्रभाव पड़ ही जाता है। कमज़ोरी मा-ाा का आह्वान करती है। जैसे शारीरिक कमज़ोरी बीमारि-ों का आह्वान करती है तो आत्मिक कमज़ोरी मा-ाा का आह्वान करती है। फिर उस छा-ाा से निकलने में कितनी मेहनत करनी पड़ती है। अगर मा-ाा की छा-ाा स्वप्न में भी पड़ गई तो स्वप्न भी परेशान करेगा। फिर ब्राह्मण से क्षत्रि-ा बन जाते हैं तो -ुद्ध करनी पड़ती है। क्षत्रि-ा जीवन मेहनत का है और ब्राह्मण जीवन खुशी का है। तो क्-ाा पसन्द है? कभी-कभी -ुद्ध करनी पड़ती है? -ुद्ध करना अच्छा लगता है? छोटे से भी व्-ार्थ संकल्प की छा-ाा कितनी मेहनत कराती है इसलिए सदा बाप के -ााद की छत्रछा-ाा में रहो। -ााद ही छत्रछा-ाा है। तो सदाकाल के लिए छत्रछा-ाा में रहना आता है? कभी-कभी के लि-े नहीं, सदा। अविनाशी बाप है ना। तो वर्सा भी सदा का लेना है। सदा खुश रहने वाले। छत्रछा-ाा अर्थात् खुश रहना। बेफ़िक्र होंगे ना। सब फ़िक्र बाप को दे दि-ाा कि एक-दो सम्भाल कर रखा है? क्-ाा करें..., कैसे करें.., -े शब्द फ़िक्र के हैं। बेफ़िक्र के बोल सदा विज-ा के होते हैं। 'क्-ाा', 'कैसे' के नहीं होते। तो सदा -े -ााद रखो कि हम सभी बाप की छत्रछा-ाा में रहने वाले हैं। चक्कर लगाने वाले नहीं। संकल्प में भी चक्कर में आ-े तो चक्कर में आने वाले चकनाचूर हो जा-ेंगे। आप तो अमर हो ना। अमर हो ग-े—-े स्मृति सदा ही स्व-ं भी बेफ़िक्र और दूसरों को भी बेफ़िक्र बनाती रहेगी। सदा खुशी में -े गीत गाते रहेंगे—पाना था वो पा लि-ाा। बच्चा बनना माना पाना। बच्चा बने अर्थात् पा लि-ाा। अच्छा!

बनारस वाले क-ाा कमाल कर रहे हैं? बनारस में तो बहुत बड़े-बड़े माइक हैं। मण्डलेश्वर बहुत हैं ना। तो कोई महामण्डलेश्वर नज़दीक आ रहा है? आपके बदले वो आपकी विशेषता वर्णन करे। अभी तो -हाँ तक आ-ो हैं कि इन्हों का का-र्ा भी अच्छा है लेकिन '-ाही अच्छा है' -ाह नहीं कहते। -ाह भी हैं। -ाही हैं, तब आवाज़ बुलन्द होगा। जैसे अभी कहा ना २४ अवतार में २५ -ो भी गिन लो। तो -ो क-ाा हुआ? -ो भी हैं -ाा -ाही हैं? '-ाही हैं,'-ाही हैं कहें तो इसको कहा जाता है माइक बन आवाज़ फैलाना। तो कोई भी अथॉरिटी वाला, अगर अथॉरिटी से बोलता है तो माइक का काम करता है। तो देखेंगे इसमें नम्बर कौन लेता है? चारों ओर -ो गीत गाने लगें--ाही हैं वो -ाही हैं। -ाह तो होना ही है ना। निश्चित है। सिर्फ निमित्त बन रिपीट करना है। अच्छा, राजस्थान के भी जगह-जगह से आ-ो हैं। अभी राजस्थान में और घेराव डालो। अभी राजस्थान में बहुत स्थान खाली हैं। अच्छा!

ग्रुप नं. २

अधीनता को समाप्त करने के लिए अधिकार के रूहानी नशे में रहो

अपने को सदा बाप के वर्से के अधिकारी स्वराज्-ा अधिकारी और साथ-साथ विश्व के राज्-ा अधिकारी अनुभव करते हो? क-ोंकि बाप का वर्सा ही है स्वराज्-ा और विश्व का राज्-ा। तो बाप के वर्से के अधिकारी अर्थात् स्वराज्-ा और विश्व के राज्-ा अधिकारी। -ाह विश्व आपके हस्तों पर आ-ोगा। अभी तो अनेकों के हाथ में है ना। इसलिए विश्व भी हलचल में है। कभी -हाँ लुढ़कता है, कभी वहाँ लुढ़कता है। जब आपके हाथ में आ जा-ोगा तो हलचल खत्म, एकरस रहेगा। -ाद आता है विश्व पर कितने बार राज्-ा कि-ाा है! अनेक बार कि-ाा है -ाह अनुभव होता है? बुद्धि के कैमरा में अपने राज्-ा का चित्र स्पष्ट आता है? -ाा बाप कहता है तो ज़रूर होगा। ऐसा ही स्पष्ट है जैसे वर्तमान स्पष्ट है। क-ोंकि कल की ही तो बात है। कल था, कल आने वाला है। आज स्वराज्-ा कल विश्व का राज्-ा। आज कल की बात है ना। तो अधिकारी आत्मा सदा रूहानी नशे में रहती है और नशा पुरानी दुनि-ाा सहज भुला देता है। स्थूल नशा

सब कुछ भुला देता है ना। वह है अल्पकाल का और -ाह है सदाकाल का। जब अधिकार का नशा रहता है तो नई दुनि-ा के आगे -ाह पुरानी दुनि-ा क-ाा लगती है? कुछ भी नहीं। पुरानी दुनि-ा को भूलना मुश्किल नहीं लगता है। अधिकारी कभी अधीन नहीं होता। कोई भी बात के अधीन नहीं। जहाँ अधिकार है वहाँ अधीनता नहीं है और जहाँ अधीनता है वहाँ अधिकार नहीं है। अधिकार भूलता है तब अधीन होते। तो कोई भी वस्तु के, व-ाक्ति के, संस्कार के अधीन नहीं होना।

माताओं को थोड़ा थोड़ा मोह आता है? साल में एक दो बारी आता है? नहीं। जब कोई ज-ादा बीमार होता है तो मोह आता है? पाण्डवों को क-ाा आता है? क्रोध नहीं आता रोब आता है? बाप मिला सब कुछ मिला। तो -ाह हद की बातें कुछ भी नहीं लगती हैं। छोड़ना नहीं पड़ता लेकिन स्वत: ही छूट जाती हैं। मेहनत नहीं करनी पड़ती है।

अच्छा, -ो वेराइटी ग्रुप है। रंग बिरंगे वेराइटी फूलों का गुलदस्ता अच्छा है। लेकिन इस सम-ा सब कहाँ के हो? इस सम-ा मधुबन निवासी हो -ाा अपने-अपने स्थान -ाद हैं? इस सम-ा सब एक हो। मधुबन निवासी बनने में मज़ा आता है ना? मज़ा आता हैं तो क-ाों जाते हो? कहो सेवा के लिए जाते हैं। मधुबन प-ाारा है लेकिन सेवा भी प-ाारी है। तो कहाँ भी रहते -ाह स्मृति में सदा रहे कि सेवा अर्थ हैं। हिसाब किताब के अर्थ नहीं, सेवा अर्थ। ब्राह्मण अर्थात् सेवाधारी। सेवा में मज़ा है ना। घर समझेंगे तो बंधन है और सेवास्थान समझेंगे तो खुशी है। जा भी रहे हैं तो सेवाअर्थ जा रहे हैं। हिसाब-किताब अर्थ नहीं जा रहे हैं। अच्छा!

ग्रुप नं. ३

होलीहंस बनने का साधन – मन-बुद्धि की स्वच्छता और ज्ञान रत्नों की धारणा

सदा होली हंस बन ग-ो – ऐसा अनुभव करते हो? होली हंस हो ना! तो हंस क-ाा करता है? हंस का काम क-ाा होता है? (मोती चुगना) और दूसरा? दूध और पानी को अलग करना। एक है ज्ञान रत्न चुगना अर्थात् धारण करना और दूसरी विशेषता है निर्ण-ा शक्ति की विशेषता। दूध और पानी

को अलग करना अर्थात् निर्ण-ा शक्ति की विशेषता। जिसमें निर्ण-ा शक्ति होगी वो कभी भी दूध की बजा-ा पानी नहीं धारण करेगा। दूध की वैल्-ाु पानी से ज्-ाादा है। तो दूध और पानी का अर्थ है व्-ार्थ और समर्थ का निर्ण-ा करना। व्-ार्थ को पानी समान कहते हैं और समर्थ को दूध समान कहते हैं। तो ऐसे होली हंस हो? निर्ण-ा शक्ति अच्छी है? कि कभी पानी को दूध समझ लेते, कभी दूध को पानी समझ लेते? व्-ार्थ को अच्छा समझ लें और समर्थ में बोर हो जा-ें। नहीं। तो होली हंस अर्थात् सदा स्वच्छ। हंस सदा स्वच्छ दिखाते हैं। स्वच्छता अर्थात् पवित्रता। तो अभी स्वच्छ बन ग-ो ना। मैलापन निकल ग-ाा -ाा अभी भी थोड़ा-थोड़ा है? थोड़ा-थोड़ा रह तो नहीं ग-ाा? कभी मैले के संग का रंग तो नहीं लग जाता? कभी-कभी मैले का असर होता है? तो स्वच्छता श्रेष्ठ है ना। मैला भी रखो और स्वच्छ भी रखो तो क-ाा पसन्द करेंगे? स्वच्छ पसन्द करेंगे -ाा मैला भी पसन्द करेंगे? तो सदा मन-बुद्धि स्वच्छ अर्थात् पवित्र। व्-ार्थ की अपवित्रता भी नहीं। अगर व्-ार्थ भी है तो सम्पूर्ण स्वच्छ नहीं कहेंगे। तो व्-ार्थ को समाप्त करना अर्थात् होलीहंस बनना। हर सम-ा बुद्धि में ज्ञान रत्न चलते रहें, मनन चलता रहे। ज्ञान चलेगा तो व्-ार्थ नहीं चलेगा। इसको कहा जाता है रत्न चुगना। व्-ार्थ है पत्थर। कभी भी अगर व्-ार्थ आता है तो दु:ख की लहर आती है ना। परेशान तो होते हो ना कि -ो क-ों आ-ाा? तो पत्थर दु:ख देता है और रत्न खुशी देता है। अगर किसी के हाथ में रत्न आ जा-ो तो परेशान होगा -ाा खुश होगा? खुश होगा ना। अगर कोई पत्थर फेंक दे तो दु:ख होगा। तो बुद्धि द्वारा भी पत्थर ग्रहण नहीं करना। सदा ज्ञान रत्न ग्रहण करना। एक-एक रत्न की अनगिनत वैल्-ाु है! आपके पास कितने रत्न हैं? अनगिनत हैं ना! रत्नों से भरपूर हैं, खाली तो नहीं हैं? कभी भी बुद्धि को खाली नहीं रखो। कोई न कोई होम वर्क अपने आपको देते रहो। बुद्धि को होम वर्क में बिज़ी रखो। रोज़ बाप होम वर्क देता है ना। -ो विशेषता-ों, वरदान, विशेष धारणा-ों क-ाा हैं? -ो होम वर्क है। होम वर्क करते हो -ाा क्लास में सुना फिर खत्म? होम वर्क किसलि-ो मिलता है? बिज़ी रहने के लि-ो। तो माता-ों होम वर्क करती हैं? गॉडली स्टूडेन्ट हो ना कि घर में जाती हो तो अपने को माता समझती हो? स्टूडेन्ट का काम क-ाा होता है? स्टडी। कितना सहज करके देते हैं। तो किसमें बिज़ी रहते हो? पाण्डव बिज़ी रहते हो? बिज़ी रहना अर्थात् सेफ़ रहना।

और कितना सहज होम वर्क है! जो सुना वो करना है, बस। कितनी खुशी है कि होमवर्क देने वाला कौन! और कहाँ से आते हैं! कितना दूर से आते हैं! ऊंचे से ऊंचा भगवान् शिक्षक बन करके आते हैं–कितने नशे की बात है! सारे कल्प में ऐसा शिक्षक नहीं मिलेगा। तो होम वर्क अच्छी तरह से करना चाहि-ो ना। अच्छा!

ग्रुप नं. ४

कुसंग और व्-ार्थ संग से बचने के लिए सदा ईश्वरी-ा संग में रहो

आप भी अपने को ज्ञान बल और -ोग बल दोनों में सदा आगे बढ़ने वाले अनुभव करते हो? दुनि-ा में और अनेक प्रकार के बल हैं–साइन्स का भी बल है, राज-ा का भी बल है, भक्ति का भी बल है लेकिन आपमें क-ा बल है? ज्ञान बल और -ोग बल। -ो सबसे श्रेष्ठ बल है। तो -ोग बल में जो बल होता है, शक्ति होती है वो किसलि-ो होती है? विज-ा प्राप्त करने के लि-ो। जैसे साइन्स का बल है तो साइन्स का बल अन्धकार के ऊपर विज-ा प्राप्त कर रोशनी कर देता है। ऐसे -ोगबल सदा के लि-ो मा-ा पर विज-ी बनाता है। तो मा-ा जीत बनने का बल है? कि कभी हार होती, कभी जीत? सदा के विज-ी। कभी-कभी के विज-ी को विज-ी नहीं कहा जा-ोगा। क-ोंकि बाप द्वारा -ो ज्ञान बल और -ोग बल इतना श्रेष्ठ मिला है जो मा-ा की शक्ति उसके आगे कुछ नहीं है। तो -ोग बल बड़ा है -ा मा-ा कभी-कभी खेल करने आती है? मा-ा जीत आत्मा-ों कभी स्वप्न में भी हार नहीं खा सकतीं। स्वप्न में भी कमज़ोरी नहीं आ सकती। स्वप्न भी शक्तिशाली। ऐसे बहादुर हो -ा कभी-कभी की छुट्टी दे रखी है? सदा के विज-ी हैं। आपके मस्तक पर विज-ा का तिलक लगा हुआ है ना। नशा है कि – विज-ा हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है? तो जन्म-सिद्ध अधिकार कभी खो नहीं सकता। सदा -ो स्मृति में रहे कि विज-ी हैं और सदा विज-ी रहेंगे। -ा सोचते हो–पता नहीं, रहेंगे -ा नहीं रहेंगे... कभी -ो संकल्प आता है? पता नहीं आगे क-ा होगा.... पता नहीं मा-ा आ जा-ो तो... कभी संग का रंग लग जा-ो तो.... ऐसे तो तो आता है! अगर ऐसा कोई संग मिल जा-ो तो क-ा करेंगे? उसको भी कुसंग से सत के संग में ला-ोंगे? क-ोंकि जब तक फ़ाइनल रिज़ल्ट निकले तब

तक पेपर तो आ-ेगा ही। पेपर का काम है आना और आपका काम पास विद् ऑनर होना। कैसा भी संग खराब हो लेकिन आपका श्रेष्ठ संग उसके आगे कितना गुणा शक्तिशाली है! ईश्वरी-ा संग के आगे और सब संग कुछ भी नहीं है। सब कमज़ोर हैं। खुद कमज़ोर बनते हो तब उल्टे संग का वार होता है। तो मा-ाा जीत अर्थात् सिवाए एक बाप के और किसी भी संग के रंग से प्रभावित होने वाले नहीं। इसीलि-ो सतसंग गा-ाा जाता है। सतसंग की महिमा देखो कितनी है! आप तो सतसंग अर्थात सत बाप के संग में रहने वाले हो। ऐसे है ना। एक बाप (परमात्मा) का संग है सतसंग और दूसरे सब हैं कुसंग -ाा व्-ार्थ संग। कई कुसंग से बच जाते हैं, लेकिन व्-ार्थ संग से प्रभावित हो जाते हैं। क्-ोंकि व्-ार्थ बातें रमणीक होती हैं। जैसे आजकल कथा-ें कितनी रमणीक सुनाते हैं। तो व्-ार्थ बातें, व्-ार्थ संग बाहर से आकर्षित करने वाला है। इसलिए बाप की शिक्षा है–न व्-ार्थ सुनो, न व्-ार्थ बोलो, न व्-ार्थ करो, न व्-ार्थ देखो, न व्-ार्थ सोचो। बुरे की तो बात ही खत्म हो गई। लेकिन व्-ार्थ में कभी-कभी फंस जाते हैं। बाहर का शो बहुत अच्छा होता है ना। तो सदा के विज-ाी आत्मा-ें–मा-ाजीत जगतजीत। शक्ति-ां वा पाण्डव ऐसे मा-ाजीत हो? क्-ोंकि मा-ाा भी न-ो-न-ो रूप से आती है, पुराने रूप से नहीं आती। पुराने को तो जान ग-े हो ना, तो न-ो-न-ो रूपों से आ-ोगी। इसमें निर्ण-ा करने की शक्ति चाहिए कि -ाह मा-ाा है -ाा परमात्म ज्ञान है। तो कितने टाइम में परख सकते हो? -ाा थोड़ा चक्कर खाकर पीछे परखेंगे? अगर थोड़ा भी चक्कर में आ ग-े तो सम-ा व्-ार्थ चला जा-ेगा और नम्बर पीछे हो जा-ेगा। फिर मेहनत करके आगे बढ़ सकते हो लेकिन फिर भी दाग़ तो लग ग-ाा ना। कितना भी मिटाओ लेकिन मिटाने का भी मालूम पड़ता है। इसलिए सदा के विज-ाी बनो। अधिकार है ना। तो अधिकार कोई भी छोड़ता नहीं।

सभी को विशेष -ाह खुशी रहती है ना कि बाप मिला सब-कुछ मिला? मिला है -ाा मिलना है? अगर कोई आ करके आपको कहे कि नहीं और भी कुछ रहा हुआ है, आओ हम आपको दें तो टेस्ट तो करेंगे ना, थोड़ी टेस्ट करने में हर्जा है क्-ाा? एक बल, एक भरोसा कि थोड़ा-थोड़ा दूसरा भी है? और बहुत अच्छी-अच्छी बातें सुना-ें तो सुनेंगे? सुन करके उसको बदलने की कोशिश करेंगे? क्-ाा करेंगे? सुनना भी नहीं है, सुना तो चक्कर में आ जा-ेंगे। जो सुनना

था वो सुन लि-ा। इसलि-े कहते हैं जो पाना था, जो सुनना था, जो करना था वो कर लि-ा। इतना भरपूर रहो। ज़रा भी खालीपन होगा तो और कुछ भर जा-ेगा। भरपूर में और कुछ भर नहीं सकता। तो कोई के भी संग के चक्कर में आने वाले नहीं। ऐसे पक्के रहने में ही मज़ा है। अगर कच्चे रहेंगे तो कभी कोई -ाहाँ से आ-ेगा, कोई वहाँ से आ-ेगा। पक्के को कोई कुछ कर नहीं सकता। न प्रकृति हिला सकती, न मा-ा हिला सकती। न किसी का संग हिला सकता। कैसा भी वा-ुमण्डल हो लेकिन वा-ुमण्डल को बदलने वाले, वा-ुमण्डल के वश होने वाले नहीं। इतनी हिम्मत है ना! तो जहाँ हिम्मत है वहाँ बाप की पद्मगुणा मदद है ही। ऐसे अनुभव करते हो ना। एक कदम आपका और पद्म कदम बाप का। तो सभी हिम्मत वाले हो -ा थोड़ा हिलने वाले भी हो? दिल से आवाज़ निकले कि हम नहीं हिम्मत रखेंगे तो और कौन रखेगा? अच्छा!

ग्रुप नं. ५

सुखदाता के बच्चे मास्टर सुखदाता बनो – न दु:ख दो न दु:ख लो

भी अपने को तख्त नशीन आत्मा-ें अनुभव करते हो? इस सम-ा भी तख्तनशीन हो कि भविष्-ा में बनना है? अभी कौन-सा तख्त है? एक अकाल तख्त, दूसरा दिल तख्त। तो दोनों तख्त स्मृति में रहते हैं? तख्तनशीन आत्मा अर्थात् राज्-ा अधिकारी आत्मा। तख्त पर वही बैठता जिसका राज्-ा होता है। अगर राज्-ा नहीं तो तख्त भी नहीं। तो जब अकाल तख्तनशीन हैं तो भी स्वराज्-ा अधिकारी हैं और बाप के दिल तख्तनशीन हैं तो भी बाप के वर्से के अधिकारी। जिसमें राज्-ा-भाग्-ा सब आ जाता है। तो तख्तनशीन अर्थात् राज्-ा अधिकारी। राज्-ा अधिकारी हो कि कभी-कभी तख्त से नीचे उतर आते हो? सदा तख्त नशीन हो कि कभी-कभी के हो? कभी तख्त पर बैठकर थक जा-ो तो नीचे आ जा-ें! नहीं। दिल तख्त इतना बड़ा है जो सब-कुछ करते भी तख्तनशीन। कर्म-ोगी अर्थात् दोनों तख्तनशीन। अकाल तख्त पर बैठ कर्म करते हो तो वो कर्म भी कितने श्रेष्ठ होते हैं! क-ोंकि सर्व कर्मेन्द्रि-ां लॉ और ऑर्डर पर रहती हैं। अगर कोई तख्त पर ठीक न हो तो लॉ और ऑर्डर चल नहीं सकता। अभी देखो प्रजा

का प्रजा पर राज-ा है तो लॉ और ऑर्डर चल सकता है? एक लॉ पास करेगा तो दूसरा लॉ ब्रेक करेगा। तो तख्तनशीन आत्मा अर्थात् सदा -ाथार्थ कर्म और -ाथार्थ कर्म का प्रत-ाक्षफल खाने वाली। श्रेष्ठ कर्म का प्रत-ाक्षफल भी मिलता है और भविष्-ा भी जमा होता है–डबल है। तो प्रत-ाक्षफल क-ाा मिला है? खुशी मिलती है, शक्ति मिलती है। कोई भी श्रेष्ठ कर्म करते हो तो सबसे पहले खुशी होती है। और दिल खुश तो जहान खुश। तो दिल सदा खुश रहता है -ाा कभी संकल्प मात्र भी दु:ख की लहर आ जाती है? कभी भी नहीं आती -ाा कभी-कभी चाहते नहीं हैं लेकिन आ जाती है? दु:खधाम से किनारा कर लि-ाा। कि-ाा है -ाा एक पांव इधर है, एक पांव उधर है? एक दु:खधाम में, एक सुखधाम में–ऐसे तो नहीं? आप कलि-ुग निवासी हो -ाा संगम निवासी हो कि कभी-कभी कलि-ुग में भी चले जाते हो? संगम-ुगी ब्राह्मण अर्थात् दु:ख का नाम-निशान नहीं। क-ोंकि सुखदाता के बच्चे हो। तो सुखदाता के बच्चे मास्टर सुखदाता होंगे। जो मास्टर सुखदाता है वो स्व-ं दु:ख में कैसे आ सकता है। तो बुद्धि से दु:खधाम का किनारा कर लि-ाा। स्व-ं तो सुख स्वरूप हैं ही लेकिन सुखदाता के बच्चे औरों को भी सुख देने वाले मास्टर सुखदाता हैं। तो दूसरों को सुख देते हो कि सिर्फ स्व-ं सुखी रहते हो? दाता हो ना। जो बाप का का-र्ा वो बच्चों का का-र्ा है। तो बाप हर आत्मा को सदा सुख देते हैं ना। अनुभव है ना। तो फ़ालो फ़ादर करो। ऐसे नहीं कोई दु:ख देता है तो आप भी दु:ख देंगे। नहीं। अच्छा, कोई दु:ख दे रहा है तो आप क-ाा करेंगे? उसे लेंगे -ाा नहीं? आपका स्लोगन ही है 'ना दु:ख दो, ना दु:ख लो।' लेना भी नहीं है। अगर लेंगे तो सुख के साथ दु:ख भी मिक्स हो ग-ाा ना। तो लेना भी नहीं है। कोई कितना भी कुछ हिलाने की कोशिश करे लेकिन आप सदा अचल रहो। ज़रा भी कोई हिला नहीं सकता।

अच्छा, सभी अन्तर्मुखी सदा सुखी हो? पाण्डव क-ाा समझते हैं? अन्तर्मुखी हैं -ाा थोड़ा-थोड़ा बाहरमुखता भी है? कोई बाहर की आकर्षण आकर्षित तो नहीं करती? कभी मनमत, कभी परमत आकर्षित तो नहीं करती? -ाा कभी-कभी थोड़ा मज़ा चख लेते हो? फिर जब धोखा खाते हैं तो होश में आ जा-ें। नहीं। हैं ही सदा सुखी रहने वाले, सुखदाता के बच्चे मास्टर सुखदाता। बाहरमुखता से मुक्त हो ग-ो। अच्छा!

त्रिकालदर्शी स्थिति वेः श्रेष्ठ आसन द्वारा सदा विज-ी बनो

1-2-94

दिव्-ा बुद्धि वा विशाल बुद्धि का वरदान देने वाले त्रिकालदर्शी बापदादा अपने मास्टर त्रिकालदर्शी बच्चों प्रति बोले–

आज त्रिकालदर्शी बापदादा अपने सर्व मास्टर त्रिकालदर्शी बच्चों को देख रहे हैं। त्रिकालदर्शी बनने का साधन बापदादा ने हर बच्चे को दिव्-ा बुद्धि का वरदान वा ब्राह्मण जन्म की विशेष सौगात दी है। क्-ोंकि दिव्-ा बुद्धि द्वारा ही बाप को, अपने आपको और तीनों कालों को स्पष्ट जान सकते हो। दिव्-ा बुद्धि तथा -ाद द्वारा ही सर्व शक्ति-ों को धारण कर सकते हो। इसलि-े पहला वरदान दिव्-ा बुद्धि है। -े वरदान बापदादा ने सर्व बच्चों को दि-ा है। लेकिन इस वरदान को प्रत्-ाक्ष जीवन में नम्बरवार कार्-ा में लगाते हो। दिव्-ा बुद्धि त्रिकालदर्शी स्थिति का अनुभव कराती है। चारों ही सब्जेक्ट धारण करने का आधार दिव्-ा बुद्धि है। चारों ही सब्जेक्ट को सभी बच्चे अच्छी तरह से जानते हैं, वर्णन भी करते हैं लेकिन जानना, वर्णन करना--ाह सभी को आता है। चाहे न-े हैं, चाहे पुराने हैं, इसमें सभी होशि-ार हैं लेकिन धारण करना–इसमें नम्बर बन जाते हैं। दिव्-ा बुद्धि की विशेषता-ें, दिव्-ा बुद्धि वाली आत्मा-ें कोई भी संकल्प को कर्म वा वाणी में लाने सम-ा हर बोल और हर कर्म को तीनों काल से जान कर फिर प्रैक्टिकल में आती हैं। साधारण बुद्धि वाली आत्मा-ें बहुत करके वर्तमान को स्पष्ट जानती हैं लेकिन भविष्-ा और भूतकाल को स्पष्ट नहीं जानतीं। दिव्-ा बुद्धि वाली आत्मा को पास्ट और फ्-ुचर भी इतना ही स्पष्ट होता है जैसे प्रेज़ेन्ट स्पष्ट है। तीनों ही काल साथ-साथ स्पष्ट अनुभव होता है। वैसे सभी कहते भी हैं कि जो सोचो, जो करो, जो बोलो, आगे-पीछे को सोच-समझ करके करो। कर्म के पहले परिणाम को सामने रखो, परिणाम हुआ भविष्-ा। तो नम्बरवन है त्रिकालदर्शी बुद्धि। त्रिकालदर्शी बुद्धि कभी असफ़लता का अनुभव नहीं करेगी। लेकिन बच्चों में तीन प्रकार की बुद्धि वाले हैं। पहला नम्बर सुना-ा सदा त्रिकालदर्शी बुद्धि। दूसरा नम्बर कभी त्रिकालदर्शी और कभी एक कालदर्शी। तीसरा नम्बर अलबेली बुद्धि, जो सदा वर्तमान को देखते, सदा -ाही सोचते कि जो अभी हो रहा है -ाा मिल

रहा है वा चल रहा है इसमें ठीक रहें, भविष्-ा क-ाा होगा इसको क-ाा सोचें। लेकिन अलबेली बुद्धि आदि-मध्-ा-अन्त को न सोचने के कारण सदा सफ़लता प्राप्त करने में धोखा खा लेती है। तो बनना है त्रिकालदर्शी बुद्धि।

त्रिकालदर्शी स्थिति ऐसा श्रेष्ठ आसन है जिस आसन अर्थात् स्थिति द्वारा स्व-ं भी सदा विज-ी और दूसरों को भी विज-ी बनने की शक्ति वा सह-ोग देने वाले हैं। दिव्-ा बुद्धि विशाल बुद्धि है। दिव्-ा बुद्धि बेहद की बुद्धि है। तो चेक करो कि स्व-ं की बुद्धि किस नम्बर की बनाई है? बापदादा ने बच्चों की रिज़ल्ट में देखा कि ज्ञान, गुण, शक्ति-ों का खज़ाना जमा सभी बच्चों के पास है लेकिन जमा होते भी नम्बरवार क-ों हैं? ऐसा कोई भी नहीं दिखाई दि-ाा जिसके पास खज़ाने जमा नहीं हों। सभी के पास जमा हैं ना! फिर नम्बरवार क-ों? अगर किसी से भी पूछेंगे–स्व-ं का ज्ञान है, बाप का ज्ञान है, चक्कर का ज्ञान है, कर्मों के गति का ज्ञान है? सभी के पास सर्वशक्ति-ाँ हैं कि कोई हैं, कोई नहीं हैं? ज्ञान में सभी ने हाँ कि-ाा और शक्ति-ों में हाँ क-ों नहीं कि-ाा? अच्छा, सभी गुण हैं? सर्व गुण बुद्धि में हैं? बुद्धि में ज्ञान भी है, शक्ति-ाँ भी हैं फिर नम्बरवार क-ों? फ़र्क क-ाा होता है? खज़ाने को विधिपूर्वक का-र्ा में लगाना नहीं आता है सम-ा बीत जाता है फिर सोचते हैं कि ऐसे करते थे, इस विधि से चलते थे तो सिद्धि मिल जाती थी। तो सम-ा को जानना और सम-ा प्रमाण शक्ति वा गुण वा ज्ञान को का-र्ा में लगाना–इसके लि-ो दिव्-ा बुद्धि की विशेषता आवश्-ाक है। वैसे ज्ञान की पाइंट्स बहुत सोचते रहते हैं, सुनाते भी रहते हैं, कापि-ों में भी भरी हुई रहती हैं, सबके पास कितनी डा-ारि-ाां इकट्ठी हुई होंगी, काफ़ी स्टॉक हो ग-ाा है ना, तो जैसे बाप के लि-ो गा-ाा हुआ है कि मैं जो हूँ, जैसा हूँ वैसे मुझे जानने वाले कोटों में कोई हैं। जानते तो सभी हैं लेकिन अण्डरलाइन है–जो हूँ, जैसा हूँ, उसमें अन्तर पड़ जाता है। इसी रीति जैसा सम-ा और जो ज्ञान की पाइंट -ाा गुण -ाा शक्ति आवश्-ाक है वैसा का-र्ा में लगाना इसमें अन्तर पड़ जाता है और इसी अन्तर के कारण नम्बर बन जाते हैं। तो कारण समझा? एक तो सम-ा प्रमाण विधि का अन्तर पड़ जाता है, दूसरा कोई भी कर्म वा संकल्प त्रिकालदर्शी बन नहीं करते, इसलि-ो नम्बर बन जाते हैं। कोई भी संकल्प बुद्धि में आता है तो संकल्प है बीज, वाचा और कर्मणा बीज का विस्तार है, अगर संकल्प अर्थात् बीज को त्रिकालदर्शी

स्थिति में स्थित होकर चेक करो, शक्तिशाली बनाओ तो वाणी और कर्म में स्वत: ही सहज सफ़लता है ही है। संकल्प को चेक नहीं करते अर्थात् बीज शक्तिशाली नहीं होता तो वाणी और कर्म में भी सिद्धि की शक्ति नहीं रहती। लक्ष-ा सभी का सिद्धि स्वरूप बनने का है ना, तो सदा सिद्धि स्वरूप बनने की विधि जो सुनाई, उसको चेक करो। बीच-बीच में बुद्धि अलबेली बन जाती है इसलि-े कभी सिद्धि अनुभव करते और कभी मेहनत अनुभव करते।

बापदादा का सभी बच्चों से प-ार की निशानी है कि सब बच्चे सदा सहज सिद्धि स्वरूप बन जा-ें। आपके जड़ चित्रों द्वारा भक्त आत्मा-ें सिद्धि प्राप्त करती रहती हैं, तो चैतन-ा में सिद्धि स्वरूप बने हो तब तो जड़ चित्रों द्वारा भी और आत्मा-ें सिद्धि प्राप्त करती रहती हैं। जो त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित रहते हैं तो त्रिकालदर्शी स्थिति समर्थ स्थिति है। इस समर्थ स्थिति वाले व-ार्थ को ऐसा सहज समाप्त कर देते हैं जो स्वप्न मात्र भी व-ार्थ समाप्त हो जाता है। अगर त्रिकालदर्शी बुद्धि द्वारा कर्म नहीं करते हैं तो व-ार्थ का बोझ बार-बार ऊंचे नम्बर में अधिकारी बनने नहीं देता। तो दि-ा बुद्धि का वरदान सदा हर सम-ा का-र्ा में लगाओ।

बापदादा ने पहले भी इशारा दि-ा है कि ज्ञानी--ोगी आत्मा-ें बने हो, अब ज्ञान और -ोग को, शक्ति को प्र-ोग में लाने वाले प्र-ोगशाली आत्मा-ें बनो। जैसे साइन्स की शक्ति का प्र-ोग दिखाई देता है ना, लेकिन साइन्स की शक्ति के प्र-ोग का भी मूल आधार क-ा है? आज जो भी साइन्स ने प्र-ोग के साधन दि-े हैं, उन सब साधनों का आधार क-ा है? साइन्स के प्र-ोग का आधार क-ा है? मैजारिटी देखेंगे लाइट है। लाइट द्वारा ही प्र-ोग होता है। अगर कम्प-ुटर भी चलता है तो किसके आधार से? कम्प-ुटर माइट है लेकिन आधार लाइट है ना। तो आपके साइलेन्स की शक्ति का भी आधार क-ा है? लाइट है ना। जब वह प्रकृति की लाइट द्वारा एक लाइट अनेक प्रकार के प्र-ोग प्रैक्टिकल में करके दिखाती है तो आपकी अविनाशी परमात्म लाइट, आत्मिक लाइट और साथ-साथ प्रैक्टिकल स्थिति लाइट, तो उससे क-ा नहीं प्र-ोग हो सकता! आपके पास स्थिति भी लाइट है और मूल स्वरूप भी लाइट है। जब भी कोई प्र-ोग करना चाहते हो तो पहले अपने मूल आधार को चेक करो। जैसे कोई भी साइन्स के साधन को -ूज़ करेंगे तो पहले चेक करेंगे ना कि लाइट है -ा नहीं है। ऐसे जब -ोग का,

शक्ति-ों का, गुणों का प्र-ोग करते हो तो पहले -ो चेक करो कि मूल आधार आत्मिक शक्ति, परमात्म शक्ति वा लाइट (हल्की) स्थिति है? अगर स्थिति और स्वरूप डबल लाइट है तो प्र-ोग की सफ़लता बहुत सहज कर सकते हो। और सबसे पहले इस अभ्-ास को शक्तिशाली बनाने के लि-ो पहले अपने पर प्र-ोग करके देखो। हर मास वा हर १५ दिन के लि-ो कोई न कोई विशेष गुण वा कोई न कोई विशेष शक्ति का स्व प्रति प्र-ोग करके देखो। क-ोंकि संगठन में वा सम्बन्ध-सम्पर्क में पेपर तो आते ही हैं तो पहले अपने ऊपर प्र-ोग में चेक करो कोई भी पेपर आ-ा लेकिन जो शक्ति वा जो गुण का प्र-ोग करने का लक्ष्-ा रखा, उसमें कहाँ तक सफ़लता मिली? और कितने सम-ा में सफ़लता मिली? जैसे साइन्स का प्र-ोग दिन-प्रतिदिन थोड़े सम-ा में प्रत्-ाक्ष रूप का अनुभव कराने में आगे बढ़ रहा है तो सम-ा भी कम करते जाते हैं। थोड़े सम-ा में सफ़लता ज़्-ादा--ाह साइन्स वालों का भी लक्ष्-ा है। ऐसे जो भी लक्ष्-ा रखा उसमें सम-ा को भी चेक करो और सफ़लता को भी चेक करो। जब स्व के प्रति प्र-ोग में सफ़ल हो जा-ेंगे तो दूसरी आत्माओं के प्रति प्र-ोग करना सहज हो जा-ेगा और जब स्व के प्रति सफ़लता अनुभव करेंगे तो आपके दिल में औरों के प्रति प्र-ोग करने का उमंग-उत्साह स्वत: ही बढ़ता जा-ेगा। अन्-ा आत्माओं के सम्बन्ध-सम्पर्क में स्व के प्र-ोग द्वारा उन आत्माओं को भी आपके प्र-ोग का प्रभाव स्वत: ही पड़ता रहेगा। जैसे एक दृष्टान्त सामने रखो कि मुझे सहनशक्ति का प्र-ोग करना है तो जब स्व-ं में सहनशक्ति का प्र-ोग करेंगे तो जो दूसरी आत्मा-ें आपकी सहनशक्ति को हिलाने के निमित्त हैं वो भी बच जा-ेंगी ना, उनका भी तो किनारा हो जा-ेगा। और जैसे छोटे-छोटे संगठन में रहते हो, सेन्टर्स हैं तो सेन्टर्स पर छोटे संगठन हैं ना तो पहले स्व के प्रति ट्रा-ाल करो फिर अपने छोटे संगठन में ट्रा-ाल करो। संगठन रूप में कोई भी गुण वा शक्ति के प्र-ोग का प्रोग्राम बनाओ। उससे क-ा होगा? संगठन की शक्ति से उसी गुण वा शक्ति का वा-ुमण्डल बन जा-ेगा, वा-ाब्रेशन फैलेगा और वा-ुमण्डल वा वा-ाब्रेशन का प्रभाव अनेक आत्माओं के ऊपर पड़ता ही है। तो ऐसे प्र-ोगशाली आत्मा-ें बनो। पहले स्व-ं में सन्तुष्टता का अनुभव करो फिर औरों में सहज हो जा-ेगा। क-ोंकि विधि आ जा-ेगी। जैसे साइन्स के कोई भी साधन को पहले सेम्पल के रूप में प्र-ोग करते

हैं फिर विशाल रूप में प्र-ोग करते हैं, ऐसे आप पहले स्व-ं को सेम्पल के रीति से -ाूज़ करो। और -ो प्र-ोग करने की रुचि बढ़ती जा-ोगी और बुद्धि-मन इसमें बिज़ी रहेगा, तो छोटी-छोटी बातों में जो सम-ा लगाते हो, शक्ति-ाँ लगाते हो उनकी बचत हो जा-ोगी। सहज ही अन्तर्मुखता की स्थिति अपनी तरफ़ आकर्षित करेगी। क-ोंकि कोई भी चीज़ का प्र-ोग और प्र-ोग की सफ़लता स्वत: ही और सब तरफ़ से किनारा करा देती है। -ो प्र-ोग तो सभी कर सकते हो ना, कि मुश्किल है? इस वर्ष प्र-ोगशाली आत्मा-ें बनो। समझा क-ाा करना है? और हर एक स्व-ं के प्रति प्र-ोग में लग जा-ेंगे तो प्र-ोगशाली आत्माओं का संगठन कितना पॉवरफुल बन जा-ोगा! वह संगठन की किरणें अर्थात् वा-ाब्रेशन्स बहुत का-र्ा करके दिखा-ेंगी। इसमें सिर्फ दृढ़ता चाहि-ो–'मुझे करना ही है'। दूसरों के अलबेलेपन का प्रभाव नहीं पड़ना चाहि-ो। आपकी दृढ़ता का प्रभाव औरों पर पड़ना चाहि-ो। क-ोंकि दृढ़ता की शक्ति श्रेष्ठ है -ाा अलबेलेपन की शक्ति श्रेष्ठ है? बापदादा का वरदान है जहाँ दृढ़ता है वहाँ सफ़लता है ही। तो क-ाा बनेंगे? प्र-ोगशाली, त्रिकालदर्शी आसनधारी। और तीसरा क-ाा करेंगे? जैसा सम-ा, वैसी विधि से सिद्धि स्वरूप। तो वर्ष का -ो होमवर्क है। -ो होमवर्क स्वत: ही बाप के समीप ला-ोगा। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा–कोई भी कर्म करने के पहले आदि-मध्-ा-अन्त को सोच-समझ कर्म कि-ाा और करा-ाा। अलबेलापन नहीं कि जैसा हुआ ठीक है, चलो, चलाना ही है। नहीं। तो फ़ॉलो ब्रह्मा बाप। फ़ॉलो करना तो सहज है ना! कॉपी करना है ना, कॉपी करने का तो अक्ल है ना!

अच्छा, -ो ग्रुप चांस लेने वाला ग्रुप है। एक्स्ट्रा लॉटरी मिली है। जो अचानक लॉटरी मिलती है तो उसकी खुशी ज़-ाादा ही होती है। तो -ो लक्की ग्रुप हुआ ना, चांस लेने वाला लक्की ग्रुप। दूसरे सोचते रहते कब जा-ेंगे और आप पहुँच ग-ो। अब डबल विदेशि-ों का टर्न शुरु होने वाला है। भारतवासि-ों ने अपनी लॉटरी ले ली। चारों ओर के डबल विदेशी बच्चों ने जो रिट्रीट का प्रोग्राम बना-ाा है–उसमें मेहनत अच्छी की। विशेष निमित्त आत्माओं को समीप लाने की विधि अच्छी है। और जितना हिम्मत रख आगे बढ़ते रहे हैं उतनी सफ़लता हर वर्ष श्रेष्ठ से श्रेष्ठ मिलती रही है। ऐसे अनुभव होता है ना! कोई सम-ा था जो निमित्त विशेष आत्माओं से सम्पर्क करना भी मुश्किल लगता था और अभी क-ाा

लगता है? जितना सोचते हो उससे और ही ज-ादा आते हैं ना! तो -े हिम्मत का प्रत-ाक्षफल है। भारत में भी सम्पर्क बढ़ता जाता है। पहले आप निमन्त्रण देने की मेहनत करते थे और अभी स्व-ं आने की ऑफ़र करते हैं। फ़र्क पड़ ग-ा है ना! वो कहते हैं हम चलें और आप कहते हो नम्बर नहीं है। -े है 'हिम्मते बच्चे मददे बाप' का प्रत-ाक्ष स्वरूप। अच्छा!

चारों ओर के मास्टर त्रिकालदर्शी आत्माओं को, सदा सम-ा के महत्व को जानने और सम-ा प्रमाण खज़ाने को का-र्ा में लगाने वाले दि०-ा बुद्धिवान आत्माओं को, सदा अन्तर्मुखता की प्र-ोगशाला में प्र-ोग करने वाली प्र-ोगशाली आत्माओं को, सदा हिम्मत द्वारा बाप के मदद का प्रत-ाक्ष अनुभव करने वाली आत्माओं को बापदादा का -ाद-प्-ार और नमस्ते।

दादि-ों से मुलाकात

आप निमित्त आत्मा-ें किस प्र-ोगशाला में रहते हो? सारा दिन कौन-सी प्र-ोगशाला चलती है? नई-नई इन्वेन्शन करते रहते हो ना! न-े-न-े अनुभव करते जाते हो और नई-नई विधि की टचिंग होती रहती है। क-ोंकि जो निमित्त हैं उनको विशेष नई-नई बातें टच होने का विशेष वरदान है। थोड़ा सम-ा भी बीतेगा तो विचार चलते हैं ना, टचिंग आती है ना कि अभी -े हो, अभी -े हो, अभी -े होना चाहि-े। तो निमित्त आत्माओं को विशेष उमंग-उत्साह बढ़ाने के वा परिवर्तन शक्ति को बढ़ाने के प्लैन की ज़रूरत है। इसके बिना रह नहीं सकते हैं। बुद्धि चलती है ना। देख-देख आश्च-र्वत् नहीं होते लेकिन उमंग-उत्साह में आगे बढ़ाने के लिए प्लैनिंग बुद्धि बनते हैं। मा-ा संगठन को हिलाने के न-े-न-े प्लैन बनाती है, नई-नई बातें सुनती हो ना और आप लोग सभी को हिम्मत-उमंग में लाने के प्लैन बनाते हो। कभी आश्च-र्ा लगता है? नहीं लगता है ना। मा-ा भी पुरानी विधि से थोड़ेही अपना बना-ोगी। वो भी तो नवीनता ला-ोगी ना।

अच्छा!

ग्रुप नं. १

अविनाशी अधिकार निश्चित है इस स्मृति से सदा निश्चिन्त रहो, सब बोझ बाप को दे दो

भी अपने को बाप के वर्से के अधिकारी आत्मा-ें अनुभव करते हो। अधिकारी आत्माओं की निशानी क-ाा होती है? अधिकार का निश्च-ा और नशा रहता है। -ो अविनाशी रूहानी नशा है। तो अधिकार में क-ाा-क-ाा मिला है, उसकी लिस्ट निकालो तो कितनी है? बड़ी लिस्ट है -ाा छोटी लिस्ट है? तो सदैव अपने भिन्न-भिन्न प्राप्त अधिकारों को सामने रखो। इमर्ज रूप में लाओ। जितना इमर्ज होगा, स्मृति में होगा, तो स्मृति की समर्थी आती है। कभी किस अधिकार को -ाद करो, कभी किस अधिकार को -ाद करो। वेराइटी है ना। आजकल के मानव को भी वेराइटी में रुचि होती है ना। तो आपके पास कितनी वेराइटी है? बहुत है ना! कभी वरदान को इमर्ज करो, कभी वर्से में खज़ाने जो मिले हैं उनको इमर्ज करो तो कैसी स्थिति रहेगी? क-ोंकि जैसी स्मृति वैसी स्थिति रहती है। अगर स्मृति अधिकार की रही तो स्थिति क-ाा रहेगी? खुशी में नाचते रहेंगे ना। आजकल की दुनि-ाा में किसी को रिवाजी अधिकार भी मिलता है तो कितना मेहनत करके अधिकार लेते हैं, जानते हैं -ाह सदा काल का नहीं है फिर भी कितना कुछ करते हैं। और आपको बिना मेहनत के अधिकार मिल ग-ाा। मेहनत करनी पड़ी क-ाा? बच्चा बनना अर्थात् अधिकार लेना। मेरा माना और अधिकार मिला। तो वाह मेरा अधिकार! वाह मैं श्रेष्ठ अधिकारी आत्मा! हद के अधिकार में नहीं, बेहद के अधिकार में। हद के अधिकार के पीछे अगर कोई जाता है तो बेहद का अधिकार गंवाता है। तो सदा बेहद के अधिकार की खुशी में रहो। खुश रहते हो ना? आप जैसी खुशी किसके पास है? निश्चिन्त हो ग-ो, कोई चिन्ता है क-ाा? पता नहीं, क-ाा होगा--ो चिन्ता है? निश्चिन्त हैं। क-ोंकि अविनाशी अधिकार निश्चित ही है। तो जहाँ निश्चित होता है वहाँ निश्चिन्त होते हैं। कोई भी बात निश्चित नहीं होती है तो उसकी चिन्ता रहती है, पता नहीं क-ाा होगा! माता-ें सभी निश्चिन्त है कि कोई-कोई चिन्ता रहती है? अगर सब बाप के हवाले कर दि-ाा तो निश्चिन्त होंगे। अपने ऊपर बोझ रखा तो निश्चिन्त नहीं

होंगे, फिर चिन्ता ज़रूर होगी। मेरी ज़िम्मेवारी है, मेरी फ़र्ज-अदाई है, मेरापन आना माना चिन्ता। अगर फ़र्ज है -ा ज़िम्मेवारी है तो बेहद की है, हद की नहीं। विश्व की है। दो-चार की नहीं। अपने को अभी जगत माता समझती हो कि चार-पांच बच्चे, पोत्रे पोत्रि-ों की माता-ें हो? किसी आत्मा को भी देखेंगे तो क-ा लगता है? -ाह हमारा परिवार है? कि सिर्फ लौकिक को अपना परिवार समझते हो? बेहद परिवार के हैं। बाप की सह-ोगी आत्मा-ें हैं। बेहद का नशा है ना, कि कभी हद का, कभी बेहद का? जैसे बाप वैसे बच्चे होते हैं तो बाप बेहद का बाप है तो बच्चे भी बेहद के हुए ना। तो क-ा -ाद रखेंगे? हम अधिकारी आत्मा-ें हैं। सिर्फ वर्से के नहीं, वरदानों के भी–डबल अधिकार है। वरदान भी देखो कितने मिलते हैं! रोज़ वरदान मिलता है ना! तो वरदानों से भी झोली भरते हो और वर्से से भी झोली भरते हो। इसलि-ो सदा भरपूर रहते हो, खाली नहीं। सदा -ाह स्मृति रखो कि अनेक बार की अधिकारी आत्मा-ें हैं।

सभी ठीक है? हलचल तो नहीं है? कभी व्-ार्थ की, कभी और कोई परिस्थिति की, प्रकृति की हलचल होती है? जो विश्व को अचल-अडोल बनाने वाले हैं वो स्व-ं कैसे हलचल में आ-ेंगे? परिस्थिति कितनी भी बड़ी हो लेकिन स्व-स्थिति के आगे कितनी भी बड़ी परिस्थिति क-ा है? कुछ भी नहीं है। महारथी को कोई हिला नहीं सकता। तो स्व-ं सदा अचल बन औरों को भी अचल बनाना। हलचल का नामनिशान भी नहीं। बाप से प्-ार है ना तो प्-ार की निशानी होती है समान बनना।

ग्रुप नं. २

अपने श्रेष्ठ टाइटल्स की स्मृति से रूहानी नशे का अनुभव करो, वाह-वाह के गीत सदा गाते रहो

सदा क-ा से क-ा बन ग-ो--ो स्मृति रहती है? कल कौड़ी तुल्-ा थे और आज हीरे तुल्-ा बन ग-ो। तो कहाँ कौड़ी और कहाँ हीरा–कितना अन्तर है? जब अन्तर का मालूम होता है तो कितनी खुशी होती है! बाप ने क-ा से क-ा बना दि-ा! कल अन्धकार में थे और आज रोशनी में आ ग-ो। तो

अन्धकार में क-ाा मिला? ठोकरें मिली ना। अन्धकार में ठोकर खाते हैं और रोशनी में इनज्वा-ा करते हैं। तो कल क-ाा और आज क-ाा – -ो सदा सामने स्पष्ट हो। और बापदादा सदा कहते हैं कि डबल हीरो बन ग-ो। एक हीरे समान जीवन और दूसरा इस ड्रामा के हीरो एक्टर बन ग-ो। तो डबल हीरो हो ग-ो ना। अगर सारे ड्रामा के अन्दर देखो तो हीरो पार्टधारी कौन है? कहेंगे ना हम हैं। तो डबल हीरो हैं। तो डबल खुशी है ना। ऐसे तो देखो आपको बाप द्वारा कितने टाइटल मिलते हैं? टाइटल्स की लिस्ट है ना। रोज़ की मुरली में कोई न कोई विशेष टाइटल मिलता है। तो टाइटल का कितना नशा होता है! किसको प्रधान मन्त्री -ाा प्रेज़ीडेन्ट टाइटल दे तो कितना नशा रहेगा! और आपको टाइटल देने वाला कौन? जो भाग-विधाता बाप है वो स्व-ं बच्चों को टाइटल देते हैं। तो जैसे बाप अविनाशी तो टाइटल भी अविनाशी। विनाशी टाइटल का नशा विनाशी, अल्पकाल का रहता है। और -ो रूहानी टाइटल का नशा अविनाशी है। जिसे अविनाशी नशा रहता है उसके दिल में सदा -ो गीत बजता है–वाह मेरा श्रेष्ठ भाग-ा! ऑटोमेटिक बजता है, बजाना नहीं पड़ता है। दूसरी जो भी मशीनरीज़ होती हैं वो आज ठीक हैं, कल खराब हो जा-ेंगी लेकिन -ो दिल का गीत सदा ही बजता रहता है। तो -ो गीत गाना आता है? कौन-सा गीत? वाह मेरा श्रेष्ठ भाग-ा! जैसे देह का आक्-ुपेशन स्वत: -ाद रहता है। एक बार मालूम पड़ा कि मैं -ो हूँ तो भूलता नहीं है। तो 'मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ' -ो अविनाशी आक्-ुपेशन भी भूलना नहीं चाहि-ो। -ो हर जन्म का आक्-ुपेशन है। वो एक जन्म का आक्-ुपेशन होता है। चाहे शरीर बदलेंगे लेकिन आत्मा तो अविनाशी है ना। कोई भी जन्म में आत्मा तो अमर ही है, अविनाशी है। लेकिन इस सम-ा आप विशेष आत्मा-ें हो। आत्मा तो हो ही लेकिन विशेष आत्मा हो। अपनी विशेषता-ें सदा -ाद रहती हैं?

तो डबल हीरो हो साधारण पार्टधारी नहीं। हीरे समान बने हो -ाा अभी भी कुछ पत्थर है, कुछ हीरा है? कहाँ हीरे की वैल्-ु, कहाँ पत्थर की वैल्-ु! अगर विस्मृति है तो पत्थर है और स्मृति है तो हीरा है। अब विस्मृति का सम-ा समाप्त हुआ। जो हूँ, जैसा हूँ–वो भूल नहीं सकता। तो विस्मृति की दुनि-ाा को छोड़ कर आ ग-ो। अभी संगम-ुग स्मृति का -ुग है। कलि-ुग विस्मृति का -ुग है। तो आप सब संगम-ुग के रहवासी हो -ाा कभी-कभी कलि-ुग में चक्कर लगाने चले जाते

हो? अगर थोड़ा भी बुद्धि गई तो चक्कर में फंस जा-ोंगे। विस्मृति की दुनि-ा से निकल आ-ो। कलि-ुग में तो बहुत रौनक है! तो उस रौनक को क-ों छोड़कर आ ग-े? रौनक ज़रूर है लेकिन धोखा देने वाली रौनक है। बाहर से रौनक दिखाई देती है और अन्दर धोखा देने वाली है। क-ा अनुभव है? धोखा देने वाली रौनक है ना। सब अच्छी तरह से अनुभव कर चुके हो ना? कि अभी कुछ अनुभव करना बाकी है? धोखा खाते-खाते थक ग-े। आर्टीफ़िश-ाल दुनि-ा है ना। लेकिन चमक आर्टीफ़िश-ाल की ज़-ादा है। तो कभी आर्टीफ़िश-ाल चमक आकर्षित तो नहीं करती? जब एक बार धोखा खाकर देख लि-ा तो दुबारा धोखा खा-ा जाता है क-ा? इसलि-े बच ग-े।

माता-ें अपना श्रेष्ठ भाग-ा देख खुशी में नाचती रहती हो ना। संगम पर शक्ति-ों की बारी पहले है। द्वापर-कलि-ुग में पाण्डवों को चांस मिलता है और संगम पर शक्ति-ों को चांस मिलता है। अभी देखो बाप ने माताओं को चांस दि-ा तो दुनि-ा में भी आजकल माताओं को चांस देने का बुद्धि में आ-ा है। धर्मनेताओं में देखो पहले कोई माता नहीं होती थी लेकिन अभी महामण्डलेश्वरि-ां भी हैं। अभी माता-ें भी गुरु बन जाती हैं। तो जब बाप ने चांस दि-ा तो लोग भी चांस देने लगे। तो माताओं को डबल खुशी है ना कि हमको बाप ने ऊंचा बना दि-ा!

ग्रुप नं. ३

सर्व श्रेष्ठ शक्ति शान्ति की शक्ति है – जिससे असम्भव को भी सम्भव बना सकते हो

एक बल एक भरोसा – ऐसी श्रेष्ठ आत्मा हैं, ऐसे अनुभव करते हो? एक बल एक भरोसा है -ा अनेक बल अनेक भरोसे हैं? एक बल कौन सा है? साइलेन्स का बल, -ोग का बल। एक बाप में भरोसा अर्थात् निश्च-ा होने से -ह साइलेन्स का बल, -ोग का बल स्वत: ही अनुभव होता है। तो साइलेन्स की शक्ति वाले हैं, -ोग बल वाले हैं – -ह स्मृति रहती है? शान्ति की शक्ति सर्व श्रेष्ठ शक्ति है। क-ोंकि और सभी शक्ति-ां कहाँ से निकलती हैं? शान्ति की शक्ति से ना! आज साइन्स की शक्ति का प्रभाव है लेकिन वह भी निकली कहाँ

से? शान्ति की शक्ति से निकली ना? तो शान्ति की शक्ति द्वारा जो चाहो वह कर सकते हो। असम्भव को भी सम्भव कर सकते हो। जो दुनि-ा वाले आज असम्भव कहते हैं आपके लिए वह सम्भव है ना! तो सम्भव होने के कारण सहज लगता है। मेहनत नहीं लगती। दुनि-ा वाले तो अभी भी -ाही सोचते रहते हैं कि परमात्मा को पाना बहुत मुश्किल है। और आप क-ा कहेंगे? पा लि-ा। वह कहेंगे कि परम आत्मा तो बहुत ऊंचा हज़ारों सू-ाँ से भी तेजोम-ा है और आप कहेंगे वह तो बाप है। स्नेह का सागर है। जलाने वाला नहीं है। हज़ारों सू-ा से तेजोम-ा तो जला-ेगा ना और आप तो स्नेह के सागर के अनुभव में रहते हो, तो कितना फ़र्क हो ग-ा। जो दुनि-ा ना कहती वह आप हाँ करते। फ़र्क हो ग-ा ना। कल आप भी नास्तिक थे और आज आस्तिक बन ग-े। कल मा-ा से हार खाने वाले और आज मा-ाजीत बन ग-े। फ़र्क है ना। माता-ें जो कल पिंजड़े की मैना थी और आज उड़ती कला वाले उड़ते पंछी है। तो उड़ती कला वाले हो -ा कभी-कभी वापस पिंजड़े में जाते हो? कभी-कभी दिल होती है पिंजड़े में जाने की? बंधन है पिंजड़ा और निर्बन्धन है उड़ना। मन का बंधन नहीं होना चाहिए। अगर किसी को तन का बंधन है तो भी मन उड़ता पंछी है। तो मन का कोई बंधन है -ा थोड़ा-थोड़ा आ जाता है? जो मनमनाभव हो ग-े वह मन के बंधन से सदा के लिए छूट ग-े। अच्छा, प्रवृत्ति को सम्भालने का बंधन है? ट्रस्टी होकर सम्भालते हो? अगर ट्रस्टी हैं तो निर्बन्धन और गृहस्थी हैं तो बंधन है। गृहस्थी माना बोझ और बोझ वाला कभी उड़ नहीं सकता। तो सब बोझ बाप को दे दि-ा -ा सिर्फ थोड़ा एक दो पोत्रा रख दि-ा है? पाण्डवों ने थोड़ा-थोड़ा जेबखर्च रख दि-ा है? थोड़ा-थोड़ा रोब रख दि-ा, क्रोध रख दि-ा, -ाह जेबखर्च है? मेरे को तेरा कर दि-ा? कि-ा है -ा थोड़ा-थोड़ा मेरा है? ठगी करते हैं ना मेरा सो मेरा और तेरा भी मेरा। ऐसी ठगी तो नहीं करते? आधाकल्प तो बहुत ठगत रहे ना। कहना तेरा और मानना मेरा तो ठगी की ना। अभी ठगत नहीं लेकिन बच्चे बन ग-े। उड़ती कला कितनी प्-ारी है, सेकेण्ड में जहाँ चाहो वहाँ पहुंच जाओ। उड़ती कला वाले सेकेण्ड में अपने स्वीट होम में पहुंच सकते हैं। इसको कहा जाता है -ोगबल, शान्ति की शक्ति।

माताओं को नाम ही दि-ा है शिव शक्ति-ां। तो शक्ति नाम -ाद आने से

स्वत: ही शक्ति आ जा-ेगी। हम घर की माता-ें हैं तो कमज़ोर हैं। शक्ति हैं तो शक्तिशाली हैं। एक बल एक भरोसा अर्थात् सदा शक्तिशाली। पाण्डवों को भी सदा शक्तिशाली दिखाते हैं। कल्प कल्प की शक्ति-ाां और पाण्डव सेना वाले हैं – -ाह स्पष्ट स्मृति है ना तो हम ही थे, हम ही हैं और सदा हम ही बनेंगे। -ाह स्मृति स्पष्ट है कि सोचते हो तो -ाद आता है? -ाा सुना है तो समझते हो? नहीं। दिल में वह इमर्ज होना चाहिए। बुद्धि में स्पष्ट होना चाहिए–हाँ हम ही थे, हैं और होंगे। जहाँ एक बल एक भरोसा है वहाँ कोई हिला नहीं सकता। ऐसी कोई मा-ाावी शक्ति है कि कमज़ोर है? एक बल एक भरोसे वाली आत्माओं के आगे मा-ाा मूर्छित हो जाती है, सरेन्डर हो जाती है। सरेन्डर हो गई कि कभी कभी जाग जाती है? तो सदा मा-ाजीत कभी हार कभी जीत वाले नहीं। सदा विज-ाी। तो -ाही नशा सदा रहे कि विज-ा हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है। -ाह रूहानी नशा है ना। इस जन्म-सिद्ध अधिकार को कोई छीन नहीं सकता।

ग्रुप नं. ४

मधुबन निवासी बनना अर्थात् बेहद सेवा की स्टेज पर आना

मधुबन निवासि-ों से सबका प्-ाार है ना। सभी का मधुबन निवासि-ों से प्-ाार क-ों है? क-ाा कारण है? मधुबन निवासि-ों से सबका प्-ाार इसीलिए है क-ोंकि मधुबन निवासी अर्थात् बड़े ते बड़े सेवाधारी। मधुबन निवासी होना अर्थात् सेवा की स्टेज पर आना। जो भी मधुबन में आ-ो तो सेवा के लिए आ-ो ना। और बापदादा भी अपने ऊपर सबसे बड़े से बड़ा टाइटल विश्व सेवाधारी का ही देते हैं। तो मधुबन निवासी अर्थात् जितना बाप से प्-ाार उतना सेवा से प्-ाार। मधुबन निवासी हर सेकण्ड सेवा की स्टेज पर रहते हैं। चलते फिरते सेवा ही करते हो ना! एक्जैम्पुल हो ना! तो मधुबन निवासी हर आत्मा को, हरेक आत्मा विशेष आत्मा के रूप में देखती है। मधुबन निवासी अर्थात् विशेष आत्मा। संकल्प में भी विशेषता, बोल में भी विशेषता और कर्म में भी विशेषता। कितना महत्व है मधुबन निवासी आत्माओं का। ऐसी स्मृति रहती है? मधुबन को सब फ़ालो करते हैं। मधुबन के बाप से प्-ाार है तो मधुबन निवासि-ों से भी प्-ाार है।

जैसे मधुबन के बाप की महिमा वैसे मधुबन निवासि-ों की महिमा है। क-ोंकि मधुबन बाप की कर्मभूमि, चरित्रभूमि सो तपस्वी भूमि है। ऐसे भूमि का अनुभव होता है ना? भूमि का वा-ाब्रेशन, वा-ुमण्डल सह-ोग देता है। मधुबन वालों के ऊपर बापदादा की भी विशेष ब्लैसिंग है। तो अपने श्रेष्ठ भाग-ा को प्रैक्टिकल में अनुभव करते हुए आगे बढ़ रहे हो? सभी उड़ती कला वाले हो -ाा कभी रुकती कला कभी उड़ती कला? ब्रह्मा बाप की विशेषता कौन सी गा-ान करते हो? अथक सेवाधारी। तो पुरुषार्थ की गति में भी अथक। थकने वाले नहीं, औरों को भी उड़ाने वाले। ज़िम्मेवारी है ना। क-ोंकि मधुबन वालों को सभी सहज फ़ालो करते हैं।

तो इस वर्ष में अपने तीव्र पुरुषार्थ का कोई विशेष प्लैन बना-ाा है? क-ोंकि मधुबन के पुरुषार्थ की लहर भी चारों ओर फैलती है। मधुबन वाले भट्ठी करते हैं, तपस-ाा पावरफुल करते हैं तो चारों ओर वह वा-ाब्रेशन जाता है। तो कुछ न-ाा तीव्र गति का प्लैन बनाओ। जैसे कोई भी बड़ा स्थान बनाते हैं तो पहले क-ाा करते हैं? ज्ञान सरोवर बनाना था तो पहले मॉडल बना-ाा ना। तो मधुबन निवासी हैं मॉडल। तो जितना मॉडल वैल-ुएबुल होता है, उतना ही ओरीज्नल मकान भी वैल-ुएबुल होता है। निमित्त तो मॉडल ही बनता है ना। कोई न-ाा प्लैन बना-ाा है? क-ोंकि मधुबन निवासी इन्वेन्टर हैं ना। (आपने जो होमवर्क दि-ाा वह करेंगे) अच्छा, मधुबन निवासी पहले मधुबन के ग्रुप में प्र-ोग करके अनुभव सुना-ोंगे तो सबमें उमंग-उत्साह आ-ोगा। जिसको भी देखें सबका एक दृढ़ संकल्प हो तो संगठन का बल तो मिलता है ना। मधुबन की -ाही विशेषता सभी को प्रि-ा लगती है कि हर आत्मा का हर कर्म विशेष हो। साधारण नहीं। क-ोंकि -ाहाँ सह-ोग बहुत है। एक तो सभी आत्माओं की शुभ भावना का मधुबन निवासि-ों को बहुत सह-ोग है। कोई भी बात होगी तो सभी की भावना पहले मधुबन के तरफ़ जाती है। वा-ुमण्डल की, पढ़ाई की, बाहर के पोल-ुशन की कितनी मदद है -ाहाँ मधुबन में। प्रकृति की पोल-ुशन भी नहीं है। तो रिजल्ट में मधुबन निवासी सभी किस माला में आ-ोंगे? पहली माला -ाा दूसरी माला? पहली में। सारी सीट मधुबन वाले ही लेंगे? सभी खज़ानों से भरपूर हो ना? कि कोई कमी है? कोई सैलवेशन चाहिए? कि सदा तृप्त आत्मा-ें हो? सभी ज्ञान के ख़ज़ानों में भी

भरपूर, शक्ति-ों में भी भरपूर, गुणों में भी भरपूर? (हाँ जी) गुणमूर्त देखना हो तो कहाँ देखें? मधुबन में -ा और स्थानों में? सबमें मधुबन नम्बरवन। जिसको जब देखें जहाँ देखें गुणमूर्त, शक्तिमूर्त, ज्ञान मूर्त, साधारण नहीं। मधुबन माना ही विशेष। मधुबन वाले बेफ़िक्र बादशाह तो हैं ही -ा कोई फ़िक्र रहता है? (सम्पूर्ण बनने का) -ह फ़िक्र फ़ख़र में लाता है। फ़िक्र, फ़िक्र नहीं है फ़ख़र है। बनना ही है। अच्छा।

मधुबन निवासि-ों के तीव्र पुरुषार्थ का सलोगन कौन सा है? (जो कर्म हम करेंगे हमें देख और करेंगे) सलोगन ठीक सुना-ा। जो भी कर्म करो पहले -ह सलोगन -ाद रखो कि जो हम करेंगे वह सब करेंगे। तो स्वत: ही विशेष कर्म होगा। अच्छा, बाकी कारोबार तो ठीक चल रही है ना। सबकी डिपार्टमेंट ठीक है? अच्छा!

जब स्व वेः प्रति प्र-ोग में सफ़ल हो जा-ेंगे तो दूसरी आत्माओं वेः प्रति प्र-ोग करना सहज हो जा-ेगा और जब स्व वेः प्रति सफ़लता अनुभव करेंगे तो आपवेः दिल में औरों वेः प्रति प्र-ोग करने का उमंग-उत्साह स्वत: ही बढ़ता जा-ेगा। अन्-ा आत्माओं वेः सम्बन्ध-सम्पर्वेः में स्व वेः प्र-ोग द्वारा उन आत्माओं को भी आपवेः प्र-ोग का प्रभाव स्वत: ही पड़ता रहेगा।

स्वमान की स्मृति का स्विच ऑन करने से – देह भान के अंधकार की समाप्ति

18-2-94

ताज़, तख्त और तिलक की स्मृति दिलाकर फ़रिश्ते स्वरूप में स्थित कराने वाले अकालमूर्त बापदादा अपने अकाल तख्तनशीन बच्चों प्रति बोले–

आज अकाल मूर्त बाप सभी अकाल तख्तधारी, विश्व कल्-ाण के ताजधारी, मस्तक में चमकते हुए बिन्दी के तिलकधारी बच्चों को देख रहे हैं। हर एक तख्तधारी भी हैं, ताजधारी भी हैं, तिलक भी सभी का चमक रहा है। सभी के मस्तक बीच आत्मा बिन्दी सितारे के समान दिखाई दे रही है। आप सभी भी अपने तख्त, ताज और तिलक को देख रहे हो। सारी सभा बापदादा को ताज और तिलकधारी, तख्तनशीन दिखाई दे रही है। -ो अलौकिक सभा, कलि-ुगी राज्-ा सभा और सत-ुगी राज्-ा सभा से कितनी न्-ारी और प्-ारी है! तो ऐसी सभा की अधिकारी आत्मा-ें कितनी प्-ारी हैं! आप सभी को भी अपना -ो तख्त, ताज और तिलकधारी स्वरूप प्-ारा लगता है ना! जब अकाल तख्तनशीन, अकालमूर्त, श्रेष्ठ आत्मा स्थिति में स्थिति हो तख्त पर बैठते हो तो -ाह स्थिति कितनी श्रेष्ठ है! सभी के श्रेष्ठ स्थिति की झलक इस सूरत को फ़रिश्ता बना देती है। साधारण सूरत नहीं, फ़रिश्ता सूरत। तो फ़रिश्ता सूरत भी कितनी प्-ारी है! फ़रिश्ते सभी को बहुत प्-ारे लगते हैं। क्-ोंकि फ़रिश्ता सर्व का होता है, एक-दो का नहीं। बेहद की दृष्टि, बेहद की वृत्ति, बेहद की स्थिति वाला है। फ़रिश्ता सर्व आत्माओं के प्रति परमात्म सन्देश वाहक है। फ़रिश्ता अर्थात् सदा उड़ती कला वाला। फ़रिश्ता अर्थात् सर्व का रिश्ता एक बाप से जुटाने वाला है। फ़रिश्ता अर्थात् डबल लाइट। देह और देह के सम्बन्ध से न्-ारा, हल्का। फ़रिश्ता अर्थात् सर्व को स्व-ं की चलन और चेहरे द्वारा बाप समान बनाने वाला। फ़रिश्ता अर्थात् सहज और स्वत: अनादि और आदि संस्कार सदा इमर्ज स्वरूप में दिखाने वाला। फ़रिश्ता अर्थात् निमित्त भाव, निर्मान स्वभाव और सर्व प्रति कल्-ाण की श्रेष्ठ भावना वाला। ऐसे फ़रिश्ते हो ना? फ़लक से कहो–हम नहीं होंगे तो कौन होगा! फ़लक है ना! तो बापदादा ऐसे फ़रिश्तों की दरबार देख रहे हैं। सिर्फ इसी स्वमान में स्थित रहने

से देहभान स्वत: ही समाप्त हो जा-ोगा।

बाप देखते हैं कि बच्चे देहभान को छोड़ने की बहुत मेहनत करते हैं। एक देहभान के रूप को छोड़ते हैं तो दूसरा आ जाता है, फिर दूसरे को छोड़ते हैं तो तीसरा आ जाता है। लेकिन छोड़ना सदा मुश्किल होता है और धारण करना सहज होता है। तो बापदादा कहते हैं कि स्वमान में सदा रहो। जहाँ स्वमान है वहाँ देहभान आ ही नहीं सकता। तो छोड़ने की मेहनत नहीं करो लेकिन स्वमान में स्थित रहने का अटेन्शन रखो और संगम-ुग पर स्व-ं बाप द्वारा कितने अच्छे-अच्छे स्वमान प्राप्त हैं। प्राप्त करना नहीं है, प्राप्त हैं। अपने स्वमान की लिस्ट निकालो। कितनी बड़ी लिस्ट है! सारे कल्प में कितने भी स्वमान अर्थात् टाइटल्स किसी भी नामीग्रामी आत्मा के हों, चाहे राजनेता हो, चाहे अभिनेता हो, चाहे धर्मात्मा हो, चाहे महान् आत्मा हो, उनके अगर टाइटल गिनती भी करो तो आपके स्वमान की लिस्ट से ज-ादा हो सकते हैं? और रोज़ सवेरे-सवेरे बापदादा स्वमान की स्मृति दिलाते हैं, स्वमान में स्थित कराते हैं। रोज़ भी एक न-े ते न-ा स्वमान स्मृति में रखो तो स्वमान के आगे देहभान ऐसे भाग जाता जैसे रोशनी के आगे अंधकार भाग जाता। न सम-ा लगता, न मेहनत लगती। तो बार-बार भिन्न-भिन्न देहभान को मिटाने की मेहनत क-ों करते हो? स्वमान की स्मृति का स्विच ऑन करना नहीं आता है क-ा? कितना भी गहरा काला बादल सू-र्ा की रोशनी को छिपाने वाला हो लेकिन आपके पास ऑटोमेटिक डा-ारेक्ट परमात्म लाइट का कनेक्शन है। डा-ारेक्ट लाइन है ना? लाइन क्ली-ार है -ा लीकेज है? किसका लिंक होता है लेकिन लीकेज हो जाती है। तो डा-ारेक्ट लाइन कितनी पॉवरफुल होती है! डा-ारेक्ट कनेक्शन है -ा इनडा-ारेक्ट है? सभी की डा-ारेक्ट लाइन है ना? सभी को डा-ारेक्ट लाइन मिल गई है? फिर तो एक बादल क-ा, सारे बादल आ जा-ें, अंधकार कर सकते हैं क-ा? स्मृति का स्विच डा-ारेक्ट लाइन से ऑन कि-ा और इतनी लाइट आ जा-ोगी जो स्व-ं तो लाइट में होंगे ही लेकिन औरों के लि-े भी लाइट हाउस हो जा-ेंगे। ऐसे होता है ना? अनुभवी हो ना? लेकिन कभी-कभी अनुभव को किनारे रख देते हैं। सहारा मिला है लेकिन कभी-कभी सहारे के बजा-ा किनारे हो जाते हैं। मेहनत लगती है क-ा? सदा नहीं लगती, कभी-कभी लगती है! स्विच ऑन करना भूल जाते हो क-ा? वास्तव में अगर एक मास्टर

सर्वशक्तिमान् का स्वमान भी -ाद हो तो मेहनत की कोई बात ही नहीं है। मार्ग मेहनत का नहीं है लेकिन हाइ-वे के बजा-ा गलि-ों में चले जाते हो वा मंज़िल के निशाने से और आगे बढ़ जाते हो तो लौटने की मेहनत करनी पड़ती है। बापदादा सदा अपने स्नेह और सह-ोग की गोदी में बिठाकर मंज़िल पर ले जा रहे हैं। गोदी में बैठकर मंज़िल पर पहुँचने में मुश्किल क-ों होता है? स्नेह और सह-ोग की गोदी से निकल कभी और आकर्षण खींचती है तो चक्कर लगाने निकल जाते हो। थक भी जाते हो फिर मेहनत भी महसूस करते हो। तो इस वर्ष क-ाा करेंगे? मेहनत समाप्त। मोहब्बत में, लॅव में लीन हो जाओ, लॅवलीन हो हर का-ा करो। जो लीन होता है उसको और कुछ दिखाई नहीं देता, आकर्षित नहीं करता। तो लॅव में रहते हो। ऐसा कोई होगा जो कहे–मुझे बाप से प्-ार नहीं है, लॅव नहीं है! सभी का लॅव है ना! लेकिन कभी लॅव में रहते हो, कभी लॅव में लीन रहते हो। नहीं तो देखो मन-बुद्धि द्वारा स्थिति में बाप का सर्व सम्बन्धों से साथ है। साथ भी है और सेवा में बाप हर सम-ा साथी है। तो स्थिति में साथ है और सेवा में साथी है। जहाँ सदा साथ भी है और साथी भी है तो वहाँ क-ाा मुश्किल है? परम आत्मा की महिमा ही है मुश्किल को सहज करने वाले। ऐसा बाप आपके साथ है और साथी है तो मुश्किल हो सकता है? फिर क-ों मुश्किल करते हो?

सर्व सम्बन्धों की सर्व सम-ा प्रमाण बाप स्व-ं हर बच्चे को ऑफ़र करते हैं। जैसा सम-ा वैसे सम्बन्ध से साथ रहो वा साथी बनाओ। कोई सम-ा तो सम्बन्ध से साथी बनाते हो और कोई सम-ा साथी को किनारे कर देते हो। फिर कहते हैं कि अकेलापन फ़ील होता है। चलते-चलते अकेलापन लगता है। और अकेलापन होने से क-ाा होता है? अपना श्रेष्ठ जीवन साधारण जीवन अनुभव होता है। फिर कहते हैं बोरिंग लाइफ हो गई है, कुछ चेंज चाहि-ो। एक तरफ़ बापदादा को खुश करते हैं कि हम तो कम्बाइन्ड हैं। कम्बाइन्ड कभी अकेला होता है क-ाा? बड़ी अच्छी-अच्छी बातें करते हैं–बाबा, हम तो हैं ही कम्बाइन्ड। फिर १५-२० वर्ष बीतता तो कहते हैं चेंज चाहि-ो, अकेले हो ग-े हैं। वैसे भी देखो दुनि-ाा में अगर चेंज चाहते हैं तो कोई सागर के किनारे पर जाकर सो जाते हैं, कोई मनोरंजन में चले जाते हैं, डांस करते हैं, कोई गीतों के मौज में मौज मनाते हैं, कोई कम्पनी

-ाा कम्पैनि-ान का साथ लेते हैं। -ाही करते हो ना! खेल करते हो? खेलों की दुनि-ाा में बगीचे में चले जाते हो! -ाहाँ ज्ञान सागर का किनारा है -ाह भूल जाते हो। अगर सागर पसन्द है तो सागर के किनारे बैठ जाओ। बाप ज्ञान सागर है ना। बाप कम्पैनि-ान नहीं है क-ाा? उससे मज़ा नहीं आता है? कि समझते हो बिन्दी से क-ाा मज़ा आ-ोगा! आप सभी को सदा बहलाने के लि-ो तो ब्रह्मा बाप भी अव्-ाक्त हुए। लेकिन -ाहाँ तो सदा का साथी चाहि-ो ना। जब भी अपने को अकेलापन अनुभव करो तो उस सम-ा बिन्दु रूप नहीं -ाद करो। वह मुश्किल होगा, उससे बोर हो जा-ोंगे। लेकिन अपने ब्राह्मण जीवन की भिन्न-भिन्न सम-ा की रमणीक अनुभव की कहानि-ाँ स्मृति में लाओ। अनुभव की कहानि-ों का किताब सभी के पास है। जब बोर हो जाते हैं तो नॉवेल्स पढ़ते हैं ना। तो आप अपने कहानि-ों का किताब खोलो और उसे पढ़ने में बिज़ी हो जाओ। अपने स्वमान की लिस्ट को सामने लाओ, अपने प्राप्ति-ों की लिस्ट को सामने लाओ। ब्राह्मण संसार के विचित्र प्रैक्टिकल कहानि-ों को स्मृति में लाओ। जैसे अपने को चेंज करने के लि-ो समाचार पत्र पढ़ने का भी आधार लेते हैं तो ब्राह्मण संसार के कितने अलौकिक समाचार आदि से अब तक देखे हैं वा सुने हैं, समाचार पत्र भी आपके पास हैं। कइ-ों को पेपर पढ़ने के बिना चैन नहीं आता है। पेपर भी आपके पास है। पेपर पढ़ो। डान्स और साज़ तो जानते ही हो। बिना थकावट के डांस करते हो। मनमनाभव होना ही सबसे बड़ा मनोरंजन है। क-ोंकि सर्व सम्बन्धों का रस वा अनुभूति-ाां करना ही मनमनाभव है। सिर्फ बाप के रूप में -ाा विशेष तीन रूपों के सम्बन्ध से अनुभव नहीं है लेकिन सर्व सम्बन्धों के स्नेह का अनुभव कर सकते हो। सम्बन्धों से -ाद तो करते हो लेकिन फ़र्क क-ाा हो जाता है? एक है दिमाग से नॉलेज के आधार पर सम्बन्ध को -ाद करना और दूसरा है दिल से उस सम्बन्ध के स्नेह में, लॅव में लीन हो जाना। आधा तो करते हो बाकी आधा रह जाता है। इसलि-ो थोड़ा सम-ा तो ठीक रहते हो, थोड़े सम-ा के बाद सिर्फ दिमाग से ही सम्बन्ध को -ाद कि-ाा तो दिमाग में दूसरी बात आने से दिल बदल जाता है। फिर मेहनत करनी पड़ती है। फिर क-ाा कहते हो–हमने -ाद तो कि-ाा, बाबा मेरा कम्पैनि-ान है, लेकिन कम्पैनि-ान ने तोड़ तो निभाई नहीं, अनुभव तो कुछ हुआ नहीं – -ो दिमाग से -ाद कि-ाा। दिल में स्नेह को समा-ाा नहीं। जब भी

कोई बात दिमाग में आती है तो वह निकलती भी जल्दी है। लेकिन दिल में समा जाती है तो उसको चाहे सारी दुनि-ा भी दिल से निकालना चाहे, तो भी नहीं निकाल सकती। तो सर्व सम्बन्धों को सम-ा प्रमाण, जिस सम-ा जिस सम्बन्ध की आवश-ाकता है, आवश-ाकता है फ्रैन्ड की और -ाद करो बाप को तो मज़ा नहीं आ-ेगा। इसलि-ो जिस सम-ा, जिस सम्बन्ध की अनुभूति चाहि-ो, उस सम्बन्ध को स्नेह से, दिल से अनुभव करो। फिर मेहनत भी नहीं लगेगी और बोर भी नहीं होंगे, सदा मनोरंजन। तो इस वर्ष क-ाा करेंगे?

मेहनत से निकलना है। हर मास सिर्फ ओ.के. लिखना, और कुछ नहीं लिखना। ओ.के. से समझ जा-ेंगे कि मेहनत से निकल ग-ो। लम्बे-लम्बे पत्र नहीं लिखना। नहीं तो कहते हैं कि पत्र तो लिखा, जवाब नहीं मिलता। ऐसे नहीं है कि आपके पत्र पहुँचते नहीं हैं। पत्र लिखना शुरु करते हो और वहाँ कम्प्-ाुटर में पहले आ जाता है, पोस्ट में पीछे पहुँचता है। वैसे बापदादा इतने लम्बे पत्रों का रोज़ की मुरली में सबको जवाब देता है। रोज़ पत्र लिखते हैं। इतना लम्बा पत्र कोई लिखता है! तो इतने अपने स्वमान को देखो–परमात्मा का कितना प्-ाार है आप सबसे। परमात्मा का प्-ाार है तब पत्र लिखते हैं अर्थात् मुरली में उत्तर भी देते हैं और -ाद-प्-ाार भी देते हैं। अगर कोई भी क्वेश्चन उठता है -ाा कोई भी समस-ाा सामने आती है तो मुरली से रेसपॉन्स मिलता है। तो फिर कभी शिका-ात नहीं करना कि उत्तर नहीं आ-ाा। बाकी अच्छा करते हो जो दिल में बात आती है वो बाप के आगे रखना अर्थात् दिल से निकाल दि-ाा। वो भले करो, लेकिन शॉर्ट लिखो। पत्र जब लिखते हो तो उसी सम-ा दिल तो हल्की हो जाती है ना। क-ोंकि दे दि-ाा ना। फिर दूसरे दिन की मुरली उस विधि से देखो कि जो मैंने पत्र लिखा उसका उत्तर क-ाा है? रेसपॉन्स मिलता तो है ना। बेहद का बाप है तो पत्र भी बेहद का लिखेगा, छोटा थोड़ेही लिखेगा।

बापदादा ने देखा कि चारों ओर के डबल विदेशी बच्चे सेवा में अच्छी लगन से लगे हुए हैं। एक-एक को देखते हैं तो हर एक एक-दो से प्-ाारे लगते हैं। अगर नाम लेंगे तो कितने नाम लेंगे! इसीलि-ो सभी अपने नाम से विशेष सेवा की रिटर्न मुबारक स्वीकार करना। नाम लेना शुरु करेंगे तो माला बनानी पड़ेगी। लेकिन माला के सभी मणके बापदादा के सामने हैं। सम-ा प्रति सम-ा बेहद की

सेवा और सफ़लता सम्पन्न होती जा रही है। वर्तमान सम-ा विशेष विदेश में दो सेवाओं का रिज़ल्ट अच्छा प्रत-ाक्ष हुआ। अनेक प्रकार की सेवा-ें तो चलती ही रहती हैं लेकिन विशेष एक -ो ग्लोबल बुक, जो मेहनत करके तै-ाार कि-ाा है, उसके निमित्त चारों ओर विशेष आत्माओं का सम्बन्ध-सम्पर्क में आना सहज हो ग-ाा। तो जिन बच्चों ने दिल व जान, सिक व प्रेम से सम-ा दि-ाा, सह-ोग दि-ाा, उसके प्रत-ाक्षफल सेवा के निमित्त आत्माओं को बापदादा पद्म गुणा मुबारक दे रहे हैं। और साथ-साथ जो अभी डॉ-ालाग वा रिट्रीट कि-ाा उसकी रिज़ल्ट भी पहले से अच्छे ते अच्छी रही। और सभी देश वालों ने इसमें जो सह-ोग दि-ाा, उन सबको भी मुबारक। लक्ष-ा अच्छा रखा। तो चारों ओर अभी इस दो प्रकार की सेवा की अच्छी धूम-धाम चल रही है और आगे भी चलती रहेगी। बापदादा को -ाद है कि पहले विदेश से वी.आई.पीज़. तो छोड़ो, आई.पीज़. लाना भी मुश्किल लगता था। और अभी तो सहज लगता है ना! तो -ाह सेवा का प्रत-ाक्षफल है। और कितनों की दुआ-ें मिलीं! जिसके हाथ में बुक जाता है, उन सबकी दुआ-ें किसके खाते में जमा होती हैं? जो निमित्त बनते हैं। चाहे देने की सेवा, चाहे बनाने की सेवा, चाहे आइडि-ाा निकालने की, चाहे लिखने की–सबको दुआ-ें मिलती हैं। तो कितनी दुआ-ें मिल रही हैं! बहुत दुआ-ें मिलती हैं, आप सिर्फ रिसीव करो। अपने में ही बिज़ी रहते हो तो दुआ-ें रिसीव नहीं करते हो। और जो भी आई.पीज़. -ाा वी.आई.पीज़. सम्पर्क में आते हैं तो एक कितनों को अनुभव सुना-ेंगे तो उन सभी की दुआ-ें ब्राह्मण आत्माओं को बहुत-बहुत प्राप्त होती हैं। अगर दुआ-ें रिसीव करो तो भी सम्पन्न तो हो ही जा-ेंगे। बुक भी अच्छा निकाला और -ो प्रोग्राम भी बहुत अच्छा है। और भारत वालों की विशेष सेवा अभी कार -ात्रा की चल रही है। (बिज़नेस विंग के भाई-बहिनों ने ११ कारों की एक रेली राजकोट से बाम्बे तक निकाली है, जिसमें अनेक प्रकार की सेवा-ें हो रही हैं) उसकी भी रिज़ल्ट बहुत अच्छी निकल रही है और आगे एक भी निमित्त बन ग-ो तो अनेकों के भाग-ा जगाते रहेंगे। तो -ो भी सेवा की रिज़ल्ट अच्छी दिखाई दे रही है। जो भी इस सेवा में निमित्त हैं, उमंग-उत्साह से बढ़ रहे हैं, उन सभी को भी, चारों ओर के भारतवासी बच्चों को, सह-ोगी बच्चों को, निमित्त बच्चों को बापदादा मुबारक देते हैं। मेहनत नाम मात्र और सफ़लता ज-ाादा, अब

ऐसी सेवा के प्लैन बनाओ। इस सेवा में भी -ाह दिखाई देता है कि मेहनत कम, रिज़ल्ट ज़-ाादा। ऐसे विदेश के दोनों प्रोग्राम में भी ऐसे हैं। अच्छा।

देश-विदेश के सर्व सेवा में उमंग-उत्साह से आगे बढ़ने वाले, अथक बन औरों को दान-वरदान देने वाली आत्माओं को, चारों ओर के बाप के सर्व सम्बन्ध के लॅव में लीन रहने वाली लॅवलीन आत्माओं को, सदा सहज अनुभव करने, औरों को भी सहज अनुभव कराने वाली सहज-ोगी आत्माओं को, सदा स्व-ं को स्वमान द्वारा सहज देहभान से मुक्त करने वाली जीवनमुक्त आत्माओं को, सदा बाप को साथ अनुभव करने वाले और साथी अनुभव करने वाले समीप आत्माओं को बापदादा का -ाद-प्-ाार और नमस्ते।

रिट्रीट वा विदेश सेवा में सह-ोगी भाई बहिनों से तथा दादि-ों से अव्-ाक्त बापदादा की मुलाकात:-

सभी खुशी से सेवा करते हैं तो उसका रिज़ल्ट भी ऐसा निकलता है। जैसा सम-ा समीप आ रहा है, सम-ा के साथ सफ़लता भी समीप आ रही है। कुछ सम-ा पहले सफ़लता दूर लगती थी लेकिन अभी सफ़लता कितनी समीप अनुभव हो रही है। अभी कोई भी कार्-ा करते हो तो आता है ना कि सफ़लता हुई पड़ी है। सबकी स्थिति भी सहज-ोगी की बढ़ती जाती है ना। तो जितनी स्थिति सहज-ोगी की बढ़ती है उतनी सफ़लता भी स्व-ं आगे आती है। सफ़लता के पीछे नहीं जाते, लेकिन सफ़लता स्व-ं आती है। अच्छी विधि है। अभी स्व-ं ऑफ़र करते हैं। पहले कॉन्टेक्ट करना मुश्किल था। बापदादा को ज-ान्ती (लण्डन की ज-ान्ती बहन) की बात -ाद आती है। जब बाहर की सेवा कहते थे तो सभी को कहती थी बड़ा मुश्किल है, विदेश है। आप लोगों को विदेश का पता नहीं। और अभी व्-ाक्ति मिलते हैं, स्थान कम है। मधुबन में भी देखो स्थान के कारण नम्बर मिलता है। सभी ने मेहनत अच्छी की। मोहब्बत में रहकर मेहनत की इसलि-े मेहनत मोहब्बत में बदल गई। (बहनों ने बापदादा को ग्लोबल बुक तथा ज्वेल आफ लाइट बुक दिखाई, बापदादा ने सभी सेवा में सह-ोग देने वालों को स्टेज पर बुला-ाा) इन्टरनेशनल है ना। जब चीज़ तै-ाार हो जाती है तो कितनी खुशी होती है। पहले बना-ाा जाता है फिर जब तै-ाार हो जाती है तो सभी के सामने आ

जाती है। लण्डन, अमेरिका, ऑस्ट्रेलि-ा सभी ने इसमें सह-ोग अच्छा दि-ा है। इसलिए जो भी निमित्त बने सभी अपने-अपने नाम से -ाद स्वीकार करना। बापदादा सभी निमित्त बने हुए बच्चों को मुबारक देते हैं। (चिकागो की कान्फ्रेन्स भी अच्छी रही) कानफ्रेन्स की सफ़लता भी अच्छी हुई। सभी ने अच्छी सेवा की। अच्छी हिम्मत रखी और हिम्मत का प्रत्-ाक्षफल सर्व की मदद मिली। ब्राह्मण समाचार पत्रों में तो विशेष नाम आ ग-ा। जो भी विशेष सेवा करते हैं उसका प्रत्-ाक्षफल पहले मन में खुशी होती है और साथ-साथ ब्राह्मणों के बुक में जमा हो जाता है। (मैक्सिको की कान्फ्रेन्स भी अच्छी हुई) सुना-ा ना कि हर का-र्ा में सफ़लता समीप आ रही है। जो भी, जहाँ भी सेवा कर रहे हो तो सर्व के संगठन के वा-ाब्रेशन से विशेष का-र्ा में सफ़लता मिल रही है। जैसे बिल्डिग बनती है ना तो एक-एक कण का सह-ोग होता है, एक-एक ईट का सह-ोग होता है तब बिल्डिग बनती है। कहने में तो ऐसा ही आता है कि फलाने कॉन्ट्रेक्टर ने बना-ा लेकिन ईट नहीं होती तो कॉन्ट्रेक्टर क-ा करता? तो आप सभी सेवा के सफ़लता के बिल्डिग की एक-एक विशेष ईट हो, फ़ाउन्डेशन हो। बाकी जिस का-र्ा के लि-े जो निमित्त बनता है उनका विशेष नाम हो जाता है। (-ाह -ाू.एन.की गोल्डन जुबली है। फ़ैमिली इ-ार चल रहा है) तो गोल्डन सफ़लता ला-ेंगे ना। आपका तो हर वर्ष फ़ैमिली इ-ार चल रहा है। फ़ैमिली बढ़ रही है, फ़ैमिली सुखी हो रही है। फ़ैमिली प्लैनिंग तो आपका है ही। फ़ैमिली कन्ट्रोल प्लैनिंग नहीं, फ़ैमिली बढ़ने का प्लैनिंग। दुनि-ा वाले कहते हैं छोटा परिवार सुखी परिवार और -ाहाँ कहते हैं बड़ा परिवार, सुखी परिवार। सभी अच्छी मेहनत करते हैं। 'मेहनत' शब्द के बजा-ा, अच्छी सेवा करते हो। 'मेहनत' शब्द थोड़ा अच्छा नहीं लगता। सेवा द्वारा प्रत्-ाक्षफल खा रहे हो। डॉ-ालॉग अच्छा हुआ ना? सेवा से सभी खुश हैं? सब आगे बढ़ रहे हैं और बढ़ते ही रहेंगे। बुद्धि अच्छी चलाते हो। अब ऐसा प्लैन बनाओ जो कोई भी आत्मा ब्राह्मण परिवार से किनारे नहीं हो जा-े। किले को ऐसा मज़बूत करना पड़े जो कोई जा ही नहीं सके। अभी फिर भी सुनते हैं अच्छे-अच्छे चले ग-े, क-ों चले ग-े, कहाँ चले ग-े? तो ऐसा किला मज़बूत करो तो जो कोई सोचे तो भी जा नहीं सके। जैसे चारों ओर करेन्ट की तारें लगा देते हैं ना तो आप भी वा-ाब्रेशन द्वारा करेन्ट की तारें लगा दो, जो उन्हों को स्मृति आ जा-े। अच्छा!

अव्-ाक्त बापदादा की पर्सनल मुलाकात

ग्रुप नं. १

सर्व ख़ज़ानों से भरपूर रहने वाला ही विश्व कल्-ाणकारी है

भी अपने को विश्व कल्-ाणकारी बाप के बच्चे विश्व कल्-ाणकारी आत्मा-ें अनुभव करते हो? विश्व कल्-ाणकारी आत्माओं की विशेषता क्-ा होगी? विश्व का कल्-ाण करने वाली आत्मा पहले स्व-ं सर्व ख़ज़ानों से सम्पन्न होगी। तो सर्व ख़ज़ानों से भरपूर हो? कितने खज़ाने हैं? बहुत हैं ना! तो सब ख़ज़ानों से भरपूर आत्मा-ें ही औरों को दे सकेंगी। अगर ज्ञान का खज़ाना है तो फ़ुल ज्ञान हो, कोई भी कमी नहीं हो तब कहेंगे भरपूर। तो फ़ुल है -ा कभी कोई कम भी हो जाता है? है लेकिन सम-ा पर कार्-ा में लगा सके--ो चेकिंग सदा करते रहो। तो सम-ा पर -ाूज़ कर सकते हो कि सम-ा बीत जाता है पीछे सोचते हो? फिर क्-ा कहना पड़ता है–ऐसे करते थे, ऐसे होता था तो 'थे' और 'था' होता है। क्-ा चेक करना है कि सम-ा पर जो खज़ाना चाहि-ो वो खज़ाना कार्-ा में लगा -ा नहीं? विश्व कल्-ाणकारी आत्मा-ें सदा हर सम-ा चाहे मन्सा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में, हर सम-ा सेवा में बिज़ी रहती हैं। तो इतने बिज़ी रहते हो? सबसे ज्-ादा सेवा में बिज़ी कौन रहता है? क्-ोंकि जब नाम ही है विश्व कल्-ाणकारी तो -ाह आक्-ुपेशन हो ग-ा ना। तो जो आक्-ुपेशन होता है उसके बिना रह नहीं सकते। तो सदा बिज़ी हैं और सदा रहेंगे। सारा दिन बुद्धि में क्-ा रहता है? कोई आत्मा मिले और सन्देश दें। अच्छा है, भारतवासी अपने विधि से सेवा में आगे बढ़ रहे हैं और मलेशि-ा वाले अपनी विधि से, रशि-ा वाले अपनी विधि से, लेकिन सभी -ाद और सेवा की लगन से आगे बढ़ रहे हैं।

बापदादा को भी सभी बच्चों को देख खुशी होती है कि कहाँ-कहाँ से बिछुड़ी हुई आत्मा-ें अपने परिवार में पहुँच गई। आप सभी को भी खुशी है ना? अपना परिवार देख खुशी में नाचते हो ना? विश्व कल्-ाणकारी हैं तो चारों ओर के विश्व की आत्माओं का पार्ट नूंधा हुआ है। एक भी कोना रह जा-ेगा तो विश्व नहीं कहेंगे। अच्छा, रशि-ा में सेवा अच्छी बढ़ रही है। मलेशि-ा तो है ही आगे ना! अच्छी रिज़ल्ट है। भारत तो है ही फ़ाउन्डेशन। भारत जगा तब तो विदेश

जगा ना। तो हर स्थान और हर बच्चे की अच्छी खुशबू बाप के पास आती रहती है। भारतवासि-ों को अनेक तरफ़ की आत्माओं को देख और ज-ादा खुशी होती है। भारतवासी फ्राकदिल हैं। खुशी बढ़ती है ना–वाह, हमारा परिवार। आप सबको देख करके सभी के दिल से दुआ-ें निकलती हैं। बहुत अच्छा, जो हमारे बिछड़े हुए भाई-बहनें मिल ग-े। कोई बिछड़ा हुआ आकर परिवार में मिल जा-े तो कितनी खुशी होती है! तो आपको भी खुशी और सभी को भी खुशी होती है। श्रीलंका वाले भी लक्की हैं। क-ोंकि नाम ही है श्रीलंका। श्री सदा श्रेष्ठ को कहते हैं। तो श्रेष्ठ आत्मा-ें बन ग-े हैं ना! कितना भी कहाँ हंगामा होता रहे लेकिन आप सेफ हो। -ाद की छत्रछा-ा में हो। अच्छा!

ग्रुप नं. २

स्व-ं और सम-ा के महत्व को जानकर भविष-ा प्रालब्ध जमा करो

सदा अपने को बाप के साथ रहने वाली श्रेष्ठ आत्मा-ें अनुभव करते हो? सदा साथ रहने वाले वा कभी-कभी साथ रहने वाले क-ा समझते हो? जब बाप का साथ छूटता है तो और कोई साथी बनते हैं? मा-ा तो साथी बनती है ना! कितने जन्म मा-ा के साथी रहे? बहुत रहे ना। और बाप का साथ प्रैक्टिकल में कितने सम-ा का है? संगम-ुग है ना और संगम-ुग है भी सबसे छोटा -ुग। तो क-ा करना चाहि-े? सदा होना चाहि-े। क-ोंकि सारे कल्प में कितना भी पुरुषार्थ करो तो भी साथ का अनुभव कर सकेंगे? (नहीं) तो इसका सलोगन क-ा है? (अभी नहीं तो कभी नहीं) -ाह -ाद रहता है? सम-ा का भी महत्व -ाद रहे और स्व-ं का भी महत्व -ाद रहे। दोनों महत्व वाले हैं ना! इस संगम-ुग के सम-ा को, जीवन को–दोनों को हीरे तुल-ा कहा जाता है। हीरे का मूल-ा कितना होता है! तो इतना महत्व जानते हुए एक सेकण्ड भी संगम-ुग के साथ को छोड़ना नहीं है। सेकण्ड ग-ा, तो सेकण्ड नहीं लेकिन बहुत कुछ ग-ा। ऐसी स्मृति रहती है? सारे कल्प की प्रालब्ध जमा करने का सम-ा अब है। अगर सीज़न पर सीज़न को महत्व नहीं देते तो सदा के लि-े वंचित रह जाते हैं। तो इस सम-ा का महत्व है, जमा करने का सम-ा है। अगर राज-ा अधिकारी भी बनते हो

तो भी अभी के जमा के हिसाब से और पूज-ा भी बनते हो तो इस सम-ा के जमा के हिसाब से। एक छोटे से जन्म में अनेक जन्मों की प्रालब्ध जमा करना है। -ो -ाद रहता है कि कभी-कभी? सम टाइम है? तो -ो सम टाइम शब्द कब खत्म करेंगे? समाप्ति समारोह कब मना-ोंगे? रावण को भी मारने के बाद जलाकर खत्म कर देते हैं? तो अभी मारा है, जला-ा नहीं है। अच्छा, -ो वेराइटी ग्रुप है। बापदादा एक-एक रत्न की वैल्-ाु को जानते हैं। उसी अमूल्-ा रत्न की दृष्टि से देखते हैं। है ना अमूल्-ा रत्न! कम भाग्-ा नहीं है जो ऊंचे ते ऊंचे भगवान् के बन ग-ो। तो खुश रहो और खुशी बांटते चलो। भरपूर हैं ना कि थोड़ा कम है? जो फुल होता है वह फ़ेल नहीं होता। तो विज-ी हैं ना? अच्छा!

ग्रुप नं. ३

सपूत बन स्व-ं पर श्रीमत और वरदानों का हाथ अनुभव करते हुए समान बनने का सबूत दो

आ भी का लक्ष्-ा बाप समान बनने का है ना। बाप समान बनना है -ा बने हैं? फ़लक से कहो कि हम ही बने थे, हम ही हैं और हम ही बनते रहेंगे। आप सभी का सलोगन है 'फ़ालो फ़ादर'। तो फ़ालो फ़ादर करने वाले को क-ा कहेंगे? समान हुए ना। जो बाप के कदम वो आपके कदम, तभी तो फ़ालो फ़ादर कहेंगे। तो फ़ालो फ़ादर है? बापदादा सभी बच्चों को सदा सपूत बच्चों के रूप में देखते हैं। सपूत बच्चा किसको कहा जाता है? जो हर कर्म में सपूत बन बाप को सबूत दे। सपूत अर्थात् सबूत देने वाले। प्रत-ाक्षफल खा रहे हो ना कि भविष्-ा के लिए सिर्फ जमा होता है, वर्तमान में नहीं। एक कदम सेवा का करते हो वा -ाद में रहते हो तो शक्ति मिलती है, खुशी भी मिलती है, अनुभव है? प्रत-ाक्षफल खाने वाले अर्थात् सदा हेल्दी, वेल्दी और हैप्पी रहने वाले। तो सभी वेल्दी भी हो। कितने खज़ाने हैं? बहुत खज़ाने हैं ना। भरपूर हो ना? -ा थोड़ा-थोड़ा खाली हैं? जितना ख़ज़ानों से भरपूर रहेंगे तो जो सम्पन्न होता है उसमें हलचल भी नहीं होती और दूसरी चीज़ भर भी नहीं सकती। सपूत बच्चे अर्थात् सदा बाप के श्रीमत का हाथ और साथ अनुभव करने वाले। तो श्रीमत का हाथ

सदा अपने ऊपर अनुभव करते चलो। सदा हाथ है? तो जहाँ बाप का हाथ है वहाँ सफ़लता है ही है। बाप की श्रीमत का हाथ अर्थात् वरदान का हाथ। कोई भी का-र्य करते हो तो पहले -ो स्मृति में लाओ कि श्रीमत का हाथ, वरदान का हाथ सदा हमारे ऊपर है। अनुभव करते हो ना और बाप को भी सपूत बच्चों को वरदान देने में खुशी होती है। कभी भी -ो वरदान का हाथ छूट नहीं सकता। कोई छुड़ा सकता है, है किसकी ताकत कि कभी-कभी मा-ा की हो जाती है? मा-ा ने विदाई कर ली -ा कभी-कभी उसको बुला लेते हो? कमज़ोर होना अर्थात् मा-ा को बुलाना। कमज़ोर होते हो क-ा? चाहते नहीं हो लेकिन हो जाते हो? नहीं, हो ही नहीं सकते। मास्टर सर्वशक्तिमान् और कमज़ोर हो सकता है क-ा? रोशनी के होते अंधकार होगा क-ा? तो सर्वशक्तिमान् और कमज़ोर दोनों बातें मिलती हैं क-ा? फिर मा-ा को क-ों बुलाते हो? बुलाते नहीं हो, वो ज़बरदस्ती आती है। मा-ा का आपसे प्-ार है, आपका मा-ा से नहीं? सदा अमृतवेले अपने आपको विज-ा का तिलक लगाओ और बार-बार उसे रिफ्रेश करो। अनेक बार के विज-ी हो। -ो तो पक्का है ना! जब इतनी हिम्मत रख बाप के बन ग-ो तो बनने के बाद हिम्मत की पद्म गुणा मदद मिलती है। एक कदम की हिम्मत और पद्म क़दम की मदद। -ाह अनुभव है ना? पद्मगुणा मदद अनुभव करने वाले अर्थात् सदा बाप समान विज-ी हैं ही हैं। सबसे ज-ादा प्-ार बाप से है ना। तो जिससे प्-ार होता है उस जैसा तो बनना ही है। प्-ार का रेसपॉन्स है समान बनना। अच्छा, सभी अपने को बाप के समीप, बाप के प्-ारे ते प्-ारी आत्मा-ें अनुभव कर उड़ते चलो।

ग्रुप नं. ४

सदा बाप के दिलतख्तनशीन, परमात्म प्-ारे बनो तो बेफ़िक्र बादशाह बन जा-ेंगे

सभी लास्ट सो फ़ास्ट हो ना। फ़र्स्ट डिवीज़न में आने वाले हो? फ़र्स्ट आने वाले अर्थात् राज-ा अधिकारी आत्मा-ें। तो सभी राज-ा अधिकारी हो? सत-ुग-त्रेता के विश्व राज-ा के तख्तनशीन सम-ा प्रमाण कितने बनेंगे? सब बनेंगे! तो तख्त पर बैठेंगे -ा बैठने वाले के साथी होंगे? जब सभी को सुनाते

हो २१ जन्म हैं, तो कितने नम्बरवार तख्त पर बैठेंगे? इकट्ठे-इकट्ठे बैठेंगे -ा टर्न बाई टर्न बैठेंगे? सबसे बड़े से बड़े राज-ा अधिकार का अनुभव अब संगम पर स्वराज-ा का होता है। मज़ा तो स्वराज-ा अधिकारी का अभी अनुभव कर रहे हो ना। स्वराज-ा का नशा है ना -ा सत-ुग में जब तख्त पर बैठेंगे तब होगा? अभी का नशा बड़ा है -ा सत-ुग का नशा बड़ा है? (अभी का) तो निश्च-ा से सदा कहते हो कि स्वराज-ा अधिकारी सो विश्व राज-ा अधिकारी। स्वराज-ा हमारा ब्राह्मण जन्म का अधिकार है। -ाद रहता है ना कि कभी प्रजा भी बन जाते हो? प्रजा का अर्थ है अधीन रहना और राजा का अर्थ है अधिकारी। तो सदा अधिकारी रहते हो -ा कभी अधीन भी हो जाते हो? अभी संगम-ुग पर भी अगर 'सम टाइम' होगा तो 'सदा' कब होगा? अभी का सदा है -ा भविष्-ा का? पाण्डव विज-ी हो ग-े? इस सम-ा विज-ी हो -ा वहाँ भी जाकर रहेंगे, क-ा होगा? क-ोंकि आप सभी बाप के प्-ारे हो ना तो दिल तख्तनशीन हो। तो जो दिल तख्तनशीन हैं, दिल के प्-ारे हैं उसका चित्र स्वत: ही दिल में खिंचता है। आप सभी क-ा कहते हो कि हम सदा कहाँ रहते हैं? बाप के दिल में रहते हो ना? दिल से जुदा हो ही नहीं सकते। कोई की हिम्मत नहीं जो दिलाराम के दिल से आपको अलग कर सके। -ो पक्का निश्च-ा है ना? गीत गाते हो ना–हम जुदा हो नहीं सकते। चाहे सारी दुनि-ा अलग करने की कोशिश करे तो भी नहीं हो सकते। क-ोंकि कोटों में कोई एक आप हो, और तो आपके आगे कुछ भी नहीं हैं। फ़ास्ट ग्रुप की -ाही निशानी है ना। शरीर छूट जा-े लेकिन दिलतख्त नहीं छूट सकता। इतना पक्का है ना? तो -ो तख्त किसको मिलता है? जो पद्मापद्म भाग-ावान हैं। तो छोड़ेंगे कैसे? चैलेन्ज करते हो कि भले ट्रॉ-ाल करो। इतने अटल हो ना। बच्चों की हिम्मत को देख बाप भी बलिहार जाते हैं। दुनि-ा के आगे फ़ख़र से कहते हो कि हम परमात्म प्-ारे बन ग-े। इसी फ़ख़र में रहने वाले फ़िक्र से फ़रिग हो। फ़िक्र सब खत्म हो गई ना कि एक दो कोने में रह ग-ा? कोई जेब में छिपा हुआ तो रह नहीं ग-ा? जब बाप साथ है तो बेफ़िक्र बादशाह हो। बाप को सब फ़िक्र दे दी ना? देने में होशि-ार हो ना? कि सम्भालने में होशि-ार हो? देने में भी होशि-ार हो और लेने में भी होशि-ार हो! कभी ग़लती से कहते हो कि मेरा मन आज थोड़ा-सा उदास है, तो मेरा है क-ा? -ा तेरा हो ग-ा? -ा उस

सम-ा मेरा हो जाता है? मेरा मन नहीं लगता, मेरा मन नहीं करता--ो बोल ही व्-ार्थ बोल हैं। मेरा कहना माना मुश्किल में पड़ना। तो मन दे दि-ाा है -ाा रख दि-ाा है? -ाा कभी-कभी वापस ले लेते हो? तो ब्राह्मणों की भाषा क-ाा है? मेरा -ाा तेरा? तो क-ों सोचते हो? -ो डिक्शनरी की भाषा ही नहीं है। मेरा-मेरा कहकर मैला कर देते हैं। मन दे दि-ाा, तन दे दि-ाा, धन दे दि-ाा, ट्रस्टी हो, मेरा नहीं है। ट्रस्टी हो -ाा गृहस्थी हो? गृहस्थी माना मेरा, ट्रस्टी माना तेरा। कौन हो सभी? अपने में ट्रस्ट है? बाप तो स्व-ां ऑफर करता है मैं आपके साथ हूँ। अच्छा, विश्व कल-ाण के -ाज्ञकुण्ड भिन्न-भिन्न देशों में प्रज्जवलित कर लि-ो। बापदादा अनेक देशों में मैसेज देने वाले सेवाधारी बच्चों को देख बहुत हर्षित होते हैं कि वाह मेरे बच्चे वाह! कौन हो? वाह-वाह बच्चे। वाह-वाह हो ना। हा-ा-हा-ा करने वाले तो नहीं ना? अच्छा, बाप विश्व कल-ाणकारी है ना तो कोई भी एरि-ाा वंचित न रहे। कोने-कोने से, चाहे एक निकले, चाहे दो निकले, लेकिन निकलने ज़रूर हैं। तो वृद्धि तो होनी है। तो हिम्मत है, मदद भी है।

जहाँ बाप का हाथ है वहाँ सफ़लता है ही है। बाप की श्रीमत का हाथ अर्थात् वरदान का हाथ। कोई भी का-ार्ा करते हो तो पहले -ो स्मृति में लाओ कि श्रीमत का हाथ, वरदान का हाथ सदा हमारे ऊपर है।

न्-ारा-प्-ारा, वन्डरफुल, स्नेह और सुखभरा अवतरण – शिव ज-ान्ती

9-3-94

व्रत, जागरण और बलि के -ाथार्थ स्वरूप में स्थित कराने वाले शिव भोलानाथ बाबा अपने सालिग्राम बच्चों प्रति बोले–

आज त्रिदेव रचता बाप अपने पूज्-ा सालिग्राम बच्चों से मिलने आ-ो हैं। जैसे बिन्दु ज्-ोति स्वरूप बाप की पूजा होती है, -ादगार मनाते हैं तो बाप के साथ-साथ आप सालिग्राम आत्माओं की भी पूजा होती है। बाप एक त्रिमूर्ति शिव गा-ा और पूजा जाता है और आप सालिग्राम आत्मा-ें अनेक हो। पूजा दोनों की होती है। क-ोंकि बाप ने सभी बच्चों को अपने समान पूज्-ा बना-ा है। कभी भी सालिग्राम को देखते हो तो क-ा अनुभव करते हो? -ो हम ही हैं–ऐसे लगता है? तो बाप ने बच्चों को समान तो क-ा लेकिन अपने से भी श्रेष्ठ पूज्-ा बना-ा है। बच्चों की पूजा डबल रूप में होती है। बाप की पूजा एक ही शिवलिंग के रूप में होती है। आप बच्चों की सालिग्राम के रूप में भी होती है और देव आत्माओं के रूप में भी होती है। बाप से भी ज्-ादा डबल रूप के पूजा के अधिकारी आत्मा-ें आप हो। जैसे डबल विदेशी कहलाते हो तो डबल पूज्-ा भी हो। डबल ताजधारी भी आप बनते हो। निराकार बाप नहीं बनते। कहाँ-कहाँ भक्त लोग शिव की प्रतिमा को ताज डाल देते हैं। क-ोंकि ताजधारी बना-ा है इसलि-ो कहाँ-कहाँ ताज दिखा देते हैं। लेकिन बाप कभी भी रत्न जड़ित सोने-चाँदी के ताजधारी नहीं बनते। क-ोंकि ताज धारण होता है प्रैक्टिकल में, मस्तक में। तो निराकार बाप को मस्तक है क-ा? शरीर ही नहीं है तो ताज क-ा धारण करेंगे! लेकिन स्नेह के कारण ताज दिखा देते हैं। तो बाप ने बच्चों को अपने से भी आगे रखा है। इतनी खुशी और इतनी श्रेष्ठ स्मृति रहती है? बापदादा को अपनी ज-ान्ती मनाने की खुशी नहीं है लेकिन आप सबकी भी ज-ान्ती है, इसलि-ो बच्चों की ज-ान्ती की खुशी है। क-ोंकि बाप अकेला कुछ नहीं कर सकता और आप भी अकेले कुछ नहीं कर सकते। चाहे कहीं-कहीं कोई-कोई बच्चों को थोड़ा आ जाता है कि मैं ही करने वाला हूँ लेकिन सिवाए बाप के सफ़लता नहीं मिलती। तो न बाप अकेला

कुछ कर सकता, न बच्चे अकेले कुछ कर सकते हैं। अगर बाप बच्चों से मिलन मनाने भी साकार में चाहे वा आकार में भी चाहे तो ब्रह्मा का आधार लेना ही पड़ता है। ब्रह्मा के बिना भी कुछ कर नहीं सकता। माध्-ाम के बिना साकार मिलन नहीं मना सकता। तो कितना प्-ाार बाप का बच्चों से है और बच्चों का बाप से है! एक-दो के बिना कुछ नहीं कर सकते। अगर बाप को किनारा कि-ाा, साथ नहीं रखा तो अकेले कुछ कर सकते हो। बाप कर सकता है? बाप भी नहीं कर सकता। तो -ो बाप और बच्चों का साथ-साथ दिव्-ा जन्म लेना, साथ-साथ विश्व परिवर्तन करना और साथ-साथ अपने स्वीट होम में जाना--ो ड्रामा की अविनाशी नूँध है। इसको कोई बदल नहीं सकता। तो -ाह नूँध अच्छी है ना, प्-ाारी लगती है ना? तो आज सब बाप का बर्थ डे मनाने आ-ो हो -ाा अपना? बाप कहेंगे आपका और बच्चे बाप को कहेंगे कि आपका।

-ो दिव्-ा अवतरण, जिसको शिव ज-ान्ती वा शिवरात्रि कहते हैं, कितना आत्माओं के लि-ो स्नेहभरा, सुखभरा अवतरण है। सत-ाुग में भी ऐसा बर्थ डे नहीं मना-ोंगे। आत्मा-ों, आत्माओं का बर्थ डे मना-ोंगी लेकिन इस सम-ा आत्मा-ों परम आत्मा का बर्थ डे मनाती हैं। सारे कल्प में ऐसा न्-ाारा और प्-ाारा, वन्डरफुल बर्थ डे, जो एक ही सम-ा पर बाप का भी हो और बच्चों का भी हो – ऐसा कभी होता है क-ाा? अगर तारीख एक भी होगी तो वर्ष का -ाा मास का -ाा डेट का अन्तर होगा। लेकिन -ो अवतरण दिवस कितना वन्डरफुल है जो बाप और बच्चों का साथ-साथ है।

इस -ादगार दिवस पर विशेष भक्त लोग भी दो विशेषताओं से -ो दिवस मनाते हैं। दो विशेषता-ों कौन-सी हैं? एक–विशेष व्रत धारण करते हैं और दूसरा–स्व-ं को समर्पित न करते हुए और किसी को बलि चढ़ाते हैं। तो बलि चढ़ाना और व्रत धारण करना -ो दोनों विशेषताएं इस दिवस की हैं। अनेक प्रकार के व्रत धारण करते हैं। चाहे कोई भोजन का करते हैं, कोई जागरण का करते हैं, कोई दूर-दूर से पैदल करते हुए चलने का करते, कितना भी थक जा-ों लेकिन व्रत अपना पूरा करते हैं। चाहे कितने दिन भी लग जा-ों, कितना सम-ा भी लग जा-ो लेकिन व्रत नहीं छोड़ते। तो -ाह -ादगार किससे कॉपी की? आपका है ब्राह्मण जीवन का व्रत और भक्तों का है एक दिन का व्रत। आपने भी जब ब्राह्मण जन्म

वा दि-ा बर्थ लि-ाा तो क-ाा व्रत लि-ाा? सदा अज्ञान नींद से जागरण का व्रत लि-ाा ना कि थोड़ा-थोड़ा नींद करेंगे -ाह व्रत लि-ाा? वा थोड़े-थोड़े झुटके खा लेंगे ऐसे तो नहीं कि-ाा? तो आप सभी ने भी शिव ज-ान्ती वा दि-ा बर्थ डे पर जागरण का व्रत लि-ाा इसलि-े भक्त भी -ादगार रूप में जागरण करते हैं। और आप सबने भी शुद्ध भोजन का व्रत लि-ाा। इसलिए भक्त लोग भी, कुछ भी हो जा-े, चाहे बीमार भी हो जाते हैं तो भी अन्न के व्रत को तोड़ेंगे नहीं। तो आप सब भी कोई भी मन के आगे, तन के आगे, परिस्थिति-ाँ आ जा-ें तो व्रत तोड़ते हो क-ाा? कभी कुछ मिक्स खा लि-ाा–ऐसे करते हो क-ाा? कोई देखता तो है नहीं, चलो खा लि-ाा, अपना नि-ाम पक्का रखते हो ना कि कच्चे हो? कभी-कभी देखकरके थोड़ी दिल होती है? एक ही जैसा खाना खाते-खाते कभी दूसरा भी खाने की दिल होती है? अच्छा, इसमें अमेरिका, आस्ट्रेलि-ाा, -ारोप, एशि-ाा वा रशि-ाा सभी पक्के हो ना -ाा थोड़ा-थोड़ा कच्चे हो?

तो डबल विदेशी सभी पास हो ग-े और भारत वाले तो पास हैं ही ना! भारत वालों को फिर भी सहज है। डबल विदेशि-ों को इसमें डबल मेहनत भी है। लेकिन पास हो इसकी मुबारक। तो एक बर्थ डे की मुबारक, दूसरी पास होने की मुबारक और तीसरी कभी भी हलचल में न आए सदा अचल रहना, इसमें पास हो? इसमें कह देते हैं–क-ाा करें–सम-टाइम। आज बापदादा ने डबल विदेशि-ों के लि-े बहुत रमणीक भाषा इमर्ज की, क-ोंकि डबल विदेशी एंज्वा-ाज-ादा पसन्द करते हैं ना। कुछ होना चाहि-े, कुछ एंज्वा-ा हो, ऐसे शान्त-शान्त क-ाा रहें। तो बापदादा शिवरात्रि पर इन शब्दों का सभी से दृढ़ व्रत कराते हैं। व्रत लेने के लि-े तै-ाार हो? -ाा जब सुनेंगे तब कहेंगे कि -े तो थोड़ा, थोड़ा मुश्किल है। पहले तो 'मुश्किल' शब्द संकल्प में भी नहीं ला-ेंगे--ाह व्रत लेने के लि-े तै-ाार हो? तो बापदादा ने देखा कि जब तक संकल्प में दृढ़ता नहीं तब तक सफ़लता नहीं होती। संकल्प होता है लेकिन दृढ़ नहीं होता तो कमज़ोरी आती है। बहुत करके कमज़ोरी के -ाही शब्द कहते हैं कि क-ाा करें – व्हाट। तो अभी व्हाट नहीं कहना लेकिन व्हाट के बजा-ा क-ाा कहेंगे? फ्ला-ा (उड़ना)। तो जब भी व्हाट शब्द आ-े तो ब्राह्मण डिक्शनरी में व्हाट के बजाए फ्ला-ा शब्द है। दूसरा शब्द क-ाा बोलते हो? व्हाई (क-ों), तो व्हाई को क-ाा करेंगे? बॉ-ा-बॉ-ा। सदा के लि-े

बॉ-ा-बॉ-ा करेंगे -ाा थोड़े टाइम के लि-ो? और तीसरा शब्द क-ाा बोलते हैं? हाउ। तो हाउ ([illegible]) नहीं, नो ([illegible]), जानते हैं, कैसे नहीं, नो अर्थात् जानने वाले। जब त्रिकालदर्शी बन जा-ोंगे, जानने वाले बन जा-ोंगे तो फिर हाउ कहेंगे क-ाा? हाउ कहना माना हौव्वा आना। तो हौव्वा अच्छा लगता है क-ाा? इसीलि-ो -ाही शब्द हैं जो कमज़ोरी लाते हैं। -ाही शब्द हैं जो ॅ-ार्थ संकल्प का गेट खोलते हैं। सोचो, जब भी ॅ-ार्थ संकल्पों की क-ाू लगती है तो किस शब्द से लगती है? इन्हीं शब्दों से लगती है ना। -ाा क-ाों होगा, -ाा क-ाा वा कैसे होगा। -ो कैसे हुआ! -ो कैसे कहा! -ो क-ाों कहा! अब क-ाा करें! ... कैसे करें! तो कमज़ोरी के -ाा ॅ-ार्थ संकल्पों के गेट -ो शब्द हैं। इसको डिक्शनरी में चेंज कर दो। फिर क-ाा होगा? आप भी चेंज हो जा-ोंगे ना। तो भक्त लोग आपको ही कॉपी कर रहे हैं। आपकी बेहद की बात है और उन्होंने हद के रूप में -ाादगार रखा है। तो -ाह दृढ़ व्रत रखना–-ाही शिव ज-ान्ती वा शिवरात्रि मनाना है। मनाना अर्थात् बनना। ऐसे नहीं, सिर्फ केक काट लि-ाा लाइट जला ली, दीपक जला लि-ाा, तो -ो मनाना नहीं, -ो मनोरंजन भी आवश्-ाक है लेकिन इसके साथ-साथ कुछ काटना है और कुछ जलाना भी है।

एक तरफ़ दीपक वा मोमबत्ती जलाते हो, दूसरा केक काटते हो, तीसरा झण्डा लहराते हो, चौथा-गीत गाते हो, पांचवा-डांस भी करते हो। और क-ाा करते हो? मीठा बांटते और खाते हो। तो अभी -ो ६ बातें ही करनी पड़ेंगी। पहले तो दृढ़ संकल्प का अपने मन में दीप जलाओ कि अब से दृढ़ता द्वारा सफ़लता को पाना ही है। देखेंगे, पता नहीं, पता नहीं, नहीं। होना ही है, करना ही है, गे शब्द नहीं, है। और दूसरा केक कौन-सा काटेंगे? केक पूरा नहीं खा-ाा जाता, काटकर खा-ाा जाता है। तो क-ाा काटेंगे? जो भी सम्पन्न बनने में -ाा सम्पूर्ण बनने में कोई भी संकल्प मात्र भी रुकावट हो उसको अब से काट लो, खत्म। और जो कमज़ोरी हो उसके बजा-ा शक्ति धारण करने का केक मुख में डालो। पहले काटो, फिर मुख में खाओ। समझा? झण्डा कौन-सा लहरा-ोंगे? -ो तो -ाादगार के रूप से झण्डा लहराते हैं लेकिन अपने दिल में बाप को हर संकल्प, बोल और कर्म द्वारा सदा प्रत्-ाक्ष करने का झण्डा दिल में लहराओ। कोई भी संकल्प, बोल और कर्म ऐसा नहीं हो जो बाप को प्रत्-ाक्ष करने का नहीं हो। क-ाोंकि सबके दिल में बाप

के स्नेह के कारण -ाही संकल्प है कि बाप को प्रत्-ाक्ष करना है। तो कैसे करेंगे? सदा अपने संकल्प, बोल और कर्म द्वारा दिल में प्रत्-ाक्ष करने का झण्डा लहराओ और सदा खुश रहने की डांस करते रहो। कभी खुश, कभी उदास--ाह नहीं। जब उदास होते हो तो उस सम-ा भी अपना एक फोटो निकालो। और जब खुश होते हो तो भी फोटो निकालो। फिर दोनों फोटो साथ रखो। फिर देखो अच्छा क-ाा है? मैं -ो हूँ -ाा वो हूँ? तो सदा हर्षित रहने का, खुश रहने का डांस करो। कुछ भी हो जा-ो, कोई कितना भी खुशी चुराने की कोशिश करे। क-ोंकि मा-ाा किसी के द्वारा ही तो करा-ोगी ना। कुछ भी हो जा-ो, कितना भी कोई किसी भी प्रकार से खुशी कम करने -ाा खुशी गुम करने का प्र-ात्न करे लेकिन जब तक जीना है तब तक खुश रहना है। -ाह पक्का व्रत लि-ाा है ना। क-ाा नहीं कर सकते हो, विल पॉवर है ना? तो जिसके पास विल पॉवर है वो क-ाा नहीं कर सकता अगर आप मास्टर सर्वशक्तिमान् नहीं कर सकेंगे तो और कौन करेगा! कोई और पैदा होने वाले हैं -ाा आप ही हो? माला के मणके आपको ही बनना है -ाा औरों का इंतज़ार कर रहे हो? फ़र्स्ट डिवीज़न में आना है ना कि सेकण्ड भी चलेगा? तो -ाह दृढ़ संकल्प अर्थात् व्रत लो कि जब तक जीना है तब तक खुश रहना है। और जो खुश रहेगा वो खुशी की मिठाई बांटता रहेगा। उस मिठाई से तो सिर्फ मुख मीठा होता है और इससे मन, तन, दिल सब खुश हो जाते हैं। तो -ाह मीठा बांटना है। और गीत सदा क-ाा गाते हो? मीठा बाबा, प्-ाारा बाबा, मेरा बाबा--ाही गीत गाते हो ना सदा -ाह गीत ऑटोमेटिक बजता रहे। ऐसे नहीं, सेल खत्म हो जा-ो तो गीत खत्म हो जा-ो। बैटरी स्लो हो जा-ो। नहीं। जब बैटरी स्लो होती है, तो पता है कैसे गीत गाते हो? सबको अनुभव तो है ना। फिर क-ाा होता है? मेरा है तो बाबा, तो तो आ जाता है। सिर्फ मेरा बाबा नहीं कहेंगे, मेरा है तो बाबा। मिक्स हो ग-ाा ना। बैटरी स्लो होती है तो आवाज़ स्लो हो जाता है और उसमें तो तो शब्द एड हो जाता है। मेरा बाबा फ़लक से नहीं, मेरा है तो बाबा।

तो शिवरात्रि मनाना अर्थात् -ो दृढ़ व्रत लेना। ऐसी शिवरात्रि मनाई ना? -ाा सोचकर पीछे जवाब देंगे! अच्छा, बहुत होशि-ाार हो, अभी-अभी सोच लि-ाा। डबल विदेशी हो इसीलि-ो डबल होशि-ाार हो। अच्छा!

डबल विदेशि-ों ने मधुबन में कौन-सी विशेष सेवा की? क-ाा कि-ाा? ब्रह्मा

बाबा को प्रत्-ाक्ष कि-ाा। स्टेम्प का फंक्शन मना-ाा। विशेष -ोग भी लगा-ाा ना। पॉवरफुल -ोग लगा-ाा तो विघ्न विनाशक हो ग-ो ना। चाहे मधुबन निवासि-ों के -ोग ने, चाहे डबल विदेशि-ों के -ोग ने, चाहे चारों ओर ब्राह्मण बच्चों के -ोग ने कमाल की ना। क-ोंकि चारों ओर सबका -ाह एक ही संकल्प था कि ब्रह्मा बाप को प्रत्-ाक्ष करना ही है। फिर कोई ने भाग-दौड़ की सेवा की, कोई ने मंसा सेवा की, कोई ने वाचा सेवा की, लेकिन जिन्होंने जो भी -ोग-ुक्त होकर सेवा की ऐसे सेवाधारि-ों को सफ़लता की मुबारक। कितनी खुशी हुई! क-ोंकि ब्रह्मा बाप से सबका दिल का अति सूक्ष्म प्-ाार है। सभी ने ब्रह्मा बाप को देखा है -ाा जानते हो? क-ाा कहेंगे–देखा है -ाा जाना है? जो कहते हैं हमने देखा है वह हाथ उठाओ। जो कहते हैं जाना तो है लेकिन अभी देखना है वो हाथ उठाओ। (थोड़े लोगों ने उठा-ाा) अच्छा, अनुभव कि-ाा है? ब्रह्मा हमारा बाप है -ाह अनुभव कि-ाा है? क-ोंकि अनुभव भी एक आंख है, जैसे स्थूल आंखों से देखा जाता है तो सबसे बड़ी आंख है अनुभव। अनुभव की आंख से देखा तो भी देखा कहेंगे। अगर अनुभव भी नहीं कि-ाा और अव्-ाक्त रूप से, अव्-ाक्त स्थिति द्वारा देखा नहीं तो फिर अपना नाम दादि-ों को नोट कराना तो वो अनुभव करा देंगी। रह नहीं जाना। क-ोंकि दूसरों को स्टैम्प द्वारा ब्रह्मा बाप का अनुभव करा रहे हो और खुद नहीं करो तो अच्छा नहीं है ना। इसलि-ो जब ब्रह्मा बाप के चित्र के आगे बैठते हो तो चित्र से चैतन्-ाता के मिलन की, अनुभव की अनुभूति नहीं होती है? रूहरिहान का रेसपॉन्स नहीं मिलता है? मिलता है ना। तो बाप है तभी तो सुनता है और देता है। फिर भी इस अनुभव से वंचित नहीं रह जाना। समझा? तो सभी ने जो सेवा की, विशेष भारतवासि-ों ने ज्-ाादा सेवा का चांस लि-ाा तो बापदादा नाम नहीं लेते हैं लेकिन सभी अपने सेवा के रिटर्न में नाम सहित मुबारक स्वीकार करें। डबल विदेशि-ों को भी सेवा का चांस मिल ग-ाा। अच्छा लगा ना! नाच रहे थे ना! अच्छा!

चारों ओर के ब्राह्मण जन्म के दिव्-ा जन्म के अधिकारी आत्माओं को, सदा बाप और आप साथ-साथ रहने वाले समीप आत्माओं को, सदा डबल पूज्-ा स्वरूप के स्मृति में रहने वाले समर्थ आत्माओं को, सदा दृढ़ संकल्प वा दृढ़ व्रत को निभाने वाले सफ़लता के अधिकारी आत्माओं को, सदा खुश रहने वाले और

औरों को भी खुश करने वाले खुशनसीब बच्चों को, त्रिदेव रचता बाप की और ब्रह्मा बाप की विशेष बर्थ डे की मुबारक भी हो और -ाद-प्-ार भी। साथ-साथ सर्वश्रेष्ठ आत्माओं को नमस्ते।

दादि-ों से अव्-ाक्त बापदादा की मुलाकात

(दादी जी ने ब्रह्मा बाबा की स्टेम्प का एलबम बापदादा को दिखा-ा)

सबके बुद्धि-ों को टच कि-ा है। सबके पुरुषार्थ और सबके श्रेष्ठ संकल्प ने विज-ा प्राप्त करा ली। सफ़लता अधिकार है। पुरुषार्थ करना भी ड्रामा में नूँध है और सफ़लता प्राप्त होना भी निश्चित है। सिर्फ निश्च-ा को देखने के लि-ो बीच-बीच में हलचल होती है। तो अनुभव कि-ा, -ोग के प्र-ोग से सहज हो ग-ा ना। सिर्फ पुरुषार्थ से नहीं, पुरुषार्थ में ज्-ादा लग जाते, -ोग का प्र-ोग कम करते तो सफ़लता थोड़ी दूर हो जाती है। पुरुषार्थ और -ोग के प्र-ोग से सबकी वृत्ति-ों को परिवर्तन करना--ो साथ-साथ रहता है तो सफ़लता समीप आती है। तो -ोग के प्र-ोग का -ाह भी अनुभव देख लि-ा। एक दृढ़ निश्च-ा और दूसरा प्र-ोग द्वारा किसी की भी बुद्धि को परिवर्तन कर सकते हैं लेकिन इतना पॉवरफुल -ोग हो। -ाह संगठन के प्र-ोग ने सफ़लता प्रत्-ाक्ष रूप में दिखाई। हिस्ट्री में देखो, आदि से सेवा की हिस्ट्री में जब भी कोई हलचल हुई है तो सफ़लता -ोग के प्र-ोग की विशेषता से ही हुई है। पुरुषार्थ निमित्त बनता है, पुरुषार्थ धरनी बनाता है, वो भी ज़रूरी है। लेकिन सफ़लता का बीज उत्पन्न होने का साधन, बाहर आने का साधन फिर भी -ोग का प्र-ोग ही रहा। -ाह सबको अनुभव है ना। धरनी को बनाना भी ज़रूरी है लेकिन बीज से फल प्रत्-ाक्षरूप में आ-ो उसके लि-ो बैलेन्स चाहि-ो। बैलेन्स में ज़रा भी, ५%, १०% भी कमी पड़ती है तो फ़र्क हो जाता है। लेकिन सभी ने उमंग-उत्साह से सह-ोग दि-ा और सफ़लता प्राप्त की। तो बापदादा सभी बच्चों को सफ़लता की मुबारक देते हैं। अच्छा!

* *

* * ** * *

* *

अव-ावक्त बापदादा की पर्सनल मुलाकात
डबल विदेशी भाई बहिनों से

ग्रुप नं. १

स्व-ां और सम-ा पर भरोसा नहीं-इसलिए दृढ़ संकल्प से कमज़ोरि-ाों को निकाल दो

सभी अपने को विश्व सेवाधारी अनुभव करते हो? विश्व सेवाधारी वा विश्व कल्-ााणकारी वही बन सकता है जिसके पास सर्वशक्ति-ाों का ख़ज़ाना सम्पन्न है। तो सर्वशक्ति-ाों का स्टॉक जमा है? सर्वशक्ति-ााँ हैं वा कोई शक्ति है, कोई नहीं है? कभी-कभी कोई कम हो जाती है? सदा अपने आपको चेक करो कि सर्वशक्ति-ाां हैं वा कोई शक्ति की कमी है? अगर कमी है तो उसके कारण को सोचो। क्-ाोंकि कारण को समझेंगे तो निवारण कर सकेंगे। क्-ाोंकि -ो मा-ाा का नि-ाम है कि जो कमज़ोरी आपमें होगी उसी कमज़ोरी के द्वारा ही आपको मा-ााजीत बनने नहीं देगी। तो वर्तमान सम-ा भी सम-ा प्रति सम-ा मा-ाा उसी कमज़ोरी का लाभ लेगी और आगे चलकर जब अन्त सम-ा आ-ोगा तो भी वो कमज़ोरी धोखा दे देगी। तो ऐसे नहीं सोचना कि थोड़ी सी कमज़ोरी है, एक ही कमज़ोरी है, बाकी तो बहुत अच्छा हूँ, अच्छी हूँ! एक कमज़ोरी भी धोखा दे देगी। इसलि-ो कोई भी कमज़ोरी अपने अन्दर रहने नहीं दो। अगर स्व-ां नहीं मिटा सकते हो तो कोई का सह-ाोग लो, जो शक्तिशाली आत्मा-ों हैं, उनका सह-ाोग लो। विशेष -ाोग का प्र-ाोग करो। किसी भी विधि से कमज़ोरी को मिटाना ही है—-ाह दृढ़ संकल्प करो। -ाह भी नहीं सोचो कि आगे चलकर हो जा-ोगा। नहीं, अभी से निकाल दो। क्-ाोंकि स्व-ां पर और सम-ा पर कोई भरोसा नहीं है। ऐसे नहीं सोचो कि आगे चलकर -ो करेंगे, हो जा-ोगा। नहीं। आपका सलोगन है 'अब नहीं तो कब नहीं' तो जो करना है वो अभी करना है। क्-ाोंकि बाप सम्पन्न है और आपका बाप से प्-ाार है तो बाप जैसा बनना ही प्-ाार का प्रैक्टिकल स्वरूप है। जितना बाप से बहुत-बहुत प्-ाार है इतना ही पुरुषार्थ से भी बहुत-बहुत प्-ाार है? जितना बाप से प्-ाार के लि-ो फ़लक से कहते हो कि १००% से भी ज्-ाादा प्-ाार है, ऐसे पुरुषार्थ के लि-ो भी कहो। सोचेंगे, करेंगे.. नहीं। सब कमज़ोरि-ाां खत्म। गें, गें नहीं। शिवरात्रि मनाने आ-ो हो तो कुछ तो बलि चढ़ेंगे ना। बापदादा सभी

बच्चों को सम्पन्न देखना चाहते हैं। बाप का प्-ार है इसलिए बच्चों की कमी अच्छी नहीं लगती। तो क-ा -ाद रखेंगे कि सदा सम्पन्न, सम्पूर्ण रहना ही है कि थोड़ी-थोड़ी कम्पलेन करते रहेंगे? कम्पलीट! कम्पलेन खत्म। सम्पन्न बनना ही मनाना है।

ग्रुप नं. २

वेस्ट को बेस्ट बनाना अर्थात् होलीहंस बनना

भी अपने को सदा होली हंस अनुभव करते हो? होली हंस का अर्थ है संकल्प, बोल और कर्म जो व्-ार्थ होता है उसको समर्थ में बदलना। क-ोंकि व्-ार्थ जैसे पत्थर होता है, पत्थर की वैल्-ाु नहीं, रत्न की वैल्-ाु होती है। तो व्-ार्थ को समाप्त करना अर्थात् होली हंस बनना। तो व्-ार्थ आता है? होली हंस फ़ौरन परख लेता है कि -ो काम की चीज़ नहीं है, -ो काम की है। तो आप होली हंस हो ना। तो व्-ार्थ समाप्त हुआ? क-ोंकि अभी नॉलेजफुल बने हो कि अगर अभी संकल्प, बोल -ाा कर्म व्-ार्थ गंवाते हैं तो सारे कल्प के लि-ो अपने जमा के खाते में कमी हो जाती है। जानते हो ना, नॉलेजफुल हो? तो जानते हुए फिर व्-ार्थ क-ों करते हो? चाहते नहीं हैं लेकिन हो जाता है–ऐसे कहेंगे? जो समझते हैं अभी भी हो सकता है वो हाथ उठाओ। आप हो कौन? (राज-ोगी) राज-ोगी का अर्थ क-ा है? राजा हो ना, तो मन को कन्ट्रोल नहीं कर सकते! किंग में तो रुलिंग पॉवर होती है ना! तो आप में रुलिंग पॉवर नहीं है? अमृतवेले और फिर सारे दिन में बीच-बीच में अपना आक्-ाुपेशन -ाद करो–मैं कौन हूँ? क-ोंकि काम करते-करते -ाह स्मृति मर्ज हो जाती है कि मैं राज-ोगी हूँ। इसलि-ो इमर्ज करो। -ो नि-ाम बनाओ। ऐसे नहीं समझो कि हम तो हैं ही राज-ोगी। लेकिन राज-ोगी की सीट पर सेट होकर रहो। नहीं तो चलते-चलते कर्म में बिज़ी होने के कारण -ोग भूल जाता है, सिर्फ कर्म ही रह जाता है। लेकिन आप कर्म-ोगी कम्बाइन्ड हो। -ोगी सदा ही रुलिंग पॉवर, कन्ट्रोलिंग पॉवर में रहें। फिर राज-ोगी डबल पॉवर वाले कभी भी व्-ार्थ सोच नहीं सकते। तो अभी कभी नहीं कहना, सोचना भी नहीं कि राज-ोगी वेस्ट कर सकते हैं। तो -ो कौन-सा ग्रुप है? बेस्ट ग्रुप। बापदादा को

भी बेस्ट ग्रुप अति प्-ारा है क-ों? ६३ जन्म बहुत वेस्ट कि-ा ना, अभी -ह छोटा-सा जन्म बेस्ट ही बेस्ट। अच्छा!

ग्रुप नं. ३

प्-ोरिटी की रॉ-ाल्टी ही ब्राह्मण जीवन की विशेषता है

सभी ब्राह्मण जीवन की विशेषता वा फ़ाउन्डेशन को जानते हो? क-ा है? (प्-ोरिटी) -ह पक्का है कि प्-ोरिटी ही फ़ाउन्डेशन है? तो सभी पक्के ब्राह्मण हैं ना! प्-ोरिटी की रा-ॅल्टी ब्राह्मण जीवन की विशेषता है। जैसे कोई रॉ-ाल फैमिली का बच्चा होगा तो उसके चेहरे से चलन से मालूम पड़ता है कि -ह कोई रा-ॅल कुल का है। ऐसे ब्राह्मण जीवन की परख -ह प्-ोरिटी की झलक से ही होती है। और चेहरे वा चलन से प्-ोरिटी की झलक तब दिखाई देगी जब सदा संकल्प में भी प्-ोरिटी हो। संकल्प में भी अपवित्रता का नाम निशान न हो। तो ऐसे हैं -ा कभी संकल्प में थोड़ा सा प्रभाव पड़ता है? क-ोंकि पवित्रता सिर्फ ब्रह्मच-र्ा व्रत नहीं। लेकिन प्-ोरिटी अर्थात् किसी भी विकार अर्थात् अशुद्धि का प्रभाव न हो। तो फ़ाउन्डेशन पक्का है -ा कभी कभी क्रोध को छुट्टी दे देते हो? बाल बच्चा आ जाता -ा अंश और वंश सब खत्म। क-ा समझते हो? माताओं में मोह आता है? बॉडीकॉन्शसनेस की अटैचमेंट है? कोई विकार का अंश मात्र भी नहीं। क-ोंकि बड़ों से तो मोह वा लगाव जल्दी निकल जाता है, लेकिन छोटों-छोटों से थोड़ा ज-ादा होता है। जैसे लौकिक संबंध में भी बच्चों से इतना प्-ार नहीं होगा जितना पोत्रों और धोत्रों से होता है। ऐसे विकारों के भी ग्रेट चिल्ड्रेन से प्-ार तो नहीं है? फ़ाउन्डेशन प्-ोरिटी है इसलिए इस फाडन्डेशन के ऊपर सदा ही अटेन्शन रहे। सबका लक्ष्-ा बहुत अच्छा है। तो जैसे लक्ष्-ा है वैसे ही लक्षण स्व-ं को भी अनुभव हों और दूसरों को भी अनुभव हों। क-ोंकि अनेक अपवित्र आत्माओं के बीच में आप पवित्र आत्मा-ें बहुत थोड़े हो। तो थोड़ी सी पवित्र आत्माओं को अपवित्रता को खत्म करना है। तो कितनी पावर चाहिए! तो सदा चेक करो कि अपवित्रता का अंश मात्र भी न हो। क-ोंकि आपके जड़ चित्रों का भी सदा ही निर्विकारी कहकर गा-ान करते हैं। -ह किसकी महिमा करते हैं?

आपकी है -ाा भारतवासि-ों की है? तो प्रैक्टिकल चेतन में बने हैं तब तो महिमा हो रही है। -ाह पक्का निश्च-ा है ना कि -ाह हम ही हैं! तो ब्राह्मण अर्थात् प्-ोरिटी की रॉ-ाल्टी में रहने वाले। प्-ोरिटी ब्राह्मण जीवन की विशेषता है। हिम्मत रखकर आगे बढ़ रहे हो और और भी आगे से आगे बढ़ना ही है। उड़ती कला वाले हो ना कि चलने वाली कला में हो? कभी नीचे ऊपर होते हो? सदा फाइन है -ाा कभी-कभी फाइन? सम टाइम खत्म हुआ? अभी-रूहरिहान में तो आकर नहीं कहेंगे कि नहीं थोड़ा थोड़ा रह ग-ाा है? नहीं। अभी व्-ाा रूहरिहान करेंगे? ओ.के.। ओ.के.कहने से ही देखो चेहरे मुस्कराते हैं। और जब समटाइम कहते हो तो आंखे नीचे हो जाती हैं। सदैव -ाह स्मृति में रखो कि अब नहीं बनेंगे तो कब बनेंगे। अभी बनना है। पुरुषार्थ करेंगे, देखेंगे, नहीं। होना ही है, तो इसको कहा जाता है निश्च-ा बुद्धि विज-ाी। तो कौन हो? प्-ोरिटी की रॉ-ाल्टी में रहने वाले।

अच्छा, सभी स्व-ं को फ़र्स्ट डिवीज़न वाली आत्मा-ें अनुभव करते हो? सदा फ़र्स्ट रहना है और सदा ही औरों को भी फ़ास्ट गति से आगे बढ़ाना है।

ग्रुप नं. ४

सन्तुष्टमणि बनने के लिए अपने अनादि और आदि स्वरूप की स्मृति में रहो

सदा अपने अनादि और आदि स्वरूप को सहज स्मृति में ला सकते हो? अनादि रूप है निराकार ज्-ोति स्वरूप आत्मा और आदि स्वरूप है देव आत्मा। तो दोनों स्वरूप सदा स्मृति में रहते हैं और सहज स्मृति रहती है? जितना देहभान में रहना सहज है, उतना ही देही अभिमानी स्थिति में स्थित होना भी सहज है? बॉडी कॉन्शस में कितने टाइम में आ जाते हैं? टाइम लगता है? न मेहनत लगती है, न टाइम लगता है। क्-ोंकि अभ्-ास है। तो ऐसे ही जब अब नॉलेज मिली तो नॉलेज की लाइट, नॉलेज की माइट के आधार पर अभी सोल कॉन्शसनेस की स्मृति का ऐसा सहज अनुभव हो। -ाह भी अभ्-ास करते-करते सहज हो ग-ाा है ना। -ाा ६३ जन्म का अभ्-ास शक्तिशाली है? विस्मृति के ६३ जन्म और स्मृति का -ाह एक छोटा-सा जन्म भी ६३ जन्मों से शक्तिशाली है।

क-ोंकि इस सम-ा नॉलेज की लिफ्ट मिली हुई है तो लिफ्ट में पहुँचना सहज होता है। लिफ्ट से सेकण्ड में पहुँच जाते हो ना कि उतरते चढ़ते हो? सेकण्ड में स्मृति आई और अनुभव में टिक जा-ें। क-ोंकि स्मृति शक्तिशाली है, विस्मृति कमज़ोर करती है। तो शक्तिशाली हो ना? कितनी पॉवर है? फुल है? पॉवर फुल है ना? पॉवर शब्द अलग नहीं कहते, पॉवरफुल कहते हैं। ऐसे बहादुर हो -ाा कभी फ़ेल, कभी फुल! हर कल्प में स्मृति स्वरूप बने हैं, अभी भी बने हैं और हर कल्प में बनते रहेंगे। कितने कल्पों का अभ्-ास है? अनेक बार का अभ्-ास है ना, अनेक बार कि-ा है ना कि नई बात है? बाप का बनना अर्थात् परिवर्तन होना। ब्राह्मण बनना अर्थात् स्मृति स्वरूप बनना। इस अपने अनादि स्वरूप में स्थित होने से स्व-ं भी स्व-ं से सन्तुष्ट रहते और औरों को भी सन्तुष्टता की विशेषता अनुभव कराते हैं। तो सभी सन्तुष्ट मणि-ाँ हो -ाा बनना है? असन्तुष्टता का कारण होता है अप्राप्ति। तो आपको कोई अप्राप्ति है क-ाा? आपका सलोगन क-ाा है? पाना था वो पा लि-ाा। तो पा लि-ाा कि थोड़ा-थोड़ा रह ग-ाा है? क-ोंकि बाप का बनना अर्थात् वर्से का अधिकारी बनना। तो अधिकारी आत्मा-ें हो ना? तो सदा क-ाा गीत गाते हो? पा लि-ाा .. -ेा आपका गीत है -ाा कोई-कोई का है, कोई का नहीं है? सभी का है? कोई का दूसरा गीत हो तो बोलो। क-ोंकि एक के हैं तो गीत भी एक ही है। और अब नहीं पा-ाा तो कब पा-ेंगे? तो अपने को सदा पद्मापद्म भाग्-ावान समझो। पद्म भी आपके आगे कुछ नहीं हैं। इतना नशा है ना? कितने भी साधन प्राप्त करने वाली आत्मा-ें हैं लेकिन जितने ही विनाशी प्राप्ति वाले हैं उतने ही अविनाशी प्राप्ति के भिखारी हैं। -ाह अनुभव है ना? जितने ज्-ाादा साधन होंगे उतनी शान्ति की नींद भी नहीं होगी। और आपकी जीवन कितनी शान्त है! कोई अशान्ति है? कभी तन वा मन की अशान्ति तो नहीं है? एवरहेल्दी है ना? माइन्ड भी हेल्दी तो हेल्थ भी हेल्दी। दोनों है ना? दुनि-ाा के आगे चैलेन्ज करने वाले हो। अगर एवरहेल्दी देखना हो तो किसको देखें? आपको! हरेक कहता है मेरे को देखें -ाा जानकी दादी को देखें–ऐसे तो नहीं कहते? आप ही हो ना? क-ों, बाप के खज़ानों के मालिक हो तो जो मालिक होता है वो सदा भरपूर, सम्पन्न होता है। तो ऐसे कम्पलीट हो -ाा कम्पलेन और कम्पलीट–दोनों ही चलता है। तो -ाही सदा स्मृति में रखो कि अधिकारी हैं और अनेक जन्म

अधिकारी रहेंगे। गैरन्टी है ना? -ाह सुख-शान्ति-पवित्रता का अधिकार जन्म-जन्म रहेगा। तो फ़लक से कहो एक जन्म तो क-ाा, अनेक जन्म के अधिकारी हैं। अच्छा!

ग्रुप नं. ५

सहज-ोग का आधार-संबंध और प्राप्ति

सभी अपने को सहज -ोगी आत्मा-ें अनुभव करते हो? सहज -ोग का आधार क-ाा है? विशेष दो बातें हैं। कौन-सी? सहज का आधार है - स्नेह, लेकिन स्नेह का आधार सम्बन्ध है। सम्बन्ध से -ााद करना सहज होता है और सम्बन्ध से प-ाार पैदा होता है। और दूसरी बात है प्राप्ति-ााँ। जहाँ प्राप्ति होगी, चाहे अल्पकाल की भी प्राप्ति हो तो मन और बुद्धि वहाँ सहज ही चली जा-ेगी। तो मुख-ा दो बातें हैं–सम्बन्ध और प्राप्ति। अनुभव है ना? वैसे भी देखो, 'बाबा' कहकर -ााद करो और 'मेरा बाबा' कहकर -ााद करो, तो फ़र्क पड़ता है? 'मेरा' कहने से सहज होता है ना। क-ोंकि जहाँ मेरापन होता है वहाँ अधिकार होता है। और अधिकार होने के कारण अधिकारी को प्राप्ति ज़रूर होती है। तो सर्व सम्बन्ध है ना कि एक-दो नहीं हैं, बाकी सब हैं? और प्राप्ति-ाां कितनी हैं? सब हैं ना। जब देने वाला दे रहा है तो लेने में क-ाा हर्जा है? (कौन-सी प्राप्ति-ाां?) जो बाप ने शक्ति-ों का, ज्ञान का, गुणों का खज़ाना दि-ाा, सुख-शान्ति, आनन्द, प्रेम, सब खज़ाने दि-ो। तो कितनी प्राप्ति-ाां हैं! क-ोंकि बाप के पास -ो खज़ाने हैं ही बच्चों के लि-ो। तो बच्चे नहीं लेंगे तो कौन लेंगे? तो बच्चे हैं -ाा नहीं हैं–-ाह भी सोच रहे हो? फिर अधिकार लेने में क-ों कमी करते हो? अगर अभी अधिकार नहीं लि-ाा तो कब लेंगे? जो भी भिन्न-भिन्न प्राप्ति-ाां हैं, उन प्राप्ति-ों को सामने रखो। प्राप्ति को इमर्ज करने से प्राप्ति की खुशी की अनुभूति होगी। सिर्फ बाप मेरा है, नहीं, लेकिन बाप के साथ वर्सा भी मेरा है। बच्चे को प्रापर्टी की खुशी होती है ना। तो -ाह बेहद की प्रापर्टी है। बालक सो मालिक हूँ–इस खुशी में सदा रहो। कोटों में कोई और कोई में भी कोई जो गा-ान है वह किसका है? आप कोटों में कोई हो ना? बापदादा सभी बच्चों को इतना श्रेष्ठ आत्मा के रूप में देखते हैं।

दुनि-ाा भटक रही है और आप मौज मना रहे हो। मौज में रहते हो ना कि अभी भी -ाहाँ वहाँ भटकते हो? ठिकाना मिल ग-ाा ना? तो दिन-रात खुशी में नाचते रहो, खुशी में सो जाओ। अगर जीवन है तो ब्राह्मण जीवन है। तो स्व-ां के महत्व को सदा स्मृति में रखो। क-ाा थे और क-ाा बन ग-ो! श्रेष्ठ बन ग-ो ना। अपने इस श्रेष्ठ भाग-ा को कर्म करते हुए भी स्मृति में रखो। वाह मेरा श्रेष्ठ भाग-ा! दिल में -ाह आता है? इसलि-ो अपना बर्थ डे मनाने आ-ो हो ना! अपना भी बर्थ डे मनाने आ-ो -ाा सिर्फ बाप का मनाने आ-ो हो? -ो दिव्-ा जन्म कितना न्-ाारा भी है और प्-ाारा भी है! क-ोंकि बाप के प्-ारे बने हो ना। जो भगवान् के प्-ारे हैं उसके जीवन में प्-ार हर सम-ा है। तो दिल से -ाही गीत गाते रहो–वाह बाबा वाह और वाह मेरा भाग-ा वाह! अच्छा!

बापदादा ने सभी बच्चों से मिलन मनाने के पश्चात स्टेज पर खड़े होकर झण्डा लहरा-ाा तथा ५८वीं त्रिमूर्ति शिव ज-ान्ती की बधाई दी:-

आज के इस विशेष शिव ज-ान्ती के दिवस पर चारों ओर के बच्चों को हीरे तुल्-ा ज-ान्ती की हीरे तुल्-ा जीवन वाली आत्माओं को पद्मगुणा मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

प्-ोरिटी की रा-ॅल्टी ब्राह्मण जीवन की विशेषता है। जैसे कोई रॉ-ाल फैमिली का बच्चा होगा तो उसके चेहरे से चलन से मालूम पड़ता है कि -ाह कोई रा-ॅल कुल का है। ऐसे ब्राह्मण जीवन की परख -ाह प्-ोरिटी की झलक से ही होती है। और चेहरे वा चलन से प्-ोरिटी की झलक तब दिखाई देगी जब सदा संकल्प में भी प्-ोरिटी हो। संकल्प में भी अपवित्रता का नाम निशान न हो।

सन्तुष्टता का आधार – सम्बन्ध, सम्पत्ति और सेहत (तन्दुरुस्ती)

3-4-94

सन्तुष्टता की स्थिति द्वारा परिस्थिति-ों को परिवर्तन करने की विधि बताने वाले बापदादा अपने सन्तोषी बच्चों प्रति बोले–

आज दिलाराम बाप अपने सदा सन्तुष्ट रहने वाली सन्तुष्ट आत्माओं व सन्तुष्ट मणि-ों को देख रहे हैं। -ो रूहानी मणि-ों की चमक सारे दरबार को चमका रही है। सन्तोषी आत्मा-ें स्व-ं को भी प्रि-ा और सर्व को भी प्रि-ा और बाप को तो प्रि-ा हैं ही। तो ऐसे हो ना? क-ोंकि इस श्रेष्ठ ब्राह्मण जीवन में अप्राप्ति का नाम ही नहीं है। सर्व प्राप्ति सम्पन्न आत्मा-ें हो। तो जहाँ सर्व प्राप्ति हैं वहाँ सदा सन्तुष्टता स्वत: और स्वाभाविक है ही। नेचरल स्वभाव उसका सन्तोष का है और सन्तुष्टता का स्वरूप व स्वभाव, निजी संस्कार ऐसा श्रेष्ठ है जो असन्तुष्ट आत्मा के भी असन्तुष्टता का वा-ाब्रेशन, वा-ुमण्डल, सन्तोष वा-ुम-ण्डल में बदल देता है। **इस संगम-ुग में विशेष बापदादा की देन सन्तुष्टता है।** एक सन्तुष्टता की विशेषता और विशेषताओं को भी सहज अपने समीप लाती है। लेकिन सदा सन्तुष्ट हो। परिस्थिति कितनी भी बदले लेकिन सन्तुष्टता की स्थिति को परिस्थिति बदल नहीं सकती। पर-स्थिति है ही बदलने वाली। लेकिन स्व-सन्तुष्टता की स्थिति सदा प्रगतिशील है। आपके आगे कैसी भी हिलाने वाली परिस्थिति ऐसे ही अनुभव होती है जैसे पपेट (कठपुतली) शो देखते हो ना। होता सब कुछ है लेकिन होता पपेट है। तो कैसी भी परिस्थिति पपेट शो लगता है वा आजकल का जो फैशन है कार्टून शो, अच्छा लगता है ना। होता तो शेर भी है, बिल्ली भी होती है, लेकिन होता क-ाा है? कार्टून। कहानी पूरी होती है लेकिन है कार्टून की स्टोरी, री-ाल नहीं है। कभी भी, कोई भी परिस्थिति आए तो -ाही समझो एक बेहद के स्क्रीन पर कार्टून शो चल रहा है वा पपेट शो चल रहा है। तो वह देखकर के परेशान होंगे कि मनोरंजन करेंगे? शो देखना तो अच्छा ही है ना। तो -ाह मा-ाा का वा प्रकृति का -ाह भी एक शो है। जिसको साक्षी स्थिति में सदा सन्तुष्टता के स्वरूप में देखते रहो। अपनी शान में रहते हुए देखो–सन्तुष्ट

मणि हूँ, सन्तोषी आत्मा हूँ। -ो है संगम का श्रेष्ठ शान। तो शान में स्थित होना आता है ना कि परेशान होना अच्छा लगता है? सदा सन्तुष्टता की विशेषता को इमर्ज रूप में स्मृति में रखो।

प्राप्ति-ों में विशेष सम्बन्ध और सम्पत्ति आवश-ाक है। सम्बन्ध में भी अगर एक भी सम्बन्ध अप्राप्त है तो सम्पूर्ण सन्तुष्टता नहीं होगी। तो सम्बन्ध में भी सर्व चाहि-ो और अविनाशी चाहि-ो। अगर कोई भी सम्बन्ध विनाशी है तो अप्राप्ति और असन्तुष्टता स्वत: हो जाती है। लेकिन एक ही वर्तमान संगम-ाुग है जिसमें सर्व अविनाशी सम्बन्ध एक बाप से अनुभव कर सकते हो। सत-ाुग में भी सम्बन्ध बहुत थोड़े हैं, सर्व नहीं हैं, लेकिन इस सम-ा जिस सम्बन्ध की आकर्षण हो, अनुभूति करना चाहे वो सम्बन्ध परम आत्मा द्वारा अनुभव कर सकते हो। हर एक के जीवन में सम्बन्ध की भी अलग-अलग पसन्दी होती है। किसको बाप का सम्बन्ध इतना अच्छा नहीं लगेगा, फ्रैण्ड ज-ाादा अच्छा लगेगा। लेकिन एक सम-ा पर और एक से सर्व सम्बन्ध प्राप्त हैं? सर्व प्राप्ति है कि कुछ रहा हुआ है? पीछे बैठे हुए क-ाा समझते हैं? आज न-ो-न-ो को आगे बैठने का चांस दि-ाा है। अच्छा, जो इस कल्प में इस बार पहली बार आ-ो हैं वो हाथ उठाओ। भले पधारे। बापदादा भी पद्मगुणा स्नेह सम्पन्न वेलकम कर रहे हैं। न-ो होते भी कल्प-कल्प के अधिकारी हैं, -ो तो समझते हो ना? बापदादा सदा कहते हैं–बड़े तो बड़े हैं लेकिन छोटे समान बाप हैं। इसलि-ो सदा अपने रूहानी बेहद के सम्पूर्ण अधिकार के निश्च-ा और नशे में रहो। बेहद का नशा है, हद का नहीं रखना। देखो, कितने श्रेष्ठ अधिकारी हो जो स्व-ं बाप ऑलमाइटी अथॉरिटी के ऊपर अधिकार रख दि-ाा। परमात्म-अधिकारी–इससे बड़ा अधिकार और है ही क-ाा! जब बीज को अपना बना लि-ाा तो वृक्ष तो समा-ाा हुआ है ही। सर्व सम्बन्धों का भी अविनाशी अधिकार ले लि-ाा और सम्पत्ति में भी अगर सिर्फ स्थूल सम्पत्ति है तो भी सदा सन्तुष्ट नहीं रह सकते। स्थूल सम्पत्ति के साथ अगर सर्व गुणों की सम्पत्ति, सर्व शक्ति-ों की सम्पत्ति और श्रेष्ठ सम्पन्न ज्ञान की सम्पत्ति नहीं है तो सन्तुष्टता सदा नहीं रह सकती। लेकिन आप सबके पास -ाह श्रेष्ठ सम्पत्ति-ाँ हैं। सम्पत्तिवान हो ना? दुनि-ाा वाले तो सिर्फ स्थूल सम्पत्ति वाले को सम्पत्ति भव का वरदान देते हैं लेकिन आप सबको वरदाता बाप सर्वश्रेष्ठ सम्पत्ति भव का वरदान

देते हैं। तो सब सम्पत्ति हैं ना कि कोई कम है? फुल है? पीछे वालों के ऊपर सबसे ज-ादा ध्-ान है। आगे वालों का ध्-ान बाप के तरफ ज-ादा है और बाप का ध्-ान पीछे वालों के ऊपर ज-ादा है। जितना ही दूर हैं उतना ही न-ानों में समा-ो हुए हैं।

साकार वतन में तो साकार की बातें होती हैं। देखो, परमधाम में आप सभी आत्मा-ें कितनी समीप होंगी! सभी साथ होंगे ना और सूक्ष्म वतन में भी इतना बेहद है जो जितना समीप आना चाहे आ सकते हैं। लेकिन बच्चों का स्नेह निराकार और आकार को भी साकार बनाना चाहता है। तो बाप क-ाा कहते हैं? जी हज़ूर, जी हाज़िर। बच्चे तो बाप के भी हज़ूर हैं, मालिक हैं ना। मालिक को हज़ूर कहा जाता है और बालक को भी मालिक कहा जाता है। तो सभी कौन हो? सन्तुष्ट मणि-ां। सम्बन्ध में भी सन्तुष्ट और सम्पत्ति में भी सन्तुष्ट। सम्बन्ध, सम्पत्ति और तीसरी होती है सेहत, तन्दुरुस्ती। आप सभी तन्दुरुस्त हो ना कि बीमार हो? आत्मा तो तन्दुरुस्त है ना, शरीर की कोई बात ही नहीं। आत्मा सदा शक्तिशाली है। संगम पर श्रेष्ठ सेहत वा तन्दुरुती है आत्मा की तन्दुरुस्ती। इस सम-ा के आत्मा की तन्दुरुस्ती जन्म-जन्म के शरीर की तन्दुरुस्ती भी दिलाती है। लेकिन इस सम-ा थोड़ा-सा प्रकृति अपना रूप दिखाती है। इसमें भी कोई बड़ी बात नहीं। -ाह भी कार्टून शो है। तो सर्व प्राप्ति-ाँ हैं ना। सम्बन्ध भी हैं, सम्पत्ति भव भी है, 'सर्व सम्बन्ध भव' भी है और 'सदा तन्दुरुस्त भव' भी हैं। तीनों वरदान वरदाता बाप से मिले हुए हैं। तो वरदानों को सम-ा पर का-र्ा में लगाओ। सिर्फ वरदान सुनकर खुश नहीं हो जाओ कि हाँ, मुझे बहुत अच्छा वरदान मिला -ाा सिर्फ नोट करके नहीं रखो लेकिन सम-ा पर वरदान को काम में लगाने से वरदान का-ाम रहते हैं। अगर वरदानों को सम-ा पर काम में नहीं लगा-ाा तो वह वरदान फल नहीं देता। वरदान तो अविनाशी बाप का है लेकिन वरदान को फलीभूत करना है। बीज तो है लेकिन उससे फल कितना निकालते हो, वह आपके हाथ में है। कोई सिर्फ वरदान के बीज को देखकरके खुश होते रहते हैं–बहुत अच्छा, बहुत अच्छा, लेकिन फलदा-ाक बनाओ। बार-बार स्मृति का पानी दो, वरदान के स्वरूप में स्थित होने की धूप दो, फिर देखो वरदान सदा फलीभूत होता रहेगा, और वरदानों को भी साथ में ला-ोगा। वरदानों के फल स्वरूप बन जा-ोंगे। तो आज के त्रि-

वरदान को फलीभूत करना और सम-ा पर ज़रूर -ाद रखना। सम-ा पर भूल जाते हैं, पीछे पढ़ते रहते हो कि हाँ, -ो वरदान तो था! वरदानों को जितना सम-ा पर का-र्ा में लगा-ोंगे उतना वरदान और श्रेष्ठ स्वरूप दिखाता रहेगा। तो सभी को वरदान मिला ना! अच्छा।

अभी जो ५ तरफ से ग्रुप आ-ो हैं वो नम्बरवार हाथ उठाओ।

एशि-ाा – इसमें भारतवासी तथा मधुबनवासी भी हाथ उठाओ। मधुबनवासी तो विशेष हैं। -ो बड़ा ग्रुप है। भारत वाले भी चांस लेने में होशि-ाार हैं। तो एशि-ाा निवासि-ों के प्रति विशेष आज के दिन तीन वरदान तो सभी के हैं ही, लेकिन विशेष एशि-ाा प्रति 'सदा शुभ भावना और श्रेष्ठ भाव भव'। शुभ भावना और श्रेष्ठ भाव--ो विशेष वरदान एशि-ाा निवासि-ों के प्रति है।

-ूरोप – -ूरोप में इंगलैण्ड भी आ ग-ाा। -ूरोप निवासि-ों के प्रति विशेष वरदान है कि 'सदा ज़ीरो और हीरो भव'। ज़ीरो का तो पता है ना। तीन ज़ीरो -ाद रखना, सिर्फ एक नहीं। ज़ीरो और हीरो एक्टर हैं और हीरे समान हैं, डबल हीरो। तो तीन ज़ीरो और डबल हीरो। तो -ो वरदान -ूरोप निवासि-ों के प्रति है।

अमेरिका – पूरा अमेरिका हाथ उठाओ। एक्सरसाइज़ करो और सीधा हाथ उठाओ। कइ-ों को आदत है छोटा हाथ उठाने की। बापदादा को छोटा हाथ वाला हाफ़ कास्ट लगता है। फुल हाथ उठाओ।
तो अमेरिका निवासी सर्व आत्माओं के प्रति विशेष -ाही वरदान है कि 'सदा मा-ाा से इनोसेन्ट और विज-ा में सेन्ट परसेन्ट और स्थिति में सदा सेन्ट।' सेन्ट खुशबू वाले भी और सेन्ट अर्थात् महान् आत्मा, डबल सेन्ट। तो 'सदा इनोसेन्ट भी और डबल सेन्ट भव'।

अफ्रिका, मॉरिशि-ास – आज बापदादा सीधा हाथ उठाने की ड्रिल करा रहे हैं। डॉक्टर्स भी कहते हैं ना ड्रिल करो। सर्व अफिका निवासी बच्चों प्रति विशेष -ाही वरदान है कि 'सदा सर्व प्रासपर्टी और सदा हर संकल्प, बोल और कर्म में सहज ऑनेस्टी भव, प्रासपर्टी भव और त्रि-स्वरूप से सहज ऑनेस्टी भव'।

ऑस्ट्रेलि-ा, न्-ाुज़ीलैण्ड – ऑस्ट्रेलि-ा निवासी सर्वश्रेष्ठ भाग्-ावान आत्माओं प्रति विशेष -ाही वरदान है कि 'सदा मा-ा से विज-ी और साथ-साथ मा-ा जीत, विश्व के राज-ा जीत श्रेष्ठ वरदान भव'। साथ-साथ 'सदा निश्चिन्त और निश्च-ा निश्चित भव'। ऑस्ट्रेलि-ा निवासी विशेष बाप के प्रि-ा हैं। हैं तो सभी प्रि-ा लेकिन विशेष ऑस्ट्रेलि-ा निवासी प्रि-ा क-ों हैं? बाप की विशेष स्नेह की नज़र ऑस्ट्रेलि-ा निवासि-ों के ऊपर रहती है। क-ों? क-ोंकि ऑस्ट्रेलि-ा निवासि-ों की धरनी कमाल करने में बहुत अच्छी है लेकिन बाप विशेष धरनी को स्नेह का पानी देते हैं। इसीलि-े विशेष स्नेह है। समझा? तो ऑस्ट्रेलि-ा वाले कमाल बहुत कर सकते हैं। अभी थोड़ी-थोड़ी की है। और ऑस्ट्रेलि-ा का नाम भी अन्त में लि-ा है तो अन्त वाले को कुछ एक्स्ट्रा देना चाहि-े। तो सभी को वरदान मिला।

मधुबन – मधुबन निवासी विशेष हैं। चाहे वर्तमान सम-ा ज्ञान सरोवर निवासी हैं, चाहे विश्व को सदा हेल्दी बनाने वाले हॉस्पिटल वाले हैं, सिर्फ हेल्दी नहीं, हैप्पी हेल्दी। चाहे मधुबन में चारों ओर घेराव डालने वाले बच्चे हैं। आबू में घेराव डाल रहे हैं ना। तो सर्व मधुबन निवासी विशेष बच्चों प्रति विशेष वरदान है कि 'सदा मन्सा, वाचा, कर्मणा–तीनों में सेन्ट-परसेन्ट प्रगति भव'।
बाकी जहाँ से भी सभी बच्चे आ-े हैं भिन्न-भिन्न विदेश के देशों से वा भारत के देश से सभी को विशेष 'सदा सम्पन्न और सम्पूर्ण भव'। अहमदाबाद वाले भी सेवा बहुत अच्छी करते हैं। मधुबन में भी अथक सेवाधारी हैं तो विशेष अहमदाबाद, दिल्ली और बाम्बे–इन तीनों स्थानों को भी सेवा का बहुत अच्छा चांस मिला हुआ है। सभी स्थान अपने स्नेह-सम्पन्न अथक सेवाधारी बन सेवा कर रहे हैं और करते रहेंगे। सेवा की मुबारक हो।

और चारों ओर के जो दूर बैठे बहुत दिल में समीप हैं, तो चारों ओर के देश-विदेश के सर्व सन्तोषी आत्माओं को, सन्तुष्टमणि-ों को, सर्व प्राप्ति सम्पन्न आत्माओं को, जिन्होंने भी -ाद, पत्र, कार्ड आज के दिवस के भी भेजे हैं, तो आज के विशेष दिवस की भी सर्व बच्चों को -ाद-प्-ाार पद्मगुणा स्वीकार हो। चाहे दूर बैठकर मन में, दिल में मना रहे हैं, चाहे सम्मुख मना रहे हैं, कार्ड वा पत्र सब पहले वतन में पहुँचते हैं। तो सभी के पत्र, कार्ड और शुभ संकल्पों की

-ाद, शुभ भावनाओं की -ाद के रिटर्न में बापदादा का विशेष -ाद-प्-ार और सर्व बालक सो मालिक बच्चों को नमस्ते। अच्छा।

दादि-ों से मुलाकात

सूक्ष्म इशारों की भाषा तो जानते हो ना। जैसे अव्-ाक्त बाप इशारों की ही भाषा जानते हैं। अव्-ाक्त वतन में तो न-ानों की भाषा और इशारों की भाषा है। तो आप भी जानते हो ना। न-ानों की भाषा जानते हो? साकार से सीखे हो ना। मुख की भाषा तो सुनी, अभी है न-ानों की भाषा। न-ानों की भाषा बड़ी प्-ारी है। आवाज़ से परे तो जाना ही है। फिर भी बाप जी हज़ूर तो करते ही हैं। अच्छा।

(लास्ट में बापदादा ने हाथ उठाकर सभी को आशीर्वाद दि-ा और विदाई ली)

कोई भी परिस्थिति आए तो -ाही समझो एक बेहद के स्क्रीन पर कार्टून शो चल रहा है वा पपेट शो चल रहा है। तो वह देखकर के परेशान नहीं होंगे। मा-ा का वा प्रकृति का -ाह भी एक शो है। जिसको साक्षी स्थिति में सदा सन्तुष्टता के स्वरूप में देखते रहो। अपनी शान में रहते हुए देखो–सन्तुष्ट मणि हूँ, सन्तोषी आत्मा हूँ।

स्नेह का रिटर्न है – स्व-ं को टर्न (परिवर्तन) करना

14-4-94

शुभ संकल्पों का महत्व बताने वाले, स्नेह वा शक्ति मूर्त बापदादा अपने स्नेही बच्चों की सभा को देखते हुए बोले–

आज स्नेह और शक्ति मूर्त बापदादा अपने चारों ओर के स्नेही बच्चों को देख रहे हैं। जितनी सभा साकार में है, उससे भी ज्-ाादा आकारी रूप की सभा है। सर्व साकार रूपधारी वा आकार रूपधारी बच्चों को बापदादा स्नेह की भुजाओं में समा-ो हुए हैं। स्नेह की भुजा-ों कितनी बड़ी हैं! चारों ओर के सभी बच्चे स्नेह की भुजाओं में ऐसे समा जाते हैं, जैसे नदी सागर में समा जाती है। स्नेह की भुजा-ों, स्नेह का सागर बेहद है। सभी बच्चे, चाहे नम्बरवार भी हैं लेकिन स्नेह में सब बन्धे हुए हैं। सर्व बच्चों में बापदादा का स्नेह समा-ाा हुआ है। स्नेह की शक्ति से ही सभी आगे उड़ते जा रहे हैं। स्नेह की उड़ान सर्व बच्चों को तन से वा मन से, दिल से बाप के समीप लाती है। स्नेह का विमान सेकण्ड की गति से बाप के समीप लाता है। ज्ञान, -ोग, धारणा उसमें -ाथाशक्ति नम्बरवार हैं लेकिन स्नेह में हर एक अपने को नम्बर वन अनुभव करते हैं। स्नेह सर्व बच्चों को ब्राह्मण जीवन प्रदान करने का मूल आधार है। अगर सभी बच्चों से पूछें कि निरन्तर -ोगी हो? निरन्तर ज्ञान स्वरूप हो? ज्ञानी नहीं लेकिन ज्ञान स्वरूप हो? तो सोचेंगे, कहेंगे 'हैं तो.....' निरन्तर धारणा स्वरूप हो, तो क-ाा कहेंगे? लक्ष-ा तो है ही। लेकिन जब पूछेंगे कि निरन्तर स्नेही हो तो कहेंगे 'हाँ जी'। स्नेह में सभी पास हैं। कोई पास विद् ऑनर हैं, कोई पास हैं। पास हैं ना? डबल विदेशी, भारत वाले सब पास हैं? पास नहीं होते तो पास नहीं आते। पास आना सिद्ध करता है कि पास हैं। स्नेह का अर्थ ही है पास रहना और पास होना और हर परिस्थिति को बहुत सहज पास करना। तो सभी तीनों में पास हो ना? पास करना भी सहज है ना कि पास करने में कभी मुश्किल, कभी सहज है? पास रहने में तो आनन्द ही आनन्द है और पास करना इसमें नम्बरवार हैं -ाा सब नम्बर वन हैं? देखो, नम्बर वन नहीं कहते हैं, सभी चुप हो ग-ो माना समथिंग है। लेकिन सम-ा प्रति सम-ा स्नेह की शक्ति से पास करना भी इतना ही सहज हो रहा है और होना ही है जैसे पास रहना सहज है और जब पास करना सदा सहज हो जा-ोगा तो पास

होना क-ा, पास हुए ही पड़े हैं। -ह तो पक्का निश्च-ा है कि पास हुए ही पड़े हैं। सिर्फ रिपीट करना है। इतना अटल निश्च-ा है ना? दूर बैठे भी सब नज़दीक हो ना! दिलतख्त पर हैं। कोई न-ानों के नूर हैं, कोई दिल तख्तनशीन हैं। सबसे नज़दीक न-ान हैं और दिल है। आप सभी ओम शान्ति भवन में नहीं बैठे हो लेकिन बापदादा के दिल तख्त पर -ा न-ानों में नूरे रत्न बन समा-े हुए हो। समा-ा हुआ कभी दूर नहीं होता।

इस वर्ष क-ा करेंगे? कहने में तो कहते हो कि इस वर्ष के मिलन की अन्तिम बारी है। लेकिन अन्त, आदि की -ाद ज-ादा दिलाता है। आदि, मध-ा की -ाद दिलाता है लेकिन अन्त आदि की -ाद दिलाता। तो अन्त नहीं, लेकिन आदि है। तीव्र गति के उड़ान की आदि है। जो अनादि रफ्तार है, अनादि स्वरूप है आत्म स्वरूप, तो अनादि स्वरूप की रफ्तार क-ा है? कितनी तेज़ रफ्तार है! आजकल के भिन्न-भिन्न साइन्स के साधनों के तीव्र गति से भी तीव्र गति। साइन्स के साधनों की रफ्तार फिर भी साइन्स, साइन्स द्वारा रफ्तार को कट भी कर सकती, पकड़ सकती है लेकिन आत्मा की गति को कोई अभी तक न पकड़ सका है, न पकड़ सकता है। इसमें ही साइन्स अपने को फ़ेल समझती है। और जहाँ साइन्स फ़ेल है वहाँ साइलेन्स की शक्ति से जो चाहो वो कर सकते हो। तो आत्म शक्ति की उड़ान की तीव्र गति की आदि करो। चाहे स्व परिवर्तन में, चाहे किसी की भी वृत्ति परिवर्तन में, चाहे वा-ुमण्डल परिवर्तन में, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क के परिवर्तन में अभी तीव्र गति लाओ। तीव्रता की निशानी है सोचा और हुआ। ऐसे नहीं, सोचा तो है.. हो जा-ेगा..। नहीं, सोचा और हुआ, संकल्प, बोल और कर्म तीनों श्रेष्ठ साथ-साथ हों। ब-ार्थ को वा उल्टे संकल्प को चेक करो तो उसकी गति बहुत फ़ास्ट होती है। अभी-अभी संकल्प आ-ा, अभी-अभी बोल लि-ा, अभी-अभी कर भी लि-ा। संकल्प, बोल, कर्म इकट्ठा-इकट्ठा बहुत फ़ास्ट होता है। उसकी गति का जोश इतना तीव्र होता है जो श्रेष्ठ संकल्प, कर्म, म-ार्दा, ब्राह्मण जीवन की महानता का होश समाप्त हो जाता है। ब-ार्थ का जोश–सत-ाता का होश, -ाथार्थता का होश समाप्त कर देता है और कुछ सम-ा के बाद जब होश आता तब सोचते हैं करना नहीं चाहि-े था, -ाथार्थ नहीं है लेकिन उस सम-ा जब जोश होता है तो -ाथार्थ की पहचान बदल कर अ-ाथार्थ को -ाथार्थ अनुभव करते हैं। तो ब-ार्थ का

जोश, होश को ख़त्म कर देता है। **तो इस वर्ष सभी बच्चे विशेष व्-ार्थ से इनोसेन्ट बनो।** जैसे जब आप आत्मा-ों अपने सत-ुगी राज-ा में थीं तो व्-ार्थ वा मा-ा से इनोसेन्ट थीं इसलि-ो देवताओं को महान् आत्मा-ों, सेन्ट कहते हैं, ऐसे अपने वो संस्कार इमर्ज करो, व्-ार्थ की अविद्या स्वरूप बनो। सम-ा, श्वास, बोल, कर्म, सर्व में व्-ार्थ की अविद्या अर्थात् इनोसेन्ट। जब व्-ार्थ की अविद्या हो गई तो दिव्-ाता स्वत: ही सहज ही अनुभव होगी और अनुभव करा-ोगी। अभी तक -ाह नहीं सोचो कि पुरुषार्थ तो कर ही रहे हैं...। पुरुष इस रथ पर कर रहा है तो पुरुष बन रथ द्वारा कराना–इसको कहा जाता है पुरुषार्थ। पुरुषार्थ चल रहा है, नहीं, लेकिन पुरुषार्थी सदा उड़ रहा है। -ाथार्थ पुरुषार्थी इसको कहा जाता है। पुरुषार्थ का अर्थ -ाह नहीं है कि एक बारी की ग़लती बार-बार करते रहो और पुरुषार्थ को अपना सहारा बनाओ। -ाथार्थ पुरुषार्थी हो, स्वभाव भी स्वाभाविक हो, अति सहज। अभी मेहनत को किनारे करो। अल्पकाल के आधारों का सहारा, जिसको किनारा बनाकर रखा है, -ो अल्पकाल के सहारे के किनारे अभी छोड़ दो। जब तक -ो किनारे हैं तो सदा बाप का सहारा अनुभव नहीं हो सकता और बाप का सहारा नहीं है इसलि-ो हद के किनारों को सहारा बनाते हैं। चाहे अपने स्वभाव-संस्कारों को, चाहे परिस्थिति-ों को, जो किनारे बना-ो हैं -ो सब अल्पकाल के दिखावा-मात्र धोखे वाले हैं। धोखे में नहीं रह जाओ। बाप का सहारा छत्रछा-ाा है। अल्पकाल की बातें धोखेबाज़ हैं। मा-ाा की बहुत मीठी-मीठी बातें सुनते रहते हैं, बहुत सुन चुके हैं। जैसे द्वापर के शास्त्र बनाने वाले बातें बनाने में बहुत होशि-ाार हैं, कितनी मीठी-मीठी बातें बना दी हैं। तो बातें नहीं बनाओ, बातें बनाने में सब एक-दो से होशि-ाार हैं। न बातें बनाओ, न बातें देखो, न बातें करो। लेकिन क-ाा करो? बाप को देखो, बाप समान करो, बाप समान बनो। जब कोई बात सामने आती तो बात बनाना सेकण्ड में आ जाता है। क-ोंकि मा-ाा की गति भी तीव्र है ना। ऐसे सुन्दर रूप की बात बना देती है जो सुनते बाप को तो हंसी आती है लेकिन दूसरे प्रभावित हो जाते हैं–बोलते तो ठीक हैं, बहुत अच्छा है, बात तो ठीक है और स्व-ं को भी ठीक लगते हो। लेकिन सम-ा की तीव्र गति को देख अब इन किनारों से तीव्र उड़ान करो। -ो अनेक प्रकार की बातें व्-ार्थ रजिस्टर के रोल बनाती रहती हैं। रोल के ऊपर रोल बनता जाता है। इसलि-ो इससे इनोसेन्ट बनो। इस इनोसेन्ट

स्टेज से बनी-बनाई सेवा की स्टेज आपके सामने आ-ोगी। इस वर्ष के -थार्थ पुरुषार्थ के प्रत-ाक्षफल की निशानी बनी-बनाई सेवा आपके सामने आ-ोगी। ब-ार्थ का सामना करना समाप्त करो तो सेवा की ऑफर सामने आ-ोगी। आप सभी सेवा के निमित्त तो अनेक वर्ष बने, अब औरों को निमित्त बनाने की सेवा के निमित्त बनो। माइक वो हो और माइट आप हो। बहुत सम-ा आप माइक बने, अब माइक औरों को बनाओ, आप माइट बनो। आपके माइट से माइक निमित्त बनें। इसको कहा जाता है तीव्र गति के उड़ान की निशानी। समझा क-ाा करना है? तीव्र उड़ान है ना। कि कभी तीव्र, कभी स्लो? सदा तीव्र गति के उड़ान से उड़ते रहेंगे। बादलों को देख घबराओ नहीं। -ो बातें ही बादल हैं। सेकण्ड में क्रॉस करो। विधि को जानो और सेकण्ड में विधि द्वारा सिद्धि को प्राप्त करो। एक तरफ है रिद्धि-सिद्धि का फ़ोर्स और आपका है विधि सम्पन्न सिद्धि का फ़ोर्स। रिद्धि-सिद्धि है अल्पकाल और विधि-सिद्धि सदाकाल के लि-ो।

बापदादा अभी ऐसा ग्रुप चाहता है जो सदा मन्सा में, वाणी में, बोल में, सम्पर्क में जो ओटे सो अर्जुन। मैं अर्जुन हूँ। मैं जो करुँगा, ('मैं' बॉडी कॉन्सेस का नहीं, मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ) मुझे देख और करेंगे। तो जो ओटे सो अर्जुन। जो गा-ाा हुआ है, अव्वल नम्बर अर्थात् अर्जुन, अलौकिक जन। ऐसा ग्रुप बापदादा देखना चाहते हैं। बातों को नहीं देखें, दूसरों को नहीं देखें, दूसरे का ब-ार्थ नहीं सुनें। बस, अलौकिक जन। संकल्प, बोल और कर्म सबमें अलौकिक, दिव-ाता की झलक हो। इसको कहा जाता है अर्जुन, अलौकिक जन। ऐसा ग्रुप इस वर्ष में तै-ाार होगा कि दूसरे वर्ष में तै-ाार होगा? जो इस ग्रुप में आना चाहते हैं वह हाथ उठाओ। मुझे बनना है, मैं अर्जुन हूँ। फिर कोई ऐसा समाचार नहीं आवे–क-ाा करें.. हो जाता है.. सरकमस्टांस ऐसे हैं.. मदद नहीं मिलती है.. दुआ-ों नहीं मिलती हैं.. सहारा नहीं मिलता.. जिन्हों को कुछ सम-ा चाहि-ो वो हाथ उठाओ। एक-दो मास चाहि-ो वा एक वर्ष चाहि-ो। जो भी ग्रुप आवे उनसे पूछना फिर रिज़ल्ट सुनाना। टीचर्स तो पहले। क-ोंकि जो निमित्त बनते हैं उनका सूक्ष्म वा-ुमण्डल, वा-ाब्रेशन्स ज़रूर जाता है। पद्मगुणा पुण-ा भी मिलता है और पद्म गुणा निमित्त भी बनते हैं। और शब्द तो नहीं बोलेंगे ना। टीचर बनना बहुत अच्छा है, गद्दी तो मिल जाती है ना! दीदी-दीदी का टाइटल मिल जाता है ना। लेकिन ज़िम्मेदारी भी फिर इतनी है। इस

वर्ष में कुछ नवीनता दिखाओ। -ाह नहीं सोचो–हाथ तो अनेक बार उठा चुके हैं, प्रतिज्ञा भी बहुत वर्ष कर चुके हैं, ऐसे संकल्प न सूक्ष्म में आ-ो, न औरों के प्रति आ-ो। -ो संकल्प भी ढीला करता है। -ो तो चलता ही आता है, -ो तो होता ही रहता है... -ो वा-ाब्रेशन भी कमज़ोर बनाता है। दृढ़ संकल्प करो तो दृढ़ता सफ़लता को अवश-ा लाती है। कमज़ोर संकल्प नहीं उत्पन्न करो। उनको पालने में बहुत टाइम व्-ार्थ जाता है। उत्पत्ति बहुत जल्दी होती है। एक सेकण्ड में सौ पैदा हो जाते हैं। और पालना करने में कितना सम-ा लगता है! मिटाने में मेहनत भी लगती, सम-ा भी लगता और बापदादा के वरदान व दुआओं से भी वंचित रह जाते। सर्व की शुभ भावनाओं की दुआओं से भी वंचित हो जाते हैं। शुद्ध संकल्प का बंधन, घेराव, ऐसा बांधो सबके लि-ो, चाहे कोई थोड़ा कमज़ोर भी हो, उनके लि-ो भी -ो शुद्ध संकल्पों का घेराव एक छत्रछा-ाा बन जा-ो, सेफ्टी का साधन बन जा-ो, किला बन जा-ो। शुद्ध संकल्प की शक्ति को अभी कम पहचाना है। एक शुद्ध वा श्रेष्ठ शक्तिशाली संकल्प क-ाा कमाल कर सकता है–इसकी अनुभूति इस वर्ष में करके देखो। पहले अभ्-ाास में -ाुद्ध होगी, व्-ार्थ संकल्प शुद्ध संकल्प को कट करेगा। जैसे कौरव-पाण्डव के तीर दिखाते हैं ना, तीर, तीर को रास्ते में ही ख़त्म कर देता है तो संकल्प, संकल्प को ख़त्म करने की कोशिश करता है, करेगा लेकिन दृढ़ संकल्प वाले का साथी बाप है। विज-ा का तिलक सदा है ही है। अब इसको इमर्ज करो तो व्-ार्थ स्वत: ही मर्ज हो जा-ोगा। व्-ार्थ को सम-ा देते हो। कट नहीं करते हो लेकिन उसके रंग में रंग जाते हो। सेकण्ड से भी कम सम-ा में कट करो। शुद्ध संकल्प से समाप्त करो। तो सर्व के शुभ संकल्पों का वा-ाुमण्डल का घेराव कमाल करके दिखा-ोगा। पहले से ही -ाह नहीं सोचो कि होता तो है नहीं, करते तो बहुत हैं, सुनते तो बहुत हैं, अच्छा भी बहुत लगता है, लेकिन होता नहीं है। -ाह भी व्-ार्थ वा-ाुमण्डल कमज़ोर बनाता हैं। होना ही है–दृढ़ता रखो, उड़ान करो। क-ाा नहीं कर सकते हो! लेकिन पहले स्व के ऊपर अटेन्शन। स्व का अटेन्शन ही टेन्शन ख़त्म करेगा। समझा क-ाा करना है? कोई कहे -ाह तो होता ही रहता है, पहले भी प्रतिज्ञा की थी--ाह नहीं सुनो। इसमें कमज़ोरों को साथ नहीं देना, साथी बनाना। अगर कोई ऐसा-वैसा बोलता है तो एक-दो में कहते हैं ना शुभ बोलो, शुभ सोचो, शुभ करो। अच्छा।

सभी खुश राज़ी हैं ना, सभी से बात की ना? -ाह भी बाप का स्नेह है। स्नेह की निशानी है वो स्नेही की कमी नहीं देख सकता। स्नेही की ग़लती अपनी ग़लती समझेगा। बाप भी जब बच्चों की कोई बात सुनते हैं तो समझते हैं मेरी बात है। तो स्नेही, सम्पन्न, सम्पूर्ण, समान देखना चाहते हैं। सभी स्नेह में एक शब्द बापदादा के आगे चाहे दिल से, चाहे गीत से, चाहे बोल से, चाहे संकल्प से ज़रूर कहते हैं, बापदादा तो सबका सुनता है ना। सभी एक बात बहुत बार कहते हैं कि बाबा के स्नेह का रिटर्न क-ाा दें? क-ोंकि क-ाा से क-ाा तो बन ग-ो हो ना। कोटों में कोई तो बन ग-ो हो ना, कोई में कोई नहीं बने हो। तो कोटों में कोई तो बने हो ना। इसमें सब पास हो। बाप रिटर्न क-ाा चाहते हैं? **रिटर्न करना है अपने को टर्न करना।** समझा? बस, -ाही रिटर्न है। -ाह तो कर सकते हो ना? स्नेह के पीछे -ाह नहीं कर सकते हो! मतलब का स्नेह तो नहीं है ना! स्नेह में त-ाग करने के लि-ो तै-ाार हो? बाप जो भी आज्ञा करे तै-ाार हो? स्नेह में सब सेन्ट-परसेन्ट हो -ाा परसेन्टेज है? अपने को टर्न करने के लि-ो तै-ाार हो? स्नेह के पीछे -ाह त-ाग है -ाा भाग-ा है? भक्त तो सिर उतार कर रखने के लि-ो तै-ाार हैं, आप रावण का सिर उतार कर रखने के लि-ो तै-ाार हो? शरीर का सिर नहीं उतारो लेकिन रावण का सिर तो उतारो! पांचों ही सिर उतारेंगे -ाा एक-दो रखेंगे? थोड़ा कमज़ोरी का सिर रखेंगे? चलो पांच नहीं, छठा दिखाते हैं ना बेसमझी का, वो रखेंगे? अच्छा। अभी एक-एक ज़ोन हाथ उठाओ।

दिल्ली – दिल्ली वाले क-ाा कमाल करेंगे, रिटर्न का टर्न करेंगे? त-ाग का भाग-ा लेने में कितना नम्बर आ-ोगा? फ़र्स्ट! सभी फ़र्स्ट नम्बर लेंगे, फ़ास्ट जा-ोंगे परिवर्तन करने में? दिल्ली का किला मज़बूत है ना।

महाराष्ट्र ज़ोन – महाराष्ट्र कौन-सा नम्बर लेंगे? फ़र्स्ट! और फ़र्स्ट से आगे क-ाा है? ए वन कौन होगा? महाराष्ट्र ए वन होगा -ाा वन होगा? ए वन को आगे जाना पड़ेगा। वैसे दिल्ली वाले भी ए वन कह सकते हैं लेकिन ए वन हैं -ाा वन हैं? वन माना विन, ए वन माना डबल विन। महाराष्ट्र वाले वन से भी आगे ए वन बनना।

कर्नाटक – अब कर्नाटक क-ाा करेगा? सदा ए वन का नाटक दिखा-ोगा और

नाटक नहीं दिखाना। वैसे कर्नाटक में नाटक बहुत होते हैं। अभी ए वन का नाटक दिखाना।

इस्टर्न– इस्टर्न ज़ोन क-ाा कमाल करेगा? चारों ओर ए वन का सू-र्ा उद-ा करेगा।

तामिलनाडु, केरला – तामिलनाडु में विशेष डांस का महत्व है। तो चारों ओर ए वन का खुशी का नाच दिखा-ोंगे। सब ए वन।

इन्दौर ज़ोन – इन्दौर वाले क-ाा करेंगे? इन-डोर का अर्थ है अन्तर्मुखता। तो इन्दौर वाले चारों ओर अन्तर्मुखता की शक्ति के वा-ाब्रेशन से चारों ओर ए वन के वा-ाब्रेशन्स फैला-ोंगे। मंज़ूर है?

-ू.पी. – -ू.पी. वाले क-ाा कमाल करेंगे? -ू.पी. की विशेषता है नदि-ों की महानता। सभी विशेष नदि-ाँ कहाँ हैं? -ू.पी. में हैं ना। तो ए वन बनने और बनाने की नदि-ां बहा-ोंगे। मंज़ूर है? नदी कहाँ से निकलेगी? कानपुर से -ाा इलाहाबाद से -ाा सबका मेल होगा? वो तीन नदि-ाँ मिलती हैं ना। -ू.पी. के सर्व सेन्टर की नदि-ाँ साथ-साथ संगम होकर निकलें। ठीक है ना!

गुजरात ज़ोन – गुजरात वाले मान न मान, मैं तेरा मेहमान हैं। होशि-ाार हैं ना, तो गुजरात वाले क-ाा कमाल करेंगे? मेहमान बनने में होशि-ाार हो ना तो कमज़ोरी -ाा व्-ार्थ की मेहमानी को जो मेहमान बनकर आती है, -ाह कमज़ोरी ओरीजनल तो है नहीं। तो ए वन बनना बनाना अर्थात् व्-ार्थ के मेहमान को समाप्त करना। तो गुजरात वाले अपनी शक्ति से, अपने शुभ ए वन श्रेष्ठ संकल्प से -ाह व्-ार्थ की रात गुज़र – गई -ाह शुभ समाचार सुना-ोंगे। गुजरात माना रात गुज़र गई। श्रेष्ठता का दिन लाने वाले। मंज़ूर है? मेहमान बनने में होशि-ाार, मेहमान को निकालने में भी होशि-ाार।

राजस्थान – राजस्थान क-ाा करेगा? समर्थता पर राज-ा करेगा। समझा? व्-ार्थ को खत्म कर समर्थता पर राज-ा करने वाले राजस्थान। तो ए वन तो हो ही ग-ो ना। ए वन मधुबन है ना राजस्थान में। तो ए वन में एड करो ऑल वन।

पंजाब, हरि-ााणा – पंजाब ने इस पुरानी दुनि-ाा में भी अभी क-ाा कमाल की

है? आतंकवाद को कमज़ोर कर दि-ाा। तो पंजाब क-ाा कमाल करेगा? दो, तीन, चार, दस नम्बर को कमज़ोर करेगा। इस आतंकवाद को ख़त्म करके सदा नम्बरवन। अच्छा!

डबल विदेशी – विदेश क-ाा करेगा? विदेश वाले कमज़ोरी को अपने विदेश में भेज दो। बिल्कुल दूर देश में भेज दो, जो वापस नहीं आवे। कमज़ोरी, व्-ार्थ को विदेश में भेज, देश को समर्थ बनाओ। भारत में -ाा देश में अपने समर्थी का झण्डा लहराओ। इसमें सदा ही एवररेडी, ए वन। समझा! कभी-कभी वाले रेडी नहीं। एवर रेडी, ए वन। समझा!

अभी दिल्ली वाले क-ाा कमाल करेंगे? क-ोंकि दिल्ली सेवा का फाउन्डेशन है। दिल्ली से पहले गरीब निवाज़ की प्रथा आरम्भ हुई। दिल्ली ने सम-ाा की आवश-ाकता में सह-ोग दि-ाा। दिल्ली से पहला नम्बरवन पाण्डव (जगदीश) निकला। इन्वेन्शन भी दिल्ली काफ़ी नम्बरवन होकर निकालती है। अभी तो सब होशि-ाार हो ग-ो हैं लेकिन निमित्त तो दिल्ली बनी। तो अब ओटे सो अर्जुन में ए नम्बर। ठीक है ना। पाण्डव किला मज़बूत करने में ए वन। मंज़ूर है ना? अच्छा, सभी ज़ोन से मिले। मधुबन वाले जो नीचे बैठे हैं, त्-ाागि कि-ाा है, उन्हों को बापदादा दिलतख्त की गिफ्ट सहित विशेष -ाद-प्-ाार और पद्मगुणा मुबारक दे रहे हैं। सारी सीज़न मधुबन वालों ने सेवा की है तो निर्विघ्न, अथक सेवाधारि-ाों को, चाहे मधुबन निवासी, चाहे चारों ओर के मेहमाननिवाज़ी करने वाले सेवाधा-रि-ाों को बापदादा–सदा उन्नति को प्राप्त होते ही रहेंगे, होना ही है––ाह प्रगति का तिलक दे रहे हैं। हॉस्पिटल वाले सभी डॉक्टर्स वा सेवाधारी जो भी हॉस्पिटल में हैं, वो सब हेल्दी और हैप्पी हैं? स्थूल हेल्थ नहीं, आत्मिक हेल्थ। तो सदा हेल्दी और सदा हैप्पी की मुबारक और आबू रोड वाले -ाा तलहटी वाले सभी को बहुत प्-ाार से रिसीव करते हैं और ठण्डे पानी का आराम देते हैं, गर्म चा-ाा से उमंग दिलाते हैं और भटके हुए को राह भी दिखाते हैं इसलि-ो रिसीव करने वाले, स्वागत करने वाले और मेहमाननिवाज़ी करने वाले, सभी को बापदादा सेवा की मुबारक के साथ 'सदा प्रगति भव' का वरदान दे रहे हैं। आबू निवासी प्रवृत्ति वाले भी बहुत हैं। सदा प्रवृत्ति में रह श्रेष्ठ वा-ाब्रेशन्स फ़ैलाने की मुबारक। आबू

निवासी भी अभी मेहमाननिवाज़ी अच्छी करते हैं। स्थान देते हैं ना। खुश होते हैं ना सभी। तो सदा उड़ते रहो और उड़ाते रहो।

ज्ञान सरोवर तो है ही सरोवर। सरोवर में जाते ही परिवर्तन हो जाता है। तो ज्ञान सरोवर को बापदादा आत्माओं की वृत्ति और जीवन परिवर्तन करने का सरोवर कहते हैं। इसलि-े ज्ञान सरोवर में सेवा करने वाले सदा ही अथक भव और सदा वृद्धि को प्राप्त भव आत्मा-ें हैं। प्रगति की सफ़लता का वरदान ज्ञान सरोवर के स्थान और सेवाधारि-ों को सदा है ही। अच्छा!

चारों ओर के मन की उड़ान में उड़ने वाले मधुबन निवासी अव्-ाक्त रूपधारी आत्माओं को और साथ-साथ संकल्प के विमान द्वारा मधुबन में पहुँचने वाली श्रेष्ठ आत्माओं को और चारों ओर के सर्वश्रेष्ठ स्नेही, स्नेह में त्-ाग के भाग्-ा का श्रेष्ठ संकल्प करने वाली आत्माओं को, सदा ए वन के संकल्प को प्रत्-ाक्ष जीवन में लाने वाले बाप के समीप आत्माओं को बापदादा का -ाद-प्-ार और हर एक भिन्न-भिन्न भारत के देश वा विदेश के हर एक बच्चे को नाम सहित विशेषता सम्पन्न -ाद-प्-ार और नमस्ते।

दादि-ों से मुलाकात

हर सम-ा की सीन न्-ारी और प्-ारी है। आप लोगों का बचपन का गीत कौन-सा है? 'न-ा दिन लागे, न-ी रात लागे.....' इस गीत पर नशे से डांस करते थे ना! तो नवीनता में मज़ा है ना। वही-वही सीन बदलनी तो है ही और जो बदलता है वो न-ा ही होता है। पुराना तो ख़त्म होता है, न-ा होता है। तो हर सम-ा की सीन, हर सम-ा की बातें न-े ते न-ी। तो न-ा अच्छा लगता है -ा पुराना? न-ा अच्छा है ना! (-ाद पुराना करते हैं) -ाद करते हैं लेकिन पसन्द तो न-ा करते हैं ना। तो न-ा ही होना है। अच्छा! सभी खुश हैं ना? तन से, मन से खुश ही खुश हैं।

१- अब आत्म-शक्ति के उड़ान के तीव्रगति की आदि करो तो जो सोचेंगे वही होगा।

२- सेंट (महान) बनने के लिए व्-ार्थ से इनोसेंट बनो।

३- व्-ार्थ की अविद्या होना ही दिव्-ाता की अनुभूति का आधार है।

४- सच्चा पुरुषार्थी वह है जो पुरुष बन रथ द्वारा का-र्ा करा-ो।

५- हद के किनारों का सहारा छोड़ एक बाप को अपना सहारा बनाओ।

६- अल्पकाल की बातें धोखेबाज़ हैं, बाप का सहारा ही छत्रछा-ाा है।

७- व्-ार्थ का सामना करना समाप्त करो तो सेवा की ऑफर सामने आ-ोगी।

८- औरों को माइक बनाओ, आप माइट बनो।

९- तीव्रगति की उड़ान में अनेक प्रकार की बातें ही बादल हैं, उन्हें सेकण्ड में क्रास करो।

१०- शुद्ध संकल्पों का ऐसा घेराव डालो जो कमज़ोर आत्माओं के लिए सेफ्टी का साधन बन जाए।

११- शुद्ध वा श्रेष्ठ संकल्प इमर्ज करो तो व्-ार्थ स्वत: मर्ज हो जा-ोगा।

17.11.94

हर गुण व शक्ति के अनुभवों में खो जाना अर्थात् खुशनसीब बनना

आज प्यार के सागर बापदादा अपने प्यार स्वरूप बच्चों से मिलन मना रहे हैं। बाप का भी प्यार बच्चों से अति है और बच्चों का भी प्यार बाप से अति है। ये प्यार की डोर बच्चों को भी खींचकर लाती है और बाप को भी खींच कर लाती है। बच्चे जानते हैं कि ये परमात्म प्यार कितना सुखदायी है। अगर एक सेकण्ड भी प्यार में खो जाते हो तो अनेक दुःख भूल जाते हैं। सुख के झूले में झूलने लगते हो। ऐसा अनुभव है ना? बापदादा देख रहे हैं कि दुनिया के हिसाब से आत्मायें कितनी साधारण हैं लेकिन भाग्य कितना श्रेष्ठ है! जो सारे कल्प में, चाहे कोई धर्म आत्मा हो, महान् आत्मा हो, लेकिन ऐसा श्रेष्ठ भाग्य न तो किसी को प्राप्त है, न हो सकता है। तो अति साधारण और अति श्रेष्ठ भाग्यवान। बापदादा को साधारण आत्मायें ही पसन्द हैं–क्यों? बाप स्वयं भी साधारण तन में आते हैं। कोई राजा के तन में या रानी के तन में नहीं आते। कोई धर्मात्मा, महात्मा के तन में नहीं आते। साधारण तन में स्वयं भी आते हैं और बच्चे भी साधारण ही आते हैं। आज का करोड़पति भी साधारण है। साधारण बच्चों में भावना है। और बाप को भावना चाहिये, देह भान वाले नहीं चाहिए। जितना बड़ा होगा उतना भावना नहीं होगी लेकिन भान होगा। तो बाप को भावना का फल देना है और भावना साधारण आत्माओं में होती है। नामीग्रामी आत्माओं के पास न भावना है, न समय है। तो बाप देख रहे हैं कि कितने साधारण और कितने श्रेष्ठ भावना का फल प्राप्त कर रहे हैं। इसलिये ड्रामानुसार संगमयुग में साधारण बनना–ये भी भाग्य की निशानी है। क्योंकि संगम पर ही भाग्यविधाता भाग्य की श्रेष्ठ लकीर खींच रहे हैं और साथ-साथ भाग्य की लकीर खींचने का कलम भी बच्चों को दे दिया है। कलम मिली है ना? भाग्य की लकीर खींचना आता है? कितनी लम्बी लकीर खींची है? छोटी-मोटी तो नहीं खींच ली? जितना चाहे उतना भाग्य बना सकते हो। खुली छुट्टी है और सभी को छुट्टी है। चाहे नये हो, चाहे पुराने हो, सप्ताह कोर्स किया, बाप को पहचाना और बाप भाग्य का कलम दे देता है। यही परमात्म प्यार है। प्यार की निशानी क्या होती है? जो जीवन में चाहिये वह अगर कोई किसको देता है तो वही प्यार की निशानी है। तो बाप के प्यार की निशानी है – जो जीवन में चाहिये वो सर्व कामनायें पूर्ण कर देते हैं। सुख-शान्ति तो चाहिये ना! अगर कोई वस्तु एक-दो को देते हैं तो उससे सुख मिलता है ना? तो बाप सुख क्या देता लेकिन सुख का भण्डार आप सबको बना देते हैं। सुख का भण्डार है ना! पूरा स्टॉक है या एक कमरा, दो कमरा है! भण्डार है। जैसे बाप सुख का सागर है, नदी और तलाव नहीं है, सागर है, तो बच्चों को भी सुख के भण्डार का मालिक बना देता है। कोई सुख की कमी है क्या? कोई अप्राप्ति है? फिर यह नहीं कहना कि थोड़ी-सी शक्ति दे दो! 'दे दिया'। 'दे दो' कहने की आवश्यकता ही नहीं है। बाप ने दे दिया है, सिर्फ उसको कार्य में लगाने की विधि चाहिये। और विधि भी बाप द्वारा अनेक प्रकार की मिलती है। सिर्फ उसको समय प्रति समय कार्य में लगाते नहीं हो इसीलिये होते हुए भी उसका लाभ नहीं ले सकते। कितना बड़ा भाग्य है! और कितना सहज मिला है! कोई मेहनत की है क्या? एक टांग पर खड़ा तो नहीं होना पड़ा ना? या सेकण्ड के दर्शन के लिए क्यू में खड़े हो–ऐसे तो नहीं है ना। आराम से बैठे हो ना। नीचे भी फोम पर बैठे हो। आराम से ही सहज श्रेष्ठ भाग्य बना रहे हो। यह नशा है ना? सभी नशे से कहेंगे कि भाग्य विधाता हमारा है। जब भाग्य विधाता आपका हो गया तो भाग्य किसको देगा?

भाग्य विधाता को अपना बनाया अर्थात् भाग्य के अधिकार को प्राप्त कर लिया। जिसको नशा है वो सदा यही अनुभव करते हैं कि भाग्य मेरा नहीं होगा तो किसका होगा? क्योंकि भाग्य विधाता ही मेरा है। इतना नशा है या कभी-कभी चढ़ता है, कभी उतरता है? संगम का समय ही कितना छोटा-सा है। और आप मैजारिटी तो सब नये हो। कितना थोड़ा समय मिला है! लेकिन ड्रामा में विशेष इस संगमयुग की ये विशेषता है कि कोई भी नया हो या पुराना हो, नये को भी गोल्डन चांस है–नम्बर आगे लेने का। तो नयों में उमंग है या समझते हो हमारे से आगे तो बहुत हैं, हम तो आये ही अभी हैं....। नहीं, ये खुली छुट्टी है – जितना आगे बढ़ना चाहें उतना बढ़ सकते हैं – सिर्फ अभ्यास पर अटेन्शन हो। कोई-कोई पुराने अलबेले हो जाते हैं और आप नये अलबेले नहीं होना तो आगे बढ़ जायेंगे। नम्बर ले लेंगे। नम्बर लेना है ना? फर्स्ट नम्बर नहीं, फर्स्ट डिविज़न। फर्स्ट नम्बर तो ब्रह्मा बाप निश्चित हो गये ना। लेकिन फर्स्ट डिविज़न में जितने चाहे उतने आ सकते हैं। तो सभी किस डिविज़न में आयेंगे? सभी फर्स्ट में आयेंगे तो सेकण्ड में कौन आयेगा? मातायें किसमें आयेगी? फर्स्ट में आयेंगी? बहुत अच्छा। 'आना ही है' – यह दृढ़ निश्चय भाग्य को निश्चित कर देता है। पता नहीं.... आयेंगे, नहीं आयेंगे...., पता नहीं आगे चलकर कोई माया आ जाये..., माया बड़ी चतुर है – ऐसे व्यर्थ संकल्प कभी भी नहीं करना। जब सर्वशक्तिमान् साथ है तो माया तो उसके आगे पेपर टाइगर है। इसलिये घबराना नहीं। 'पता नहीं' का संकल्प कभी नहीं करना। मास्टर नॉलेजफुल बन हर कर्म करते चलो। साथ का अनुभव सदा ही सहज और सेफ रखता है। साथ भूल जाते हैं तो मुश्किल हो जाता है। लेकिन सभी का वायदा है कि साथ रहेंगे, साथ चलेंगे – यही वायदा है ना? कि अकेले रहेंगे, अकेले जायेंगे? तो साथ का अनुभव बढ़ाओ। जानते हो कि साथ हैं, मानते भी हो लेकिन फर्क क्या पड़ता है? जानते भी हो, मानते भी हो लेकिन समय पर उसी प्रमाण चलते नहीं हो। माया का फोर्स ये जो कोर्स है उसको भुला देता है। लेकिन क्या माया बहुत बलवान है? वह बलवान है या आप बलवान हो? या कभी माया बलवान, कभी आप बलवान? आपकी कमज़ोरी

माया है, और कुछ नहीं है। आपकी कमज़ोरी माया बनकर सामने आती है। जैसे शरीर की कमज़ोरी बीमारी बनकर सामने आती है ना, ऐसे आत्मा की कमज़ोरी माया बन करके सामना करती है। तो न कमज़ोर बनना है, न माया आनी है। लक्ष्य ही है – माया-जीत जगतजीत। कितने बार विजयी बने हो? अनगिनत बार, फिर भी घबरा जाते हो! कोई नई बात होती है तो कहा जाता है – नई बात थी ना, मुझे पता नहीं था इसीलिये घबरा गये। लेकिन एक तरफ कहते हो अनेक बार विजयी बने हैं। फिर क्यों घबराते हो? बाप का प्यार ही ये है कि हर बच्चा श्रेष्ठ आत्मा बन राज्य अधिकारी बने। प्रजा अधिकारी तो नहीं बनना है ना? तो राज्य अधिकारी अर्थात् हर कर्मेन्द्रिय जीत। अगर अपनी कर्मेन्द्रियों के ऊपर, मन-बुद्धि-संस्कार के ऊपर विजय नहीं तो प्रजा पर क्या राज्य करेंगे! अगर ऐसे राजे बने जो अपने ऊपर विजय नहीं पा सकते तो सतयुग भी कलियुग बन जायेगा। इसीलिये ये चेक करो कि मन-बुद्धि-संस्कार कन्ट्रोल में हैं? मन आपको चलाता है या आप मन को चलाने वाले हो? जब ये कम्पलेन करते हो कि मेरा मन आज लगता नहीं, मेरा मन आज भटक रहा है तो ये मनजीत हुए? आज मन उदास है, आज मन और आकर्षण की तरफ जा रहा है – ये विजयी के संकल्प हैं? तो जो स्वयं पर विजय नहीं पा सकते हैं वो विश्व पर कैसे विजय प्राप्त करेंगे? इसलिये चेक करो कर्मेन्द्रिय जीत, मन जीत कहाँ तक बने हैं? अगर फर्स्ट डिविज़न में आना है तो इस लक्षण से लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हो।

बापदादा ने देखा कि बच्चे उमंग-उत्साह में भी रहते हैं, ज्ञान की जीवन अच्छी भी लगती है, ज्ञान सुनना-सुनाना इसमें भी अच्छे आगे बढ़ रहे हैं लेकिन चलते-चलते अगर कमज़ोरी आती है तो उसका कारण क्या है? विशेष कारण है कि जो कहते हो, जो सुनते हो, उस एक-एक गुण का, शक्ति का, ज्ञान के पॉइन्ट्स का अनुभव कम है। मानो सारे दिन में स्वयं भी वा दूसरे को भी कितने बार कहते हो – मैं आत्मा हूँ, आप आत्मा हो, शान्त स्वरूप हो, सुख स्वरूप हो, कितने बार स्वयं भी सोचते हो और दूसरों को भी कहते हो। लेकिन चलते-फिरते आत्मिक अनुभूति, ज्ञान स्वरूप, प्रेम स्वरूप, शान्त स्वरूप की अनुभूति, वो कम होती है। सुनना-कहना ज्यादा है और अनुभूति कम है। लेकिन सबसे बड़ी अथॉरिटी अनुभव की होती है तो उस अनुभव में खो जाओ। जब कहते हो शान्त स्वरूप तो स्वरूप में स्वयं को, दूसरे को शान्ति की अनुभूति हो। एक-एक गुण का वर्णन करते हो, शक्तियों का वर्णन करते हो लेकिन शक्ति वा गुण समय पर अनुभव में आये। कई तो बोलते भी रहते हैं कि सहनशक्ति धारण करनी चाहिये, सहनशीलता अच्छी है, लेकिन अनुभूति नहीं होती। अनुभूति की कमी होने के कारण जितना चाहते हो उतना पा नहीं सकते। अगर सभी से पूछें कि जितना पुरूषार्थ होना चाहिये उतना है तो थोड़े हाँ कहेंगे। तो जितना मिल रहा है उतना जीवन में वा कर्म में अनुभव हो। सिर्फ सोचने में अनुभव नहीं हो लेकिन चलन में, कर्म में – शक्तियाँ, गुण स्वयं को भी अनुभव हो, दूसरों को भी अनुभव हो। कहते ही हो कि ज्ञान स्वरूप हैं। तो वह स्वरूप दिखाई देना चाहिये ना? और स्वरूप सदा होता है। स्वरूप कभी-कभी नहीं होता है। अज्ञानकाल की जीवन में यदि किसी का क्रोधी स्वरूप होता है तो जब भी कोई बात होगी तो वो स्वरूप दिखाई देता है, छिपता नहीं है। चाहे छोटी बात हो या बड़ी बात हो लेकिन जिसका जो स्वरूप होता है वह दिखाई देता है। स्वयं को भी अनुभव होता है और दूसरे को भी अनुभव होता है। क्या कहते हैं – ये है ही क्रोधी, इसका संस्कार ही क्रोध का है। तो संस्कार दिखाई देता है ना। ऐसे ये ज्ञान स्वरूप, शान्त स्वरूप, सुख स्वरूप अनुभव में आये। तो अनुभवीमूर्त – ये है श्रेष्ठ पुरुषार्थ की निशानी। तो अनुभव को बढ़ाओ। जो कहा वो अनुभव किया? अगर अनुभव नहीं होता है तो उसका कारण ये है कि जो समय प्रति समय विधि मिलती है उस विधि के ऊपर अटेन्शन कम है? जितना ज्ञान को, शक्तियों को, गुणों को रिवाइज़ करते रहेंगे तो रियलाइज़ सहज होगा। रिवाइज़ नहीं करते तो रियलाजेशन भी कम है। सुना, बहुत अच्छा। लेकिन चलते-फिरते रिवाइज़ होना चाहिये। जैसे दुनिया वाले कहते हैं कि कर्म ही योग है। कर्म - योग अलग नहीं मानते। कर्म ही योग मानते हैं। कर्म से योग लगाना, इसी को ही कर्मयोग समझते हैं। लेकिन कर्म और योग दोनों का बैलेन्स चाहिये। कर्म में बिज़ी रहना योग नहीं है। कर्म करते योग का अनुभव होना चाहिये। कर्म में बिज़ी हो जाते हैं तो कर्म ही श्रेष्ठ हो जाता है, योग किनारे हो जाता है। चलते-चलते यही अल-बेलापन आता है। तो कर्म में योग का अनुभव होना–इसको कहा जाता है कर्मयोगी। मूल बात है अनुभवी स्वरूप बनो। एक-एक गुण के अनुभव में खो जाओ। शक्ति स्वरूप बन जाओ। आपके स्वरूप से शक्तियाँ दिखाई दें। अभी भी देखो, अगर कोई में कोई विशेष शक्ति होती है तो उसके लिये कहते हो – ये बहुत सहनशील स्वरूप है, इसमें समाने की शक्ति बहुत दिखाई देती है। तो कोई में दिखाई देती है, कोई में नहीं और कभी दिखाई देती है, कभी नहीं तो अटेन्शन कम हुआ ना। तो हर शक्ति, हर गुण, हर ज्ञान की पॉइन्ट्स आपके स्वरूप में अनुभव करें और वो तब होगा जब पहले स्वयं को अनुभव होगा। अगर स्वयं अनुभवी होगा तो दूसरे को उससे स्वत: ही अनुभव होगा। और जब अनुभव करते हो तो कितनी खुशी होती है! एक सेकण्ड भी अगर किसी गुण वा शक्ति का अनुभव होता है तो कितनी खुशी बढ़ जाती है और जब सदा अनुभवी स्वरूप होंगे तो सदा चेहरे पर खुशी की झलक, खुशनसीब की झलक अनुभव होगी। तो अनुभव को बढ़ाओ। विधि तो स्पष्ट है ना? अच्छा, सभी खुशनसीब तो हो ही लेकिन विशेष खुशी मनाने आये हो। तो सबको खुशी मिली है?

सब आराम से रहे हुए हो? मन आराम में है तो तन को आराम मिल ही जाता है। ये तो होना ही है, जितना स्थान बढ़ायेंगे उतना कम होना ही है। ये भावी है, उसको क्या करेंगे। और अच्छा है, रिहर्सल हो जाती है, जहाँ बिठाओ, जैसे बिठाओ, जैसे सुलाओ,

इसकी रिहर्सल हो जाती है। तो पट में सोना अच्छा है, पटराजा बन गये ना। शास्त्रों में तो पटरानी और पटराजा का बड़ा गायन है, आप तो बहुत सहज बन गये। कोई तकलीफ है? बापदादा और निमित्त आत्मायें सोचती तो यही हैं कि सब आराम से रहें लेकिन अगर ज्यादा संख्या में भी आराम लगता है तो खुशी की बात है। जहाँ भी रहे हुए हो, वहाँ खुश हो? कोई तकलीफ नहीं है, और बुलायें? सिर्फ एक सूचना चली जाये कि जो आना चाहे वो आ जाये! तो क्या करना पड़ेगा? अखण्ड तपस्या करनी पड़ेगी। खुशी की खुराक खाओ और अखण्ड योग करो फिर तो सभी आ सकते हैं। करेंगे? थक नहीं जायेगे! भूख नहीं लगेगी! सात दिन नहीं खायेंगे? सात दिन खाना नहीं मिलेगा! बापदादा ऐसा हठ कराना नहीं चाहते। सहजयोगी हो ना।

ये परमात्म मिलन कम भाग्य नहीं है! ये परमात्म मिलन का श्रेष्ठ भाग्य कोटो में कोई आप आत्माओं को ही मिलता है। अच्छा! मिल लिया ना! भक्ति में तो जड़ चित्र मिलता है और यहाँ चैतन्य में बाप बच्चों से मिलते भी हैं, रुहरिहान भी करते हैं। तो ये भाग्य कोई कम है! फिर भी आप सब लक्की हो, समय की गति बदलती जाती है। अभी फिर भी आराम से बैठकर सुन रहे हो। आगे चलकर वृद्धि होगी तो बदलेगा ना, फिर भी आप लक्की हो क्योंकि टूलेट के टाइम पर नहीं आये हो। लेट के टाइम पर आये हो। तो सब खुश हो? अच्छा, कौन-से कौन-से ज़ोन आये हैं?

महाराष्ट्र:- महाराष्ट्र वाले सदा विशेष सन्तुष्ट मणियाँ हैं – इस वरदान को स्वरूप में लाना। और फिर बापदादा दूसरे ग्रुप में पूछेंगे कि महाराष्ट्र ने सन्तुष्टता का स्वरूप दिखाया? तो सदा सन्तुष्ट मणि हैं, असन्तुष्टता का नाम-निशान नहीं। तो अभी इसमें नम्बर लेना। रिजल्ट बताना कि इस 6 मास में कोई असन्तुष्ट रहा क्या या सन्तुष्ट किया? स्वयं भी सन्तुष्ट दूसरे भी सन्तुष्ट। तो महाराष्ट्र को ये पसन्द है? अगर कोई आपको असन्तुष्ट करे तो क्या करेंगे? फिर तो असन्तुष्ट होंगे ना। करने वाले ने असन्तुष्ट कर दिया तो आप क्या करेंगे? शीतलता धारण करेंगे। वो सेक दे रहा है और आप शीतल रहेंगे? थोड़ा-थोड़ा असन्तुष्ट होंगे? देखना। वो असन्तुष्ट करे और आप सन्तुष्टता का जल डालो, वो आग जलाये आप पानी डालो। ये तो कर सकते हो या नहीं? तो रिजल्ट देखेंगे। तो महाराष्ट्र अर्थात् सन्तुष्ट रहने वाले और सन्तुष्ट करने वाले।

तामिलनाडु:- तामिलनाडु क्या करेगा? तामिलनाडु सदा सुखदाता के बच्चे मास्टर सुख दाता हैं। कोई दु:ख भी दे तो उसको सुख में परिवर्तन कर लेंगे। तो 6 मास की रिज़ल्ट देखेंगे। ऐसे ताली नहीं बजाना। रिजल्ट के समय भी ताली बजे, ऐसा करना। तो तामिलनाडु भी रेस अच्छी कर रहे हैं। सेवा में आगे बढ़ रहे हैं। प्रकृति को भी तामिलनाडु अच्छा लगता है। वहाँ प्रकृति भी वार करती है। तामिलनाडु वाले क्या बनेंगे? मास्टर सुखदाता। अब देखेंगे महाराष्ट्र आगे जाता है या तामिलनाडु आगे जाता है? लक्ष्य तो सभी का यही है कि सबसे आगे जाना है और जा सकते हैं। कोई मुश्किल बात नहीं है।

इस्टर्न ज़ोन (बंगाल, बिहार, उड़ीसा, आसाम, नेपाल):-

पांच नदियां मिलकर इस्टर्न ज़ोन बना है। तो इस्टर्न ज़ोन क्या करके दिखायेंगे? सदा स्वयं कम्बाइन्ड स्वरूप, मास्टर सर्वशक्तिमान अनुभव करेंगे। सबसे ज्यादा विस्तार ईस्टर्न ज़ोन का है। देखो, नेपाल भी इस्टर्न में आ गया, इस्टर्न में फॉरेन भी आ गया तो कितना बड़ा है। बड़ा ज़ोन है तो बड़ा ही दिखायेंगे ना। इस्टर्न ज़ोन महान् लक्की ज़ोन है। क्यों लक्की है? क्योंकि ब्रह्मा बाप की कर्म भूमि और प्रवेशता भूमि है। इसलिये सदा कम्बाइन्ड स्वरूप में रहने वाले मास्टर सर्वशक्तिमान आत्मायें हैं – ये प्रैक्टिकल में दिखायेंगे ना। सेकण्ड भी अलग नहीं होना। कम्बाइन्ड कभी अलग नहीं होता। सदा साथ और सदा साथ रहकर औरों को भी साथ में मिलाने वाला। समझा? अभी देखेंगे कि नम्बर कौन लेते हैं? अभी तो नाम का नम्बर है ना फिर काम का नम्बर आयेगा।

यू.पी.:- लौकिक कहावत में यू.पी.की विशेषता है कि यू.पी. वाले 'पहले आप, पहले आप' का मन्त्र ज्यादा पढ़ते हैं। लेकिन आप ब्राह्मण कौन-सा मन्त्र पढ़ते हो? पहले बाप। हर बात में पहले बाप। बाप याद आया तो सब कुछ आ गया। तो हर कर्म में पहले बाप की याद हो। इसलिये यू.पी. वाले सदा मस्तक में पद्मपति, पद्मापद्म भाग्य की लकीर वाले। सदा मस्तक में ये पद्मापद्म भाग्यवान की लकीर चमकती हुई दिखाई दे। इसमें यू.पी. वाले नम्बर लेंगे ना? सदा भाग्यवान भव। अच्छा, स्थापना में दिल्ली का भी पार्ट है तो यू.पी. का भी विशेष पार्ट है। इसलिये विशेष भाग्यवान आत्मायें हैं।

इन्दौर:- इन्दौर वाले क्या करेंगे? इन्दौर वाले विशेष महादानी हैं। सदा अपने कर्म द्वारा, बोल द्वारा महादानी। दान करने वाले हो। लेने वाले नहीं, देने वाले। तो महादानी हैं? दान करना आता है ना? जो महादानी होते हैं वही वरदानी होते हैं। तो वरदान लेने वाले और औरों को वरदान देने वाले – महादानी और मास्टर वरदानी। कोई कैसा भी हो वरदान दो, महादानी बनो – यही विशेषता है। तो इन्दौर वाले क्या करेंगे? वरदानी बनेंगे। कोई गाली भी देंगे तो वरदानी बनेंगे ना। कोई इन्सल्ट करेंगे तो क्या करेंगे? वरदानी बनेंगे कि उस समय थोड़ा शक्ल बदली करेंगे? थोड़ी शक्ल बदली नहीं होगी? वरदान देंगे! वो गाली देवे, आप वरदान देंगे! फिर तो बहुत पास हो गये, अभी से ही पास हो गये।

कर्नाटक:- कर्नाटक वाले क्या करेंगे? सदा अपने को पुण्य आत्मायें समझ पुण्य करते रहेंगे। कर्नाटक वालों के पुण्य की पुंजी सदा जमा होगी। तो पुण्यात्मायें बन पुण्य की पूंजी जमा करने वाले और पुण्यात्मा बन औरों को भी पुण्यात्मा बनाने वाले। तो कर्नाटक वाले क्या हैं? पुण्यात्मायें। पाप तो खत्म हो गये ना। कर्नाटक वालों ने पाप का खाता खत्म कर दिया ना? कि थोड़ा-थोड़ा

रखा है? सारा खत्म। तब तो पुण्य आत्मा बने हैं ना। तो पुण्यात्मायें हैं और सदा पुण्यात्मायें रहेंगे और औरों को भी पुण्यात्मा बना-येगे। बनाने में तो होशियार हो ना। कर्नाटक की वृद्धि बहुत जल्दी होती है ना। सबसे ज्यादा किस ज़ोन की संख्या है? (महाराष्ट्र की) अच्छा है, जैसा नाम है वैसा काम है। अच्छा!

डबल विदेशी:- डबल विदेशी बहुत होशियार हैं। कौन-सी होशियारी करते हैं? भागने में होशियार हैं! और भाग्य लेने और भाग्य देने में भी होशियार हैं! थोड़ा लेने वाले नहीं हैं, पूरा लेने वाले हैं। भाग्य लेने में होशियार हैं? डबल विदेशियों की विशेषता है कि हर बात में डबल हिस्सा लेते हैं। भारत वालों में भी हिस्सा लेते हैं तो अपने में भी हिस्सा लेते हैं। और विदेश वालों को विशेष अव्यक्त पालना की अनुभूति का वरदान विशेष है। तो अनुभव स्वयं भी करते हैं और ड्रामानुसार डबल विदेशियों को बापदादा द्वारा भी अव्यक्त पालना का विशेष वरदान मिला है। लेकिन लेने में भी आगे हैं। इसलिये बापदादा डबल याद-प्यार देते हैं। इन्हों के आगे जाने का एक विशेष कारण है। ऐसे ही वरदान नहीं मिला है, कोई कारण से मिलता है। तो इन्हों की विशेषता यह है कि जो भी होगा, अच्छा होगा या बुरा होगा, स्पष्टवादी हैं। अन्दर एक, बाहर दूसरे नहीं हैं। जो अन्दर है, वो बाहर है। तो स्पष्ट होने के कारण जल्दी में आगे कदम उठा लेते हैं। छिपाने वाले नहीं हैं। तो यह स्पष्टवादी बनने के कारण विशेष अव्यक्त पालना के वरदान के अधिकारी बने हैं और बनते रहेंगे। समझा!

तो आप भी जितने स्पष्टवादी होंगे उतने अनुभव ज्यादा करेंगे। स्पष्टवादी बनना अर्थात् सहज श्रेष्ठ बनना। ये वरदान स्वत: ही मिल जाता है।

आन्ध्रप्रदेश:- आन्ध्रा में भी सेन्टर्स तो बहुत हैं ना। आन्ध्रा वाले क्या करेंगे? आन्ध्रा वाले कमाल करने वाले हैं। (बीच में ही ताली बजा दी) इससे ही सिद्ध होता है कि कमाल करने में होशियार हैं। तो आन्ध्रा वालों को यही कमाल करनी है कि सदा डबल लाइट बन उड़ना है और उड़ाना है। उड़ती कला और औरों का भी भला। स्वयं भी उड़ती कला और औरों की भी उड़ती कला में सबसे आगे जाना है। अपने भी बोझ को सेकण्ड में समाप्त करने वाले और दूसरों के भी बोझ को समाप्त कर उड़ाने वाले। अभी उड़ती कला की कमाल आन्ध्रा को दिखानी है। हिम्मत है? तो 6 मास में पूरे आन्ध्रा ज़ोन में कोई भी विघ्न नहीं आना चाहिये। हो सकता है? अभी हाँ नहीं करते! खिटखिट है क्या? मिटा नहीं सकते? तो आन्ध्रा को प्राइज़ लेनी चाहिये। 6 मास के बाद आन्ध्रा वाले प्राइज़ लेंगे?

6 मास के बाद सभी को प्राइज़ देंगे। जो वरदान मिला है, उसमें जो सब पास होंगे उनको प्राइज़ मिलेगी। पहले पास होंगे फिर प्राइज़ मिलेगी। तो फुल पास होना है! फिर यह नहीं कहना कि क्या करें, चाहता नहीं था, हो गया..., भाषा बदली कर देना – हो ही नहीं सकता। इतना निश्चय है? अच्छा है। नये कमाल करके दिखायेंगे ना। तो बाप कहेंगे पुराने तो पुराने, नये समान बाप होंगे। तो आगे जाने के लिए ये वरदान लेना है ना।

अच्छा, बाकी **मधुबन निवासी और ज्ञान सरोवर**। बापदादा ने पहले भी कहा तो आबू में सबका याद-प्यार देने के लिये पांच मुखी ब्रह्मा है, ब्रह्मावत्स हैं। एक मधुबन है और दूसरा ज्ञान सरोवर है, तीसरा हॉस्पिटल है, चौथा तहलटी है और पांचवा आबू निवासी। तो पांच मुखी ब्रह्मावत्स। पांचों को बापदादा सदा उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ने वाले और औरों को भी उड़ाने वाले–ऐसा विशेष वरदान वा याद-प्यार दे रहे हैं। तो मधुबन निवासियों को विशेष उमंग-उत्साह के पंख सदा लगे हुए रहते हैं। उमंग-उत्साह के पंख कभी कमज़ोर नहीं होते। इसका प्रूफ है ज्ञान सरोवर में पंख लग गये हैं ना। जो भी देखता है वो क्या कहता है? कमाल है। तो उमंग-उत्साह के पंख का प्रैक्टिकल प्रूफ है ज्ञान सरोवर। आप समझते हो इतने में इतना बड़ा बन सकता है? कॉमन कोई सोच सकता है? तो ज्ञान सरोवर वाले या मधुबन वाले उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ाने वाले भी हैं और उड़ने वाले भी हैं। बापदादा ज्ञान सरोवर के सेवाधारियों को विशेष दुआओं भरी याद-प्यार दे रहे हैं। विशेषता है कि निश्चयबुद्धि हैं। कितना भी कोई हिलाता है, डेट पर तैयार होगा! नहीं हो सकता! लेकिन ज्ञान सरोवर वाले निश्चयबुद्धि नम्बरवन हैं। ज्ञान सरोवर वाले हाथ उठाओ। बहुत हैं। अच्छा, हमारे विशेष सेवाधारी भी आये हुए है। अच्छे हैं, सबकी हिम्मत, सबका उत्साह, कार्य को आगे बढ़ा रहा है, इसलिये बापदादा प्यार की मसाज़ करते रहते हैं। मधुबन वाले अर्थात् सदा ताजा भोजन करने वाले। फैक्स द्वारा या टाइप द्वारा खाने वाले नहीं, ताजा माल खाने वाले। मधुबन वाले शरीर से नीचे हैं, (हाल फुल होने कारण पाण्डव भवन में मुरली सुन रहे हैं) मन से बापदादा के सामने ऊपर हैं। ऐसे तो चारों ओर के बच्चों के दिल की टी.वी. खुली हुई है, उसमें देख रहे हैं। चाहे देश, चाहे विदेश के, सभी बच्चे अव्यक्त रूप से मिलन मना रहे हैं। तो देखो आप विशेष लक्की हो जो पहला चांस आप लोगों को मिला है। अच्छा–सभी सन्तुष्ट हो ना? सन्तुष्ट हो और रहेंगे भी। अच्छा!

चारों ओर के सर्वश्रेष्ठ भाग्य विधाता के भाग्यवान आत्माओं को, सदा मनजीत-जगतजीत के निश्चय और नशे में रहने वाले, सदा हर गुण, शक्ति और ज्ञान के अनुभवी आत्मायें, सदा बाप को साथ रखने वाले कम्बाइन्ड स्वरूप आत्मायें, सदा श्रेष्ठ भाग्य की लकीर को सहज श्रेष्ठ बनाने वाले, ऐसे अति समीप और श्रेष्ठ आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

26.11.94

परमात्म पालना और परिवर्तन शक्ति का प्रत्यक्ष स्वरूप – सहजयोगी जीवन

आज बापदादा हर एक बच्चों के मस्तक पर विशेष श्रेष्ठ भाग्य की तीन लकीरें देख रहे हैं। सर्व बच्चों का भाग्य तो सदा सर्वश्रेष्ठ है ही लेकिन आज विशेष तीन लकीर चमक रही हैं। एक है परमात्म पालना के भाग्य की लकीर और दूसरी है बेहद के ऊंचे ते ऊंचे पढ़ाई के भाग्य की लकीर। तीसरी है श्रेष्ठ मत प्राप्त होने के भाग्य की लकीर। चाहे लौकिक, चाहे अलौकिक, हर एक को इस जीवन में ये तीन प्राप्तियाँ होती ही हैं। पालना भी मिलती, पढ़ाई भी मिलती और मत भी मिलती है। इन तीनों द्वारा ही हर आत्मा अपना वर्तमान और भविष्य बनाने के निमित्त बनती हैं। आप सभी श्रेष्ठ आत्माओं को किसकी पालना मिल रही है? परमात्म पालना के अन्दर हर सेकण्ड पल रहे हो। जैसे परम आत्मा ऊंचे ते ऊंचे हैं तो परमात्म पालना भी कितनी श्रेष्ठ है! और इस परमात्म पालना के पात्र कौन बने हैं और कितने बने हैं? सारे विश्व की आत्मायें 'बाप' कहती हैं लेकिन पालना और पढ़ाई के पात्र नहीं बनती हैं। और आप कितनी थोड़ी-सी आत्मायें इस भाग्य के पात्र बनती हो! सारे कल्प में यही थोड़ा-सा समय परमात्म पालना मिलती है। दैवी पालना, मानव पालना–ये तो अनेक जन्म मिलती है लेकिन ये श्रेष्ठ पालना अब नहीं तो कब नहीं। ऐसे श्रेष्ठ भाग्य की श्रेष्ठ लकीर सदा अपने मस्तक में चमकते हुए अनुभव करते हो? कोई भी प्राप्ति सदा करना चाहते हो या कभी-कभी करना चाहते हो? तो प्राप्ति का पुरुषार्थ भी सदा चाहिये या कभी-कभी चाहिये? और सदा तीव्र चाहिये या कभी साधारण, कभी तीव्र? प्रैक्टिकल क्या है? चाहना और प्रैक्टिकल में अन्तर हो जाता है ना! सोचते तो बहुत हो लेकिन स्मृति में कम रखते हो। सोचना स्वरूप बनना है या स्मृति स्वरूप बनना है? स्मृति स्वरूप बनने वाले हो ना! तो एक बात भी स्मृति में रखो कि अमृतवेले आपको उठाने वाला कौन? बाप का प्यार उठाता है। दिन का आरम्भ कितना श्रेष्ठ है! और बाप स्वयं मिलन मनाने के लिये बुलाते हैं, रुह-रिहान करते हैं, शक्तियाँ भरते हैं! तो हर दिन का आदि कितना श्रेष्ठ है! बाप की मोहब्बत से उठते हो कि कभी-कभी मज़बूरी से भी उठते हो? यथार्थ तो मोहब्बत के गीत आपको उठाते हैं। अमृतवेले से बाप कितना स्नेह से बुलाते हैं, उठाते हैं – मीठे बच्चे, प्यारे बच्चे, आओ.....। तो जिसका आदि इतना श्रेष्ठ है तो मध्य और अन्त क्या होगा? श्रेष्ठ होगा ना!

बापदादा देख रहे थे कि कितना पालना का भाग्य वर्तमान समय बच्चों को प्राप्त है! जितना प्राप्त है उतना फायदा उठाते हो? स्वप्न में भी संकल्प मात्र नहीं था कि इतने भाग्य के पात्र बनेंगे! सोचने से बाहर था लेकिन मिला कितना सहज! बाप के प्यार की पालना का प्रैक्टिकल स्वरूप ही है 'सहज योगी जीवन'। जिससे प्यार होता है उसके लिये मुश्किल परिस्थिति या मुश्किल कोई भी बात देखी-सुनी नहीं जाती। तो बाप ने भी मुश्किल को सहज बनाया है ना! सदा सहज है। तो सदा ही पुरुषार्थ की गति तीव्र हो। आज बहुत अच्छा पुरुषार्थ है और कल थोड़ी परसेन्टेज़ कम हो गई तो क्या सदा सहज कहेंगे? सदा मुश्किल कौन बनाते हैं? स्वयं ही बनाते हो ना? कारण क्या? सोचने की तो आदत है लेकिन स्मृति स्वरूप के संस्कार कभी इमर्ज रखते हो, कभी मर्ज हो जाते हैं। क्योंकि स्मृति स्वरूप सो समर्थ स्वरूप। सोचना, यह समर्थी स्वरूप नहीं है। स्मृति समर्थी है। विस्मृति में क्यों आ जाते हो? आदत से मजबूर हो जाते हो। अगर मजबूत नहीं तो मजबूर हो जायेंगे। जहाँ मजबूत हैं वहाँ मजबूरी नहीं है। जब ओरीजिनल आदत विस्मृति की नहीं है। आदि में स्मृति स्वरूप प्रालब्ध प्राप्त करने वाली देवात्मायें हो, योग लगाने का पुरुषार्थ नहीं करते लेकिन स्मृति स्वरूप की प्रालब्ध प्राप्त करते हो। तो आदि में भी स्मृति स्वरूप का प्रत्यक्ष जीवन है और अनादि आत्मा, जब आप परमधाम से आई तो आप विशेष आत्माओं के संस्कार स्वत: ही स्मृति स्वरूप हैं। और अन्त में संगम पर भी स्मृति स्वरूप बनते हो ना! तो अनादि, आदि और अन्त – तीनों ही काल स्मृति स्वरूप हैं। विस्मृति तो बीच में आई। तो आदि, अनादि स्वरूप सहज होना चाहिये या मध्य का स्वरूप? सोचते हो कि हाँ, मैं आत्मा हूँ लेकिन स्मृति स्वरूप हो चलना, बोलना, देखना उसमें अन्तर पड़ जाता है। तो यह स्मृति में रखो कि हम परमात्म पालना की अधिकारी आत्मायें हैं।

बापदादा चार्ट चेक करते हैं तो लकीर कभी ऊंची, कभी नीची होती है, कभी कोई दाग़ होता है, कभी जीवन के काग़ज में कोई दाग़ नहीं भी होता है और कोई समय दाग़ ही दाग़, एक पीछे दूसरा, दूसरे के पीछे तीसरा दाग़ ही नज़र आते हैं। क्यों? एक तो ग़लती हो जाती है लेकिन ग़लती होने के बाद भी उसी ग़लती को सोचते रहते हो। क्यों, क्या, कैसे, ऐसे नहीं, वैसे..... कई रूप से बात को छोड़ते नहीं हो। बात आपको छोड़ कर चली जाती है लेकिन आप बात को नहीं छोड़ते हो। जितना समय सोचने स्वरूप बनते हो, यथार्थ स्मृति स्वरूप नहीं बनते हो, तो दाग़ के ऊपर दाग़ लगते जाते हैं। पेपर का टाइम कम होता है लेकिन व्यर्थ सोचने का संस्कार होने के कारण पेपर का टाइम बढ़ा देते हो। सेकण्ड पूरा हुआ और निर्विकल्प स्थिति बन जाये – यह संस्कार इमर्ज करो। निर्विकल्प बनना आता है ना? अपने श्रेष्ठ भाग्य को स्मृति में लाकर सदा हर्षित रहो। अपने परमात्म पालना को सदा बार-बार स्मृति में लाओ। सुनना भी आता है, सोचना भी आता है लेकिन फर्क क्या पड़ जाता है? बापदादा बच्चों का खेल देखते रहते हैं। सारे दिन में क्या-क्या खेल करते हो – ये रात्रि को चेक करते हो ना? माया के खिलौने बड़े आकर्षण वाले हैं। तो उन खिलौनों से खेलने लग जाते हो। पहले तो बहुत प्यार से माया खेल कराती है और खेल कराते-कराते जब हार खिलाती है तब होश में आते हैं। मैजारिटी में एक विशेष शक्ति की कमी रह जाती है। कभी बहुत अच्छे चलते हो, कभी चलते हो, कभी उड़ते हो, आगे बढ़ते

हो लेकिन फिर नीचे क्यों आ जाते हो? इसका विशेष कारण क्या? परिवर्तन शक्ति की कमज़ोरी है। समझते भी हो कि ये यथार्थ नहीं है लेकिन परिवर्तित होने की कमी हो जाती है। ब्राह्मण जीवन में परिवर्तन में आ गये, अब कोई कहेंगे कि मैं ब्राह्मण नहीं हूँ? सभी अपने को बी.के. लिखते हो ना! हम ब्राह्मण हैं, यह समझते हो ना? ब्राह्मण जीवन में जो परीक्षायें आती हैं उसमें परिवर्तन करने की शक्ति आवश्यक होती है। जब व्यर्थ संकल्प चलते हैं तो समझते भी हो कि ये व्यर्थ हैं। लेकिन व्यर्थ संकल्पों का बहाव इतना तेज़ होता है जो अपने तरफ खींचता जाता है। जैसे नदी का वा सागर का बहुत फोर्स होता है तो कितना भी अपने को रोकने की कोशिश करते हैं लेकिन फिर भी बहते जाते हैं। समझते भी हो, सोचते भी हो कि ये ठीक नहीं है, इससे नुकसान है फिर भी बहाव में बह जाते हो–इसका कारण क्या? परिवर्तन शक्ति की कमी। पहला विशेष परिवर्तन है स्वरूप का परिवर्तन। मैं शरीर नहीं, लेकिन आत्मा हूँ, यह स्वरूप का परिवर्तन है। यह आदि परिवर्तन है। इसमें भी चेक करो तो जब देहभान का फोर्स होता है तो आत्म अभिमान के स्वरूप में टिक सकते हो या बह जाते हो? अगर सेकण्ड में परिवर्तन शक्ति काम में आ जाये तो समय, संकल्प कितने बच जाते हैं। वेस्ट से बेस्ट में जमा हो जाते हैं।

पहली परिवर्तन शक्ति है स्वरूप का परिवर्तन और स्वभाव का परिवर्तन। पुराना स्वभाव पुरुषार्थी जीवन में धोखा देता है। समझते भी हो कि यह मेरा स्वभाव यथार्थ नहीं है और यह स्वभाव समय प्रति समय धोखा भी देता है–यह भी समझते हो, लेकिन फिर भी स्वभाव के वश हो जाते हो। फिर अपने बचाव के लिये कहते हो कि मेरा भाव नहीं था, मेरा स्वभाव ऐसा है, मैं चाहता या चाहती नहीं हूँ लेकिन मेरा स्वभाव है। ब्राह्मण बन गये तो जन्म बदल गया, सम्बन्ध बदल गया, माँ-बाप बदल गये, परिवार बदल गया लेकिन स्वभाव नहीं बदला। फिर रॉयल शब्द कहते कि मेरी नेचर है। तो पहली कमजोरी स्वरूप का परिवर्तन, दूसरा स्वभाव का परिवर्तन, तीसरा संकल्प का परिवर्तन। सेकण्ड में व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन करो। कई समझते हैं बस आधा घण्टे का तूफान था, आधा घण्टा, 15 मिनट चला, लेकिन आधा घण्टा वा 15 मिनट की कमज़ोरी संस्कार बना देती है ना? जैसे शरीर में अगर कोई बार-बार कमजोर होता रहे तो सदा के लिये कमजोर बन जाते हैं। तो 15 मिनट कोई कम नहीं हैं। संगमयुग का एक-एक सेकण्ड वर्षों के समान है। तो ऐसे अलबेले नहीं बनो। भल थोड़ा ही चला लेकिन गँवाया कितना? जब कदम में पदम कहते हो तो 15 मिनट में कितने कदम उठेंगे और कितने पदम गंवाये? जमा में तो हिसाब अच्छा रखते हो कि कदम में पदम जमा हो गया लेकिन गँवाने का भी तो हिसाब रखो। तो न चाहते हुए भी संस्कार खींचते हैं। जो भी बात बार-बार होती वो संस्कार रूप में भर जाती है। तो संकल्प परिवर्तन करो। सिर्फ सोचते नहीं रहो – करना नहीं चाहिये, हो गया, क्या करुँ? नहीं, सोचो और करके दिखाओ? कहते हो बीती को बिन्दी लगाओ, एक-दो को ज्ञान देते हो ना – कोई आकर बात करेंगे तो कहेंगे ठीक है, बिन्दी लगा दो, लेकिन स्वयं बिन्दी लगाते हो? बिन्दी लगाने लिये कौन-सी शक्ति चाहिए? परिवर्तन शक्ति। परिवर्तन शक्ति वाला सदा ही निर्मल और निर्माण रहता है। जैसे पहले भी बापदादा ने सुनाया है कि मोल्ड होने वाला ही रीयल गोल्ड है। रीयल गोल्ड की निशानी है वो मोल्ड हो जायेगा। तो चेक करो कि परिवर्तन शक्ति समय पर काम आती है या समय बीत जाने के बाद सोचते ही रहते हैं? तो परिवर्तन शक्ति को बढ़ाना है। जिसमें परिवर्तन शक्ति है वो सबका प्यारा बनता है। विचारों में भी सहज रहेगा, आगे बढ़ते सेवा में रहते हो ना? सेवा में भी विघ्न रूप क्या होता है? मेरा विचार, मेरा प्लैन, मेरी सेवा इतनी अच्छी होते हुए भी मेरा क्यों नहीं माना गया? तो उसको रीयल गोल्ड कहेंगे? मेरापन आ गया, मेरापन आना अर्थात् अलाय मिक्स होना। जब रीयल गोल्ड में अलाए मिक्स हो जाता है तो वो रीयल रहता है? उसका मूल्य रहता है? कितना फर्क पड़ जाता है! तो समय और वायुमण्डल को परख-कर अपने को परिवर्तन करना, इसकी आवश्यकता है। मोटी-मोटी बातों में परिवर्तन करना तो सहज है लेकिन हर परिस्थिति में, हर सम्बन्ध, सम्पर्क में समय और वायुमण्डल को समझ स्वयं को परिवर्तन करना, यही नम्बरवन बनना है। ये नहीं सोचो कि फलाना भी समझे ना, ये भी तो परिवर्तन करे ना, सिर्फ मैं ही परिवर्तन करुँ क्या? जो ओटे सो अर्जुन, इसमें अगर आपने अपने को परिवर्तन किया तो ये परिवर्तन ही विजयी बनने की निशानी है। समझा।

अच्छा, सब आराम से पहुँच गये ना? आराम से रहे हुए हो ना? भक्ति मार्ग के मेलों में कितनी मेहनत और मुश्किल होती है! और ये मेला आराम देने वाला है ना? नींद तो आराम से करते हो ना? फिर भी नीचे (पट में) सोने के लिये, बैठने के लिये फ़ोम तो मिला है ना। और नदी के किनारे के मेले में तो भोजन भी खाओ तो मिट्टी भी खाओ। मेले में अपना भी प्रोग्राम रखते हो तो कितनी मिट्टी होती है! यहाँ तो आराम से अच्छा ब्रह्मा भोजन मिलता है। प्राप्तियों को सदा सामने रखो तो प्राप्ति के स्मृति स्वरूप से कमजोरियाँ सहज समाप्त हो जायेंगी। अमृतवेले से लेकर क्या-क्या प्राप्त होता है? अगर कोई पूछे आपको अमृतवेले कौन उठाता है? कोई समझेगा कि परमात्मा इन्हों को उठाता है? हंसेंगे कि परमात्मा आपके लिये बहुत फ्री बैठा है क्या? पढ़ाने के लिये भी फ्री है, उठाने के लिये भी फ्री है? तो फ़लक से कहते हो ना कि है ही हमारे लिये। कोई बुज़ुर्ग माताओं से पूछे – आपका टीचर कौन है तो क्या कहेंगी? परमात्मा हमें पढ़ाता है! आश्चर्य की बात है ना! परमात्मा को और कोई स्टूडेण्ट नहीं मिले! अच्छा!

जैसे मधुबन में खुश रहते हो – ऐसे अपने स्थानों को मधुबन बनाओ। माताओं को सबसे ज्यादा खुशी है ना? खुशी को सम्भालना आता है? माताओं को वैसे भी चीजें सम्भालने की आदत होती है तो खुशी को सदा सम्भालकर रखना। पाण्डवों को जमा करना

आता है, कमाना अर्थात् जमा करना। तो पाण्डव जमा करने में होशियार हैं। जेब खर्च रखने में होशियार होते हैं। तो सदा चेक करो – कितना गँवाया, कितना जमा किया? जमा का खाता सदा बढ़ता रहे। अच्छे कमाने वाले की निशानी यही होती है कि आज एक हज़ार है तो कल दो होना चाहिये। ऐसे होशियार हो ना?

दूर बैठने वाले और ही बापदादा के अति समीप है। क्योंकि बापदादा के पास ऐसी टी.वी. है जो दूर वाले बिल्कुल नयनों में आ जाते हैं। अच्छा! सब नाच रहे हैं। बस, नाचो, गाओ और ब्रह्मा भोजन खाओ।

डबल विदेशी:- डबल विदेशी बहुत चतुर हैं। सभी ग्रुप में डबल विदेशी होते ही हैं। वैसे विदेशियों की सीज़न में भी भारत वाले तो होते ही हैं। पहले तो यहाँ के (आबू के) पांच स्थानों के होते हैं। तो डबल विदेशी फ्राख़दिल हैं तो भारतवासी भी फ्राख़दिल बने हैं। डबल विदेशी सिकीलधे हैं। विशेष उमंग उड़ती कला का ज्यादा रहता है। तो जैसे उड़ती कला का लक्ष्य है, वैसे ही लक्ष्य और लक्षण को समान बनाते हुए उड़ते चलो और उड़ाते चलो। उड़ने वाले तो वैसे भी हो। प्लेन में तो उड़कर आते हो ना। तो शरीर से भी उड़ने वाले हो और पुरुषार्थ में भी उड़ती कला। लेकिन लक्ष्य और लक्षण को और समीपता में आगे लाओ। है, लेकिन और समीपता में लाओ। इससे सदा ही श्रेष्ठ रहेंगे। समझा! अच्छा!

दिल्ली:- दिल्ली की कल्प के आदि से अब अन्त तक क्या विशेषता है? (राजधानी रही है) तो देहली वाले अपने को सदा राज्य अधिकारी आत्मायें हैं, ऐसे श्रेष्ठ स्मृति स्वरूप अनुभव करते हो? क्योंकि बापदादा ने अभी भी स्वराज्य अधिकारी बनाया है। तो स्वराज्य अधिकारी सो विश्व राज्य अधिकारी। स्वराज्य अधिकारी कम तो विश्व राज्य अधिकारी भी कम। इसलिये दिल्ली वालों को विशेष ये नशा है और सदा रहना है कि हम स्वराज्य अधिकारी सो विश्व राज्य अधिकारी हैं। अभी विश्व सेवाधारी और स्वराज्यधारी हैं। क्योंकि दिल्ली में जो भी कार्य होते हैं वो विश्व के कोने-कोने में पहुँच जाते हैं। तो विश्व सेवाधारी भी हो और स्वराज्य अधिकारी भी हो और विश्व के राज्य अधिकारी भी हो। तो सेवा और राज्य दोनों की स्मृति स्वरूप, ये है दिल्ली की विशेषता। समझा? अच्छा।

राजस्थान:- राजस्थान की विशेषता क्या है? राजस्थान अर्थात् ताज-तख्तधारी। राजाओं की निशानी–ताज होता है ना। तो राज-स्थान अर्थात् सदा सेवा की जिम्मेवारी के ताजधारी। और साथ-साथ बाप के दिलतख्त नशीन। एक सेवा की जिम्मेवारी का ताज और दूसरा लाइट का। तो डबल ताजधारी भी हैं और डबल तख्तधारी भी। बाप का दिलतख्त भी है और अकालतख्त भी है। तो दोनों तख्त के अधिकारी। डबल तख्तधारी और डबल ताजधारी। समझा।

अभी राजस्थान वालों को और सेवा स्थान बढ़ाने हैं। राजस्थान के सेवाकेन्द्र की संख्या और बढ़ाओ। सभी ज़ोन में से सेवाकेन्द्र की लिस्ट सबसे कम से कम किसकी है? (राजस्थान की) आज तो राजस्थान है ना! राजस्थान वाले अभी क्या करेंगे? सेवाकेन्द्र बढ़ायेंगे? करके दिखाओ। थोड़ी मेहनत लगती है ना। लेकिन अभी समय सहयोगी बन रहा है इसलिये अभी मेहनत कम लगेगी। अच्छा!

बनारस, यू.पी.:- यू.पी.वाले क्या करेंगे? विशेषता करेंगे ना। देहली और यू.पी. में पहले-पहले ब्रह्मा बाप ने साकार में बहुत प्यार से निमन्त्रण स्वीकार किया। ब्रह्मा बाप के साकार में जाने की धरनी है। तो जहाँ ब्रह्मा बाप के पांव पड़े हैं वहाँ क्या होगा? ज्यादा में ज्यादा पावन होंगे ना! तो यू.पी. वाले सदा अपने श्रेष्ठ भाग्य को स्मृति में रख हीरो पार्टधारी बन हीरो पार्ट बजायेंगे। जैसे ब्रह्मा बाप की विशेषता हीरो पार्ट रहा, वैसे यू.पी.निवासी हर एक हीरो पार्टधारी बन विशेष पार्ट बजाने के निमित्त हैं और रहेंगे। समझा!

कर्नाटक:- कनार्टक में संख्या अच्छी है, सेवा अच्छी है लेकिन विशेष निर्विघ्न सेवाधारी बनना है। निर्विघ्न सेवाधारी सो निर्विघ्न विश्व राज्य अधिकारी भव। तो कर्नाटक निवासियों को विशेष टाइटल है–विघ्न विनाशक आत्मायें। इसी का ही गायन और पूजन है । तो कर्नाटक वाले अपना यह विशेष टाइटल स्मृति में रख अपने पूज्य स्वरूप को सदा सामने रखो। हर एक विघ्न विनाशक हैं ना? फ़लक से कहो कि विघ्न विनाशक हैं और सदा रहेंगे। अभी देखेंगे कि क्या समाचार आते हैं? विघ्न विनाशक का समाचार आता है?

महाराष्ट्र:- जैसा नाम है महाराष्ट्र वैसा विस्तार भी है। नाम है महाराष्ट्र तो ज़ोन वा संख्या में भी महान् महाराष्ट्र है। इसलिये महाराष्ट्र को सदा महादानी बनना है। कौन-सा दान करेंगे? पहले सबसे बड़ा दान है सर्विस हैण्ड्स। तो महाराष्ट्र को सेवा के हैण्ड्स निका-लने में महादानी बनना है। वैसे निकलते भी हैं लेकिन और निकालो। तो महाराष्ट्र अर्थात् महादानी, महादानी बनना अर्थात् महान् बनना। तो थोड़ा और फ्राख़दिल बनो। वैसे रिज़ल्ट में देखा गया है कि ट्रेनिंग में जो हैण्ड्स निकलते हैं वो ज्यादा महाराष्ट्र के ही निकलते हैं। ये विशेषता है। इसलिये बापदादा इस विशेषता की मुबारक दे रहे हैं। अब इस मुबारक को और बढ़ाते जाना फिर और मुबारक देंगे।

बम्बई वाले भी सदा सेवा में आगे बढ़ते रहते हैं और बढ़ते रहेंगे। सेवा के प्लैन विशेष देहली और बाम्बे में ज्यादा बनते हैं। और बाम्बे को विशेष वरदान है कि यज्ञ सहयोगी आत्माओं के निमित्त बाम्बे है। आन्ध्रा में आई.पीज सहयोगी हैं और बाम्बे के वारिस सहयोगी हैं। तो बाम्बे की विशेषता वारिस क्वालिटी के सहयोगी अच्छे हैं। ऐसे है ना? भण्डारा भरपूर करने वाले।

आन्ध्र प्रदेश:- आन्ध्रा वाले सदा स्वयं को आगे बढ़ाने के उमंग-उत्साह में अच्छे हैं। और आगे बढ़ो तो आन्ध्रा से विशेष आई.पीज आत्मायें निकल सकती हैं। आन्ध्रा वालों को विशेष सहयोगी आत्मायें बनाने का वरदान है, तो सहयोगी बनाओ। रेग्युलर स्टूडेण्ट नहीं बनेंगे सहयोगी बनेंगे। तो जो विशेषता है उसको और बढ़ाते चलो। जितनी सहयोगी आत्मायें निकालने चाहो उतने निकालो। क्योंकि कर्नाटक और आन्ध्रा दोनों भावना प्रधान हैं। कर्नाटक से भी स्नेही आत्मायें बहुत निकल सकती हैं। अभी उन्हों को आगे लाओ। हैं बहुत। तो अभी देखेंगे कि ज्ञान सरोवर में सहयोगी आत्मायें कितने निकालते हैं? समझा? अच्छा!

केरला:- (3-4 हैं) अच्छा है, आप केरला वाले लाडले हो। जो थोड़े होते हैं वो लाडले होते हैं। विशेष लाडली आत्मायें हो।

गुजरात:- गुजरात तो मधुबन का कमरा है। गुजरात की विशेषता हर कार्य में सहयोगी बनने की है। आप ब्रह्मा भोजन खाते हो, तो गुजरात की मातायें जो रोटी पकाती हैं वो और कोई नहीं पका सकता। इसीलिये कान्फ्रेन्स में या कोई भी फंक्शन होता है तो गुजरात की माताओं को निमन्त्रण ज्यादा मिलता है। तो गुजरात की विशेषता है सहयोग देना। सब प्रकार का सहयोग देते हैं। सेवा स्थान और गीता पाठशालाओं की विशेषता भी गुजरात में है। तो सेवा की विधि भी अच्छी है और वृद्धि भी है इसीलिये वरदानी हैं। तो गुजरात को जन्म से ही वरदान है – ''बढ़ते रहो, बढ़ाते रहो।'' आवाज़ दो और पहुँच जाते हैं ना। जैसे कमरे से किसी को बुला लेते हैं ना, वैसे आवाज़ दो तो पहुँच जाते हैं। अच्छे हैं, हल्के भी हैं और उमंग-उत्साह वाले भी हैं। सेवा में अथक हैं। जो भी मुश्किल ड्यूटीज़ होती हैं गुजरात वाले ही उठाते हैं। सबसे मुश्किल ड्यूटी होती है आवास-निवास की, वो भी गुजरात उठाता है ना। भोजन बनाने की, रोटी बनाने की गुजरात उठाता है। और सबको सन्तुष्ट करने की विशेषता भी है। तो गुजरात सैल्वेशन आर्मी है। सब सैलवेशन देने वाले हैं। गुजरात ने अपनी विशेषता को समझा, अभी इसको और बढ़ाना। अच्छा!

टीचर्स:- सभी टीचर्स तो सदा ही ज्ञान स्वरूप, स्मृति स्वरूप हैं ही। क्योंकि जैसे बाप शिक्षक बनकर आते हैं तो बाप समान निमित्त शिक्षक हो। बाप जैसे नहीं हो, लेकिन निमित्त शिक्षक हो। तो टीचर्स की विशेषता निमित्त भाव और निर्मान भाव। सफल टीचर वही बनती है जिसका निर्मल स्वभाव हो। अभी निर्मल स्वभाव के ऊपर विशेष अण्डरलाइन करो। कुछ भी हो जाए लेकिन अपना स्वभाव सदा निर्मल रहे। यही निर्मल स्वभाव निर्मानता की निशानी है। तो अण्डरलाइन करो 'निर्मल स्वभाव'। बिल्कुल शीतल। शीतलता का गायन शीतला देवी है। तो निर्मल स्वभाव अर्थात् शीतल स्वभाव। बात जोश दिलाने की हो लेकिन आप निर्मल हो तब कहेंगे सफल टीचर। तो बापदादा फिर भी अण्डरलाइन करा रहा है किस पर? निर्मल स्वभाव। समझा? अच्छा!

अच्छा, चारों ओर के सर्व सदा स्मृति स्वरूप आत्माओं को, सदा सेकण्ड में परिवर्तन शक्ति द्वारा स्व परिवर्तन करने वाली श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा सहज योगी अनुभव करने वाले अनुभवी आत्माओं को, सदा बाप के समीप और समान बनने के उमंग-उत्साह में रहने वाली सर्व आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

5.12.94

वर्तमान समय की आवश्यकता – बेहद के वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल बनाना

आज स्नेह के सागर बाप अपने स्नेह में समाये हुए स्नेही बच्चों को देख रहे हैं। यह ईश्वरीय स्नेह सिवाए आप बच्चों के किसी को भी प्राप्त नहीं होता। आप सभी को ये विशेष प्राप्ति है। प्राप्ति सभी बच्चों को है लेकिन पहली स्टेज़ है प्राप्ति होना और आगे की स्टेज है प्राप्ति के अनुभव में खो जाना। पहली बात, प्राप्ति की नशे से सभी कहते हो कि हमें बाप का प्यार मिला। बाप मिला अर्थात् प्यार मिला। सभी के मुख से यही निकलता है 'मेरा बाबा'। तो पहली स्टेज में प्राप्ति सभी को है। लेकिन अनुभूति में सदा खोये रहें, इसमें नम्बरवार हैं। जो परमात्म प्यार में खोये हुए रहते हैं उनको इस प्यार से कोई हटा नहीं सकता। परमात्म प्यार में खोई हुई आत्मा की झलक और फ़लक, अनुभूति की किरणें इतनी शक्तिशाली होती हैं जो कोई भी समीप आना तो दूर लेकिन आंख उठाकर भी नहीं देख सकता। ऐसी अनुभूति सदा रहे तो कभी भी किसी भी प्रकार की मेहनत नहीं होगी। अभी योग लगाते-लगाते युद्ध करनी पड़ती है। बैठते योग में हैं लेकिन अनुभूति में खोये हुए नहीं होने के कारण कभी योग, कभी युद्ध दोनों चलते रहते हैं। मैं बाप का हूँ–ये बार-बार स्मृति में लाना पड़ता है। तो बार-बार स्मृति में लाना, विस्मृति है तब तो स्मृति में लाते हो ना? तो हाँ-ना, स्मृति-विस्मृति–ये युद्ध लवलीन अनुभूति करने नहीं देती है। वर्तमान समय बच्चों को जो युद्ध वा मेहनत करनी पड़ती है वो व्यर्थ और समर्थ की युद्ध ज्यादा चलती है। कोई-कोई बच्चों में व्यर्थ देखने के संस्कार नेचुरल नेचर हो गई है। कोई में सुनने की, कोई में वर्णन करने की, कोई में सोचने की–ऐसी नेचुरल नेचर हो गई है जो वो समझते ही नहीं हैं कि ये हम करते भी हैं। अगर कोई इशारा भी देते हैं तो माया की समझदारी होने के कारण अपने को बहुत समझदार समझते हैं। या तो माया के समझदार बन जाते वा अलबेलापन आ जाता–ये तो चलता ही है, ये तो होता ही है.....। माया की समझदारी से रांग में भी अपने को राइट समझते हैं। होती माया की समझदारी है लेकिन समझेंगे–मेरे जैसा ज्ञानी, मेरे जैसा योगी, मेरे जैसा सेवाधारी कोई है ही नहीं। क्योंकि उस समय माया की छाया मन और बुद्धि को ऐसे वशीभूत कर देती है जो यथार्थ निर्णय कर नहीं सकते। मायावी योगी वा मायावी ज्ञानी समझदार, ईश्वरीय समझ से किनारा करा देती है। माया की समझदारी भी कम नहीं है। माया से योग लगाने वाले भी

अचल-अटल योगी हैं। इसलिये फ़र्क नहीं समझते। उस समय के बोल का नशा भी सभी जानते हो ना–कितना बढ़िया होता है! इसलिये बापदादा सदा बच्चों को कहते हैं कि प्राप्तियों की अनुभूतियों के सागर में समाये रहो। सागर में समाना अर्थात् सागर समान बेहद के प्राप्ति स्वरूप बन कर्म में आना।

बापदादा ने चारों ओर के बच्चों का चार्ट चेक किया। क्या देखा? समय के समीपता के प्रमाण वर्तमान के वायुमण्डल में बेहद का वैराग्य प्रत्यक्ष स्वरूप में होना आवश्यक है। बेहद का वैराग्य वर्णन भी करते हो। पॉइन्ट्स बहुत निकालते हो, भाषण भी बहुत अच्छे करते हो। सभी के पास पॉइन्ट्स हैं ना? पॉइन्ट्स वर्णन करना वा सोचना–इसमें तो मैजारिटी पास हैं। इन छोटी-छोटी कुमारियों को भी भाषण तैयार करके देंगे तो कर लेंगी। यथार्थ वैराग्य वृत्ति का सहज अर्थ है–चाहे आत्माओं के सम्पर्क में आयें, चाहे साधनों के सम्बन्ध में आयें, चाहे सेवा के चांस में चांसलर बनने का भाग्य मिले लेकिन सर्व के सम्बन्ध-सम्पर्क में जितना न्यारा, उतना प्यारा–इसका बैलेन्स रहे। होता क्या है? कभी न्यारेपन की परसेन्टेज़ बढ़ जाती और कभी प्यारेपन की परसेन्टेज़ बढ़ जाती। प्यारापन का अर्थ है निमित्त भाव, निर्मान भाव। लेकिन इसके बदले मेरेपन का भान आ जाता। ये मेरा ही काम है, मेरा ही स्थान है, मुझे ही सर्व साधन भाग्य अनुसार मिले हुए हैं, इतनी मेहनत से मैंने ये साधन, स्थान वा सेवा वा सेवा साथी (स्टूडेन्ट्स भी साथी हैं) बनायें हैं। ये मेरा है, क्या मेरी मेहनत की कोई वैल्यू नहीं है? ये निमित्त भाव और मेरेपन के भाव में अन्तर है या एक ही है? ये मेरापन रॉयल रूप से बढ़ गया है। ये मेरेपन की रॉयल भाषा, रॉयल संकल्प बाप से रुहरिहान में भी बापदादा बहुत सुनते हैं। बहुत प्यार से बाप को या निमित्त आत्माओं को मनाने या मनवाने आते हैं–बाबा आप ही इसमें मेरे को मदद करना, आप क्या समझते हो कि ये मेरा काम नहीं है, मेरी ज़िम्मेदारी नहीं है, मेरा अधिकार मेरे को ही मिलना चाहिये। बाप को भी ज्ञान देने के लिये बहुत होशियारी करते हैं। बापदादा मुस्कराते रहते हैं। निमित्त हैं, जो मिला, जैसे मिला, जहाँ बिठायेंगे, जो खिलायेंगे, जो करायेंगे वही करेंगे। ये पहला-पहला सभी का वायदा है। वायदा है ना? ये वायदा है या सिर्फ खाने-पीने के लिये है? मेरेपन के भाव का वैराग्य ही बेहद का वैराग्य है। नये-नये प्रकार के मेरेपन और इमर्ज हो रहे हैं। माया वर्तमान समय नये-नये प्रकार के मेरेपन की छाया डाल रही है। इसलिये समय की समीपता प्रत्यक्ष रूप में नहीं आ रही है। ज्ञानी, चाहे अज्ञानी, दोनों जानते हैं और कहते भी हैं कि दुनिया की हालतें बहुत खराब है, ये दुनिया कहाँ तक चलेगी, कैसे चलेगी? लेकिन फिर भी दुनिया चल रही है। समय की समीपता का फाउण्डेशन है – बेहद की वैराग्य वृत्ति। बापदादा ने चेक किया बेहद की वैराग्य वृत्ति के बजाय नये-नये प्रकार के छोटे-छोटे लगाव का विस्तार बहुत बड़ा है। इस विस्तार ने सार को छिपा लिया है। समझा? अब क्या करना है?

यह लगाव बड़े टेस्टी लगते हैं। एक-दो बार टेस्ट किया तो वो टेस्ट खींचते रहते हैं। सेवा कर रहे हो बहुत अच्छा लेकिन अपनी चेकिंग करो कि निमित्त भाव है वा लगाव का भाव है? 'बाबा-बाबा' के बदले 'मेरा-मेरा' तो नहीं आ जाता? मानना है तेरा और बन जाता है मेरा। तो अब क्या करेंगे? मेरा-मेरा पसन्द है? बापदादा ने पहले भी सुनाया है–एक बहुत बड़ी ग़लती करते हैं वा चलते-चलते हो जाती है, करना नहीं चाहते हैं लेकिन हो जाती है, वह क्या? दूसरे के जज बन जाते हैं और अपने वकील बन जाते हैं। बनना है अपना जज और बनते हैं दूसरों का। इसको यह नहीं करना चाहिये, इनको बदलना चाहिये। और अपने लिये समझेंगे–यह बात बिल्कुल सही है। मैं जो कहती हूँ, वही राइट है, ये ऐसे है, ये वैसे है। वकील लोग भी सिद्ध करते हैं ना–सच को झूठ, झूठ को सच। और जितने प्रमाण देना वकीलों को आता है उतना और किसको नहीं आता। अपना जज बनना–ये ग़लती हो जाती है। दूसरे के लिये रिमार्क देना बहुत सहज है। लेकिन अपने को बदलना है। सलोगन भी है–''स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन।'' पहले 'स्व' है। सुना, क्या चार्ट देखा?

बापदादा भी माया की चाल को देख मुस्कराते रहते हैं–माया कितनी चतुर है! मास्टर सर्वशक्तिमान् आत्माओं को भी अपना बना लेती है। तो अभी क्या चाहिये? बेहद की वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल बनाओ। जैसे सेवा का वायुमण्डल बनाते हो ना, प्रोग्राम बनाते हो। सिर्फ दिमाग तक ये वृत्ति नहीं, दिल तक पहुँचे। सबके दिमाग में तो है–होना चाहिये, करना चाहिये लेकिन दिल में ये लहर उत्पन्न हो जाये इसकी आवश्यकता है। समझा? सभी ने अच्छी तरह से समझा? कि अभी समझ में आया फिर उठने के बाद सोचेंगे–ये कैसे होगा, ये करना मुश्किल है, सुनना-बोलना तो सहज है, करना मुश्किल है। तो अभी ऐसे नहीं कहेंगे ना?

स्नेह से आप भी पहुँच गये हैं और बापदादा भी पहुँच गये हैं। स्नेह में देखो कितनी शक्ति है! स्नेह अव्यक्त को व्यक्त में ले आता है। आप सबको मधुबन में ले आया है। सभी स्नेह में ठीक पहुँच गये हैं ना? किसने लाया? ट्रेन ने लाया कि स्नेह ने लाया? जहाँ स्नेह है वहाँ मेहनत, मेहनत नहीं लगती, मुश्किल, मुश्किल नहीं लगता। ये तीन पैर के बजाय दो पैर पृथ्वी भी मिले तो क्या लगता है? सतयुग के पलंगों से भी श्रेष्ठ है। सब आराम से रहे हुए हैं कि मजबूरी से? क्या करें, रहना ही है....। भक्ति मार्ग में तो सिर्फ पांव रखने के लिये इतनी मेहनत करते हैं, आपको सोने के लिये तीन पैर नहीं तो दो पैर तो मिलता है। आपने तो मांगा था कि चरणों में जगह दे दो लेकिन बाप ने चरणों की बजाय पटरानी बना दिया। फिर भी मधुबन का आंगन है ना। चाहे कहाँ भी सोते हो लेकिन हैं तो मधुबन के आंगन में। इतना बाप के समीप आने का अधिकार मिलेगा–ये तो स्वप्न में भी नहीं था। तो सब खुश हो ना? दो पैर की बजाय एक पैर मिले तो भी राजी रहेंगे? बैठे-बैठे सोयेंगे! कइयों को बैठने में नींद अच्छी आती है। सोयेंगे तो नींद

नहीं आयेगी। योग में बैठना और सोना शुरु। पांच दिन अखण्ड तपस्या करनी पड़े तो सब तैयार हो? खाना भी नहीं मिले तो चलेगा? कि समझते हो ये होना नहीं है? जो चीज़ वहाँ नहीं खाते वो और ही मधुबन में मिलती है। लेकिन एवररेडी रहना चाहिये। मिले तो बहुत अच्छा, न मिले तो बहुत-बहुत अच्छा। क्योंकि सबको अमृतवेले दिलखुश मिठाई तो मिलती ही है और सारा दिन खुशी की खुराक भी मिलती है। तो चल सकता है ना? ये भी ट्रॉयल करेंगे। अच्छा!

पंजाब– सभी चलते-फिरते सदा ये अनुभव करते हो कि हम विश्व की सर्व आत्माओं के पूर्वज हैं? आपसे ही सब निकले हैं ना? तो सबसे बड़े ते बड़े पूर्वज आप आत्मायें हो। पूर्वज स्वरूप से सदा विश्व की सर्व आत्माओं को रहम की भावना से देखते, वरदानी बन शुभ भावना और शुभ कामना का वरदान देते रहो। साधारण नहीं, पूर्वज हैं। पूर्वज अर्थात् रहमदिल आत्मा। रहम की भावना, शुभ भावना यही विश्व की आवश्यकता है। तो सभी अपने को ऐसा विश्व का पूर्वज समझते हो या कभी-कभी अपने को साधारण समझ लेते हो? जैसे ब्रह्मा बाप ग्रेट-ग्रेट ग्रैण्ड फादर है तो ब्राह्मण क्या हैं? पूर्वज हैं ना? समझा?

पंजाब ने क्या कमाल की है? देखो, आपके वायब्रेशन्स से वायुमण्डल तो बदल गया है ना। समझते हो कि हमारे वायब्रेशन का प्रभाव है? योग तपस्या तो सभी ने अच्छी की ना। तो जो तपस्या का बल है वो व्यर्थ नहीं जाता। फल जरूर निकलता है। वैसे भी जब कोई विघ्न आता है तो अखण्ड योग रख देते हो ना? उससे फर्क पड़ता है। तो पंजाब वालों को तपस्या का समय तो बहुत मिला? अच्छा वायुमण्डल परिवर्तन हुआ है तो अभी धूमधाम से सेवा कर रहे हो? अभी चारों ओर सेवा की धूम मचा दो। जितना भी समय मिलता है उतना समय प्रमाण फायदा उठा लो। एक से अनेक निकलते हैं तो उस एक से जो अनेक निकलते हैं उनका वायुमण्डल पर प्रभाव पड़ता है। धरनी की सफलता बदल जाती है। तो अभी जोरशोर से सेवा करो। अभी चांस है सेवा करने का। लेकिन निमित्त भाव से करना, 'मेरा' नहीं लाना। अच्छा!

आगरा – आगरा में विशेषता क्या है? आगरा को कहते ही हैं ताज नगरी। तो आगरा वालों को सदा ही सेवा की निर्विघ्न वृद्धि की जिम्मेदारी का ताज धारण करना है। सेवा हो लेकिन उसकी विशेषता है निर्विघ्न सेवा। तो सेवा की जिम्मेदारी के ताजधारी और साथ-साथ सदा लाइट के ताजधारी अर्थात् सम्पूर्ण पवित्रता की जिम्मेदारी के ताजधारी होंगे ना? सेवा और लाइट ये डबल ताज सदा प्रैक्टिकल स्वरूप में रहे। तो ये ताज ही सर्व आत्माओं को सहज आकर्षित करेगा। तो सेवा में भी आगे बढ़ो और लाइट के ताजधारी बन दूसरों को बनाने में भी आगे बढ़ो। समझा?

हुबली, गुलबर्गा – कर्नाटक की विशेषता क्या है? वहाँ भावना ज्यादा होती है ना। तो जैसे धरनी की विशेषता है भावना, वैसे ही कर्नाटक निवासी चाहे किसी भी स्थान के हो, सभी विशेष हर सेकण्ड, हर संकल्प में शुभ भावना, शुभ कामना – इसके नेचुरल स्वरूपधारी। कर्नाटक निवासियों की विशेषता है कि व्यर्थ की समाप्ति और शुभ भावना, शुभ कामना स्वरूप सदा रहे। व्यर्थ को फुल स्टॉप। शुभ भावना और शुभ कामना का सदा फुल स्टॉक। तो स्टॉप लगाना आता है? और शुभ भावना का स्टॉक जमा करना भी आता है? स्टॉक जमा करने और स्टॉप लगाने में होशियार हो ना? जैसे आगे बैठना पसन्द करते हो ऐसे सदा हर श्रेष्ठ धारणा में भी आगे से आगे रहना। अच्छा।

तामिलनाडु, केरला – तामिल वाले क्या करेंगे? क्या विशेष नशा रखेंगे? सबसे बड़े ते बड़ा रुहानी नशा है–हम बाप के और बाप हमारा। जो इस नशे में रहते हैं वो सदा ही निश्चित सहज विजयी हैं। तो तामिल वाले वा केरला वाले सदा इस रुहानी नशे में रहने वाले और सदा सहज विजय प्राप्त करने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हो। समझा?

हैदराबाद, सिकन्दराबाद – आन्ध्रा वाले भाषा नहीं जानते हैं लेकिन भावना की भाषा जानते हैं। तो आन्ध्रा वाले क्या करेंगे? आन्ध्रा में भी सेवा तो अच्छी है। सदा अपने को हम कोटों में कोई और कोई में भी कोई आत्मायें हैं, ऐसा अनुभव करते हो? जो गायन है कोटों में कोई, कोई में भी कोई, तो वो कौन-सी आत्मायें हैं, किसका गायन है? आन्ध्रा वालों का है? चाहे कैसी भी आत्मायें हो लेकिन बाप की तो प्यारी हो ना। तो ये खुशी सदा रहे कि जो हूँ, जैसी हूँ लेकिन बाप की प्यारी हूँ इसलिये कोटों में कोई, कोई में भी कोई आत्मा बनने का भाग्य आपको मिला है। अच्छा।

महाराष्ट्र – 'महाराष्ट्र' नाम लेने से ही नशा चढ़ता है ना? देश का नाम भी महान् और ब्राह्मण बन गये तो आत्मायें भी महान् और महान् आत्माओं का कर्तव्य है सभी आत्माओं को महान् बनाना। तो महाराष्ट्र वालों को हर समय संकल्प में, बोल में, कर्म में, सम्बन्ध में 'महान्' शब्द सदा स्मृति में रहे। महान् स्वरूप के स्मृति स्वरूप। संकल्प भी साधारण नहीं, महान्। एक बोल भी साधारण नहीं, महान्। तो ऐसे महान् हो? बोलो, हाँ जी। महान् हैं और महान् बनाने वाले हैं तो महान् शब्द सदा स्वरूप में रहे। सिर्फ मुख में नहीं लेकिन स्वरूप में।

इन्दौर, हॉस्टल की कुमारियों से – हॉस्टल की कुमारियाँ हो या हाइएस्ट, होलिएस्ट कुमारियाँ हो? हाइएस्ट भी हो, होलिएस्ट भी। ऊंचे ते ऊंचे भी हो और महान् पवित्र आत्मायें भी हो। क्योंकि कुमारी जीवन का अर्थ ही है महान् पवित्र। इसीलिये कुमारियों को पूजते हैं। और कुमारी से माता बनी तो सबके पांव छूने पड़ेंगे। अगर बहु बनकर घर में आई तो क्या करेंगे? सबके पांव छुयेंगे और कुमारियों के पांव पूजे जाते हैं। तो कुमारी जीवन अर्थात् महान् पवित्र जीवन। ऐसी कुमारियाँ हो ना कि कभी-कभी जोश आ

जाता है? आपस में एक-दो में जोश आता है कि नहीं आता? क्योंकि क्रोध भी अपवित्रता है। सिर्फ काम विकार नहीं, लेकिन उसके और भी साथी हैं। तो महान् पवित्र अर्थात् अपवित्रता का नाम-निशान नहीं। इसको कहा जाता है होलीएस्ट, हाइएस्ट कुमारियाँ। तो ऐसी हो या थोड़ा-थोड़ा कभी माया को छुट्टी दे देते हो? माया प्यारी लगती है ना तो आती है! लेकिन माया कभी भी न आये इसका सहज साधन है कि सदा गॉडली स्टूडेन्ट लाइफ में रहो, स्टडी, स्टडी, स्टडी। और कोई बातों में नहीं जाना। अगर कर्मणा सेवा भी करते हो तो वो भी स्टडी की सब्जेक्ट है। खाना बनाना भी स्टडी है। कर्मयोगी का पाठ है, तो पढ़ाई हुई ना? तो कुमारी जीवन में सफलता का आधार है स्टूडेण्ट लाइफ। और बातों में जाना ही नहीं है, रास्ता बन्द। ऐसे है या कभी-कभी गलत गली में चली जाती हो? नहीं। अच्छा है, अपना भाग्य तो बना लिया। अभी भाग्य की लकीर को जितना लम्बा बनाने चाहो, उतना बना सकती हो। तो छोटी लकीर नहीं खींचना, लम्बी खींचना। बापदादा भी खुश होते हैं कि कुमारी जीवन में बच गई। भाग्यवान बन गयी। और भी कुछ स्थानों से कुमारियाँ आई हैं। ट्रेनिंग वाली कुमारियां हाथ उठाओ। ट्रेनिंग करना माना सेवा की ट्रेन में चढ़ना। तो सेवा की ट्रेन में चढ़ गये कि अभी फैसला कर रहे हैं? सेवा में लग गये? अच्छा है, आदि से निस्स्वार्थ सेवाधारी। सेवाधारी सभी हैं लेकिन निस्स्वार्थ सेवाधारी, वो कोई-कोई हैं। आप किस लाइन में हो? निस्स्वार्थ सेवाधारी या थोड़ा-थोड़ा स्वार्थ तो रखना ही पड़ेगा! नहीं। फाउण्डेशन ही ऐसा मज़बूत रखना, क्योंकि सेवा में स्वार्थ मिक्स करने से सफलता भी मिक्स मिलती है। तो अच्छा है, बापदादा खुश होते हैं, जो कुमारियाँ हिम्मत रखकर सेवा में आगे बढ़ती हैं। आगे बढ़ने की मुबारक। अच्छा।

डबल विदेशी – (सभी स्थानों से पहुंचे है) होशियार हैं डबल फारेनर्स। जैसे सब देश के एम्बेसिडर भेजते हैं ना। तो इन्टरनेशनल ब्राह्मण परिवार हो गया ना। डबल विदेशियों की विशेषता है कि सदा हाथ में हाथ है और साथ है। विदेश का फैशन है ना हाथ में हाथ देना। तो अभी किसके हाथ में हो? बाप के। सदा बाप के हाथ से हाथ मिलाके आगे चलने वाले। हाथ है श्रीमत, तो श्रीमत का हाथ सदा हाथ में है। पक्का है कि कभी थक जाते हैं तो छोड़ देते हैं? कभी हाथ छूटता है? माया छुड़ावे तो? नहीं छूटता है? तो सदा साथ रहने वाले और सदा श्रीमत के हाथ में हाथ देकर चलने वाले। जिसका साथी बाप है, जिसका हाथ बाप के हाथ में है वो सदा ही निश्चिन्त, बेफिक्र बादशाह है। क्योंकि हाथ और साथ दोनों मज़बूत हैं। ठीक है ना? नैरोबी वाले, पक्का हाथ और साथ है ना? चाहे सारी दुनिया के अक्षौहिणी लोग हाथ छुड़ाये तो छूटेगा? वो अक्षौहिणी शक्तिहीन हैं और आप एक मास्टर सर्व शक्तिमान हैं। इसीलिये डबल विदेशियों को नशा है कि बापदादा का एक्स्ट्रा हाथ और साथ है, लिफ्ट है। अच्छा।

टीचर्स – जैसे टीचर्स का टाइटल है, तो जैसा टाइटल है वैसे विशेष बेहद के वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल बनाने में टाइट रहना। हल्के नहीं होना। क्योंकि निमित्त टीचर्स का वायुमण्डल अनेकों तक पहुँचता है। तो टीचर्स अभी ये कमाल करके दिखायें। जैसे परिवर्तन में आज्ञाकारी तो बने। आज्ञाकारी बनने का, हाँ जी करने का एक पाठ तो पक्का कर लिया। लेकिन दूसरा पाठ बेहद के वैराग्य वृत्ति का, अभी ये पाठ पक्का करके दिखाओ। क्योंकि निमित्त हो ना। तो निमित्त आत्मायें ही निर्मान बन निर्माण का कर्तव्य बहुत सहज कर सकती हैं। अभी ये वर्ष तो पूरा हो ही रहा है। लेकिन नये वर्ष में इस नवीनता की झलक बापदादा भी देखेंगे। सेवा की, सेन्टर खोले, बहुत बढ़ाया, आई.पीज भी आ गये, वी.आई.पीज भी आ गये, ये तो होता ही रहता है लेकिन सेवा में बेहद की वैराग्य वृत्ति अन्य आत्माओं को और समीप लायेगी। मुख की सेवा सम्पर्क में लाती है और वृत्ति से वायुमण्डल की सेवा समीप लायेगी। समझा? बापदादा तो चार्ट देखते ही हैं ना? फिर भी सेवा के निमित्त हो–ये श्रेष्ठ भाग्य कम नहीं है! ये भी विशेष वर्सा है। तो इस विशेष वर्से के भाग्य के अधिकारी बने हो। समझा? अच्छा।

चारों ओर के सर्वश्रेष्ठ भाग्यवान आत्माओं को, सदा सर्व प्राप्तियों के अनुभूतियों में समाये हुए श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा परखने की, निर्णय करने की शक्ति को तीव्र बनाने वाले समीप आत्माओं को, सदा सेवा में समर्थ बन समर्थ बनाने के निमित्त आत्माओं को, सदा न्यारा और प्यारा दोनों का बैलेन्स रखने वाली ब्लैसिंग के पात्र आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

14.12.94

समय-संकल्प-बोल द्वारा कमाई जमा करने का आधार – तीन बिन्दी लगाना

आज बापदादा किस सभा में आये हैं? ये सारी सभा किन आत्माओं की है? बापदादा देख रहे हैं कि हर एक हाइएस्ट (पुपू), रिचेस्ट (गम्पू) हैं। दुनिया वाले तो कहते हैं रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड लेकिन आप सभी हैं रिचेस्ट इन कल्पा। इस समय का जमा किया हुआ ख़ज़ाना सारा कल्प साथ में चलता है। सारे कल्प में ऐसा कोई भी नहीं मिलेगा जो ये सोचे कि इस जन्म में तो रिचेस्ट हूँ लेकिन भविष्य में भी अनेक जन्म साहूकार से साहूकार रहेंगे। और आप सभी निश्चय और नशे से कहते हो कि हमारा ये ख़ज़ाना अनेक जन्म साथ रहेगा। गैरेन्टी है ना? तो ऐसा रिचेस्ट सारे कल्प में देखा? तो आज बापदादा अपने शाहन के भी शाह, राजाओं के भी राजा बच्चों को देख रहे हैं। एक-एक दिन में कितनी कमाई जमा करते हो? हिसाब निकालो, जमा का खाता कितना तीव्र गति से बढ़ता जा रहा है? और बढ़ाने का साधन कितना सहज है! इसमें मेहनत है क्या? आपकी कमाई वा जमा खाता बढ़ने का सबसे सहज साधन है – बिन्दी लगाते जाओ और बढ़ाते जाओ। आप भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा में भी बीती को बिन्दी

लगाना। तो कमाई का आधार है बिन्दी लगाना। और कोई मात्रा है ही नहीं। क्या, क्यों, कैसे–ये क्वेश्चन मार्क की मात्रा, आश्चर्य की मात्रा, किसी की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि मास्टर नॉलेजफुल बन गये। तो 'कैसे' शब्द 'ऐसे' में बदल गया। बदल गया या अभी भी 'कैसे-कैसे' कहते हो? 'पता नहीं' ये शब्द संकल्प में भी बदल गया? त्रिकालदर्शी ये स्वप्न में भी नहीं सोच सकते तो मुख से तो बोलने का सवाल ही नहीं है। संगम पर सारा खेल ही तीन बिन्दियों का है। सबसे सहज बिन्दी होती या क्वेश्चन मार्क सहज है? बिन्दी सहज है ना? बिन्दी लगाने में कितना टाइम लगता? सेकण्ड से भी कम। बिन्दी लगाना आता है कि कलम खिसक जाती है? कई बार बिन्दी के बजाय कलम भी लम्बी लकीर खींच लेती है। बिन्दी लगाने से एक सेकण्ड में आपके कितने ख़ज़ाने बच जाते हैं। ख़ज़ानों की लिस्ट तो जानते हो ना? अगर बिन्दी के बजाय और कोई मात्रा लगाते हो वा लग जाती है, तो सोचो ज्ञान का ख़ज़ाना गया, शक्तियों का ख़ज़ाना गया, गुणों का ख़ज़ाना गया, संकल्प का ख़ज़ाना गया, इनर्जी गई, श्वास सफल के बजाय असफलता में गया, समय गया! कितना गया? लम्बी लिस्ट हो गई ना? तो ये कभी भी नहीं सोचो कि एक-दो सेकण्ड ही तो गया। लेकिन एक सेकण्ड में गँवाया कितना? एक सेकण्ड भी कितना भारी हो गया? हर समय अपने जमा का खाता बढ़ाते चलो। कमाया क्या और गँवाया क्या? इन सभी ख़ज़ानों में से कितने ख़ज़ाने गँवाये? बापदादा भी बच्चों के जमा के खाते चेक करते रहते हैं। जब खाता देखते हैं तो मुस्कराते रहते हैं। क्या देखते होंगे जो मुस्कराते हैं? अमृतवेले मिलन भी मनाते, रूहरिहान भी करते, वायदे भी बहुत अच्छे करते कि ये करेंगे, ये करेंगे, बहुत अच्छी-अच्छी बातें करते हैं लेकिन चलते-चलते सारे दिन में कोई न कोई ख़ज़ाना गँवा भी देते हैं। फिर आधार क्या बनाते हैं? बापदादा को भी अपनी अच्छी-अच्छी बातें सुनाने लगते हैं। अगर व्यर्थ संकल्प चला तो क्या ये जमा हुआ या गँवाया? तो फिर बातें क्या करते हैं? सिर्फ संकल्प में चला ना–वो तो ठीक हो जायेगा, बाप को भी दिलासे दिलाते हैं कि ठीक हो जायेगा, पुरुषार्थी हैं ना, सम्पूर्ण तो नहीं हुए हैं, हो जायेगा.....। तो बापदादा कहते हैं कि ये गा-गा के गीत सारे दिन में बहुत सुनते हैं लेकिन ये भी कब तक? क्या अंत में सम्पूर्ण होना है? कि बहुत काल के अभ्यास से बहुत काल का वर्सा पाना है? वर्सा अविनाशी चाहते हो? सम्पूर्ण वर्सा चाहते हो कि अधूरा चलेगा? और पुरुषार्थ में अधूरा पुरुषार्थ चलेगा? तो पुरुषार्थ के समय तो करेंगे, देखेंगे, बनेंगे, कर ही लेंगे, हो ही जायेगा..... ये सोचते हो और प्राप्ति के समय गे-गे करेंगे? उसमें तो सम्पूर्ण प्राप्ति चाहिये, सम्पूर्ण वर्सा चाहिये। सभी लक्ष्मी-नारायण बनने में हाथ उठाते हो। मालूम भी है कि लक्ष्मी-नारायण की भी आठ गद्दियाँ चलेंगी लेकिन हाथ तो लक्ष्मी-नारायण में उठाते हो ना? तो लक्ष्मी-नारायण का अर्थ है नम्बरवन पास विद् ऑनर होना। बापदादा बच्चों की हिम्मत को देखकर खुश भी होते हैं। राम-सीता में कोई नहीं हाथ उठाता। हिम्मत अच्छी है और हिम्मत वाले को मदद भी मिलती है। सिर्फ पुरुषार्थ के समय भी जैसे बाप के आगे संकल्प करते हो वैसे ही ये बोल और कर्म में लाओ।

बापदादा ने देखा समय के ख़ज़ाने का महत्व जितना रखना चाहिये उतना कई बच्चे नहीं रखते हैं। एक दिन का भी चार्ट चेक करें तो मैजारिटी का समय वेस्ट के खाते में जाता दिखाई देता है। द्वापर काल से व्यर्थ सुनने, देखने और फिर सोचने की आदत न चाहते भी आकर्षित कर लेती है और इसी कारण समय का ख़ज़ाना वेस्ट के खाते में चला जाता है। पहले भी सुनाया कि सेकण्ड का भी कितना महत्व है! दूसरी बात, मैजारिटी व्यर्थ बोल में भी समय वेस्ट करते हैं। एक घण्टे के अन्दर भी चेक करो कि जो भी बोल बोला, हर बोल में आत्मिक भाव और शुभ भावना है? बोल से भाव और भावना दोनों अनुभव होती है। अगर हर बोल में शुभ भावना, श्रेष्ठ भावना नहीं है तो अवश्य माया की भावनायें हैं। वो तो अनेक हैं, ईर्ष्या, हषद, घृणा, ये भावनायें चाहे किसी भी परसेन्ट में समाई हुई होती है। कई बार बोल के टेप रिकॉर्ड बापदादा सुनते हैं। हर एक की ऑटोमेटिक टेप भरती जाती है और जिस घड़ी जिसकी भी सुनना चाहे वो सुन सकते हैं। हर बोल का सार नहीं होता। कई बार कहते भी हो मेरी भावना, मेरा भाव खराब नहीं था, ऐसे ही निकल गया वा बोल दिया लेकिन जिस बोल में आत्मिक भाव और शुभ भावना नहीं, वो किस खाते में जमा होगा? वेस्ट में हुआ ना? तो कमाई का खाता ज्यादा होगा या गँवाने का खाता ज्यादा होगा? ये तो गँवाया ना? तो बोल में भी गँवाने का खाता ज्यादा होता है। तो बोल को भी चेक करो। ऐसे ही बोल दिया–ये भाषा बदली करो। समर्थ बोल का अर्थ ही है–जिस बोल में किसी आत्मा को प्राप्ति का भाव वा सार हो। अगर सार नहीं है तो जमा का खाता तो नहीं होगा ना? जितना एक दिन में जमा कर सकते हो, तो बापदादा ने देखा जितने के हिसाब से उतना नहीं है। तो क्या करना पड़ेगा? लक्ष्मी-नारायण तो बनना ही है ना? कि नहीं बने तो भी हर्जा नहीं! पहले जन्म से लेकर श्रेष्ठ प्रालब्ध पानी है कि दूसरे-तीसरे जन्म से शुरू करेंगे? पहले जन्म में नहीं आओ, दूसरे-तीसरे में आओ, पसन्द है? नहीं पसन्द है ना? तो इतना जमा का खाता है? अगर खाता कम जमा होगा तो प्रालब्ध क्या खायेंगे? उतना ही खायेंगे जितना जमा किया है। तो आज बापदादा ने सभी के जमा के खाते देखे। दूसरों को समय का महत्व बहुत अच्छा सुनाते हो, संगमयुग की महिमा कितनी अच्छी करते हो! तो स्वयं भी सदा समय के महत्व को सामने रखो। समय के पहले अपने श्रेष्ठ भाग्य के आधार से प्राप्तियों का खाता फुल जमा करो।

संगमयुग के समय की विशेषता है कि तीनों रूप की प्राप्ति है। एक–वर्से के रूप में, दूसरा–पढ़ाई को सोर्स ऑफ इनकम कहते हैं तो पढ़ाई की प्राप्ति के आधार से और तीसरा है वरदान के रूप में। वर्सा भी है, इनकम भी है और वरदान भी है। प्राप्ति बहुत भारी

है, बहुत बड़ी है! सिर्फ सम्भालने वाले बनो। वर्सा भी बेहद है, इनकम भी बेहद है और वरदान भी बेहद के हैं। कभी सोचा था कि रोज़ भगवान का वरदान मिलेगा? इतने वरदान किसी को भी, कभी भी नहीं मिल सकते। लेकिन आप तो कहते हो हमारा तो अधिकार है। वर्से पर भी, पढ़ाई पर भी और वरदान पर भी। छोटी बात नहीं है, बहुत बड़ी है! तीनों ही सम्बन्ध से तीनों के ऊपर अपना अधिकार प्राप्त कर लिया ना? सभी फ़ख़ुर से कहते हैं ना–बाप मेरा है। ये कहते हो क्या कि मेरा नहीं, तेरा है? हमारे लिये बाप पढ़ाने आता है–ये समझते हो ना? तो पढ़ाई पर अधिकार है ना? और वरदाता के पास वरदान है ही किसके लिये? हरेक सोचता है कि मेरे लिये ही वरदाता बाप है। तो तीनों पर अधिकार है। कहने में तो बहुत साधारण है। इसीलिये तो दुनिया वाले हंसते हैं कि, हैं क्या और कहते क्या हैं? तो अधिकार को सदा स्मृति में रख कदम उठाओ। इमर्ज रूप में रखो, मर्ज रूप में नहीं। हैं तो ब्रह्माकुमार, हैं ही बाबा के... ऐसे नहीं। इमर्ज रुप में, मन में, बुद्धि में, कर्म में इमर्ज रखो। मन में ये संकल्प इमर्ज हो कि मैं ये हूँ, बुद्धि में स्मृति स्वरूप हो और कर्म में अधिकारी के निश्चय और नशे से हर कर्म हो। ऐसे नहीं, अमृतवेले तो इमर्ज रहता है फिर सारे दिन में मर्ज हो जाता है। नहीं, सदा इमर्ज रूप में रहे। तो जमा का खाता बढ़ाओ। तीव्र गति से बढ़ाना, ढीला-ढाला नहीं करना। क्योंकि समय आप मास्टर रचयिता के लिये रुका हुआ है। अभी भी प्रकृति को ऑर्डर करें तो क्या नहीं कर सकती है? अगर पांचों ही तत्व हलचल मचाना शुरू कर दें तो क्या नहीं हो सकता और कितने में हो सकता? तो समय, प्रकृति और माया विदाई के लिये इन्तज़ार कर रही है। आप सम्पूर्णता की बधाइयाँ मनाओ तो वो विदाई लेकर ही जायेगी। माया भी देखती है अभी ये तैयार नहीं हैं तो चांस लेती रहती है। प्रकृति को ऑर्डर करें? पुरुष तैयार हैं? प्रकृति तो तैयार हो जायेगी। ऑर्डर करें? कि ज्ञान सरोवर तैयार हो पीछे ऑर्डर करें? ऐसे एवररेडी हो, कि रेडी हो? शक्तियाँ एवररेडी हैं? सम्पूर्ण हो गये? थोड़े को तो एवररेडी नहीं कहेंगे ना? ये सोचो, चेक करो कि अगर इस घड़ी भी महाविनाश हो जाये तो अपनी तस्वीर देखो नॉलेज के आइने में, कि मैं क्या बनूँगा? आइना तो सबके पास है ना? क्लीयर है ना? तो अपने तकदीर की तस्वीर देखो। बाप को क्या टाइम लगेगा? जब ब्रह्मा के लिये गायन है कि संकल्प से सृष्टि रच ली तो क्या संकल्प से विनाश नहीं हो सकता? बाप जानते हैं राजधानी चलनी है तो उसमें एक ब्रह्मा क्या करेगा? साथी चाहिये ना? तो ब्रह्मा बाप भी आप साथियों के लिये रुके हुए हैं। तो बाप बच्चों से प्रश्न करते हैं, बच्चे तो बाप से प्रश्न बहुत कर चुके हैं। अभी बाप बच्चों से प्रश्न करते हैं कि डेट फिक्स करो। सभी काम की डेट फिक्स करते हो ना? तो इसकी भी डेट फिक्स करो, इसका भी मुहूर्त होना है ना। ज्ञान सरोवर की भी डेट फिक्स है, हॉस्पिटल की भी डेट फिक्स है। इसकी डेट क्या है? ये किसको फिक्स करनी है? बाप को नहीं करनी है। ये बाप ने आप बच्चों के हाथ में दिया है। कोई काम तो आप भी करेंगे, कि सब बाप करेंगे? डेट फिक्स का प्रोग्राम बनाना। अच्छा!

(नये बच्चों को देखते हुए) देखो, आप नये-नये बच्चे जो आये हैं, आप से सबका कितना प्यार है? पहला चांस आप सबको ही देते हैं। सब खुशराजी हैं? कितने पैर पृथ्वी मिली है? दो पैर या तीन पैर? (दो पैर) दो पैर में भी राज़ी तो हो, तकलीफ तो नहीं है ना? खाना-पीना तो अच्छा मिल रहा है ना? मेले में ऐसी पालना और कोई की हो ही नहीं सकती। मेले देखे हैं ना? ऐसा ब्रह्मा भोजन, ऐसा परमात्म परिवार कहाँ मिलता है? सर्दी लगती है? मौसम की भी मिठाई होती है। तो ये सर्दी भी मौसम की मिठाई है, मिठाई तो खानी चाहिये ना? सबको शालों की सौगात तो मिलती है ना? कोई मेले में ऐसी सौगात मिलती है या खाली होकर आते हो? अच्छा–नयों की दिल पूरी हुई, मधुबन देख लिया? पहले स्वप्न में था, अभी साकार में हो गया। कितना भी स्थान बढ़ायेंगे लेकिन कम होना ही है। क्यों? सोचो, अभी 9 लाख जमा हुए हैं? पहले जन्म की संख्या ही तैयार नहीं हुई है। वो तो होनी है ना? कितने मकान बनायेंगे? कितने ज्ञान सरोवर बनायेंगे? सभी कहते हैं संख्या बढ़ाओ। जितना संख्या बढ़ायेंगे, उतनी संख्या दूसरे वर्ष और हो जायेगी तो क्या करेंगे? जितना मिले उतने में राज़ी रहो। मेला भी करना है ना? (तलहटी में ब्राह्मणों का विशाल संगठन होना है) ये तो मेले में आने नहीं हैं, ये तो आ गये। दूसरों के लिये इतना बड़ा मेला पसन्द है? दस हज़ार सोयेंगे! भीड़ नहीं हो जायेगी? ये तो समझते हैं हमको तो चांस मिलना नहीं है। इन्तज़ार की घड़ियाँ भी प्यारी होती हैं। एक साल के बाद जाना है–ये इन्तज़ार होता है ना? तो इन्तज़ार में पुरुषार्थ कितना अच्छा चलता है! और जब होकर चले जायेंगे तो देख लिया, फिर क्या होगा? फिर अलबेलापन आयेगा? नहीं आयेगा? और आगे बढ़ेंगे? ये भी ड्रामा में जो विधि बनी है वो बहुत ही फायदे वाली है। एक साल में पक्के तो हो जाते हो ना? नहीं तो कच्चे-कच्चे आ जाते फिर युद्ध करनी पड़ती।

हर साल में आपके यहाँ (मधुबन में) इन्टरनेशनल मेले कितने लगते हैं? अभी भी ये मेला क्या है? इन्टरनेशनल है ना? देश-विदेश सब तरफ के हैं ना? दुनिया वाले तो सोचते हैं इन्टरनेशनल प्रोग्राम पांच साल में एक किया तो बहुत कर लिया। और मधुबन में कितने होते हैं, पता पड़ता है? इन्टरनेशनल मेला हो गया। और सब खुश! मज़ा आता है ना? लेकिन आना टर्न पर। अभी तो देखो दस हज़ार में भी टेन्ट तो मिलेगा ना? आखिर में ये सब साधन समाप्त हो जायेंगे। सारे आबू के पहाड़ों को सोने के स्थान बना लो तो कितने रह सकते हैं? अच्छा!

दिल्ली ग्रुप –पहले तो दिल्ली वालों को डेट फिक्स करनी पड़ेगी। क्योंकि देहली को परिस्तान बनाना है ना? राज गद्दी तो दिल्ली में होनी है ना? तो पहले दिल्ली वालों को तैयारी करनी पड़ेगी तब तो राज्य करेंगे ना? तो दिल्ली वाले क्या तैयारी करेंगे? दिल्ली

वालों को एक्स्ट्रा सेवा करनी पड़ेगी। क्योंकि एक तो आत्माओं को योग्य और योगी बनाना है, दूसरा धरणी को भी तैयार करना है। तो विशेष अपने वाणी के साथ-साथ वृत्ति को और तीव्र गति देनी पड़ेगी। क्योंकि वृत्ति से वायुमण्डल बनेगा और वायुमण्डल का प्रभाव प्रकृति पर पड़ेगा, तब तैयार होंगे। तो दिल्ली वालों को डबल सेवा का सदा अटेन्शन रखना है। वाणी और वृत्ति दोनों साथ-साथ सेवा में लगे रहें। सभी पावरफुल वृत्ति वाले हो ना? ढीला पुरुषार्थ नहीं करना। क्योंकि अगर आप देरी करेंगे तो राज्य भी देरी से स्थापन होगा। इसलिये दिल्ली वालों को सदा ही डबल सेवा द्वारा तीव्र गति से तैयारी करनी है, राजधानी बनानी है। बनायेंगे तो नज़दीक भी रहेंगे ना? तो डबल सेवा द्वारा ऐसा पावरफुल वायुमण्डल बनाओ जो प्रकृति भी दासी बन जाये, हलचल करने के बजाय दासी बनकर सेवा करे। तो देहली निवासी विश्व परिवर्तक तो हो ही लेकिन विश्व में भी राजधानी परिवर्तन के विशेष निमित्त हो। नशा है ना? तो डबल सेवा करनी है, तब ही डबल ताज मिलेगा, ऐसे नहीं मिलेगा। सेवाधारी सो ताजधारी। अच्छा।

बम्बई, महाराष्ट्र – बम्बई वाले क्या करेंगे? देहली वाले राजधानी तैयार करेंगे, आप प्रजा और राजा-रानी तैयार करेंगे? बाम्बे वालों को विशेष ब्रह्मा बाप का वरदान है। (रमेश भाई से) कौन-सा वरदान है? (नरदेसावर) नरदेसावर का अर्थ है सदा सम्पूर्ण, सदा भरपूर। कभी कोई कमी नहीं होगी। नरदेसावर अर्थात् सदा कमाने वाले, कमाने में होशियार। ऐसे नरदेसावर, सदा भरपूर हो? या कभी खाली हो जाते हो? इतना भरपूर जो औरों को भी भरपूर करने वाले। बाम्बे वाले राजधानी के राजा-रानी और प्रजा तैयार करेंगे। बाम्बे वालों का तो बहुत बड़ा काम हो गया! देहली वालों को भी राज्य अधिकारी तो बनाने पड़ेंगे। क्योंकि अभी भी देखो लास्ट जन्म में भी राज्य अधिकारी तो देहली में ही हैं। तो देहली और बाम्बे दोनों को मिलकर राजधानी जल्दी-जल्दी तैयार करनी है। पसन्द है? डेट भी फिक्स करेंगे ना? डेट नहीं भूल जाना। देहली और बाम्बे वाले जब कहेंगे राजधानी तैयार हो गई तब तो काम होगा ना? राज्य अधिकारी हो नहीं और राज्य तैयार हो जाये, कैसे होगा? बाम्बे में सेवा के रत्न भी अच्छे-अच्छे हैं। अच्छे हैं या अच्छे ते अच्छे हैं? बाप कहते हैं अच्छे ते अच्छे हैं। देखो, एक-एक रत्न, पुराने-पुराने रत्न गिनती करो तो कितने अच्छे हैं। दिल्ली में भी हैं, बाम्बे में भी हैं। क्योंकि आदि से सेवा के निमित्त बने हो। ऐसे तो गुजरात भी कम नहीं हैं। गुजरात लास्ट सो फास्ट है और ये आदि हैं। गुजरात ने वृद्धि बहुत जल्दी की है।

नागपुर, पूना – नागपुर वा पूना वाले राजधानी में विशेष क्या करेंगे? राजधानी को सजायेंगे? महाराष्ट्र सजाने की ड्युटी ज्यादा लेता है ना? कितना भी तैयार हो जाये कोई लेकिन सजावट नहीं तो कुछ नहीं। तो महाराष्ट्र वाले राजधानी को सजायेंगे। सजाने के लिये साधन तैयार करने पड़ते हैं ना? तो महाराष्ट्र वाले सदा अपने सहयोग से सहयोगी आत्माओं को निमित्त बनायेंगे। क्योंकि जितना आगे चलते जायेंगे, सहयोगी आत्मायें सदा ही सहयोग के हाथ बढ़ाते हुए परिवर्तन में आगे बढ़ेंगे। ब्राह्मणों के ज़ोन में तो महाराष्ट्र बहुत बड़ा है ना? तो जैसे अभी भी सेवा में, हर कार्य में सहयोगी बनते हो और आगे भी अनेक सहयोगी आत्माओं द्वारा राजधानी को सजाने में सहयोगी बनेंगे। तो महाराष्ट्र वाले सहयोग देने में और सहयोगी बनाने में अच्छे निमित्त हैं और आगे भी रहेंगे। ऐसे हैं ना? योग शिविर में भी सबसे ज्यादा महाराष्ट्र के आते हैं ना और ब्राह्मण परिवार में संख्या किसकी ज्यादा आती है? (महाराष्ट्र की) अच्छा है, वृद्धि है और सहयोग की विधि से सफलता को पाते रहना ही है। समझा? अच्छा!

भोपाल – भोपाल वाले राजधानी में क्या तैयारी करेंगे? भोपाल वाले नगाड़ा बजायेंगे। वैसे भी जब तक नगाड़ा नहीं बजेगा तो तैयारी कैसे होगी? तो भोपाल वाले बहुत ज़ोरशोर से चारों ओर नगाड़ा बजायेंगे। क्या नगाड़ा बजायेंगे? बाप आ गया, वर्सा ले लो–ये नगाड़ा बजायेंगे। नक्शे के हिसाब से भी मध्य प्रदेश है ना। वैसे भी जब कोई आवाज़ फैलाना होता है तो बीच में खड़े होकर फैलायेंगे ना? तो खूब नगाड़ा बजाओ। बजा भी रहे हैं और बजायेंगे भी। सबको खुशनसीब बनने की खुशख़बरी सुनायेंगे। खुशख़-बरी सुनाने में होशियार हो ना? सबको खुशखबरी सुनाना, यही सबसे बड़ा श्रेष्ठ कर्तव्य है। क्योंकि चारों ओर दु:ख-अशान्ति की ख़बरें सुनते रहते हैं। तो ऐसी आत्मायें खुशख़बरी सुनकर कितनी खुश होंगी! सबके दिल से निकलेगा कि वाह! परमात्म बच्चे वाह! तो ऐसा श्रेष्ठ कार्य करना ही है। हुआ ही पड़ा है, सिर्फ निमित्त करना है। राजधानी भी तैयार हुई पड़ी है, प्रजा भी तैयार है, आप सिर्फ ठप्पा लगाते जाओ, बस। अच्छा।

कर्नाटक – कर्नाटक वाले क्या करेंगे? कर्नाटक के धरनी की क्या विशेषता है? भावना वाले ज्यादा हैं, तो भावना प्रधान आत्मायें क्या करेंगी? आत्माओं में श्रेष्ठ भावना पैदा करने के निमित्त बनेंगी। जैसे धरनी की विशेषता है, वैसे चारों ओर सारे विश्व को तैयार करने के लिये सभी में श्रेष्ठ भावना, शुभ भावना उत्पन्न करेंगे। श्रेष्ठ भावना क्या है? हम बाप के और बाप हमारा। इस श्रेष्ठ भावना से सभी भावना का फल सहज प्राप्त करेंगे। भावना का फल बहुत जल्दी मिलता है। तो ऐसी सहज सेवा करो जो भावना उत्पन्न करो और भावना का फल सहज प्राप्त करो। तो ये सेवा करना आता है कि नहीं? अभी से फ़रिश्ते बन गये हैं क्योंकि भाषा नहीं समझते हैं लेकिन इशारों से समझ जाते हैं। तो समझा, कर्नाटक वालों को क्या करना है? सहज फल खिलाओ, मेहनत नहीं कराओ। कर्नाटक की धरनी में वृद्धि बहुत सहज होती है। तो जैसे आप लोगों की धरनी है वैसे औरों की धरनी को भी तैयार करो और फल की प्राप्ति करो।

आन्ध्र प्रदेश–आन्ध्र प्रदेश क्या करेंगे? ऐसा कोई नया प्लैन बनाओ, जैसे साइन्स वाले नई-नई इन्वेन्शन निकालते रहते हैं ना, तो थोड़े समय में प्राप्ति ज्यादा हो तो आन्ध्र प्रदेश ऐसे ही इन्वेन्शन करो जो थोड़े समय में आत्मायें अनुभूति की प्राप्तियाँ ज्यादा अनुभव करें, उसका साधन क्या है जो समय कम लगे और प्राप्ति ज्यादा हो? इसका साधन है आन्ध्र प्रदेश की हर ब्राह्मण आत्मा को लाइट हाउस, माइट हाउस बनना पड़े। लाइट हाउस कितना जल्दी लाइट फैलाता है और चारों ओर फैला देता है। तो आन्ध्र प्रदेश लाइट हाउस, माइट हाउस बन ऐसा प्रकाश फैलाओ जो सबको दिखाई दे कि मैं आत्मा हूँ और बाप आ चुका है। रोशनी में दिखाई देता है ना कि मैं कौन हूँ? तो ऐसे लाइट और माइट हाउस बनकर लाइट और माइट फैलाओ।

डबल विदेशी – डबल विदेशियों ने बाप का एक टाइटल तो प्रैक्टिकल कर लिया है। कौन सा? सर्वव्यापी का। कोई ऐसा प्रोग्राम नहीं होता जिसमें डबल विदेशी न हो। तो सर्व कार्य में व्यापी हो गये और बापदादा को भी खुशी होती है। क्योंकि डबल विदेशियों से इन्टरनेशनल हो जाता है। बाप का टाइटल भी विश्व कल्याणकारी है ना। भारत कल्याणकारी तो नहीं है ना। तो जब डबल विदेशी आते हैं तो बाप का भी विश्व कल्याणकारी टाइटल सिद्ध कर देते हैं। रौनक हो जाती है। डबल विदेशियों की विशेषता है – हर कार्य में रौनक करने वाले। वहाँ गोल्डन दुनिया में भी क्या करेंगे? चारों ओर रौनक मचा देंगे। विदेश में वैसे भी लाइट की सजावट की रौनक बहुत होती है ना। तो ब्राह्मण परिवार की रूहानी रौनक डबल विदेशी हैं। डबल विदेशी कहाँ-कहाँ से आये हैं? (लन्दन, नैरोबी, न्युजीलैण्ड, जर्मनी, जापान, मैक्सिको) मैक्सिको नाच रहा है, मैक्सिको वालों की बहादुरी भी बहुत अच्छी है, स्थान भी दूर है और इकॉनॉमी सिस्टम भी विचित्र ही है। फिर भी भावना और स्नेह पहुँचा देता है। इसलिये मैक्सिको वालों को मुबारक। अच्छा, देखो लन्दन वाले भी बहुत आगे बढ़ा रहे हैं, समाचार सुना चाबी मिल गई है। (लन्दन शहर में म्यूज़ियम के लिए मकान मिला है) इससे क्या सिद्ध हुआ कि ब्राह्मणों का दृढ़ संकल्प जो चाहे वो कर सकता है। बुद्धिवान बन किसी की भी बुद्धि को बदल सकते हैं। कायदे भी बदल करके फायदे में दिखाई देते हैं। विदेश के कायदे कितने सख्त हैं लेकिन कायदे के ऊपर फायदा विजय प्राप्त कर लेता है। (बाबा करनकरावनहार बन करा लेता है) लेकिन ब्राह्मण बच्चे भी भुजायें हैं। भुजाओं के बिना तो कोई काम नहीं होता।

जीतू भाई (ज्ञान सरोवर के कान्ट्रैक्टर) परिवार सहित बापदादा के सामने सभा में बैठे हैं:- बाप की भुजा हो ना? (राइट हैण्ड हैं) मुबारक हो। राइट हैण्ड की मुबारक हो। परमात्म भुजा बनना कितना बड़ा भाग्य है! सेवा के सहयोगी बनना अर्थात् भुजा बनना। सभी का बाप से अच्छा प्यार है। बाप को भी प्यार है। बाप से ज्यादा प्यार है या प्रवृत्ति से ज्यादा प्यार है? (दोनों से) जवाब देने में होशियार हैं। अच्छा है कितने शेयर्स आप लोगों ने इकट्ठा किया है? अपना एकाउण्ट देखा है? सारे परिवार को कितने शेयर्स मिले हैं? अगर घर बैठे शेयर मिल जायें, बिना मेहनत के तो इसको भाग्य कहेंगे ना? अच्छा है, बाप से भी मिल लिया, मना भी लिया। परिवार ही अच्छा है।

(डा.अशोक मेहता से) ये क्या मनाने आये हैं? बर्थ डे मनाने आये हैं। जन्मते ही भाग्य की लकीर श्रेष्ठ लेकर आये हो। गीत है ना तकदीर जगाकर आये हैं। तो जन्मते मेहनत करनी पड़ी है कि सहज प्राप्ति से आगे बढ़ते जाते हैं? सहज प्राप्ति है ना! तो तकदीर लेकरके ही आये हैं। और कलम तो हाथ में है ही। सेवा का बल, परिवार का सहयोग और बाप का प्यार तीनों प्राप्त हैं। तो तीनों सहज कर रहे हैं और करते रहेंगे। परिवार के भी समीप आने में देरी नहीं लगी ना? बाप के समीप जल्दी आये तो परिवार के समीप भी बहुत तीव्र गति से आ रहे हो। देखो, कितने प्यारे हो सबके! जिसका बाप से और सेवा से प्यार है ना तो बाप का और परिवार का प्यार स्वत: ही मिलता है। ऐसे हैं ना? सब पहचाने हुए लगते हैं ना। कहाँ भी जाओ तो आपको जल्दी पहचान लेंगे ना? अच्छा, सभी ने दिल खुश मिठाई खाई?

टीचर्स – देखो, टीचर्स नहीं होती तो आप लोग कैसे आते? टीचर्स का महत्व है ना! फिर भी निमित्त टीचर्स तो हैं। आप सभी को पाठ पक्का कराने वाले निमित्त हैं ना? उमंग-उत्साह बढ़ाने वाले निमित्त टीचर्स हैं। टीचर्स का विशेष कार्य ही है उमंग-उत्साह के पंख लगाए, स्वयं भी उड़ने वाले और दूसरों को भी उड़ाने वाले। योग्य टीचर्स की विशेषता ही यह है कि आने वाले हर स्टूडेण्ट सदा ही सहज पुरुषार्थ द्वारा आगे से आगे उड़ते रहेंगे। वैसे टीचर्स का भाग्य ब्राह्मण परिवार में एक्स्ट्रा भी है। क्योंकि निमित्त बनना ये एक एक्स्ट्रा लिफ्ट है। सेवा के अधिकारी बनना–ये एक्स्ट्रा अधिकार अन्दर बहुत मदद करता है। तो टीचर्स को बापदादा सदा निमित्त और समान सेवाधारी समझते हैं। जो बाप का कार्य वो निमित्त टीचर्स का कार्य। तो बापदादा सदा टीचर्स को समान स्वरूप से देखते हैं। इतना स्नेह और इतना रिगार्ड बाप सदा देते हैं और उसी नज़र से देखते हैं कि ये समान सेवाधारी हैं। टीचर्स के बिना तो काम नहीं चलेगा ना! आप लोगों को ठप्पा तो टीचर्स का लगाना पड़ता है ना? अगर टीचर्स आपके फॉर्म पर ठप्पा नहीं लगायेंगी तो कैसे आयेंगे? अच्छा!

चारों ओर के हाइएस्ट और रिचेस्ट श्रेष्ठ आत्माओं को, हर ख़ज़ानों के मालिक सम्पन्न आत्माओं को, सदा स्वयं को एवररेडी बनाने वाले तीव्र पुरुषार्थी आत्माओं को, सदा समय, संकल्प, बोल द्वारा श्रेष्ठ कमाई का खाता जमा करने वाले अति समीप आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

दादी जी से :-

सब सहज चल रहा है ना? मेला चल रहा है या खेल चल रहा है? सन्तुष्टता का खेल चल रहा है। सन्तुष्ट करने वाले सन्तुष्ट करते हैं और सन्तुष्ट होने वाले सन्तुष्ट होते हैं। ये सन्तुष्टता का खेल सभी को प्यारा लगता है। और सब ठीक है? (तलहटी में दो टर्न का सोचा है) पहले लिस्ट देखो, पीछे दो बारी भी होगा तो कोई बात नहीं। बाप बच्चों की सब आशायें पूर्ण करता है। बाप को आने में तो कोई तकलीफ नहीं है ना। चाहे मधुबन, पाण्डव भवन में आये, चाहे तलहटी में आये, उनको आने में कोई तकलीफ नहीं है। तकलीफ तो बच्चों को है, लेकिन वो तकलीफ नहीं लगती। जब बच्चे हिम्मत रखते हैं कि हमारे लिये तकलीफ नहीं है, मनोरंजन है, तो बाप को तो तन में ही आना है ना, बस। संगम पर करना ही क्या है? मेला और खेला। सेवा है खेल। मेला मचाओ, सेवा का खेल करो, और क्या करना है? खाओ-पियो, ब्रह्मा भोजन खाओ। अच्छा।

23.12.94

अपने तीन स्वरूप सदा स्मृति में रहें – 1-संगमयुगी ब्राह्मण, 2-ब्राह्मण सो फ़रिश्ता और 3-फ़रिश्ता सो देवता

आज बापदादा चारों ओर के बच्चों के तीन रूप देख रहे हैं। सबसे श्रेष्ठ स्वरूप है ब्राह्मण और ब्राह्मण सो फ़रिश्ता और फ़रिश्ता सो देवता। ब्राह्मण स्वरूप, फ़रिश्ता स्वरूप और देवता स्वरूप। ब्राह्मण स्वरूप की विशेषता सर्व शक्तियों सम्पन्न स्वरूप की है। क्योंकि ब्राह्मण अर्थात् मायाजीत। तो सर्व शक्ति सम्पन्न बनना ही मायाजीत बनना है। पहला स्वरूप ब्राह्मण–स्वयं को देखो कि ब्राह्मण स्वरूप की विशेषता (सर्व शक्तियाँ) धारण हुई हैं? सर्व शक्तियाँ हैं वा कोई-कोई शक्ति है? अगर एक शक्ति भी कमज़ोर है वा कम है तो ब्राह्मण स्वरूप के बदले बार-बार क्षत्रिय अर्थात् युद्ध करने वाले बन जाते हैं। क्षत्रिय का कर्तव्य है युद्ध करना और ब्राह्मण का कर्तव्य है – सदा और सहज मायाजीत बनना। ब्राह्मण अर्थात् विजयी। सदा सर्व शक्तियाँ अर्थात् सर्व शस्त्रों से सम्पन्न हैं। और क्षत्रिय अर्थात् कभी विजयी और कभी हार खाने वाले। क्योंकि शक्तियाँ मिलते हुए भी धारण नहीं कर सकते इसलिये समय और परिस्थिति प्रमाण सदा विजयी नहीं बन सकते। ब्राह्मण स्वरूप अर्थात् सदा ताज, तख्त और तिलकधारी। विश्व कल्याण की ज़िम्मेदारी के ताजधारी, सदा स्वत: स्मृति के तिलकधारी, सदा बाप के दिलतख्तनशीन। क्षत्रिय एकरस, अचल, अडोल न होने के कारण कभी अचल, कभी हलचल, कभी अधिकारी और कभी बाप से शक्ति मांगने वाले रॉयल भिखारी। ब्राह्मण अर्थात् सदा अलौकिक मौज के जीवन में रहने वाले। सदा रुहानी सीरत और सूरत वाले। क्षत्रिय अर्थात् कभी ऐसे, कभी कैसे। तो अपने से पूछो मैं कौन? कभी ब्राह्मण, कभी क्षत्रिय या सदा ब्राह्मण जीवन की विशेषताओं से सम्पन्न हैं? लक्ष्य ब्राह्मण जीवन का है लेकिन कभी ब्राह्मण, कभी क्षत्रिय–ऐसे लक्षण तो नहीं हैं? लक्ष्य और लक्षण समान हैं वा अन्तर है? बोल और कर्म समान हैं वा अन्तर है? सभी ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी कहलाते हो ना? कि क्षत्रिय कहलाते हो? चन्द्रवंशी कहलाना भी पसन्द नहीं करते ना? कोई कहे आप चन्द्रवंशी हैं तो पसन्द आयेगा? नहीं। और कर्म क्या है? जिस समय युद्ध में लगे हुए हो उस समय का फ़ोटो अपना निकालो। फ़ोटो निकालने का शौक बहुत होता है ना? तो अपना फ़ोटो निकालना आता है या दूसरों का फ़ोटो निकालना आता है? तो अपना फ़ोटो निकालो कि मैं कौन हूँ? अगर फ़ोटो भी कोई का अच्छा नहीं निकलता है तो पसन्द नहीं करते हो ना? तो सारे दिन में वा कितने बारी समय प्रति समय ब्राह्मण के बजाय क्षत्रिय बन जाते हैं–ये चेक करो और चेक करके चेंज करो। सिर्फ चेक नहीं करना। चेक किया जाता है चेंज करने के लिये। तो सभी के पास परिवर्तन शक्ति है? कि कोई के पास नहीं है? ये तो बहुत अच्छी खुशी की बात है कि सभी के पास है। अब समय पर काम में लगाना आती है या कभी नहीं भी लगती है? क्योंकि शक्ति है तो समय पर काम आवे। दुश्मन है ही नहीं और शस्त्र बहुत बढ़िया हैं मेरे पास और जब दुश्मन आवे तो शस्त्र काम में ही नहीं आवे–क्या उसको शक्तिशाली कहेंगे? सिर्फ ये चेक नहीं करो कि शक्ति है लेकिन कर्म में समय प्रमाण जो शक्ति चाहिये वही शक्ति कार्य में लगाना आता है? कि दुश्मन वार कर देता, पीछे शक्ति याद आती है? तो ब्राह्मण जीवन की विशेषताओं को चेक करो। ब्राह्मण सो फ़रिश्ता बनेगा। क्षत्रिय सो फ़रिश्ता नहीं।

दूसरा स्वरूप है फ़रिश्ता। सभी को फ़रिश्ता बनना ही है ना? कि फ़रिश्ता बनना मुश्किल है? सहज है या मुश्किल? या कभी मुश्किल, कभी सहज? तो फ़रिश्ता स्वरूप की विशेषता सभी जानते भी हो कि फ़रिश्ता अर्थात् डबल लाइट? तो डबल लाइट हैं? कि कभी बोझ उठाने को दिल करती और उठा लेते हो? वा उठाने नहीं चाहते हो लेकिन माया सिर पर टोकरी रख देती है? माया अपनी आर्टीफिशियल टेम्पररी शक्ति ऐसी दिखाती है जो मजबूरी से भी बोझ उठाना न चाहते भी उठा लेते हैं। क्योंकि कमज़ोर होने के कारण कमज़ोर सदा पर-अधीन होता है। तो माया भी अधीन बना देती है। अधिकारीपन भूल जाता है और अधीन बन जाते। उस समय भाषा क्या होती है? चाहते तो नहीं हैं लेकिन पता नहीं.....। हर बात में 'पता नहीं', 'पता नहीं' कहते रहेंगे। अधिकारी अर्थात् सदा स्वतन्त्र और अधीन अर्थात् सदा परवश। तो परवश कभी भी मौज़ की जीवन में नहीं रह सकते। ब्राह्मण अर्थात् मौज़ की जीवन। अगर कोई भी समय मौज के बजाय मूँझते हो–ये क्या है, ये कैसा है, क्या यही होता है..... तो ये मौज नहीं, ये मूँझने की जीवन है। अगर कोई भी समय मौज की कमी अनुभव करते हो तो फिर से ये पाठ पहला याद करो कि मैं कौन

हूँ? सिर्फ आत्मा नहीं लेकिन कौन-सी आत्मा हूँ? इसके कितने जवाब आयेंगे? लम्बी लिस्ट है ना! रोज़ की मुरली में 'मैं कौन' का भिन्न-भिन्न पाठ पढ़ते रहते हो, सुनते रहते हो।

तो फ़रिश्ता अर्थात् डबल लाइट। लाइट अर्थात् हल्कापन। हल्कापन का अर्थ है सिर्फ परिस्थिति के समय हल्का नहीं लेकिन सारे दिन में स्वभाव, संस्कार, सम्बन्ध, सम्पर्क में लाइट रहे? वैसे ठीक हैं लेकिन स्वभाव-संस्कार में भी अगर हल्कापन नहीं है तो फ़रिश्ता कहेंगे? और हल्के की निशानी है–हल्की चीज़ सभी को प्यारी लगती है। कोई बोझ वाली चीज़ आपको देवे तो पसन्द करेंगे? और हल्की बढ़िया चीज़ हो तो पसन्द करेंगे ना? तो जो स्वभाव, संस्कार, सम्बन्ध, सम्पर्क में हल्का होगा उसकी निशानी–वो सर्व के प्यारे और न्यारे होंगे। क्योंकि ब्राह्मण स्वभाव है, अलग स्वभाव नहीं। ब्राह्मण अर्थात् सबके दिल पसन्द स्वभाव-संस्कार वा सम्बन्ध-सम्पर्क वाले हो। मैजारिटी 95इ के दिलपसन्द जरूर हो–इतनी रिज़ल्ट जरूर होनी चाहिये। 5इ अभी भी मार्जिन दे रहे हैं, अन्त तक नहीं है लेकिन अभी दे रहे हैं। 95इ सर्व के दिल पसन्द अर्थात् सर्व से लाइट। और वो हल्कापन बोल, कर्म और वृत्ति से अनुभव हो। ऐसे नहीं, मैं तो हल्का हूँ लेकिन दूसरे मेरे को नहीं समझते, पहचानते नहीं। अगर नहीं पहचानते तो आप अपने विल पॉवर से उन्हों को भी पहचान दो। आपके कर्म, वृत्ति उसको परिवर्तन करे। इसमें सिर्फ परिवर्तन करने में सहनशक्ति की आवश्यकता होती है। और फ़रिश्ता अर्थात् जिसका पुरानी देह और पुरानी दुनिया से रिश्ता नहीं। ये सभी को याद है ना? कि अभी भी वो रहा हुआ है? पुरानी देह से लगाव है क्या? देह के सम्बन्ध से हल्के हो गये हो कि नहीं? काका, चाचा, मामा, उससे न्यारे हो गये हो ना? कि अभी भी हैं? न्यारे और प्यारे हैं? प्यारे हैं लेकिन न्यारे होकरके प्यारे बनते हैं, ये ग़लती हो जाती है। ये मिस हो जाता है। या तो न्यारे हो जाना सहज लगता है या तो प्यारा होना सहज लगता। लेकिन ये देह के सम्बन्ध काका, चाचा, मामा, ये फिर भी सहज हैं। सहज हैं या थोड़ा-थोड़ा स्वप्न में, संकल्प में आ जाता है? जब ब्राह्मण परिवार में कोई परिस्थिति आती है तो चाचा, काका, मामा याद आते हैं? बापदादा देखते हैं कि परिस्थिति के समय कई आत्माओं को ब्राह्मण परिवार के बजाय लौकिक सम्बन्ध जल्दी स्मृति में आता है। परिस्थिति किनारे के बजाय सहारा अनुभव कराती है। जब मरजीवा बन गये तो अगले जन्म के सम्बन्धी काका, चाचा, माँ, बाप, याद हैं क्या? स्वप्न में भी आते हैं क्या? तो सम्बन्ध, जन्म बदल गया ना। तो फ़रिश्ता अर्थात् पुराने से रिश्ता नहीं, यही परिभाषा बोलते हो ना? फिर समय पर कहाँ से निकल आते हैं? टूटा हुआ रिश्ता जुड़ जाता है? मरे हुए से जिन्दा हो जाते हो? फ़रिश्ता अर्थात् पुराने से रिश्ता नहीं, सब नया। बापदादा ने देखा कि फ़रिश्ता बनने में जो रुकावट होती है उसका कारण एक पहली सीढ़ी है देह भान को छोड़ना, दूसरी सीढ़ी जो और सूक्ष्म है वो है देह अभिमान को छोड़ना। देह भान और देह अभिमान। देह भान फिर भी कॉमन चीज़ है लेकिन जितने ज्ञानी तू आत्मा, योगी तू आत्मा बनते हैं उतना देह अभिमान रुकावट डालता है। और अभिमान अनेक प्रकार का आता है–अपने बुद्धि का अभिमान, अपने श्रेष्ठ संस्कार का अभिमान, अपने अच्छे स्वभाव का अभिमान, अपनी विशेषताओं का अभिमान, अपनी कोई विशेष कला का अभिमान, अपनी सेवा की सफलता का अभिमान। ये सूक्ष्म अभिमान देह भान से भी बहुत महीन हैं। अभिमान का दरवाजा तो जानते हो ना? मैं-पन, मेरापन–ये है अभिमान के दरवाजे। तो फ़रिश्ता का अर्थ ये नहीं कि सिर्फ देह भान वा देह के आकर्षण से परे होना वा देह के स्थूल सम्बन्ध से परे होना, लेकिन फ़रिश्ता अर्थात् देह के सूक्ष्म अभिमान के सम्बन्ध से भी न्यारे होना। और अभिमान की निशानी–जहाँ अभिमान होता है वहाँ अपमान भी जल्दी फील होता है। जहाँ अभिमान होता है वहाँ अपमान की फीलिंग बहुत जल्दी होती है। क्योंकि 'मैं' और 'मेरे' के दरवाजे खुले हुए होते हैं। फ़रिश्ते का यथार्थ स्वरूप है देह भान और देह के सम्बन्ध से, देह अभिमान से न्यारा। अगर कोई गुण हैं, कोई शक्ति है तो दाता को क्यों भूल जाते हैं? और दूसरी बात इससे सहज न्यारे होने का रास्ता वा विधि बहुत सहज है, एक अक्षर है। एक अक्षर में इतनी ताकत है जो देह अभिमान और देह भान सदा के लिये समाप्त हो जाता है। वो एक शब्द कौन-सा है? करनकरावनहार बाप करा रहा है। 'करनकरावनहार' शब्द भान और अभिमान दोनों को मिटा देता है। एक शब्द याद करना तो सहज है ना? और सारी पॉइन्ट्स भूल भी जाओ, भूलना तो नहीं है लेकिन अगर भूल भी जाओ तो एक शब्द तो याद कर सकते हो ना? करनकरावनहार बाबा है। तो देखो, फ़रिश्ते जीवन का अनुभव कितना सहज अनुभव होता। ब्रह्मा बाप फ़रिश्ता बना–किस आधार से? सदा करनकरावनहार की स्मृति से समर्थ बन फ़रिश्ते बने। फालो फादर है ना? या फालो माया है? कभी माया भी मदर फादर बन जाती है, बड़ी अच्छी पालना और प्राप्ति कराती है। लेकिन वो सब है धोखे की प्राप्ति। पहले प्राप्ति, फिर धोखा। परखने की शक्ति तो है ना? माया है या बाप है–इसको समय पर परखना है। धोखा खाकर परखना, यह कोई समझदारी नहीं हुई। धोखा खाकर तो सब समझ जाते हैं लेकिन ज्ञानी तू आत्मा पहले यह परखकर स्वयं को बचा लेता है। तो समझा फ़रिश्ता किसको कहते हैं?

तीसरा है फ़रिश्ता सो देवता। अभी देवता बनना है या भविष्य में बनेंगे? देवता अर्थात् सर्व गुणों से सजे-सजाये। ये दिव्यगुण संगम के देवता जीवन के श्रृंगार हैं। इस समय दिव्य गुणों से सजे-सजाये होते हो तब ही भविष्य में स्थूल श्रृंगार से सजे-सजाये रहते हो। तो देवता अर्थात् दिव्यगुणों से सजे-सजाये। और दूसरा देवता अर्थात् देने वाला। लेवता नहीं, लेकिन देवता। तो मास्टर दाता हो? वा कभी लेवता, कभी देवता? चेक करो कि दिव्य गुणों का श्रृंगार सदा रहता है वा कभी कोई श्रृंगार भूल जाता है, कभी कोई

श्रृंगार भूल जाता है? सम्पूर्ण सर्व गुण सम्पन्..... यही देवता जीवन की निशानी है। ये गुण ही गहने हैं। तो देखो कि ब्राह्मण स्वरूप की सर्व शक्तियाँ, फरिश्ते स्वरूप की डबल लाइट स्थिति और देवता स्वरूप की दातापन की निशानी और दिव्य गुणों सम्पन्न बने हैं? तीनों स्वरूप अनुभव करते हो? जैसे बाप के तीन सम्बन्ध–बाप, शिक्षक, सद्गुरु सदा याद रहते, ऐसे ये तीन स्वरूप सदा याद रखो। समझा? बनना तो आपको ही है या और कोई आने वाले हैं? आपको ही बनना है ना? आज ब्राह्मण, कल फ़रिश्ता और कल देवता। अपने फ़रिश्ते स्वरूप को ज्ञान के दर्पण में देखो। फ़रिश्ते सदा उड़ते रहते हैं और मैसेज़ देते रहते हैं। फ़रिश्ता आया, सन्देश दिया और उड़ा। तो वो फरिश्ते कौन हैं? आप ही हो ना? फ़लक से कहो–हम ही थे, हम ही हैं और हम ही रहेंगे। पक्का है ना? इसको कहा जाता है निश्चयबुद्धि विजयी। क्षत्रिय हो वा विजयी हो? क्षत्रिय कोई तो बनेगा? वो दूसरे बनेंगे! तो आप ब्राह्मण हो। चलते-चलते कभी क्षत्रिय नहीं बनना। अगर बार-बार क्षत्रिय बनते रहेंगे, युद्ध करते रहेंगे तो युद्ध के संस्कार ले जाने वाले कहाँ पहुँचेंगे? चन्द्रवंशी में या सूर्यवंशी में? तो चन्द्रवंशी तो पसन्द नहीं है ना, कि कभी-कभी हो गये तो भी हर्जा नहीं? तो सब कौन हो? ब्राह्मण? पक्के ब्राह्मण हो या थोड़े-थोड़े कच्चे? शक्तियाँ पक्की हैं? पाण्डव पक्के हैं? अगर पक्के हैं तो सदा खुशखबरी के पत्र आवें। माया आ गई, ये हो गया, पता नहीं क्या हो गया, कैसे हो गया–ये संकल्प में भी नहीं हो। बाप तो कहते हैं स्वप्न मात्र भी नहीं। स्वप्न में भी क्यों, क्या नहीं–ऐसे पक्के हो? शक्तियाँ महा पक्की हो? कहो, पाण्डव पक्के तो हम महा पक्के। क्योंकि शक्तियों को ही निमित्त बनाया है। तो निमित्त वाले ही कच्चे-पक्के होंगे तो औरों का क्या हाल होगा! पाण्डव बैक-बोन हैं। बैकबोन बनना अच्छा लगता है ना? या सामना करना अच्छा लगता है? बैकबोन बनना अच्छा है, सेफ हो बहुत, नहीं तो मार खाते। अच्छा।

सभी अपने स्वीट होम में पहुँच गये। संकल्प था–जाना है, जाना है और अभी फिर क्या संकल्प है? अभी भी जाना है ना? सेवा अर्थ जा रहे हैं इसलिये खुशी-खुशी से जाते हैं। सेवा पर जायेंगे या दुकान पर जायेंगे, घर में जायेंगे, दफ्तर में जायेंगे? चाहे दफ्तर हो, चाहे घर हो, लेकिन सभी सेवा के स्थान हैं। सेवाधारियों की हर जगह सेवा है। तो मधुबन में आना और उमंग-उत्साह का खजाना भरना और फिर सेवा पर जाना। खुशी-खुशी से जाते हो ना? कि मजबूरी से जाते हो? सेवा माना खुशी। हिसाब-किताब है, कर्ज चुकाने जा रहे हैं, ऐसे नहीं। फ़र्ज चुकाने जा रहे हैं। घर में बगुले बहुत हैं। अगर बगुले नहीं होंगे तो ज्ञान किसको देंगे? हंस को हंस बनायेंगे क्या? बगुलों को ही तो हंस बनायेंगे ना? तो क्या याद रखेंगे? ब्राह्मण सो फ़रिश्ता, फ़रिश्ता सो देवता। पक्का रहेगा ना? कि ट्रेन में जाते-जाते एक भूल जायेगा? अपने स्थान पर जाते-जाते बाकी एक रह जाये–ऐसे तो नहीं होगा ना?

सभी आराम से रहे हुए हैं? डबल फॉरेनर्स फिर भी खटाराणे हैं और भारतवासी पटराने। पट में सोना सहज लगता है ना? पलंग याद तो नहीं आते? हाँ, कोई समय ऐसा आयेगा जो सभी को पलंग मिलेगा। लेकिन कब आयेगा? जब सारा आबू अपना बनायेंगे। ये संगठन का सुख पलंग और डनलप से भी ज्यादा है। यहाँ भी आराम से नींद तो आती है ना? ज्ञान अमृत पीते-पीते सो जाते हो, तो कितनी अच्छी नींद करेंगे। ज्ञान अमृत पीना और ब्रह्मा भोजन खाना। सभी को बना-बनाया भोजन मिलता है। सभी खुश हैं। खुशनसीब भी हैं और खुशमिज़ाज़ भी हैं। कि कभी सीरियस, कभी खुश मिज़ाज़? कभी शक्ल में अन्तर नहीं आना चाहिए। जब क्रोध या गुस्सा आता है तो चेहरा लाल-पीला होता है ना? सदा चेहरा हर्षितमुख हो। इसको कहते हैं खुशमिज़ाज़ रहना। अच्छा, सभी जितना बाप को याद करते हैं और दिल से प्यार करते तो बाप सभी को आपसे पद्मगुणा याद करते और प्यार करते हैं। बाप से पूछते हैं कि सारा दिन क्या करते हो? बाप क्या कहते हैं कि सारा दिन बच्चों को ही याद करते हैं। और काम ही क्या है? ये नशा है ना? दुनिया वाले बाप को याद करते हैं और बाप आपको याद करते हैं। अच्छा!

गुजरात – गुजरात को एवररेडी रहने, जी हाँ करने का वरदान मिला हुआ है। गुजरात में दो विशेषताओं की निशानी अभी भी दिखाई देती है और आगे भी दिखाते रहना है। वो दो निशानियाँ व दो विशेषतायें कौन-सी हैं? सन्तुष्टता और प्रसन्नता। प्रसन्नता भी तब रहती है जब सन्तुष्टता है। तो ये दो विशेषतायें विशेष हैं और सदा रहेंगी। समझा? गुजरात वाले कभी असन्तुष्ट न रहेंगे, न करेंगे। दो विशेषताओं के कारण सदा उड़ते रहेंगे। गुजरात विशेष ब्रह्मा बाप ने अपने संकल्प से स्थापन किया। और जन्मते ही सदा सहयोगी रहे हैं और अब भी हैं। समझा! सहयोग की अंगुली सदा है ही है। देखो, कोई भी प्रोग्राम होता है, सीज़न भी होती है तो ब्रह्मा भोजन में गुजरात की माताओं को याद करते हैं ना। कितनी भी कोई रोटी बनावे लेकिन गुजरात जैसी नहीं बना सकते, ये विशेषता है। तो हर कार्य में एवररेडी रहने वाले। अच्छा!

इस्टर्न – इस्टर्न का सूर्य उदय हो गया। इस्टर्न ज़ोन वाले सदा ही स्वयं को और औरों को पूज्य आत्मा बनाने की प्रेरणा देने वाले हैं। क्योंकि इस्टर्न में पूजा बहुत होती है। तो पुजारी बहुत हैं। तो पुजारियों को पूज्य बनाना – इस सेवा का चांस इस्टर्न ज़ोन को बहुत है। और जो ज्यादा में ज्यादा पुजारी से पूज्य बनाते हैं, उसकी पूजा बहुत जन्म और बहुत विधिपूर्वक होती है। तो इस्टर्न वाले पूज्य बनाने के कारण बहुत बड़े पूज्य आत्मा अनेक जन्म बनने वाले हैं। यही सेवा करते हो ना? पुजारी से पूज्य बनते हैं या सिर्फ दर्शन करने वाले बनते हैं? क्या होता है? तो इस्टर्न ज़ोन को पूज्य बनाने का विशेष वरदान भी मिला हुआ है और चांस भी मिला हुआ है। तो नशा रहता है कि हम पूज्य आत्मायें हैं और औरों को भी पूज्य बनाने के निमित्त हैं। समझा? इस्टर्न ज़ोन की विशेषता

– ब्रह्मा बाप की प्रत्यक्षता भूमि है। तो भूमि को भी वरदान है। इस्टर्न ज़ोन में ही ब्रह्मा बाप में प्रत्यक्षता हुई। तो कितनी श्रेष्ठ भूमि है! भूमि भी श्रेष्ठ, सेवा भी श्रेष्ठ और सेवाधारी भी सदा श्रेष्ठ। अच्छा–(सभी ने खूब तालियां बजाई) ऐसे ही सदा खुशी में तालियाँ बजाते रहना। खुशी की तालियाँ कौन-सी होती हैं? खुशी की ताली बजाने आती हैं? ये तालियाँ तो स्थूल हैं। खुशी की ताली कौन-सी है? खुशी की ताली है मुस्कराना। यहाँ भले बजाओ, मना नहीं है लेकिन वहाँ जाकर खुशी की ताली सदा बजाते रहना। सभी ऐसे करना। आपकी खुशी और मुस्कराहट ऐसी हो जो आपको देखने वाले भी ताली बजाना शुरु कर दें।

बाम्बे, पूना – पूना और बाम्बे सदा ही फ़िक्र से फ़ारिग रहने वाले। बाम्बे भी बेफ़िक्र बादशाहों का स्थान है और पूना भी बेफिक्र बादशाहों का स्थान है। तो सभी बेफ़िक्र हो? या थोड़ा-थोड़ा फ़िक्र है? स्वयं बेफ़िक्र बादशाह हैं और दूसरों के भी फ़िक्र को मिटाने वाले हैं। सभी को बेफ़िक्र बादशाह बनाने वाले हैं। तो बादशाही देने में होशियार हो ना। गरीब को बादशाह बनाना आता है? बेफ़िक्र बादशाह बनाने वाले और स्वयं भी सदा बेफ़िक्र रहने वाले, यही संगमयुग के श्रेष्ठ आत्माओं की विशेषता है–बेफ़िक्र बादशाह। तो बादशाह हो कि कभी प्रजा भी बन जाते हो? सेवा में आगे बढ़ रहे हैं और बढ़ते रहेंगे। पूना वालों ने कितने सेवास्थान बनाये हैं? (22) और गीता पाठशालायें कितनी हैं? (300) तो देखो सेवा में होशियार हो ना। और बाम्बे में सेवाकेन्द्र कितने हैं? (36) और गीता पाठशालायें? वो अनगिनत! अच्छा है, वैसे तो चारों ओर सेवायें वृद्धि को प्राप्त कर ही रही हैं लेकिन सेवा की दुआओं द्वारा स्व की उड़ती कला और सर्व की उड़ती कला, ऐसी स्पीड तीव्र बनाते चलो। इसलिये बापदादा सेवा पर सदा खुश हैं। आप भी खुश हो ना? अभी 9 लाख पूरे नहीं किये हैं। अभी वो करना है लेकिन फिर भी कर रहे हैं, तो जो कर रहे हैं उस पर बापदादा खुश हैं। लेकिन अभी करने की मार्जिन है, समाप्त नहीं हुआ है। अभी कितने तैयार हुए हैं? (3 लाख) अभी तो डबल पड़ा है। अभी एक परसेन्ट बना है, दो परसेन्ट रह गया है। तो देखेंगे 9 लाख का हार (नौलखा हार) बाप को कौन पहनाता है? कौन तैयार करता है? अच्छा।

कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश – कर्नाटक में मैजारिटी स्नेही आत्मायें बहुत हैं, बाप के स्नेही मैजारिटी हैं। तो स्नेह सहज याद का साधन है। और जो स्वयं स्नेही होता है वो औरों को भी सहज स्नेही बना देता है। तो कर्नाटक को विशेष यह वरदान है वा विशेषता है। तो स्नेह है और स्नेह के कारण वृद्धि भी है। अभी स्नेह को प्रैक्टिकल में लाते भी हो और और ज्यादा स्नेह की शक्ति से और आगे बढ़ते रहना। तो स्नेह के कारण बाप को भूलते कम हैं लेकिन भूलते हैं तो बहुत भूलते हैं। क्यों? कभी-कभी भूलने के भी समाचार आते हैं। लेकिन स्नेह की विशेषता को कभी भी छोड़ना नहीं। ये एक ड्रामानुसार कर्नाटक को विशेषता मिली हुई है, इसको यूज़ कर भी रहे हैं, और भी आगे अन्डरलाइन कर आगे बढ़ते रहना। ऐसे तैयार हैं? अच्छा। टीचर्स ये समझती हैं कि आज के बाद कर्नाटक से स्नेह के बिना और कोई समाचार नहीं आयेंगे? हिम्मत है टीचर्स में? हाँ बोलो या ना बोलो। अच्छा, ऐसी गैरेन्टी है? जो समझते हैं कि इस विशेषता को प्रैक्टिकल में लाना ही है, वो हाथ उठाओ। अभी देखना कोई पत्र ऐसा नहीं आयेगा। ठीक है? मंज़ूर है? अच्छा है, स्नेही तो बहुत हैं। दृष्टि के इतने स्नेही हैं, भाषा नहीं समझें लेकिन स्नेह बहुत है। तो बापदादा स्नेह को देख खुश होते हैं। लेकिन सम्पूर्ण तो बनना है ना। तो थोड़ा भी स्नेही आत्माओं के बीच में रुकावट नहीं आनी चाहिये। इसलिये कर्नाटक सदा ये स्नेह का नाटक करके दिखाये। फिर भी बापदादा देखते हैं कि वृद्धि करने में भी होशियार हैं। लेकिन सदा स्नेही रहना और स्नेही बनाना, स्नेह का ही नाटक करना। समझा?

अच्छा–आन्ध्रा वाले क्या कमाल करेंगे? सेवा में स्व-उन्नति में नम्बरवन। ठीक है? नम्बरवन बनना है। अच्छा!

डबल विदेशी – डबल विदेशी क्रिसमस मनाने आये हैं, न्यु इयर मनाने आये हैं। तो पहले सभी डबल विदेशियों को क्रिसमस की मुबारक। क्योंकि चारों ओर से कार्ड और पत्र भी बहुत आये हैं ना। बापदादा के पास तो पोस्ट के पहले ही पहुँच जाते हैं। आप लोग एयरमेल से भेजते हो ना और बापदादा के पास एयरफ्लाई से पहुँच जाते हैं। विदेश में भी सेवा और स्व पुरुषार्थ की लहर अच्छी चल रही है और मैजारिटी सभी के अन्दर ये उमंग बहुत अच्छा है। दिन-रात एक ही लगन है कि विश्व में बाप के प्रत्यक्षता का झण्डा जल्दी से जल्दी लहरायें। क्योंकि विदेशियों की ड्युटी है भारत को जगाना। तो ऊंचा झण्डा लहरायेंगे तब तो सबकी नज़र जायेगी। लेकिन बापदादा डबल विदेशियों को कमाल करने वाले भी कहते हैं। तो कौन-सी कमाल की है? दूरी को समीप अनुभव करने की कमाल की है। जितना देश दूर है ना, इतना दिल से समीप हैं। चारों ओर से आये हैं। बापदादा सभी डबल विदेशियों को विशेष विशेषता का वरदान देते हैं कि सदा दिल तख्त नशीन। बाप के दिल पर आप हैं और आपके दिल पर बाप है। रशिया वाले भी कमाल कर रहे हैं ना! आगे बढ़ते जाते हैं। रशिया वालों को सबसे ज्यादा किस बात की विशेष खुशी है? रशिया वालों को विशेष खुशी इस बात की है – जो स्वतन्त्रता की प्रिय इच्छा थी वो स्वतन्त्रता मिल गई। समझा? देश के हिसाब से, आत्मा के बन्धन के हिसाब से परतन्त्र बहुत रहे और अभी स्वतन्त्र हो गये। स्वतन्त्र है ना! तो स्वतन्त्रता का झण्डा रशिया में लहरा रहा है। शिव बाबा के झण्डे के साथ सभी स्थानों पर स्वतन्त्रता का झण्डा भी लहरा रहा है। और कितने खुश होते हैं। सारे परतन्त्रता के बन्धन से मुक्त हो गये और कितना सहज सर्व प्राप्तियाँ कर ली! सर्व प्राप्तियाँ हो गई ना! (हाँ जी) अच्छा है, हिम्मत भी अच्छी है। डबल विदेशी अपने को चलाने की हिम्मत और औरों को भी चलाने की हिम्मत अच्छी रखते हैं। और हिम्मत के कारण

ही विदेश में सेवा में आगे बढ़ते हैं। तो विशेष हिम्मत और मदद दोनों के पात्र आत्मायें हैं। देखो, लन्दन वालों ने भी हिम्मत करके म्युजियम ले लिया ना! चाबी मिल गई ना! स्वर्ग की चाबी के पहले सेवा की चाबी मिल गई। अच्छी कमाल की। सबकी नजर जाती है कि आखिर भी ये राजयोगी हैं क्या? ये गुप्त ही गुप्त क्या कर रहे हैं? ऑस्ट्रेलिया या जो भी भिन्न-भिन्न देशों से आये हैं तो बापदादा सभी बच्चों को विशेष क्रिसमस की सौगात दे रहे हैं कि ''सदा दिल खुश मिठाई खाते रहो और खिलाते रहो।'' स्वर्ग की बादशाही की सौगात तो सभी को मिली हुई है ना। सभी के हाथ में नई दुनिया, स्वर्ग का गोला है ना? पत्र और कार्ड भेजने में फास्ट गति वाले हैं। बापदादा समझते हैं कि अपने याद का सबूत वा निशानी भेजने में होशियार हैं। ठीक है? मौज में रहने वाले हैं ना? सभी स्थान के सिकीलधे, लाडले आत्माओं को विशेष बापदादा सम्मुख देख रहे हैं और सदा समीप रहने की विशेषता से आगे बढ़ते रहेंगे। समझा? अच्छा!

चारों ओर के सर्व ब्राह्मण सो फ़रिश्ता, फ़रिश्ता सो देवता, तीनों स्वरूप के स्मृति स्वरूप आत्माओं को, सदा एक शब्द 'करनक-रावनहार' की स्मृति से स्वयं को डबल लाइट बनाने वाले श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा देवता अर्थात् दाता बन देने वाले, सर्व खजानों से सम्पन्न आत्माओं को, सदा वरदानों को कर्म में लाने वाले कर्मयोगी आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और क्रिसमस की मुबारक और नमस्ते।

(सभी दादियाँ बापदादा के सम्मुख स्टेज पर खड़ी हैं)

दादी जानकी से – अच्छा है उड़ने में होशियार हो गई है। जीवन दान मिला है। और जितनी सेवा करते जाते तो जीवन की तन्दुरुस्ती और बढ़ती जाती है। क्योंकि सबकी दुआएं तन्दुरुस्त बना देती हैं। बाप की तो मदद है ही लेकिन दुआयें जवान बना रही हैं। जब किसको दुआयें मिलती हैं ना, या कोई भी खुशी, शान्ति की प्राप्ति होती है तो मुख से, दिल से यही दुआयें होती हैं कि हमारी आयु आपको लग जाये। कार्ड में भी क्या भेजते हैं कि हमारी आयु आपको मिल जाये। तो आप एक चक्र में हज़ारों की सेवा करते हो तो यही हज़ार गुणा दुआयें मिल जाती हैं। अच्छा है, सभी अपनी-अपनी सेवा अच्छी करते रहते हो।

सभी का दादियों में शुभ मोह है ना? साधारण मोह तो नहीं है ना। दु:ख देने वाला मोह नहीं, सुख देने वाला। लेकिन जितना मोह, उतने ही निर्मोही। न्यारे भी और प्यारे भी। ऐसे है ना? कि सिर्फ प्यारे हैं, न्यारे नहीं? न्यारे और प्यारे दोनों का बैलेन्स रखने वाले। ये भी ड्रामा में आदि से विशेष आत्माओं का निमित्त बनने का पार्ट है। पालना ली भी बहुत है, जितनी आप लोगों ने पालना ली है डायरेक्ट बाप की, उतनी इन्होंने तो नहीं ली है। तो जितनी पालना ली है उतनी पालना करने का पार्ट भी मिला है। तो सब खुश हैं? हज़ार साल सभी की आयु बन जाये! हज़ार साल! घर नहीं जाना है? पुरानी दुनिया में ही रहना है?

अच्छा है, यह म्युजियम भी कमाल करेगा। ये है दृढ़ता का प्रत्यक्ष स्वरूप। तो दृढ़ता सफलता के लिये असम्भव से भी सम्भव करा देती है। हिम्मत वाले हैं। तो सभी जो विशेष निमित्त बने हैं उन्हों को विशेष याद प्यार। यह भी सेवा का अच्छा साधन है, कोई न कोई निमित्त बन अपना भाग्य बनाते हैं। देने वाले पहले ही ड्रामा में नूँधे हुए हैं। अच्छा।

चन्द्रमणि दादी से – ये भी चक्र लगाकर आई। चक्रवर्ती राजा में नाम पक्का हो गया ना। अच्छा है, सेवा भविष्य को प्रत्यक्ष कर रही है। नाम तो नहीं लेंगे ना कि ये ये हैं लेकिन सेवा स्वयं में प्रत्यक्ष कर रही है। कितने चक्रवर्ती राजा तैयार हो रहे हैं? एक चक्र में अनेक आत्मायें सन्तुष्ट हो जाती हैं तो उस चक्र में चक्रवर्ती राजा का वरदान होता है। कितनी आत्मायें सन्तुष्ट होती हैं? बहुत होती हैं। जितनी आयु बढ़ती जाती है उतने ज्यादा चक्र लगाते हैं।

दादी जी – अभी मेले का सोच रही है। दिल्ली और बाम्बे के भी बैठे हैं ना। कमाल करके ही दिखायेंगे। दिल्ली और बाम्बे निमित्त हैं ही। स्थापना के भी निमित्त हैं तो प्रत्यक्षता के भी निमित्त हैं। ऐसे ही विदेश में लन्दन, स्थापना के भी निमित्त है और प्रत्यक्ष करने के भी निमित्त है। अच्छा।

31.12.94

नये वर्ष को शुभ भावना गुण स्वरूप वर्ष के रूप में मनाओ

आज नवयुग रचता बापदादा अपने नवयुग राज्य अधिकारी बच्चों को देख रहे हैं। नव वर्ष को देख अपना नवयुग याद आता है! नवयुग के आगे यह नव वर्ष कोई बड़ी बात नहीं। जिस नवयुग में हर वस्तु, हर व्यक्ति, प्रकृति–सब नया है। नया वर्ष जब शुरु होता है तो पुरानी वस्तु वा व्यक्ति के पुराने स्वभाव, संस्कार, चाल-चलन कुछ नये होते हैं, कुछ पुराने होते हैं। लेकिन आपके नवयुग में पुराने का नाम-निशान नहीं। व्यक्ति भी नया अर्थात् सतोप्रधान है और प्रकृति भी सतोप्रधान अर्थात् नई है। प्रकृति में भी आजकल जैसा पुरानापन नहीं होगा। तो नवयुग की मुबारक के साथ नव वर्ष की मुबारक।

आज विशेष नया वर्ष मनाने के उमंग-उत्साह से, खुशी-खुशी से सभी पहुँच गये हैं। तो बापदादा भी दिल से दिल की दुआओं सहित नव युग की और नये वर्ष की डबल मुबारक देते हैं। आप सभी को भी डबल याद है या सिंगल याद है? अपना नया युग नयनों के आगे बुद्धि में स्पष्ट है ना? जैसे कहेंगे कल से नया वर्ष शुरु है, ऐसे ही कहेंगे कल नवयुग आया कि आया–इतना स्पष्ट है?

नशा है? सभी नवयुग के राज्य अधिकारी हैं? सभी राजा बनेंगे तो प्रजा बनाई है? आप सब तो राजा हो लेकिन राज्य किस पर करेंगे? अपने ऊपर! तो बापदादा नवयुग और नया वर्ष डबल देख रहे हैं। कल की बात है ना, वो भी कल और ये भी कल की बात है। फिर नवयुग होगा ना! अपने नवयुग की ड्रेस (शरीर) सामने दिखाई देती है? बस, पुरानी ड्रेस छोड़ेंगे और नई ड्रेस धारण करेंगे। तो वो ड्रेस अच्छी, चमकीली, सुन्दर है ना! अभी तो देखो हर व्यक्ति में कोई ना कोई नुक्स होगा। कोई की नाक टेढ़ी होगी, किसकी आंख टेढ़ी होगी, किसके ओंठ ऐसे होंगे और नवयुग में सब नम्बरवन, हर कर्मेन्द्रिय एक्यूरेट। तो ऐसी ड्रेस सामने खूटी पर लगी हुई है ना! बस पहननी है। अपनी ड्रेस अच्छी, पसन्द है? देख रहे हो ना?

बापदादा सदैव जब हर एक बच्चे को देखते हैं तो क्या देखते हैं? एक तो हर एक के मस्तक की चमकती हुई मणि श्रेष्ठ आत्मा को देखते हैं और साथ-साथ हर एक बच्चे के भाग्य की श्रेष्ठ लकीर को देखते हैं। हर एक का भाग्य कितना श्रेष्ठ है! सभी का भाग्य श्रेष्ठ है ना! कि किसका मध्यम भी है? सभी वन हैं? सेकण्ड, थर्ड और आने वाले हैं? अच्छा है, दुनिया वाले कहते हैं आपके मुख में गुलाब और बापदादा कहते हैं आपके मुख में गुलाब-जामुन। गुलाब-जामुन सबको बहुत अच्छा लगता है ना? गुलाब-जामुन या मिठाई खाने के लिये ही बापदादा ने हर गुरुवार भोग का रखा है। भोग में खुद भी खाते हो और बापदादा को भी स्वीकार कराते हो। घर में बनाये, नहीं बनाये, लेकिन गुरुवार को तो मीठा मिलेगा ना। और जब कभी खुशी का उत्सव होता है तो मुख ही मीठा कराते हैं। मीठा मुख अर्थात् मीठा मुखड़ा। मुख मीठा तो सब करते हैं लेकिन आप सबका मुख भी मीठा है तो मुखड़ा (फेस) भी मीठा है, या थोड़ा-थोड़ा कडुवा भी है? अगर एक लकीर भी कडुवे की हो तो आज वर्ष को विदाई देने के साथ-साथ इस थोड़े से कडुवे-पन को भी विदाई दे देना। विदाई देना आता है कि पास में रखना अच्छा लगता है? या विदाई देकर फिर बुला लेंगे? फिर कहेंगे हम तो छोड़ना चाहते हैं लेकिन माया नहीं छोड़ती है! ऐसे तो नहीं कहेंगे कि हमने छोड़ दिया लेकिन माया आ गई? वहाँ जाकर फिर ऐसे पत्र लिखेंगे? विदाई, तो सदा काल के लिये विदाई। विदाई देने का अर्थ ही है फिर आने नहीं देना। कि कभी-कभी आ जाये तो कोई हर्जा नहीं? क्योंकि पुराने संस्कार कइयों को बहुत अच्छे लगते हैं। आज कहेंगे कल से नहीं होगा और फिर परसों परवश हो जायेंगे। तो उसको विदाई नहीं कहेंगे ना। तो विदाई देना भी सीखो। वर्ष को विदाई देना तो कॉमन बात है लेकिन आप सबको अंश, वंश सहित माया को विदाई देना है। अंश मात्र भी नहीं रहे। कई बच्चे कहते हैं 75ः तो फर्क पड़ गया है, और भी पड़ जायेगा। लेकिन माया अंश से वंश बहुत जल्दी पैदा करती है। 25ः अंश मात्र भी रहा तो 25 से 50 तक भी बहुत जल्दी पहुँच सकता है। इसीलिये अंश सहित समाप्त करना है। तो नये वर्ष में क्या करेंगे? पुराने वर्ष को विदाई देने के साथ-साथ माया के अंश को भी विदाई देना। और विदाई के साथ बधाई भी देते हो ना! कल सभी एक-दो को मिलेंगे तो कहेंगे नये वर्ष की मुबारक हो, बधाई हो। तो विदाई दो और विदाई के साथ-साथ अपने को भी और दूसरों को भी सदा फरिश्ते स्वरूप की बधाई दो। हैं ही फ़रिश्ता। ऊपर से नीचे आये, अपना कार्य किया और उड़ा। फरिश्ते यही करते हैं ना! उड़ती कला की निशानी पंख दिखाये हैं। कोई आर्टीफिशियल पंख नहीं हैं। लेकिन ये फ़रिश्तों को जो पंख दिखाते हैं उसका अर्थ है फ़रिश्ता अर्थात् उड़ती कला वाले। तो फ़रिश्ते स्वरूप की बधाई स्वयं को भी दो और दूसरों को भी। सदा फ़रिश्ते स्वरूप के स्मृति में भी रहो और दूसरे को भी उसी स्वरूप से देखो। फलानी है, फलाना है.....। नहीं, फ़रिश्ता है। ये फ़रिश्ता संदेश देने के निमित्त है। समझा? तो सभी को फ़रिश्ते स्वरूप की मुबारक दो। चाहे कोई कैसा भी हो लेकिन दृष्टि से सृष्टि बदल सकती है। जब दृष्टि से सृष्टि बदल सकती है तो क्या ब्राह्मण नहीं बदल सकता? आपकी दृष्टि-स्मृति हर आत्मा को बदल देगी।

बापदादा को कभी-कभी बच्चों पर हंसी आती है। आप लोगों को भी अपने ऊपर आती है? एक तरफ कहते हैं कि हम विश्व परिवर्तक हैं, विश्व कल्याणकारी हैं.... और फिर विश्व परिवर्तक आकर कहता है कि ये मेरे से बदली नहीं होता! अपने प्रति भी कभी रुहरिहान में कहते हैं–चाहते हैं, ये नहीं करें, फिर भी कर लेते हैं..... तो विश्व परिवर्तक और स्वयं के लिए ही कहे कि मैं चाहता हूँ लेकिन कर नहीं पाता हूँ तो उसका टाइटल क्या होना चाहिये? उसको विश्व परिवर्तक कहना चाहिये या कमजोर कहना चाहिये? गीत सुनाते हैं ना–क्या करें, कैसे करें, पता नहीं कब होगा..... यह गीत बापदादा तो सुनते हैं ना! जब विश्व परिवर्तक हैं, विश्व कल्याणकारी हैं तो क्या कोई आत्मा को नहीं बदल सकते? स्वयं को नहीं बदल सकते? अगर स्व परिवर्तक भी नहीं तो विश्व परिवर्तक कैसे होंगे?

बापदादा कहते हैं इस वर्ष की विशेष दृढ़ प्रतिज्ञा स्वयं से करो। प्रतिज्ञा का अर्थ ही है – कि शरीर चला जाये लेकिन जो प्रतिज्ञा की है, वह प्रतिज्ञा नहीं जाये। तो प्रतिज्ञा करने की इतनी हिम्मत है? करेंगे? डरेंगे तो नहीं? तो यही प्रतिज्ञा स्वयं से करो कि '' कभी भी किसी की कमजोरी वा कमी को नहीं देखेंगे। किसी की कमजोरी-कमी को नहीं सुनेंगे, नहीं बोलेंगे।'' न सुनेंगे, न बोलेंगे, न देखेंगे – तो ये वर्ष क्या हो जायेगा? ये वर्ष हो जायेगा **शुभ भावना गुण स्वरूप वर्ष**। हर वर्ष को अपना-अपना नाम देते हो ना। जब ये प्रतिज्ञा सभी कर लेंगे तो ये वर्ष हुआ – शुभ भावना गुण स्वरूप वर्ष। मंज़ूर है? फिर वहाँ जाकर नहीं बदल जाना! फिर कहेंगे मधुबन में तो वायुमण्डल अच्छा था ना और यहाँ तो वायुमण्डल का संग है ना! परिवर्तक किसी के संग में नहीं आता, किसी के प्रभाव में नहीं आता। अगर परिवर्तक ही प्रभाव में आ जायेगा तो परिवर्तन क्या करेगा? इसलिये इस वर्ष को गुण मूर्त, शुभ

भावना वर्ष के रूप में मनाओ। किसकी अशुभ बात को भी आप अपने पास शुभ करके उठाओ। अशुभ देखते हुए भी आप शुभ दृष्टि से देखो। जब प्रकृति को बदल सकते हो तो मनुष्यात्माओं को नहीं बदल सकते हो? और उसमें भी ब्राह्मण आत्मायें हैं, उनको नहीं बदल सकते हो? जब सबके प्रति शुभ भावना होगी तो 'कारण' शब्द समाप्त होकर 'निवारण' शब्द ही दिखाई देगा। इस कारण से ये हुआ, इस कारण हुआ.....। नहीं, कारण को निवारण में परिवर्तन करो। हिम्मत है? अच्छा! बापदादा जब टी.वी.खोलते हैं तो बड़ा मजा आता है। ये कलियुगी टी.वी.नहीं देखते। ब्राह्मणों की टी.वी.देखते हैं। ऐसे नहीं, आप लोग वह टी.वी. खोल लो, ऐसे नहीं करना। तो जब बच्चों का खेल देखते हैं तो बहुत मजा आता है। मिक्की माउस का खेल तो करते हो ना! थोड़े टाइम के लिये कोई शेर बन जाता, कोई कुत्ता बन जाता। जिस समय क्रोध करते हो उस समय क्या हो? जिस समय किससे डिस्कस करते हो, उसके ऊपर वार करते जाते हो, सिद्ध करते जाते हो तो उस समय क्या हो? मिक्की माउस ही बन जाते हो ना। तो इस वर्ष मिक्की माउस नहीं बनना। फ़रिश्ता बनना। मिक्की माउस का खेल बहुत किया। तो ये वर्ष ऐसे शक्तिशाली वर्ष मनाना। क्योंकि समय तो समीप आना भी है और लाना भी है। ड्रामानुसार आना तो है ही लेकिन लाने वाले कौन हैं? आप ही हो ना?

दूसरी विशेषता इस वर्ष में क्या करेंगे? नये वर्ष में एक तो बधाइयाँ देते हो और दूसरा गिफ्ट देते हो। तो इस नये वर्ष में सदैव हर एक को, जो भी जब भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आये, चाहे ब्राह्मण परिवार, चाहे और आत्मायें हो, उन सबको एक तो मधुर बोल की गिफ्ट दो, स्नेह के बोल की सौगात दो और दूसरा सदैव कोई न कोई गुण की, शक्ति की सौगात दो। यह सौगात सेकण्ड में भी दे सकते हो। ऐसे नहीं कह सकते हो कि टाइम ही नहीं मिला, न लेने वाले को टाइम था, न देने वाले को टाइम था। लेकिन अगर अपनी श्रेष्ठ भावना, श्रेष्ठ कामना की वृत्ति है तो सेकण्ड के संकल्प से, दृष्टि से अपने दिल के मुस्कराहट से सेकण्ड में भी किसी को बहुत कुछ दे सकते हो। जो भी आवे उसको गिफ्ट देनी है, खाली हाथ नहीं जावे। तो इतनी गिफ्ट आपके पास है? कि दो दिन देंगे तो खत्म हो जायेगी? सभी का स्टॉक भरपूर है? कि कोई का स्टॉक थोड़ा कम हो गया है? जिसके पास कम हो वो हाथ उठा लो। भर देंगे। जिसके पास कमी हो वो चिटकी लिखकर जनक (दादी जानकी) को देना वो क्लास करा लेगी। कमी तो नहीं रहनी चाहिये ना! दाता के बच्चे और कमी हो तो अच्छा नहीं है ना! इसलिये भरपूर होकर जाना। कमी को लेकर नहीं जाना। वर्ष के साथ कमियों को भी विदाई देकर जाना। ऐसे नहीं, कि सिर्फ कल एक दिन ही गिफ्ट देना है। नहीं, सारा वर्ष सबको गिफ्ट बांटते जाओ। बिना गिफ्ट के कोई नहीं जाये। तो कितना अच्छा लगेगा। अगर कोई आता है उसको छोटी-सी प्यार से गिफ्ट दे दो तो कितना खुश होता है। चीज़ को नहीं देखते हैं लेकिन गिफ्ट अर्थात् स्नेह के स्वरूप को देखते हैं। गिफ्ट से कोई मालामाल नहीं हो जाते हैं लेकिन स्नेह से मालामाल हो जाते हैं। तो स्नेह देना और स्नेह लेना। अगर कोई आपको स्नेह नहीं भी दे, तो भी आप उनसे ले लेना। लेना आयेगा कि शर्म करेंगे–कैसे लें? इस लेने में कोई हर्जा नहीं है। वो आप पर क्रोध करे, आप स्नेह के रूप में ले लेना। आप विश्व परिवर्तक हो ना। तो विश्व परिवर्तक किसी के निगेटिव को पॉजिटिव में नहीं बदल सकता! तो ये वर्ष सदा स्नेह देना और स्नेह लेना। ऐसे नहीं कहना–कोई ने दिया ही नहीं, क्या करुँ.....। वो दे या न दे, आप ले लो। कुछ तो देगा ना, निगेटिव दे या पॉजिटिव दे कुछ तो देगा ना! लेकिन हे विश्व परिवर्तक, आप निगेटिव को पॉजिटिव में परिवर्तन कर लेना। समझा, इस वर्ष क्या करना है! अच्छा। डबल विदेशी क्या करेंगे? गिफ्ट देंगे? दाता बन गये हो? वाह, दातापन की मुबारक हो।

बापदादा रोज़ बच्चों की एक बात देखते हैं। कौन-सी? कि ये 'मैं' और 'मेरा' ये परेशान कर देता है। कभी 'मेरा' आ जाता है, कभी 'मैं' आ जाता है, जो बीच-बीच में परेशान करता है। तो जब वर्ष परिवर्तन हो रहा है तो इस 'मैं' और 'मेरे' को भी परिवर्तन करो। शब्द भले 'मैं' बोलो लेकिन मैं कौन? ओरीजिनल 'मैं' किसको कहते हैं? शरीर को या आत्मा को? मैं आत्मा हूँ। तो जब भी 'मैं' शब्द यूज़ करते हो तो क्यों नहीं 'मैं' शब्द का ओरीजिनल स्वरूप, ओरीजिनल अर्थ स्मृति में रखते हो। और सारे दिन में कितने बार 'मैं' शब्द यूज़ करते हो? करना ही पड़ता है ना। 'मेरा' भी कई बार यूज़ करते हो और 'मैं' भी कई बार यूज़ करते हो। तो जितने बार 'मैं' शब्द यूज़ करते हो उतने बार अगर वास्तविक अर्थ से 'मैं' स्मृति में लाओ तो 'मैं' धोखा देगा या उड़ायेगा? तो जब भी 'मैं' शब्द यूज़ करते हो उस समय यही सोचो मैं आत्मा हूँ। क्योंकि 'मैं' और 'मेरे' शब्द के बिना रह भी नहीं सकते हो। बोलना ही पड़ता है और आदत भी है, 'मैं' 'मेरे' के पक्के संस्कार हो गये हैं। तो जिस समय 'मैं' शब्द यूज़ करते हो उस समय ये सोचो कि मैं कौन? मैं शरीर तो हूँ ही नहीं ना। बॉडी कॉन्सेसनेस तब आवे जब मैं शरीर हूँ। शरीर तो मेरा कहते हो ना? कि मैं शरीर कहते हो? कभी ग़लती से कहते हो कि मैं शरीर हूँ? ग़लती से भी नहीं कहेंगे ना कि मैं शरीर हूँ। तो 'मैं' शब्द और ही स्मृति और समर्थी दिलाने वाला शब्द है, गिराने वाला नहीं है। तो परिवर्तन करो। विश्व परिवर्तक पक्के हो ना? देखना कच्चे नहीं बनना। तो 'मैं' शब्द को भी अर्थ से परिवर्तन करो। जब भी 'मैं' शब्द बोलो, तो उस स्वरूप में टिक जाओ और जब 'मेरा' शब्द यूज़ करते हो तो सबसे पहले मेरा कौन? सारे दिन में मेरा-मेरा तो बहुत बनाते हो! मेरा स्वभाव, मेरा संस्कार, मेरी ये चीजें, मेरा परिवार, मेरा सेन्टर, मेरा जिज्ञासु, मेरी सेवा, मेरी सेवा इसने क्यों की? ये कहते हो ना? खेल तो करते हो ना। तो जब 'मेरा' शब्द बोलते हो तो 'मेरा' कहने से पहले ये याद करो कि मेरा कौन? पहले 'मेरा बाबा' याद करो। फिर मेरा और याद

करो। तो जहाँ बाप होगा वहाँ देह अभिमान वा गिरावट नहीं आयेगी। तो 'मैं' और 'मेरा' इन दोनों शब्दों को उस वृत्ति से, उस दृष्टि से, उस अर्थ से देखो और बोलो। 'मेरा' शब्द मुख से निकले और पहले 'मेरा बाबा' याद आये। तो निरन्तर योगी तो हो जायेंगे ना! क्योंकि हर घण्टे में 'मेरा' और 'मैं' शब्द यूज़ करते हो। कारोबार में भी करना पड़ता है ना! तो जितने बार ये रिपीट करो, मुख से बोलो वा मन से सोचो–मैं या मेरा, तो अर्थ का परिवर्तन करो। हद से बेहद में जाना है ना। जब बेहद सृष्टि की परिवर्तक आत्मायें हो तो हद में क्यों जाते हो? सिर्फ भारत परिवर्तक तो नहीं हो ना? या डबल विदेशी सिर्फ फॉरेन परिवर्तक तो नहीं हो ना? विश्व परिवर्तक हो। विश्व अर्थात् बेहद। विश्व परिवर्तक हैं–यह पक्का याद है ना? तो ऑटोमेटिकली निरन्तर योगी सहज बन जायेंगे। मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। क्योंकि भाव और भावना बदल जायेगी। जब मैं आत्मा सोचेंगे तो हर कर्म या बोल में भाव भी बदल जायेगा, भावना भी बदल जायेगी। क्योंकि भाव और भावना ही धोखा भी देती है, सुख भी देती है। तो यह परिवर्तन करेंगे ना? फिर यह पत्र नहीं लिखना क्या करें, कैसे करें....? ओ.के. का पत्र आयेगा या ये हुआ, वो हुआ..... हुआ-हुआ तो नहीं आयेगा ना? बापदादा के पास सबके पत्रों के फाइल हैं। कभी देखते हैं शुरु से लेकर क्या-क्या पत्र हैं, जो मन में सोचते हैं, वो भी सबका टेप रिकॉर्ड है।

तो नया वर्ष अर्थात् नवीनता लाना। नवीनता सभी को प्रिय लगती है ना? पुरानी चीज़ शो में रखने के लिये तो पसन्द करेंगे लेकिन यूज़ करने के लिये नहीं। यूज़ करने के लिये तो सोचेंगे नया। तो हर बात में नवीनता हो, संकल्प भी नया हो। रमणीकता से पुरुषार्थ करो। कभी-कभी कोई-कोई बच्चे इतना हठ से पुरुषार्थ करते हैं जो बापदादा को देखकरके तरस पड़ता है। बहुत युद्ध करते हैं। आवश्यकता नहीं है लेकिन करते हैं, क्यों? अपनी कमजोरी के कारण। तो मेहनत का पुरुषार्थ नहीं करो। पुरुषार्थ भी मौज-मौज से करो। करना भी क्या है? याद कोई ना कोई तो रहता ही है, कोई नई बात तो है नहीं। एक घड़ी भी बिना याद के रहते हो क्या? कोई न कोई तो याद रहता ही है। चाहे बात याद रहे, चाहे कोई व्यक्ति याद रहे, चाहे कोई वस्तु याद रहे लेकिन याद तो रहती है ना। बिना याद के होता है क्या? किसी को तो याद करना ही है। तो जो मतलब की बात है उसको याद करो। याद करना किसे नहीं आता है? कोई है जिसको याद करना नहीं आता हो? छोटी कुमारियों को याद करना आता है? अच्छा। तो जब याद करना ही है तो क्यों नहीं जिससे फायदा है, प्राप्ति है उसको करें, जिससे नुकसान है उसको क्यों करें? याद भी करते हैं और फिर परेशान भी होते हैं। क्यों याद आया, नहीं याद आना चाहिये.... तो अपने आपको परेशान क्यों करते हो? बस मेरा बाबा। मेरेपन की अनेक हद की भावनायें एक 'मेरे बाबा' में समा दो। खिलौने होते हैं ना, एक में एक, एक में एक होते हैं ना? एक खोलो तो दूसरा होता है, दूसरा खोलो तो और होता है। तो एक 'मेरे बाबा' में सब समा लो। अन्दर बन्द कर दो। लेकिन एक होता है मुख से कहना 'मेरा बाबा', एक होता है दिल से लग जाये 'मेरा बाबा', जो दिल से मेरा मान लेते हैं वो कभी नहीं भूलते हैं। देखो, सम्बन्ध में भी अगर कोई नजदीक परिवार का शरीर भी छोड़ता है और ज्ञान नहीं है तो कितना मेरा-मेरा कहते हैं। उसकी चीज़ देखेंगे, उसका चित्र देखेंगे, और मेरा-मेरा कह परेशान होंगे। तो जाने वाले को भी याद करते हैं। पता भी है जाने वाला आना नहीं है फिर भी मेरा है तो याद आता है। तो जब दिल से मान लिया 'मेरा बाबा' तो इससे बड़ी बात और है ही क्या? तो जो कॉमन शब्द बोलते हो, उसे ही उड़ती कला का साधन बना लो–मैं और मेरा। पुरुषार्थ भी रमणीक करो। कई याद में बैठते हैं सोचते हैं ''मैं ज्योति बिन्दु, मैं ज्योति बिन्दु'' और ज्योति टिकती नहीं, शरीर भूलता नहीं। ज्योति बिन्दु तो हैं ही लेकिन कौन-सी ज्योतिबिन्दु हैं! हर रोज़ अपना नया-नया टाइटल याद रखो कि ज्योति बिन्दु भी कौन है? रोज़ सर्व प्राप्तियों में से कोई न कोई प्राप्ति को याद करो। प्राप्तियों की लिस्ट तो बुद्धि में है ना? अगर नहीं हो, याद नहीं पड़ती हो तो अपने टीचर से लिस्ट ले लेना, अगर टीचर के पास भी नहीं हो तो मधुबन से ले लेना। तो रोज़ एक नया टाइटल परिवर्तन करो। आज नूरे रत्न हैं तो कल मस्तक मणि हैं.... कितना अच्छा लगेगा। और हर रोज़ वेराइटी प्राप्तियों को सामने रखो–बाप ने क्या दिया, क्या मिला! तो जब अविनाशी प्राप्ति सामने रहेंगी तो प्राप्ति से खुशी होती है ना? अगर मानों किसी को बहुत दर्द हो रहा है और कोई ऐसी प्राप्ति की सूचना आ जाये कि एक करोड़ लॉटरी में आ गये हैं तो दर्द याद रहेगा कि लॉटरी याद आयेगी? तो प्राप्ति दु:ख को, परेशानी को भुला देती है। तो रोज़ नई प्राप्ति की पॉइन्ट को याद रखो। अपने टाइटल याद रखो। टाइटल की सीट पर सेट होकर बैठो। छोटे बच्चे की तरह घड़ी-घड़ी नीचे नहीं आओ। जैसे छोटे बच्चे को कुर्सी पर बिठाओ तो नीचे आ जाता है। मन भी नटखट होता है, तो कितना भी सीट पर बिठाओ नीचे आ जाता है। तो अपने टाइटल के नशे की सीट पर अच्छी तरह से सेट होना आता है ना? प्लेन में भी देखो कोई नीचे नहीं आ जाये तो बेल्ट बांध देते हैं। तो दृढ़ संकल्प की बेल्ट सबके पास है! जब देखो थोड़ा हलचल में आते हैं तो बेल्ट बांध लो।

तो इस वर्ष की नवीनता यह है कि किसी का भी निगेटिव समाचार नहीं आयेगा। ठीक है? हाँ जी या ना जी? अभी ये आपका आवाज़ भी टेप में भर रहा है। आप सभी भी चाहते हो, सिर्फ बाप नहीं चाहता लेकिन आप सभी भी चाहते हो कि बस अभी-अभी फरिश्ते बन जायें, चाहते हो ना? (सभी ने हाँ जी की) हाँ बहुत अच्छी करते हो। हाँ सुनकर बाप भी खुश हो जाता है। परन्तु ऐसे-ऐसे पत्र आते हैं जो वेस्ट पेपर बॉक्स में डालने वाले होते हैं, ऐसे भी पत्र आते हैं जो पढ़ने की भी दिल नहीं होती। लिफ़ाफ़े से ही समझ जाते हैं कि ये ऐसा ही कोई समाचार है। अच्छे भी आते हैं। प्यार के भी आते हैं, उमंग के भी आते हैं, खुशी के भी आते हैं

लेकिन फालतू भी आते हैं। वेस्ट मनी, वेस्ट टाइम, अपना भी और दूसरों का भी। आपके सेवाकेन्द्र पर ऐसे पत्र लिखने वाले हों तो उन्हें भी परिवर्तन करना। फिर ये वर्ष कौन-सा वर्ष होगा? मौज का वर्ष। फ़रिश्ता स्वरूप, फ़रिश्तों की दुनिया में रहने वाले। जहाँ देखो वहाँ फ़रिश्ता ही फ़रिश्ता। कोई फ़रिश्ता उड़ रहा है, कोई सन्देश दे रहा है, कोई नीचे धरनी पर आकर कर्मेन्द्रियों से कर्म कर रहा है–ऐसे ही दिखाई दे। सृष्टि बदल जाये। जहाँ भी देखो फ़रिश्तों की दुनिया। दृष्टि परिवर्तन, वृत्ति परिवर्तन। अच्छा!

सेवा क्या करेंगे? इस वर्ष में कोई विशेष सेवा भी करेंगे? क्या करेंगे? मेला करेंगे, प्रदर्शनियाँ करेंगे, कॉन्फ्रेन्स करेंगे? ये तो करते ही रहते हो। नवीनता क्या लायेंगे? बापदादा का एक संकल्प अभी बच्चों ने पूरा नहीं किया है। बापदादा बार-बार इशारा देते हैं कि वर्तमान समय क्वान्टिटी तो बढ़ाते जाते हो लेकिन क्वालिटी अर्थात् वारिस, लिस्ट में तो आ जाता है इतने बढ़ गये, प्राइज़ भी ले ली ना। बापदादा ने सुना था कि चान्दी का गिलास भी गिफ्ट में ले लिया। वो भी अच्छी बात है। क्योंकि राजधानी में सब प्रकार के चाहिये। लेकिन अभी बहुत समय से वारिस क्वालिटी बहुत कम निकलती है। सम्पर्क वाले बढ़ रहे हैं, संख्या बढ़ रही है। वो भी ड्रामानुसार होनी ही है और आवश्यक है लेकिन ये मिस है। अब वारिस क्वालिटी प्रत्यक्ष करो। क्वान्टिटी को देखकर बापदादा भी खुश होते हैं लेकिन साथ-साथ इसके ऊपर भी अण्डरलाइन करो। और दूसरी बात, अभी ज्ञान सरोवर भी तैयार हो जाना है और इसे विशेष बनाया ही है सम्पर्क वालों को वारिस बनाने के लिये। बापदादा ने पहले भी कहा है कि ज्ञान सरोवर है ही – सेवा के वृद्धि की खान। तो जब सेवा का स्थान तैयार हो ही रहा है और होना ही है, हुआ ही पड़ा है तो सेवा भी तो करेंगे? कि सिर्फ देख-कर खुश होंगे कि बहुत अच्छा बना, बहुत अच्छा बना? तो एक ऐसा विशाल प्रोग्राम करो – जैसे कोई विशेष स्थान बनाते हैं तो विशेष स्थान की सेरीमनी में अलग-अलग देश वाले सभी, या पानी डालते हैं, या मिट्टी डालते हैं। तो आप पानी या मिट्टी तो नहीं डलवायेंगे लेकिन सारे विश्व में एक भी स्टेट खाली नहीं रहे, सब तरफ के आवें, चाहे विदेश, चाहे देश की जो भिन्न-भिन्न स्टेट हैं उसका एक-एक जरूर आवे। तो इन्टरनेशनल इसको कहेंगे ना। या दो चार लण्डन के आ गये, अमेरिका का आ गया तो इन्ट-रनेशनल हो गया क्या? तो इन्टरनेशनल प्रोग्राम बनाओ। अब डबल स्थान हो गया ना। नहीं तो सोचते हैं स्थान चाहिये, वो चाहिये, सैलवेशन चाहिये। तो अभी ज्ञान सरोवर का स्थान भी मिला है। इसलिये इस वर्ष में ऐसा देश-विदेश दोनों मिलकर, दोनों की राय से, दोनों के प्लैन से, दोनों के हाँ जी से, दोनों की समानता से ऐसा प्रोग्राम बनाओ जो विदेश वाले भी कहे कि हाँ, हमारे योग्य है और देश वाले भी कहें कि हमारे योग्य है। विदेश की भी विधि और देश की भी विधि–दोनों विधि को सम्मिलित करके एक-दो को आगे रखकर, देश विदेश को आगे रखे, विदेश देश को आगे रखे, और ऐसा अच्छा प्रोग्राम बनाओ जो कोई एक देश भी वंचित नहीं रह जाये। विदेश वाले बताओ, हो सकता है? होना ही है ना! देश वाले बताओ, करना है? अच्छा, इनका (दादी का) तो संकल्प है। दादी को संकल्प बहुत आते हैं, सेवा के अच्छे संकल्प, नींद नहीं करने देते हैं। अच्छा है। शुद्ध संकल्पों से नींद की कमजोरी का प्रभाव नहीं पड़ता। वैसे नींद खुल जाये तो कमजोरी या कमी महसूस होती है। तो अच्छा है, सबकी मिट्टी नहीं लाना लेकिन सबके विचारों की मिट्टी इकट्ठी करेंगे। दुनिया वाले तो मिट्टी, मिट्टी कर देते हैं ना, मिट्टी मिट्टी में मिल जाती है। और ये सभी के विचार, सब तरफ विश्व में आवाज़ फैलायेंगे। कोई भी देश वंचित क्यों रह जाये। और अगर एक कोई आता है तो अपने देश में अपने अखबार में तो डालेगा। तो हरेक विश्व के चारों कोनों की सेवा भी हो जायेगी।। लेकिन बापदादा इस वर्ष देश-विदेश की विधि का मिला हुआ प्रोग्राम चाहते हैं। विदेश वाले भी पीछे नहीं हटें और देश वाले भी पीछे नहीं हटें। विचार भी तो मिलाने हैं ना। एक-दो को कहो–पहले आप। अच्छा हो सकता है ना।

तो ज्ञान सरोवर का ऐसा प्रोग्राम बनाओ जो विश्व में ऐसा सेवा समाचार किसी स्थान का नहीं हो। चाहे यू.एन. हो या उससे भी बड़ा स्थान हो, उससे भी बड़ा हो जाये। इसमें सबका तन भी लगा है, मन भी लगा है और छोटे बच्चों से लेकर बूढ़ों तक सभी का धन भी लगा है। तो जैसे सबके सहयोग की अंगुली लगी है तो सेवा में भी सबके सहयोग की अंगुली लगनी ही है। प्लैन देते रहो लेकिन प्लैन बनाने के टाइम, देने के टाइम, मालिक बनकर दो और जब फाइनल मैजारिटी करे तो बालक बन जाना। बालक क्या करता है? हाँ जी। और मालिक क्या कहता है? नहीं, ऐसा करो। तो बालक और मालिक। प्लैन देना अच्छा है लेकिन प्लैन होना ही चाहिये, ये सोच के नहीं। जो होगा वो अच्छा। किनारा नहीं करो, प्लैन दो लेकिन बालक भी बनो, मालिक भी बनो। बनाने के टाइम मालिक और फाइनल के टाइम बालक। बालक और मालिक बनना आता है? कि सिर्फ मालिक बनना आता है? क्योंकि सभी होशियार हो गये हैं ना। मालिक जल्दी बन जाते हैं। अभी समझा, नये वर्ष में क्या करना है? सेवा भी करनी है और सेवा के पहले स्वयं परिवर्तक। दोनों ही चाहिये ना!

तो नया वर्ष मना लिया। मनाना अर्थात् बनना और बनाना। यही मनाना है, न कि सिर्फ डांस कर लिया तो मनाया। वो भी करो, डांस भी बापदादा को अच्छी लगती है। लेकिन मन की भी डांस करो। बापदादा सब गीत भी सुनते हैं, डांस भी देखते हैं, कोई प्रोग्राम मिस नहीं करते। क्यों? देखो, कोई भी प्रोग्राम आप करते हो तो पहले गीत में बाप को याद करते हो ना? जब बाप को याद करेंगे तो आना ही पड़ेगा, देखना ही पड़ेगा। जब प्रोग्राम करते हो तो बापदादा को भी अच्छा लगता है। अच्छा!

हॉस्टल की कुमारियों से:- हॉस्टल की कुमारियों को देखकर आदि स्थापना का समय याद आता है। पहले तो ऐसे ही हॉस्टल

खोली थी ना। पहले जब ब्रह्मा बाप ने, हॉस्टल अथवा गुरूकुल वा बोर्डिंग खोला तो फाउण्डेशन निकले। आज यज्ञ के जो भी निमित्त फाउण्डेशन हैं, वो सभी बोर्डिंग के ही तो हैं। चाहे टीचर हैं, चाहे स्टूडेण्ट हैं, लेकिन हैं तो आदि स्थापना के ना। तो जहाँ भी हॉस्टल है वहाँ से ऐसे फाउण्डेशन तैयार होने चाहिये। समझा? सिर्फ कॉलेज-स्कूल में पढ़ लिया, सेन्टर सम्भाल लिया। नहीं, इतना बड़ा कार्य करना है। अच्छा है, साधन अच्छा है।

डबल विदेशी:-

यू.के.-यूरोप:- यू.के. और यूरोप वाले दोनों इकट्ठे हाथ उठाओ। सेकण्ड में देखो, हाथ नीचे कर लिये। ऐसे मन की ड्रिल भी सेकण्ड में। अभी-अभी उड़ती कला, अभी-अभी कर्मयोगी। हाथ की एक्सरसाइज़ अच्छी है, मन की एक्सरसाइज़ भी ऐसे है? तो यू.के. या यूरोप की विशेषता क्या है? यू.के. विदेश सेवा के वृक्ष का बीज है। तो बीज की विशेषता क्या होती है? बीज में पानी दे दो तो सारे झाड़ के पत्ते-पत्ते को पानी पहुँच जाता है। तो आज भी विदेश के वृक्ष की सेवा का फाउण्डेशन यू.के. निमित्त है, विदेश के सभी देशों को पालना का पानी कहाँ से मिलता है? यू.के. से ना! तो यू.के. अपना बीज का कार्य अच्छा कर रहे हैं। ऐसे नहीं, सिर्फ एक, लेकिन सभी सहयोगी हो। आप सब भी यू.के. वाले या यूरोप वाले सहयोगी हो ना? दादियों को मदद देते हो? कि कहते हैं कि दादी का काम दादी जाने। ऐसे तो नहीं कहते ना! भुजायें अच्छी मिली है ना! तो बापदादा बीज को सदा शक्तिशाली देख हर्षित होते हैं। और दूसरी यू.के. या यूरोप की विशेषता यह है कि सेवा में तन-मन-धन तीनों में एवररेडी हैं। कोई भी कार्य जो साधारण सोचने में लगता–कैसे होगा लेकिन यू.के. की विशेषता है कि कोई भी कार्य दृढ़ संकल्प और सहयोग के अंगुली से सहज हो जाता है। सहज हो जाता है ना! म्युज़ियम बनने के पहले करने वाले तैयार है ना! तो इसको कहा जाता है विशेषता। सर्व के सहयोग की अंगुली शक्तिशाली है। अगर कोई हिम्मत भी दिलाते हैं कि हाँ कर लो, कर लो, कर लो तो वो हिम्मत भी सहयोग की अंगुली है। लेकिन रिज़ल्ट में देखा गया है कि तन-मन-धन तीनों में सदा जी हाँ करने वाले हैं, सोचने वाले नहीं हैं। इसलिये सब कार्य सहज हो जाता है। अगर सोचने वाले होते हैं ना तो वो सूक्ष्म वायब्रेशन, वो अंगुली कम हो जाती है। तो सर्व के अंगुली से सफलता होती है। अगर थोड़ा भी सोचने वाले होते हैं कि कैसे होगा, क्या होगा तो संगठन की स्नेह की अंगुली न होने के कारण सफलता में कमी पड़ जाती है। इसलिये यू.के. वा यूरोप वालों को विशेष और सर्व विदेश के सहयोगी आत्माओं को कार्य में आगे बढ़ने की मुबारक हो। समझा!

ऑस्ट्रेलिया–बापदादा जब ऑस्ट्रेलिया का नाम सुनते हैं तो नाम सुनकर ऑस्ट्रेलिया का बचपन बहुत याद आता है। ऑस्ट्रेलिया और न्युज़ीलैण्ड वाले हाथ उठाओ। ऑस्ट्रेलिया में बहुत अच्छे-अच्छे रत्न पैदा हुए। ऑस्ट्रेलिया की ये विशेषता रही कि यू.के. में फिर भी मिक्स हैं, भारतवासी भी हैं तो विदेशी भी हैं, मिक्स क्लास है लेकिन ऑस्ट्रेलिया की सेवा ने विदेशियों की संख्या को काफी बढ़ा दिया। और क्लास की रौनक, विदेश की आत्माओं के क्लास की रौनक सबसे नम्बरवन ऑस्ट्रेलिया की रही। कोई थोड़ा बहुत आते-जाते हैं, चक्कर लगाते हैं लेकिन फाउण्डेशन तो निमित्त बने। और जाने वाले भी कहाँ जायेंगे? आना तो है ही। सिर्फ चक्कर लगाने जाते हैं। फिर जब चक्कर पूरा हो जाता है तो कहते हैं बाबा मैं आपका ही हूँ, आपका ही रहूँगा। और ऑस्ट्रेलिया की विशेषता ये है कि वहाँ प्लैनिंग बुद्धि बहुत अच्छी है। सेवा के प्लैन बनाने में और सेवा में सहयोग देने में, बड़ी-बड़ी इन्वेन्शन को प्रैक्टिकल में लाने में प्लेन बुद्धि भी हैं और सहयोगी भी हैं। प्लेन बुद्धि होकर प्लैन को प्रैक्टिकल में लाने में और थोड़ा सिर्फ अण्डरलाइन करो। समझा? थोड़ा अण्डर लाइन करना है – प्लैनिंग के साथ प्लेन बुद्धि। जब प्लेन बुद्धि होकर प्लैन बनाते हैं तो प्लेन में सर्व शक्तियाँ भर जाती हैं और जहाँ सर्वशक्तियाँ होती हैं वहाँ सफलता भी निर्विघ्न 100इ होती है। तो ऑस्ट्रेलिया के अच्छे-अच्छे रत्न बापदादा के नज़र में सदा रहते हैं। सफलता स्वरूप भी हैं, सेवा में आगे बढ़ने वाले भी हैं, बढ़ाने वाले भी हैं। तो ऑस्ट्रेलिया की विशेषता भी कम नहीं। ऑस्ट्रेलिया को बापदादा सदा आगे बढ़ने वालों की नज़र से देखते हैं। और तीसरी विशेषता है कि पाण्डव और शक्तियाँ दोनों ही सेन्टर खोलने के निमित्त हैं। पाण्डव भी शक्तियों से कम नहीं हैं। पाण्डव भी निमित्त बनने में अच्छे सहयोगी हैं। वहाँ जायेंगे तो क्या देखेंगे? ये पाण्डवों का सेन्टर है, वो शक्तियों का सेन्टर है और दोनों की साथ-साथ रेस चल रही है। समझा? ऑस्ट्रेलिया वालों ने अपनी विशेषतायें सुनी? अच्छा।

साउथ एशिया – एशिया की भी विशेषता है। हर स्थान की विशेषता है। एशिया भारत के नजदीक है। तो एशिया का आवाज़ भारत में जल्दी पहुँचेगा। भारत के कुम्भकरण को जगाने में एशिया सहज कार्य कर सकता है। जैसे यू.के., यूरोप, अमेरिका में क्रिश्चियन्स ज्यादा निकले हैं, ऐसे एशिया में बौद्ध धर्म वाले ज्यादा निकले हैं। वो क्रिश्चियन्स और ये बौद्धी। तो देखो दूसरे धर्म का विस्तार ज्यादा एशिया में है। वैसे भी बुद्ध धर्म को भारत से कनेक्ट ज्यादा करते हैं। तो एशिया की विशेषता और भी है कि एक ही एशिया में ऑफिशियल प्रेज़ीडेन्ट सम्पर्क वाला है। मलेशिया का प्रेजीडेन्ट, फिलिपिन्स का प्रेजीडेन्ट होमली है ना और संख्या भी अच्छी है। वैसे तो हर स्थान की संख्या वृद्धि को प्राप्त कर रही है। सभी अच्छे उमंग-उत्साह से बढ़ रहे हैं। अभी सिर्फ एशिया को क्या करना है कि जो वहाँ निमित्त बने हुए हैं, उन्हों को भारत तक पहुँचाना है। अभी भारत तक नहीं पहुँचाया है। ये एडीशन करना है। जो विशेष सेवा के निमित्त हैं, वो सभी मिलकर जो भी सम्पर्क में हैं उन्हें समीप लाओ। जितना देश समीप है

उतना आवाज़ भी समीप लाओ। और ऐसा हो जो आवाज़ को जल्दी पहुँचा सके। तो अभी जल्दी-जल्दी भारत तक आवाज़ पहुँचाओ। अभी भारत तक नहीं पहुँचा है। अच्छा!

मॉरिशियस:- मॉरिशियस की विशेषता ही ये है कि मॉरिशियस के स्टूडेण्ट अच्छे एकरस होकर चलने वाले हैं। थोड़ा बहुत नीचे-ऊपर होता है, वो कोई बात नहीं। लेकिन मैजारिटी देखा जाता है कि मॉरिशियस के स्टूडेन्ट ज्यादा हलचल में नहीं आते। तो मॉरिशियस की विशेषता–एक तो हलचल कम है, अचल ज्यादा हैं और दूसरा सहयोगी सहज बन जाते हैं, चाहे आई.पी. हो, चाहे वी.आई.पी. हो लेकिन सहयोग देने में अच्छे निमित्त बन जाते हैं। आई.पी. या वी.आई.पी. की सेवा में मेहनत नहीं लगती। इज़ी धरनी है। खिटपिट वाली धरनी नहीं। मेहनत लेने वाली धरनी नहीं। और इसीलिये मॉरिशियस भी भारत के बहुत नजदीक है। मॉरिशियस वाले तो भारत की फिलॉसॉफी को भी मानते हैं। इसलिये मॉरिशियस की आवाज़ भी भारत में जल्दी पहुँच सकती है। प्रत्यक्षता करने में पहले झण्डा किसका पहुँचेगा? मॉरिशियस का या एशिया का? मॉरिशियस का पहले पहुँचेगा? एशिया वाले भी दौड़-दौड़ कर फ्लैग ले आयेंगे और मॉरिशियस वाले भी ले आयेंगे। सब विदेश की तरफ से प्रत्यक्षता का झण्डा भारत में आयेगा। तो अच्छा है मॉरिशियस वालों की भी सहज सफलता है। ये विशेष धरनी को और ब्राह्मण सेवाधारियों को वरदान है।

अफ्रीका:- अफ्रीका की विशेषता ये है जो ये देश सदा ही भय के देश हैं और भय में निर्भय रहना, ये अफ्रीका वालों की विशेषता है। बापदादा सदा बिल्ली के पूंगरों की कहानी याद करते हैं, कि चारों ओर आग के बीच में बिल्ली के पूंगरे सेफ रहे। तो जैसे अफ्रीका के सरकमस्टांश हैं, उस सरकमस्टांश के अनुसार जो भी बाप के बच्चे हैं वो हिम्मत और निर्भयता में बहुत अच्छे ए-वन हैं। कमाल है उन्हों की। कैसी भी हालत हो लेकिन सेवा को छोड़ते नहीं। पक्के हैं। तो बापदादा उन्हों के निर्भयता और हिम्मत को देखकरके सदा छत्रछाया भी देते और मुबारक भी देते हैं कि कमाल के बच्चे हैं। कैसी भी हालत हो लेकिन परिस्थिति में स्व स्थिति का सबूत देने वाले हैं। इसलिये जो आने वाले हैं उन्हों में भी हिम्मत भरते रहते हैं। अगर निमित्त हलचल में आ जाये तो आने वाले भी हलचल में आ जाये और ये देश वंचित रह जाये। लेकिन बच्चों की कमाल है जो अचल रह करके हिम्मत रखी है। सदा आगे बढ़ते रहते हैं और सेवाकेन्द्र खोलते जाते हैं, लोग भागते जाते हैं और ये खोलते जाते हैं। तो ये विशेषता है। और जो नाम है कि बाप विश्व कल्याणकारी है, तो काले हो या गोरे हो लेकिन कालों को भी सफेद बनाना – ये भी विशेष सेवा है। विश्व कल्याण में ये भी तो होने चाहिये ना। अगर ये नहीं हो तो विश्व कल्याण तो नहीं कहेंगे ना। साउथ अफ्रीका भी देखो सेवा के उमंग के कारण स्वतन्त्र हो गया ना। तो ये हिम्मत की कमाल है। साउथ अफ्रीका में भी सेवा का चांस अभी सहज मिल गया ना। तो ये किसने हिम्मत रखी? बच्चों ने हिम्मत रखी और स्वतन्त्र हो गये। आपकी सेवा ने देश को स्वतन्त्र कर दिया। तो अफ्रीका की रिजल्ट अच्छे उमंग-उत्साह वाली है। सबसे हिम्मत में नम्बरवन है। समझा? अफ्रीका वाले हिम्मत वाले हैं? डरते तो नहीं हैं ना? अच्छा, सबूत देने वाले हैं। तो सबूत देने वाले को बापदादा सपूत कहते हैं। जो सपूत होता है वो सबूत देता है। तो अच्छा बढ़ रहा है और बढ़ता रहेगा। समझा? श्री लंका भी छोटा है लेकिन कमाल कर रहा है।

जापान:- जापान में सेवा की मेहनत है लेकिन मेहनत से डरने वाले नहीं। कोई-कोई धरनी मेहनत वाली होती है। तो जापान में मेहनत ज्यादा करनी पड़ती है लेकिन फाउन्डेशन पक्के हो गये हैं ना। तो फाउन्डेशन में मेहनत लगती है, अभी फाउण्डेशन अच्छे हैं इसलिये अभी सहज होना चाहिये। तो जो सेवा के फाउण्डेशन निमित्त बनते हैं वो बापदादा के सदा सामने रहते हैं। तो जापान भी अच्छा प्रोग्रेस कर रहा है। अच्छा।

अमेरिका:- अमेरिका की भी विशेषता ये है कि अमेरिका में विस्तार बहुत अच्छा किया है। अमेरिका के चारों ओर अच्छे-अच्छे सेवास्थान खुले हैं, चल रहे हैं। तो अमेरिका ने विस्तार अच्छा किया है। कोने-कोने में आवाज़ फैलाया है। एरिया के हिसाब से सबसे ज्यादा सेवाकेन्द्र अच्छी हिम्मत से खोल रहे हैं और खुलते रहेंगे। तो जैसे अमेरिका देश का विस्तार है ना, तो सेवा का भी विस्तार अच्छा किया है। और हर स्थान में बाप के बच्चे निकल ही आते हैं। चाहे कहाँ थोड़े हैं, कहाँ ज्यादा हैं लेकिन आवाज़ तो पहुँच गया ना। और दूसरी अमेरिका की विशेषता–ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, उसको प्रसिद्ध करने के लिये यू.एन. के द्वारा अमेरिका ही तो निमित्त है ना। तो अमेरिका, विश्वविद्यालय को, कार्य को सहज प्रत्यक्ष करने के निमित्त बना हुआ है। और जो भी सुनते हैं तो सब आश्चर्य खाते हैं, ब्रह्माकुमारियाँ यू.एन. तक पहुँच गई! तो ये भी विशेष सेवा का साधन है। और साधन बनाने के निमित्त अमेरिका ही है। तो अमेरिका का विस्तार चारों ओर नाम फैलाने में अच्छा आगे बढ़ रहा है। अच्छा।

रशिया:- आपके चित्रों में भी रशिया और अमेरिका विशेष दिखाया हुआ है। एक बिल्ला बिचारा कमजोर हो गया है। लेकिन रशिया वालों ने, जो एक भाग सेवा का रहा हुआ था वो भाग पूरा कर लिया। और हिम्मत है इन्हों की जो इकॉनॉमी डाउन होते हुए भी ये स्वयं डाउन नहीं होते। हिम्मत नहीं हारते। फिर भी देखो इतना ग्रुप पहुँच जाता है। समाचार सुनो तो कहते हैं बड़ा मुश्किल है, बड़ा मुश्किल है फिर ग्रुप भी पहुँच जाता है। इसको कहा जाता है सच्ची दिल पर साहेब राजी। कहाँ न कहाँ से पहुँचने की हिम्मत अच्छी रखते हैं। नम्बर पीछे नहीं हटते। और भी अगर संख्या मिल जायेगी तो आ जायेंगे। तो इकॉनॉमी होते हुए एकनामी में होशियार हैं। इकॉनॉमी की परवाह नहीं करते लेकिन एकनामी बनने में आगे बढ़ते हैं। तो अच्छा है, बापदादा का नाम बाला

करने में सहयोगी हैं, स्नेही हैं और सदा आगे बढ़ते रहेंगे।

भारत:- अच्छा, भारत तो पहले है, विदेश वाले भारत में ही तो आये हैं। लेकिन हैं भारतवासी। भारतवासी हो या विदेशी? असली तो भारतवासी हो ना? ये तो सेवा के लिये गये हो। ओरिज़नल आत्मा के संस्कार कौन-से हैं? विदेश के या भारत के? कि विदेश का कल्चर अलग है? पहले बहुत कहते थे, पहले विदेशियों की ये कम्पलेन आती थी, कि विदेशियों का कल्चर और है, भारत का कल्चर और है। अभी परिवर्तन हो गया है। अभी ऐसी कम्पलेन कोई बिरले की आती है। अभी बदल गये हैं, अभी संस्कार इमर्ज हो गये हैं, कि मुश्किल लगता है भारत का कल्चर? मुश्किल तो नहीं लगता? तो भारत वालों की विशेषता है सदा डबल विदेशियों की मेहमान निवाजी करना। आने और जाने वाले को भी मेहमान कहा जाता है। ऐसे तो मालिक हो लेकिन आते हो और जाते हो तो उस हिसाब से मेहमान भी हो। बापदादा भी मेहमान होकर आता है। तो बापदादा भी भारत का मेहमान हो गया ना! विदेश का मेहमान बना? नहीं बना। भारत के ही मेहमान बने। तो भारत की विशेषता है कि भगवान भी भारत में ही मेहमान होकर आते हैं। और आप सभी को राज्य-भाग्य भी भारत वाले देंगे ना। भारत में महल बनायेंगे या विदेश में? कहाँ महल बनायेंगे? भारत में बनायेंगे ना? तो देखो, भारत कितना बड़े दिल वाला है। जो भगवान को भी मेहमान बना सकते हैं वो कितने बड़े हो गये। तो भारत की विशेषता है एक तो सभी की बड़े दिल से मेहमान निवाजी करते हैं और दूसरा भारत स्थापना के निमित्त है। अगर भारत की बहनें विदेश सेवा में नहीं जाती तो आप लोग कैसे आते? विदेश सेवा के अर्थ भारत की बहनें निमित्त बनी ना। तो भारत स्थापना के निमित्त है। और भारत ही आप सबको राज्य के साथी बनाने के निमित्त है। पहले आपको महल देंगे, पहले आपको रखेंगे। भारत फ्राख़ दिल है, 'पहले आप' करने वाले हैं। 'मैं-मैं' करने वाले नहीं हैं। भारत सदा ही दान-पुण्य करने में होशियार है। तो औरों को आगे बढ़ाना ये पुण्य है। अच्छा–

(विदेश से सिन्धी भाई-बहिनों का ग्रुप आया है) सिन्धी ग्रुप हाथ उठाओ। यह ब्रह्मा बाप के देश के साथी हैं। तो नजदीक के साथी हो। सिर्फ आये थोड़ा देरी से हो। लेकिन लास्ट सो फास्ट, फास्ट सो फर्स्ट। ऐसे है ना? पीछे रहने वाले नहीं हैं। स्नेह और सहयोग में सिन्धी ग्रुप पहला नम्बर जाता है। बाकी एक बात एड करनी है। तीन शब्द हैं–एक सहयोग, दूसरा स्नेह, तीसरा शक्ति। तो स्नेह और सहयोग में सभी पास हो। अभी शक्ति रूप में थोड़ा और आगे बढ़ना है। शक्ति रूप बनेंगे ना तो राजधानी में भी नम्बर लेंगे। अभी सभी आपको स्नेह की दृष्टि से देखते हैं कि ये देश के साथी हैं, बाबा के देश के साथी हैं। अभी शक्ति रूप बनने से और सिन्धियों को सहज जगायेंगे। अभी स्नेह रूप का अनुभव तो सुनाते हो। शक्ति रूप का अनुभव सुनाओ, कि इतनी शक्ति आ गई है। धारणा की शक्ति, चलने की शक्ति। अभी ये एड करना है। बाकी बापदादा को पसन्द हो, अच्छे लगते हो। अच्छा। एक-एक कम से कम कितनों को जगायेंगे? एक दीपक कितनी दीपमाला बनायेंगे? (लाखों की!) वाह! अच्छी हिम्मत रखी है! हज़ार भी नहीं, लाख। मुख में गुलाब जामुन। अच्छा है और ये तो जरूर है कि एक आता है तो अनेकों का वायुमण्डल बदलता है। चाहे आने में देरी करते हैं लेकिन वायुमण्डल तो बदलता ही है। वायुमण्डल बदल रहा है ना? अभी अच्छा-अच्छा सब कहने लगे हैं। अच्छा बनने की हिम्मत नहीं है लेकिन अच्छा है, यहाँ तक तो पहुँचे हैं ना? पहला कदम तो हुआ है, धरनी तो बनी है ना। अभी और बीज डालकर फल निकालना। अभी जहाँ तहाँ देखने में आता है ये वायुमण्डल बदलता जाता है। पहले आना नहीं चाहते थे, अभी आना चाहते हैं लेकिन यहाँ से मना होती है। फर्क तो पड़ गया ना। आप लोग आते हैं, सुनाते हैं तो दूसरे भी कहते हैं ना कि हमको भी ले चलना, हमको भी ले चलना। तो फर्क आ गया ना। अभी माला तैयार करके आना। अभी दूसरी बारी आओ तो माला तैयार करके आयेंगे या कंगन तैयार करके आयेंगे? (माला) माला तैयार करके आयेंगे। अच्छा है, हिम्मते बच्चे मददे बाप। सदा मददगार है बाप। सिर्फ हिम्मत का एक कदम बढ़ाओ और बाप हज़ार कदम बढ़ाने के लिये बंधा हुआ है। बाप को भी बांधने वाले हो ना। स्नेह की रस्सी में बांधने में होशियार हो। अच्छा! बाप को शुद्ध दिल वाले प्रिय लगते हैं और बाप आपको प्रिय लगता है–ऐसे? जादू तो नहीं लग गया। यह जादू फायदे वाला है, नुकसान वाला नहीं। तो अच्छी तरह से जादू लगा? थोड़ा तो नहीं लगा जो वहाँ उतर जाये। जादू माना परिवर्तन। तो परिवर्तन हो ही गया ना। इस जादू से खुश हो ना, घबराते तो नहीं हो?

सभी चैरिटी बिगन्स एट होम सिद्ध करने वाले बने हो। नहीं तो जब ये सेवा करते हैं तो सभी लोग पूछते हैं–सिन्धी लोग क्यों नहीं आते? तो आप कहेंगे आते हैं ना, तो सहयोगी बन गये ना। टूलेट में नहीं आये, लेट में आये। फिर भी लक्की हैं। (सभी हंसते हैं) अच्छा है रोते तो नहीं हैं ना। लोग तो रुलाते हैं, आप हंसाते हो तो अच्छा है ना। रोने वाले को भी हंसा दो। परवाह नहीं करो, हंसने दो। फिर ये हंसने वाले आपको नमस्कार करने वाले हैं। आज हंसते हैं, कल नमस्कार करेंगे। अच्छा!

दुबई – अच्छा, गुप्त सेवाधारी। अननोन बट वेरी वेल नोन। राज्य के हिसाब से गुप्त रूप में सेवा कर रहे हैं और अविनाशी रत्न हैं, चाहे कितनी भी हलचल हो जाये लेकिन अविनाशी रत्न होने के कारण अचल हैं। गुप्त में भी आगे बढ़ रहे हैं। दुबई वाले पक्के हैं ना! हिलने वाले तो नहीं है ना? तो अच्छी हिम्मत रखने वाले हैं। इसीलिये बापदादा की स्पेशल मदद और मुबारक। अच्छा!

नया वर्ष मनाया कि 12 बजे मनायेंगे? आपकी तो हर घड़ी नई है ना? कि 12 बजे नया होगा? हर घड़ी नई है, हर सेकण्ड नया दिन है। जब भी मनाओ आपके लिये नया वर्ष है। जब युग ही नया है तो नवयुग स्थापन करने वालों का सब नया है कि 12 बजे

नया होगा? आपके लिये नया है ना। क्योंकि आप नये बन गये ना! वो तो घण्टा बजायेंगे। अभी 12 घण्टे बजा दो इसमें क्या है? अच्छा!

चारों ओर के नवयुग के राज्य अधिकारी श्रेष्ठ आत्माओं को सदा स्व परिवर्तन और विश्व परिवर्तन के निमित्त विशेष आत्माओं को, सदा पुरुषार्थ में नवीनता-श्रेष्ठता लाने वाले सर्व स्नेही आत्माओं को, सदा बाप का नाम प्रत्यक्ष करने वाले सपूत आत्माओं को, सदा 'मेरा' और 'मैं' को यथार्थ भाव और अर्थ में लाने वाले सहजयोगी आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

अच्छा, चारों ओर के न्यु वर्ष के कार्ड बहुत आये। वैसे तो कार्ड खरीद करते हो और बापदादा के पास पहले ही आपकी मुबारक पहुँच जाती है। कार्ड में लिखने के पहले बाप के दिल में लिख जाती है। लेकिन फिर भी सुहेज मनाने के लिये भेज देते हैं। तो बाप-दादा सभी देश-विदेश के न्यु वर्ष के पत्र वा कार्ड भेजने वालों को विशेष पद्मगुणा मुबारक के साथ सदा उड़ने वाले और उड़ाने वाले, सदा सहज विश्व परिवर्तक बनने वाले, इस स्वरूप से पद्मगुणा मुबारक दे रहे हैं–मुबारक हो! मुबारक हो!!

दादी जी से – आपके संकल्प पूरे हो रहे हैं ना! अच्छा है, जो निमित्त बनता है उसको टचिंग होती है। ब्रह्मा बाप के समान हो। ब्रह्मा बाप को नींद आती थी क्या? तो निमित्त बनने वालों को निमित्त बनने के कारण संकल्प अच्छे आते ही हैं। अच्छा है, आपके सहयोगी भी अच्छे-अच्छे हैं। आदि रत्नों का ग्रुप अच्छा है। फाउण्डेशन जो होते हैं, फाउण्डेशन के पिल्लर्स अगर मजबूत होते हैं तो चाहे कितना भी कोई हिलाये, अगर पिल्लर्स पक्के हैं तो सब सहज होता है। (दादियों से) बापदादा आप निमित्त पिल्लर्स का ग्रुप देखकर खुश होता है। मजबूत पिल्लर हैं ना? हिलने वाले हैं ही नहीं। चाहे कितना भी कोई पिल्लर को हिलावे लेकिन अविनाशी हैं। अच्छा है, भारत और विदेश दोनों ही सेवा-स्थान और सेवा में रेस कर रहे हैं। एडवांस मुबारक हो। जो सेवा कर रहे हैं उन्हों को विशेष याद-प्यार देना। अच्छा है। क्या नहीं हो सकता! जो चाहे वो कर सकते हैं। (आप जो चाहे करा सकते हो) और बच्चे निमित्त बन सकते हैं। अच्छे हैं, चारों ओर के, चाहे देश, चाहे विदेश, लेकिन सहयोगी बहुत अच्छे हैं। और समय पर सहयोगी बनने के कारण, जो समय पर सहयोगी होते हैं–उनको एक का पद्मगुणा फल मिल जाता है। स्थान अपना साधन लेकर आता है। ज्ञान सरोवर का देखकर समझते हो ना, इतना कैसे होगा, क्या होगा, लेकिन सहज बढ़ता जाता है, होता जाता है। प्रैक्टिकल सभी ब्राह्मणों की अंगुली उमंग-उत्साह से पड़ रही है इसीलिये सहज हो रहा है। खर्चा भी खूब हो रहा है और सहयोग भी खूब मिल रहा है, मिलता रहेगा। अभी आगे भी तो सहयोग देना है या मकान बन गया, बस। (अभी दादी को मेला करना है) मेला तो उसके आगे कुछ भी नहीं है। वो तो सहज है। ये करोड़ों की बात है वो लाखों की बात है। फर्क है ना! अच्छा है, जो कार्य हो जाये और जितना तुरन्त हो जाये उतना अच्छा है।

(12 बजे रात तक भाई-बहिनों ने खूब गीत गाये फिर बापदादा ने सभी बच्चों को नये वर्ष (1995) की मुबारक दी)

चारों ओर के सभी बच्चों को नये वर्ष की पद्म पद्म पद्म गुणा मुबारक हो। इस नये वर्ष में यही दृढ़ संकल्प करो कि सदा खुश रहेंगे और सभी को दिलखुश मिठाई बांटेंगे। कैसी भी परिस्थिति हो, परिस्थिति चली जाये लेकिन खुशी नहीं जाये। कोई आपको दु:ख देने की बातें भी करे लेकिन हम सदा सुख देंगे, सुख लेंगे–इस दृढ़ प्रतिज्ञा के साथ नये वर्ष को आरम्भ किया? तो पुरानी बातों को, पुरानी दुनिया की बातों को विदाई दी? वापस तो नहीं लेंगे? तो सदा विदाई की बधाइयाँ हो, मुबारक हो। अच्छा!